रूसी साहित्य का इतिहास

केसरी नारायण शुक्ल
एम० ए० डी० लिट्
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ

हिन्दी समिति, सूचना विभाग
प्रदेश

प्रथम संस्करण
१९६३

मूल्य
सात रुपये

मुद्रक
माया प्रेस प्राइवेट लि०, इलाहाबाद

प्रकाशकीय

भारत की ही प्रमुख भाषाओं के साहित्य का नहीं, वरन् एशिया और यूरोप की भी उन्नत भाषाओं के साहित्य का, इतिहास प्रकाशित करना हिन्दी-समिति की प्रकाशन-योजना का अंग रहा है। तदनुसार हम अभी तक मलयालम, बँगला, गुजराती तथा उर्दू भाषाओं के साहित्य का इतिहास प्रकाशित कर चुके हैं और कन्नड, तेलगू आदि का इतिहास लिखाया जा रहा है। इसी तरह अंग्रेजी तथा फ्रेंच साहित्य सम्बन्धी ग्रन्थ भी समिति से प्रकाशित हो चुके हैं। उसी परम्परा में अब यह रूसी साहित्य का इतिहास पाठकों के सामने प्रस्तुत है।

जैसा कि लेखक ने लिखा है, "रूसी साहित्य के इतिहास को रूसी जनता के स्वातन्त्र्य-आंदोलन तथा संघर्ष के इतिहास से अलग नहीं किया जा सकता।" वहाँ के जनान्दोलन तथा जनसंघर्ष की विभिन्न स्थितियों और कालों के आधार पर ही प्रायः रूसी साहित्य का युग-विभाजन किया जाता है। तदनुरूप वहाँ की साहित्यिक प्रगति और विचारों, अभिमतों, अनुभवों आदि के इतिहास का संक्षिप्त विवेचन इस पुस्तक में किया गया है, जो सुबोध और सरल होने के साथ साथ मनोरंजक भी है। लेखक ने मास्को विश्वविद्यालय में रह कर रूसी भाषा और साहित्य का अध्ययन किया और अनेक विद्वानों तथा साहित्यकारों के सम्पर्क में रह कर बहुमूल्य जानकारी प्राप्त की। आशा है कि उनकी इस कृति से हिन्दी के पाठक विशेष रूप से लाभान्वित हो सकेंगे और आज के आर्थिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में रूस ने जो विलक्षण उन्नति की है, उसका रहस्य समझने में भी उन्हें इसमें सहायता मिलेगी।

ठाकुरप्रसाद सिंह
सचिव, हिन्दी समिति

निवेदन

विश्व-साहित्य में रूसी साहित्य का अपना विशिष्ट और महत्त्व-पूर्ण स्थान है। उसकी महान् मानवतावादी एवं जनवादी परम्पराएँ तथा उसका अन्याय-विरोधी संघर्षशील एवं प्रगतिशील रूप रूस देश की सीमा का अतिक्रमण कर सारे विश्व की जनता को प्रेरणा और प्रोत्साहन देता रहा है। उसके अन्यतम कलाकार पुश्किन, लेरमन्तोव, गोगल, तुर्गेनेव, तोलस्तोय, दस्तयेव्स्की, चेखव आदि विश्व-साहित्य की महान् विभूति बन गये और चेतना के विकास-पथ के प्रकाश-केन्द्रों के रूप में उनका गौरव आज भी अक्षुण्ण है।

रूसी साहित्य की इन परम्पराओं की परिणति अक्तूबर की महान् समाजवादी क्रान्ति है जिसने रूस में सोवियत शासन की स्थापना की और सोवियत साहित्य की नींव डाली, जिसके मुख्य सूत्रधार मैक्सिम गोर्की और मायाकोव्स्की हैं। रूसी साहित्य के समान ही सोवियत साहित्य की भी सम्प्राप्तियाँ नगण्य नहीं हैं, सोवियत साहित्य ने रूस की चिन्तनधारा ही बदल दी। इसने समाजवादी विचारधारा और व्यवस्था को जनता के बीच ग्राह्य बनाकर उसकी जड़ें जनता के हृदय में जमा दीं। देश की समृद्धि और सुरक्षा की भावना भी सोवियत साहित्यकारों द्वारा पुष्ट हुई। सोवियत संघ की प्रत्येक जाति की जातीयता एवं विशिष्ट जातीय परम्पराओं का सम्मान करते हुए सोवियत साहित्य ने समाजवादी समाज के निर्माण का व्यापक, उदार एवं उच्च लक्ष्य सारे देश के सामने रखकर संघ की सारी जनता को स्थानीय नहीं बरन् व्यापक देश-भक्ति के सूत्र में पिरोकर एक कर दिया। फलतः सोवियत साहित्य और सोवियत साहित्य का रूप तो जातीय है, लेकिन उसका आशय समाजवादी है।

सोवियत-साहित्य ने इसी समाजवादी व्यवस्था की स्थापना को अपना लक्ष्य माना। यथार्थवादी परम्परा को विकसित करते हुए सोवियत

साहित्यकारों ने समाजवाद की प्रतिष्ठा में जो चीजें
स्वागत किया और जो इसकी विरोधी अथवा
सब की भर्त्सना की। इस प्रकार उनके यथार्थवाद ने सम
की संज्ञा प्राप्त की। फलतः साहित्य का जनता की चि
तादात्म्य हुआ, वह पूर्णतया जनात्मक बना और वह
देता हुआ उसका परिचालन करने लगा। देश के पिछड़े
के लिए, उसे उन्नत और विकसित करने के लिए जि
योजनाएं देश में चली, सोवियत साहित्य ने उन सबको
कलात्मक रूप में जनता के सामने प्रस्तुत कर, उनको
बनाकर उन्हें जनता के जीवन और व्यक्तित्व का अभिन्न अं
फलतः ये योजनाएँ जनता के जीवन का श्रेय और प्रेय दोन
परिणाम यह हुआ कि जनता में परिश्रम के प्रति नये उत्साहपू
का प्रादुर्भाव हुआ और जनता खून-पसीना एक कर पंचवर्षीय
को पाँच वर्षों में नहीं वरन् उससे बहुत कम समय में पूरा करने
देश प्रगति के लम्बे कदम बढ़ाता हुआ विश्व के अन्यतम प्रगतिश
की पंक्ति में प्रतिष्ठित हो गया।

देश-निर्माण का यह कार्य करते हुए सोवियत-साहित्य देश
प्रहरी और रक्षक के रूप में भी हमारे सामने आया। अन्तरिक्ष में
के बादलों के घिरने के साथ ही सोवियत-साहित्य ने जनता को चे
दी और जब देश पर फासिस्टों का आक्रमण हुआ तो इस साहित्य ने
को प्राण-पण से इसे विफल कर देने के लिए प्रतिरोध, उत्साह, बलि
आदि की ओजपूर्ण भावनाओं से भर दिया। युद्धकालीन साहित्य
के अमर बलिदान का चमचमाता हुआ दर्पण है। फलतः आक्रमण वि
हुआ और जनता विजयिनी हुई। इस विजय का श्रेय सोवियत साहि
को ही है जिसने जनता में अपनी अनिवार्य विजय का अडिग विश्वा
भर दिया।

युद्ध के बाद जब जनता फिर से युद्ध से नष्ट और जर्जर देश
पुनर्निर्माण में लगी तो सोवियत-साहित्य पीछे न रहा। उसने नये आदर्शों

नयी व्यवस्था और नये प्रयत्नों का आलोक प्रदान किया। उसने देश को और अधिक सुसंगठित, दृढ़ और सशक्त बना दिया और ऐसा उत्साह भरा, अनवरत परिश्रम की ऐसी भावना भरी कि आज सोवियत संघ ज्ञान-विज्ञान के किसी क्षेत्र में संसार के किसी भी देश से पीछे नहीं है।

रूसी साहित्य और सोवियत-साहित्य इस प्रकार देश और जनता के संघर्ष, विकास और सम्प्राप्ति की कथा कह रहा है जो जितनी मनोरंजक है उतनी ही हम सब के लिए महत्त्वपूर्ण भी है। रूसी जनता की इसी कथा की अत्यन्त संक्षिप्त रूप-रेखा प्रस्तुत पुस्तक के पृष्ठों में हिन्दी के पाठकों के लिए अंकित की गयी है। प्रस्तुत पुस्तक रूसी भाषा में प्राप्त और रूसी विद्वानों द्वारा लिखित सामग्री और ग्रन्थों पर आधारित है। अपने साहित्य को रूसी जनता ने जिस रूप में ग्रहण किया है और जैसा आंका है उसको उसी रूप में प्रस्तुत करने का यथाशक्ति प्रयत्न किया गया है। रूसी-साहित्य अत्यन्त विशाल एवं व्यापक है और प्रस्तुत लेखक का रूसी भाषा और साहित्य का ज्ञान अत्यल्प है। लेखक अपनी सीमाओं से अच्छी तरह परिचित है। प्रस्तुत पुस्तक अत्यन्त विनम्र प्रयास है और इसके लिए किसी प्रकार की मौलिकता का दावा नहीं किया जा रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक 'रूसी-साहित्य' और 'सोवियत-साहित्य' में उप-विभाजित है। सोवियत साहित्य का अंश रूसी साहित्य की अपेक्षा कुछ अधिक विस्तृत हो गया है। यह सकारण है, रूसी साहित्य के संबन्ध में तो कम-से-कम एक या दो पुस्तकें हिन्दी में है, किन्तु सोवियत-साहित्य पर तो जहाँ तक लेखक की सूचना है, हिन्दी में एक भी पुस्तक नहीं है। फिर सोवियत-साहित्य समकालीन साहित्य है जिसकी कई समस्याएँ है जो हिन्दी साहित्य की समस्याओं से काफी समानता रखती है। इसलिए यह अंश कुछ अधिक विस्तार से लिखा गया है। इसीलिए यह असन्तुलन कुछ क्षम्य भी हो जाता है।

पर यहाँ उन चीजों का भी अत्यन्त संक्षिप्त उल्लेख कर देना आवश्यक है जिनकी इस पुस्तक में कमी या अभाव है। प्रस्तुत पुस्तक केवल रूसी और सोवियत-साहित्य का इतिहास है। विस्तारभय से इसमें सोवियत

संघ में रहने वाली दूसरी जातियों के साहित्य का इतिहास नहीं दिया गया है, यद्यपि वह भी बड़ा मनोरंजक और महत्वपूर्ण है। विस्तारभय से रूसी-साहित्य की भी बहुत-सी कृतियों का कथानक नहीं दिया जा सका, केवल उनका सांकेतिक परिचय ही प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार कृतियों की भाषा शैलीगत विशेषताओं का अधिक विचार नहीं किया गया है क्योंकि रूसी भाषा के ज्ञान के बिना अधिकांश पाठकों के लिए ऐसा विश्लेषण निरर्थक और अरुचिकर ही होता है। इसी से रूसी से अनूदित अंश तो दिये गये हैं किन्तु रूसी में उद्धरण नहीं प्रस्तुत किये गये हैं। कहीं-कहीं रूसी नामों का अनुवाद कर दिया गया है, किन्तु जहाँ उनका हिन्दी में कोई मतलब न निकलता वहाँ उनको ज्यों-का-त्यों लिख दिया गया है।

रूसी भाषा में स्वराघात स्थिर नहीं है वरन् अत्यन्त चंचल है। यद्यपि इस संबन्ध में लेखक ने कई रूसी मित्रों से सहायता ली और उन्होंने सहर्ष सहायता दी, फिर भी बहुत संभव है कि रूसी नामों के प्रति लेखन में वर्ण-विन्यास और स्वराघात की गलतियाँ रह गयी हों। इसका दोष रूसी मित्रों पर न होकर, लेखक पर है।

मास्को विश्वविद्यालय में अध्ययन और अध्यापन करते हुए, प्रस्तुत पुस्तक की रचना लेखक के मास्को के इस आवासकाल के बीच हुई। लेखक को मास्को विश्व-विद्यालय में रूसी भाषा और रूसी साहित्य पर रूसी विद्वानों के लेक्चर सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, साथ ही अन्य रूसी मित्रों से भी इस संबंध में सहायता मिली और परामर्श प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर अपनी अध्यापिका श्रीमती ईल्यिया मक्सिमिलि-आनोव्ना पुलिकना का मैं बड़ी श्रद्धा और आदर से स्मरण करता हूँ जिन्होंने मुझे रूसी की शिक्षा दी और मुझे मास्को विश्वविद्यालय में रूसी भाषा और साहित्य पर लेक्चर सुनने को प्रोत्साहित किया। मैं मास्को विश्व-विद्यालय के विदेशियों के लिए रूसी विभाग और उसकी अध्यक्षा श्रीमती

मास्को विश्वविद्यालय के मेरे विद्यार्थी जीवन के साथी लीडा तिमर्येको और अनातोली ज्वेरेव भी मेरे बहुत बड़े सहायक रहे हैं और ये दोनों मुझे बराबर प्रोत्साहित करते रहे। मैं इन्हें कभी नहीं भूल सकता।

रूसी नामों के प्रतिलेखन में रईसा किरिल्लोवा ने मेरी बड़ी सहायता की और प्रस्तुत इतिहास-लेखन में कई परामर्श दिये। उनका सहयोग बड़ा मूल्यवान् रहा है।

इस समय मैं पमेरान्त्सेव परिवार को नहीं भूल सकता जिनके कारण मेरा मास्को का आवास बड़ा ही मधुर और सफल रहा। प्रोफेसर पमेरान्त्सेव बराबर सत्परामर्श देते रहे। श्रीमती पमेरान्त्सेवा (जिनको हम सब भारतीय 'मामा' कहते थे) हमारी सुविधा का बराबर ख्याल रखती थीं। और नताशा पमेरान्त्सेवा ने हर कार्य में हम लोगों का हाथ बटाया। प्रस्तुत पुस्तक के लिए उन्होंने कुछ सामग्री भी एकत्रित की और उत्साहवर्धन भी किया। उनका योगदान मेरे लिए बड़ा बहुमूल्य रहा है।

× × ×

पुस्तक करीब-करीब साल भर पहले तैयार हो गयी थी। सितम्बर १९६० में जब मैं एक मास के लिए मास्को से भारत आया तो लखनऊ में जलप्लावन में इसकी पाण्डुलिपि डूब गयी। पुस्तक एक प्रकार से मुझे दोबारा तैयार करनी पड़ी। यह कुछ कठिन काम था।

किन्तु इससे भी कठिन काम इस डूबी, धुली और मिटी पाण्डुलिपि से प्रेस-कापी तैयार करना था और जिसे लखनऊ विश्वविद्यालय के मेरे सहयोगी डाक्टर प्रताप नारायण टंडन ने बड़े उत्साह से सपन्न किया। मैं तो बीच-बीच में निराश भी हो जाता था, किन्तु वे बराबर उत्साह की मूर्ति बने काम में लगे रहे और उसे पूरा करके ही छोड़ा। यह पुस्तक जो छप सकी उसका पूरा श्रेय उन्हीं को है।

और सबसे बड़ा सहयोग मुझे श्रीमती सरोजिनी शुक्ल से मिला। यह पुस्तक उनके सामने मास्को में शुरू हो गयी थी। जलप्लावन से पांडुलिपि का उद्धार उन्होंने ही किया। पांडुलिपि के गीले कीचड़ से लिपटे एक-एक पन्ने को एकत्रित कर, उसे सुखा कर, झाड़-पोंछ कर, काम करने योग्य उन्होंने ही बनाया, एक प्रकार से उन्होंने मेरा भी उद्धार किया।

उत्तर प्रदेश सरकार की हिन्दी समिति ने मुझे यह पुस्तक लिखने के लिए आमंत्रित किया और वही इसे प्रकाशित भी कर रही है। हिन्दी समिति के अधिकारियों के प्रति आभार-प्रदर्शन मेरा कर्त्तव्य है।

यदि यह पुस्तक हिन्दी के पाठकों में रूसी साहित्य के प्रति थोड़ी भी जिज्ञासा जगा सकी और उन्हें रूसी साहित्य के स्वतंत्र अध्ययन की थोड़ी भी प्रेरणा दे सकी तो मेरा परिश्रम सफल होगा।

केसरी नारायण शुक्ल

विषय-सूची

भाग १

रूसी-साहित्य

भाग २

सोवियत साहित्य

—:०:—

भाग २

सोवियत साहित्य

है। रूसी साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है जनजीवन के साथ उसका घनिष्ठ संबंध। रूसी साहित्य रूसी जनता के स्वातन्त्र्य आंदोलन के साथ सदा और घनिष्ठ रूप में संबद्ध रहा है। इसलिए रूसी साहित्य के इतिहास को रूसी जनता के स्वातन्त्र्य आंदोलन तथा संघर्ष के इतिहास से अलग नहीं किया जा सकता। फलतः रूस के स्वतंत्रता आंदोलन के विकास की विभिन्न मंज़िलों के अनुरूप रूसी साहित्य का युग-विभाजन स्वाभाविक ही है।

प्रस्तुत पुस्तक में इसी युग-विभाजन के अनुरूप रूसी साहित्य के इतिहास की रूपरेखा प्रस्तुत की जा रही है।

२. उन्नीसवीं शती से पूर्व का रूसी साहित्य

'इगर की सेना का गीत'

'इगर की सेना का गीत' प्राचीन रूसी साहित्य का महत्वपूर्ण ग्रंथ है जो साढ़े सात सौ वर्ष से अधिक पुराना है। इसमें बारहवीं शती के अन्त के रूसी जन-जीवन की कतिपय ऐतिहासिक घटनाओं का काव्यात्मक वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

प्राचीन रूसी राष्ट्र का संघटन

प्राचीन रूसी राष्ट्र का नवीं शताब्दी में संघटन हुआ और बाद की (ग्यारहवीं, बारहवीं) शताब्दियों में उसकी राजनीतिक शक्ति और संस्कृति का अभ्युदय और विकास हुआ। कई जल तथा स्थल मार्गों के संगम पर स्थित होने के अनुकूल भौगोलिक परिस्थिति के कारण प्राचीन रूस का पड़ोसी राष्ट्रों के साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंध बढ़ा और उसकी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई। इस प्राचीन रूसी राष्ट्र की सबसे अधिक उन्नति व्लादीमिर स्व्यातोस्लाविच और उसके पुत्र 'बुद्धिमान' यारोस्लाव के समय में हुई, जब कि इसकी सीमाएँ बाल्टिक तथा श्वेत समुद्र से काले समुद्र तक और कार्पेथियन पर्वतमाला से लेकर वोल्गा के (ऊपरी) तट तक फैली हुई थीं और कीव का नगर इसके राजनीतिक तथा सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विद्यमान था। यह उस समय के यूरोप का सबसे अधिक शक्तिशाली राष्ट्र था।

व्लादीमिर स्व्यातोस्लाविच के समय में ईसाइयत राष्ट्रीय धर्म बन गया। ईसाइयत को स्वीकार कर लेने से रूस का संबंध बाइजेंटाइन तथा अन्य ईसाई राष्ट्रों से और भी घनिष्ठ हुआ तथा उसकी संस्कृति और भी अधिक विकसित हुई।

इस प्राचीन रूसी राष्ट्र के संघटन के युग में लोक-साहित्य की पर्याप्त रचना हुई। बाल-कथाएँ, काव्य 'बिलीना' कहावतें तथा जन-पहेलियाँ

में उस युग की ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन है और उनमें तत्कालीन रूसी जनजीवन का प्रतिबिम्ब है। मौखिक लोकसाहित्य बराबर निर्मित होता रहा और वह लिखित साहित्य की आधारशिला बना। ग्यारहवीं बारहवीं सदी में ऐतिहासिक, ऐतिहासिक कथाओं तथा अन्य कृतियों की रचना हुई।

रूसी राष्ट्र की विशृङ्खलता

प्राचीन रूसी राष्ट्र के विकास-प्रसार के बीच (ग्यारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध से) कीव के अतिरिक्त नये नये नगर प्रकट होने लगे जो कि धीरे धीरे एक दूसरे से अलग, असंबद्ध और स्वतन्त्र जीवन बिताने लगे। फलतः देश टुकड़ों में विभक्त हो गया और उनके शासक राजकुमार कीव की अधीनता न स्वीकार कर आपस में लड़ने झगड़ने लगे। राजवंशों के इस पारस्परिक कलह से रूस के परंपरागत शत्रुओं—स्तेप की घुमन्तू पलोवित्सी जातियों ने लाभ उठाया और उन्होंने खानों की अधीनता में संघटित होकर रूस की दक्षिणी सीमा पर आक्रमण कर दिया। इससे रूसी राष्ट्र का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया।

इस समय के विचारशील लोगों ने देश के इस संकट को पहचाना और राजवंशीय कलहों की समाप्ति तथा राष्ट्रीय एकता की स्थापना में ही सुरक्षा और कल्याण समझा। यह बात बिलकुल ठीक थी। जब ये राजकुमार एक होकर खानाबदोश पलोवित्सियों के विरुद्ध सम्मिलित अभियान करते थे तो सफल और विजयी होते थे और जब इन राजकुमारों के अभियान असम्मिलित और अलग अलग होते थे तो प्रायः असफलता तथा पराजय ही इनके हाथ लगती थी। 'ईगर की सेना का गीत' एक ऐसे ही असफल अभियान की कथा कहता है। इसके अज्ञात लेखक ने इसमें उत्तरी नोवोगोरद के राजकुमार ईगर

शासक स्वितोस्लाव के नेतृत्व में, सन् ११८४ में आयोजित पलोवित्सियों के विरुद्ध सम्मिलित अभियान में ईगर भाग न ले सका। फलतः दूसरे वर्ष (११८५) अपने सबंधियों को एकत्रित कर और दूसरे राजाओं से बिना सलाह मशविरा किए ही वह अपनी छोटी सेना के साथ पलोवित्सियों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए चल पड़ा। ऐतिह्य बताते हैं कि पहले युद्ध में तो उसकी विजय हुई किन्तु उसके बाद उसकी सेना नष्ट हो गयी और वह बंदी बना लिया गया। इसके बाद पलोवित्सियों ने आक्रमण कर दिया और वे रूस के अंदर घुस गये। इस प्रकार 'ईगर की सेना का गीत' के मूल में यथार्थ ऐतिहासिक घटनाएं हैं।

फिर भी इसका लेखक अपने को इन ऐतिहासिक युद्धों तक ही सीमित नहीं रखता। इन ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से वह जनता के दीन-हीन जीवन का बड़ा व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है और यह संकेत करता है कि इस स्थिति का कारण देश का राजनीतिक पार्थक्य, राजवंशीय पारस्परिक कलह और घुमन्तू जातियों का आक्रमण है। बारहवीं शती के रूस की कठिन परिस्थिति लेखक को मातृभूमि के इस अनतिदूर अतीत के सम्मानपूर्ण युग का स्मरण दिलाती है जब कि रूस का राष्ट्र अत्यन्त शक्तिशाली था। काव्य में ब्लदीमिर स्वितोस्लाव से लेकर ईगर के समय तक की डेढ़ शताब्दी के रूसी जन जीवन का सच्चा चित्र प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य भाव एकता एवं देशभक्ति

इस काव्य में पात्रों और घटनाओं का जो चित्रण हुआ है उसका मूल प्रेरक भाव देशभक्ति है। कीव के शासक स्वितोस्लाव को रूस के बहुत बड़े देशभक्त के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो रूसी भूमि की रक्षा के लिए अन्य राजाओं का आह्वान करता है और पारस्परिक कलह को छोड़कर एक हो जाने का संदेश देता है। इसमें अन्य राजाओं का जो चित्रण हुआ है उसमें वे रूसी भूमि के प्रतिनिधि रूप में प्रस्तुत किये गये हैं और लेखक उनकी प्रशंसा तथा निन्दा इसी मूल भाव की दृष्टि से स्पष्ट करता है कि वे देश की रक्षा और एकता में कितना योगदान

इसकी प्रबंध-रचना के तीन प्रधान अंग हैं । प्रथम भाग ईगर का विफल अभियान, उसका बंदी होना तथा रूसी सैनिकों की पराजय है ।

द्वितीय भाग में कीव के शासक स्वियातोस्लाव का रूसी भूमि की रक्षा के लिए एकता का आह्वान है ।

तीसरे भाग में ईगर का क़ैद से निकल भागना और स्वदेश लौटना है ।

लोक-सर्जना से सम्बन्ध

कवि ने इसकी रचना में लोक-काव्य की कलात्मक युक्तियों का बहुत उपयोग किया है । मौखिक जन-काव्य में अत्यधिक प्रचलित नकारात्मक तुलनाओं का उपयोग हुआ है और युद्ध के चित्र उसी प्रकार अंकित किये गये हैं जैसे कि जन-काव्य 'बिलीना' में होते हैं । प्रकृति-चित्रण में जन-काव्य से इसका संबंध और भी स्पष्ट हो जाता है । लोक-काव्य के समान इसमें भी प्रकृति का अंग मानो जैसा जीवन है और वह उनसे सहानुभूति प्रकट करती है, उनके साथ दुःखित होती है, हर्षित होती है और उनको संकट की सूचना देती है । जब ईगर का अभियान शुरू होता है तो उसे रोकने के लिए सूर्य छिप कर अंधकार द्वारा उसका मार्ग रोकता है, रात बिजली द्वारा चिल्लाती है और जब ईगर क़ैद से भागता है तो सुबह आकाश में शुक चमकता है, कठफोड़वा पक्षी नदी की ओर का रास्ता दिखाता है, रात नदी अपनी लहरों को झुलाती है और बुलबुलें आनंद के गीत गाती हैं ।

फिर भी 'ईगर की सेना का गीत' जनता द्वारा रचित लोक-काव्य नहीं है । यह एक व्यक्ति की कृति है और उस युग की [illegible] उच्च [illegible] से सम्बन्धित है ।

'ईगर की सेना का गीत' का प्रभाव रूसी साहित्य के विकास पर व्यापक प्रकार पड़ा और अनेक रूसी साहित्यिक, जिनमें [illegible] आदि ने इसका अनुवाद किया गया । [illegible], जुकोव्स्की, [illegible] आदि इससे बहुत प्रभावित हुए । [illegible] ने 'राजा ईगर' ऑपेरा

की रचना की और कलाकार वास्नेत्सोव ने प्रसिद्ध चित्र (ईगरी-हत्या) बनाया।

स्पष्ट भाषा, रूसी जनता के जीवन का यथार्थ ऐतिहासिक अंकन, देशभक्ति की भावना—इन सब ने इस कृति को अमर, और लोकप्रिय बना दिया। बारहवीं शती के इस अज्ञात कवि की रूसी भूमि के प्रति गहरे प्रेम से परिपूर्ण यह रचना सोवियत जनता के हृदय के अत्यन्त निकट है। सन् १९३८ में प्राचीन रूसी साहित्य की इस अमर कृति की ७५०वीं जयंती मनायी गयी।

३. रूसी साहित्य (१३वीं से १७वीं शती)

तेरहवी से सत्रहवी शती तक का रूसी साहित्य

प्राचीन रूसी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ रूसी जनता के जीवन से अत्यन्त घनिष्ठ रूप से सबधित है। इनमे उस समय के रूसी जीवन की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक, राजनीतिक तथा सामाजिक घटनाओ की पूरी पूरी अभिव्यक्ति मिलती है।

तेरहवी शताब्दी के सन् तीस और चालीस के वर्षों मे रूस पर तातारों का आक्रमण हुआ। इसी समय उत्तर और पश्चिम से स्वीडिश और जर्मनो का धावा हुआ। रूसियो का इन विदेशी आक्रमणकारियो से जो युद्ध और सघर्ष हुआ उसका साहित्य में पूरा पूरा प्रतिबिम्बन हुआ है। तेरहवीं तथा चौदहवी शताब्दी की सैनिक कथाओं मे रूसियो के तातारो, स्वीड तथा जर्मनो से वीरतापूर्ण युद्धों के आख्यान मिलते है। अलेक्सान्द्र न्येव्स्की की कथा मे न्येव्स्की के स्वीड तथा जर्मनो से युद्ध और उसकी विजय का वर्णन है। बात्वस्कोए हत्या की कथा मे तातारो के साथ प्रथम सघर्ष का अभिव्यजन हुआ है। 'खानी (खां) की सेना कारियाजन मे आगमन' की कथा भी इसी प्रकार की सैनिक कथा है। महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं को अंकित करनेवाली ये सैनिक कथाएं इन घटनाओ के घटित होने के थोड़े ही समय बाद लिखी गयीं। तातारी आक्रमण से सबधित तेरहवी-चौदहवी शती की साहित्यिक रचनाओ मे रूसी भूमि के नाश की कथा है। इसमे रूसी भूमि के सौन्दर्य और समृद्धि का अत्यन्त भावुकतापूर्ण वर्णन किया गया है। 'ज़दोंश्चिना' मे (१४वी शती का अत) रूसियों की तातारो पर प्रथम विजय का अकन है जो उन्हे १३८० मे कुलीकोव्स्की के युद्ध मे मिली।

अलेक्सान्द्र न्येव्स्की तथा कुलीकोव्स्की के युद्ध की रूसी विजय ने रूसी जनता की एकता तथा राष्ट्रीयता की भावना को और भी बढ़ाया

दिया। मास्को के राजकुमार इवान तृतीय और उसके पुत्र वसीली तृतीय ने पंद्रहवीं शती के अंत और सोलहवीं के आरम्भ में रूसी प्रान्तों को एक में मिलाकर एक रूसी राष्ट्र का संघटन किया। मास्को के चारों ओर रूसी भूमि के एकीकरण से देश का आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्तर और भी ऊंचा हुआ। कीव का महत्व अब कम हो गया और मास्को देश का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक केंद्र बन गया। अपनी साज-सज्जा और सांस्कृतिक उत्कर्ष के कारण मास्को 'तीसरा रोम' कहा जाने लगा।

रूसी राजकुमारों के एक केंद्रित राष्ट्र में एकीकरण से देश का सांस्कृतिक उत्थान और भी बढ़ा। ईवान भयंकर के समय में पुस्तकों का मुद्रण आरम्भ हुआ। पंद्रहवीं-सोलहवीं शती में केंद्रित रूसी राष्ट्र के निर्माण के साथ साथ जातीय रूसी भाषा का गठन और विकास शुरू हुआ, राष्ट्रीय भाषा का लिखित रूप सामने आया और विविधात्मक साहित्य की रचना होने लगी।

पंद्रहवीं और विशेषतया सोलहवीं शताब्दी में सैनिक कथाओं की जगह पत्रकारिता का साहित्य प्रमुख हुआ, जिसमें सरकारी मसविदे, संधिपत्र तथा आदेश आदि थे जिनमें तत्कालीन सामाजिक प्रश्नों पर विचार प्रकट किये गये हैं। इस प्रकार के साहित्य में ईवान-भयंकर की कुर्ब्स्की राजकुमार के साथ 'बातचीत' महत्त्वपूर्ण कृति है।

इस समय केन्द्रित शक्तिशाली शासन की स्थापना के लिए ईवान भयंकर ने 'बयारों' के विरुद्ध संघर्ष शुरू किया। पीतर और फेव्रोनिया की कथा में बयारों के विरुद्ध प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। इस कथा में मूरम का राजकुमार पीतर एक साधारण स्थिति की लड़की से प्रेम करता है और उससे शादी कर लेता है। बयार समाज के अत्याचार के कारण फेव्रोनिया मूरम छोड़कर चली जाती है। पीतर भी उसके साथ शहर छोड़कर चल देता है। एक ही दिन और एक ही समय में दोनों की मृत्यु के भावुकतापूर्ण वर्णन के साथ कथा समाप्त होती है। दोनों को एक ही कब्र में दफ़ना दिया जाता है।

सोलहवीं शती में विगत शताब्दियों की साहित्यिक कृतियों का एक

बहुत बड़ा सकलन तैयार किया गया, जिसमे सभी प्राचीन, स्थानीय तथा अखिल रूसीय 'लेतोपिस' (वर्षानुक्रमिक वर्णन) एक मे सगृहीत हुए। इस समय 'गृह-विधान' निकला जिसमे घरेलू तथा पारिवारिक जीवन के नियमों का उल्लेख था। इनसे तत्कालीन पारिवारिक व्यवस्था तथा उससे सबधित प्राचीन लोक-दृष्टि पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

इस समय ऐतिहासिक लोक-गीतो की भी रचना हुई। विशेष रूप से ईवान भयकर के युग की घटनाओ की; कजान पर अधिकार, साइबीरिया की विजय—की छाप इन ऐतिहासिक गीतो मे प्रमुख रूप से मिलती है।

सत्रहवी शती मे रूस मे अत्यधिक सामाजिक महत्व की ऐतिहासिक घटनाएँ घटी। इस शताब्दी के आरम्भ मे किसानो की हलचल शुरू हुई जो आगे चलकर (इवान बलोत्निकोव स्तेपान राज़िन के नेतृत्व मे) किसान युद्ध मे परिणित हुई। इसी समय पोलैण्ड और स्वीडन की सेना ने देश पर आक्रमण किया। इन सब घटनाओं की अभिव्यक्ति ऐतिहासिक गीतो और कथाओ से मिलती है। सुन्दर रूसी भूमि की नयी कथा 'मासक्वीय राष्ट्र के नाश पर विलाप' आदि ऐसी ही रचनाएँ हैं।

सत्रहवी शती के उत्तरार्द्ध से साहित्य मे नवीन प्रवृत्तियाँ लक्षित होने लगती है। साहित्य धीरे-धीरे चर्च के प्रभाव से मुक्त होकर ऐहिक रूप धारण करने लगता है। साहित्य मे नये नायको; किसान, शहरी आदमी, सौदागर आदि के प्रतिनिधियो—का प्रादुर्भाव होने लगता है। रूसी साहित्य अब पारलौकिक न रहकर ऐहिक बनने लगा।

ऐहिक जीवन से सबधित ये कथाएँ इस शताब्दी के उत्तरार्द्ध की मुख्य विशिष्टता है। परिवार मे व्यक्ति के स्वजीवन-यापन के आत्म-निर्णय के अधिकार की समस्या तथा प्राचीन एव नवीन पीढ़ी के सघर्ष का चित्रण ग्लोचास्तिया के शोक और दुःख की कथा है। इसमें सपन्न परिवार के नवयुवक की निंदा है, क्योंकि वह पुरानी नैतिकता को छोड़कर नये ढंग से जीवन बिताना चाहता है और इसलिए दुःख भोगता है।

'फ़ोल्स्कबमेव की कथा' मे एक पुत्र की कथा है जो स्वयं ग़रीब है

ार को लड़की से शादी करने का षड्यन्त्र रचना है तथा
ांता है।
कहानियों का चित्रण यथार्थवादी है और इसमें रूसी समाज
रहन-सहन तथा नैतिकता आदि का अंकन हुआ है।
कहानियों का वस्तु-विषय और भी अधिक जनात्मक है।
र निदर्शन 'यर्शोविच की कथा' और 'शेम्याकिन
ा' हैं। पहली कहानी में अन्योक्ति के रूप में 'अमीरों
ण किया गया है जिसके विरुद्ध ग़रीब के लिए न्याय की
है। इसमें मनुष्य मछली के रूप में है। इसका वस्तु-
, मछली-संसार के स्वामी और बेईमान न्याया-
ं और उन पर व्यंग्य है।
कचहरी' में उस युग के न्यायालयों की बेईमानी
कथा कही गयी है। न्यायालय में एक ग़रीब रू
थर न्यायाधीश को दिखाता है। न्यायाधीश
उसके पक्ष में फ़ैसला करता है।
ी साहित्य में नाट्य कृतियों का प्रादुर्भाव हो
में रूस में पहला थियेटर स्थापित हुआ।

। ...ने पीटर के सुधारों का समर्थन किया।
...युग का महत्त्वपूर्ण लेखक फियोफान प्रोकोपोविच है, जो कवि,
...नाटककार और पीटर के सुधारों का उत्साही समर्थक है। अपनी
...'व्लादीमिर' में वह पीटर की प्रशंसा करता है, विरोधियों
...उड़ाता है और विज्ञान तथा शिक्षा का प्रचारक बनता है।
...सदी के आरम्भ में रंगमंच के प्रयोगों का अच्छा विकास हुआ।
...मंच पर अब न केवल धार्मिक कथावस्तु वाले नाटकों का अभिनय
...वरन् ऐसे ऐहिक नाटक प्रस्तुत किये जाने लगे जिनमें राजनीतिक
...घटनाओं का अंकन होता था और सामाजिक रीति-नीति
...की भी झलक रहती थी।

...की स्थापना

...क्लासिसिज़्म का विकास हुआ जो कि यूरोप के
...को सामान्य विशिष्टताओं से युक्त होने के साथ-साथ रूसी
...स्थिति के फलस्वरूप कतिपय नयी विशेषताओं से समन्वित
...उदात्त तथा भव्य शैली, जटिल नियम और प्रबन्ध की
...और अपरिवर्तनीय रूपयोजना से शास्त्रवाद का साहित्य
...निरंकुश आधिपत्य के आदर्श के अनुरूप पड़ता है और यूरोप
...यूनान तथा रोम की प्राचीन कला के प्रति अत्यधिक प्रेम
...प्रवृत्ति को जन्म दिया, जिसने कृति में सुडौलता,
...तथा नियमनिष्ठता की माँग की। इसके लोक-
...कारण यह था कि चर्च तथा ईसाइयत की मनोवृत्ति
...दृष्टिकोण कहीं अधिक प्रकाशपूर्ण, आह्लादपूर्ण और

...सबसे बड़ा रूसी लेखक लोमोनोसोव है जिसे बेलिंस्की
...ऐतिहासिक कवि कहा और जो व्याकरण का बहुत बड़ा लेखक
...में शास्त्रवाद की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति मिली जो
...से ओत-प्रोत है। इसी प्रकार सुमारोकोव इस
...प्रतिनिधि माना जाता है। उसके करुण नाटक

बहुत विख्यात हुए। सुमारोकोव का नाम रूसी रंग-मंच के साथ जुड़ गया है।

क्लासिसिज्म का चरम उत्कर्ष इस शताब्दी के सबसे बड़े कवि देर्जाविन की सर्जना मे देखने को मिलता है। उसे अपने 'ओडों' से बड़ी ख्याति मिली (महारानी एकातेरिना के सम्मान मे, फेलित्सा, प्रपात, मेश्चेर्स्की की मृत्यु पर)। इसी प्रकार उसने व्यंग्यात्मक 'ओड' (बड़ा आदमी, शासक और निर्णायक को) लिखे।

इस प्रकार देर्जाविन के पहले तक अठारहवीं शती के रूसी काव्य में प्रशसात्मक 'ओड' प्रगीतमुक्तक, प्रेमगीत और व्यंग्यात्मक 'ओड' की रचना हो गयी थी।

क्लासिसिज्म से भावुकतावाद और यथार्थ की ओर संचरण

अठारहवीं शती के उत्तरार्द्ध मे नयी साहित्यिक प्रवृत्ति का विकास लक्षित होने लगा। यह प्रवृत्ति भावुकतावाद की थी। इस प्रवृत्ति का सबसे बड़ा अभिव्यंजक करमज़ीन है (रूसी यात्री का पत्र, ग़रीब लीज़ा)।

क्लासिसिज्म के समान भावुकतावाद की प्रवृत्ति भी यूरोपीय प्रवृत्ति थी और यह शास्त्रवाद के विरुद्ध प्रतिक्रिया रूप मे शुरू हुई। इसमे सामान्य मनुष्यो की भावनाओं तथा अनुभूतियों की व्यंजना हुई। शास्त्र-वाद के तर्क और बौद्धिकता की जगह भावुकतावाद के द्वारा भावना तथा भावावेश का समावेश हुआ और साधारण व्यक्तिगत घरेलू जीवन का चित्रण शुरू हुआ।

करमज़ीन ने जिस भावुकतावाद का प्रतिनिधित्व किया है उसमे किसानों के जीवन की प्रशंसा की गयी है, उसे आनन्दपूर्ण बताया गया है और किसान तथा जमींदार के बीच सामंजस्य पूर्ण संबंध की स्थापना चाही गयी है। उसके मतानुसार सभी लोग, यहाँ तक कि किसान और दास भी प्रेम, पारिवारिक सुख तथा नैतिकता आदि का आनंद उठा सकते हैं। करमज़ीन के किसान प्रसन्न हैं और अपने मालिक का 'मालिक-पिता' कहकर आदर करते हैं। करमज़ीन की कहानी 'ग़रीब लीज़ा' भावुकता-

वादी कहानियों को प्रतिनिधि है जिसमें किसान की अच्छी लड़की लीजा को उच्च वंश का नवयुवक धोखा देता है। लेखक इस लड़की के प्रति पाठकों की सहानुभूति जगाता है और यह प्रकट करना चाहता है कि किसान भी प्रेम करना जानते हैं।

सामाजिक यथार्थता पर मुलम्मा चढ़ानेवाले इन लेखकों के भावुकतावाद के साथ-साथ देर्जाविन के व्यग्य में, क्रोलोव के नाटक और लेखों में फानवीज़िन की कृतियों मे और रदीश्च्येव की सर्जना मे अठारहवी शती के अन्त के रूसी साहित्य मे यथार्थवाद की परपरा का भी सूत्रपात एवम् विकास हुआ।

अठारहवी शती के मध्य से रूसी साहित्य विदेशो मे प्रसिद्ध होने लगा। कन्तेमीर के व्यग्य और सुमारोकोव के करुण नाटक फ्रांस एवं इग्लैंड मे प्रकाशित हुए और बाद में लमनोसोव की कविताएँ भी। उन्नीसवीं शती के आरम्भ मे करमज़ीन की बहुत-सी कहानियों और उसके इतिहास का अनुवाद हुआ। सन् १८३२ में रूसी कविताओं का फ्रेंच सग्रह छपा जिसमे कन्तेमीर, देर्जाविन और परवर्ती कवियो की कृतियाँ थी। इस प्रकार रूसी साहित्य विश्व-साहित्य के प्रागण मे पहुँच गया।

५. मिखाइल वसील्येविच लमनोसोव

[सन् १७११–१७६५]

लमनोसोव की गिनती अठारहवीं शती के महान् व्यक्तियों में है। कला तथा विज्ञान के विविध क्षेत्रों में प्रकट होनेवाली उसकी असाधारण प्रतिभा ने रूस के सांस्कृतिक इतिहास में नवीन पृष्ठ जोड़ दिया।

लमनोसोव का जन्म ८ नवम्बर सन् १७११ में समुद्र-तट के एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। उसका बचपन बड़े कष्ट में बीता। आठ वर्ष की अवस्था में वह मातृविहीन हो गया। दस वर्ष की अवस्था में उसने परिवार के कठोर श्रमपूर्ण जीवन में हाथ बटाना शुरू कर दिया।

फिर भी उसमें असाधारण प्रतिभा थी और पढ़ने की लगन थी। इसी से पिता के विरुद्ध होने पर भी वह घर छोड़कर मास्को पढ़ने चला गया। पिता ने उसकी मदद करने से इन्कार कर दिया।

वह स्लावनिक ग्रीक-लैटिन अकेदमी में दाखिल हो गया जहाँ उसने विज्ञान, दर्शन और साहित्य पढ़ा। अत्यधिक प्रतिभासपन्न होने के कारण अकेदमी ने उसे पीतरबुर्ग विश्वविद्यालय में पढ़ने को भेजा और बाद में गणित, भौतिक तथा रसायन शास्त्र के विशेष अध्ययन के लिए विदेश (मारबुर्ग) भेजा। १७४१ में स्वदेश वापस लौटने पर वह विज्ञान-अकेदमी के विश्वविद्यालय में पहले प्रोफेसर का सहायक बनाया गया और बाद में प्रोफेसर नियुक्त हुआ।

विज्ञान के क्षेत्र (भौतिक शास्त्र, रसायन, ज्योतिर्विज्ञान, भूगर्भशास्त्र, धातुविज्ञान आदि) में विशेष सलग्न रहने पर भी उसने भाषा तथा भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में मौलिक तथा महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इसके साथ ही उसकी कारयित्री तथा भावयित्री प्रतिभा सदा जागरूक रही। उसने कविताएँ लिखीं, ग्रीक साहित्य से अनुवाद किया और व्याकरण तथा छंदों के विषय में महत्त्वपूर्ण विचार प्रकट किये।

विश्वविद्यालय के संगठन का विचार उसने लोगों के सन्
नोसोव मास्को विश्वविद्यालय का संस्थापक है।
भाषा तथा साहित्य के क्षेत्र में उसका कार्य अत्यन्त महत्वपू
ता के बारे में उसने लिखा कि रूसी भाषा की प्रकृति ऐसी
ता के चरणों में न केवल अक्षरों की समान संख्या होनी
स्वराघात युक्त और स्वराघात हीन अक्षरों का ठीक-ठीक
होना चाहिए।

में उसने 'काव्य-शास्त्र' की पुस्तक लिखी जिसमें ग्रीक
अनुवाद के साथ-साथ उसने स्वरचित उदाहरण भी रखे।
भाषण कला सबंधित सहायक पुस्तक थी।
(सन् १७५७ में) उसने रूसी भाषा में चर्चस्लावानिक
जिसमें उसने तीन शैलियों का अपना सिद्धान्त प्रति-
सके मत में वीर काव्य तथा गंभीर 'ओड' उस शैली
वहाँ चर्चस्लावानिक शब्दों का बहुलता से उप

शैली के अन्तर्गत ट्रेजेडी, व्यंग्य, ऐलेजी आदि हैं जिन
रूसी होनी चाहिए किंतु जहाँ थोड़ा-सा- परन्तु अत
साथ चर्चस्लावानिक का प्रयोग किया जा सकता है
शैली के अन्तर्गत कमेडी, एपिग्राम तथा गद्यात्मक
स्लाववाद का कदापि व्यवहार न होना चाहिए।
तीन शैली' के प्रतिपादन का सबसे महत्वपूर्ण
साहित्यिक रूसी भाषा सजीव बोल-चाल की भाषा
चर्चस्लावानिक शब्दों का प्रयोग कम हुआ।
रे स्लाववाद से मुक्त होने लगी और जनभाषा
द्धि बढ़ी।

पा से विदेशी शब्दों को दूर करने का सद
उनकी जगह रूसी शब्द रखता था या नये

भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में उसका 'व्याकरण' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कृति है। इसमें उसने जो व्याकरण-सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावली दी है वह इतनी सफल है कि समकालीन व्याकरणों में भी उसका उपयोग होता रहा है।

रूसी भाषा से संबंधित उसकी कृतियों तथा कार्यकलापों ने एक प्रकार से साहित्यिक रूसी भाषा को जनात्मकता की ओर उन्मुख किया, जिसे बाद में रदीश्चेव, फानवीज़िन क्रीलोव आदि ने इस दिशा में आगे बढ़ाया। किन्तु यह कार्य पूर्णत पुश्किन द्वारा सम्पन्न हुआ। जनजीवन में घुलकर पुश्किन ने इसे पूरा पूरा जनात्मक रूप दे दिया।

लमनोसोव की काव्यात्मक सर्जना का रूप विविधात्मक है। उसने गंभीर प्रशंसात्मक 'ओड' लिखे। और प्रबन्धात्मक काव्य की सर्जना की और ट्रैजेडी, एपिग्राम तथा ध्वजों की रचना की। इन सब में वह जनता, स्वदेश और शिक्षा के बारे में सोचता है। उसकी पुष्ट रचनाएँ देश-भक्ति से परिपूर्ण हैं। इनके साथ बड़ी-बड़ी घटनाएँ, विज्ञान तथा परिश्रम भी उसके काव्य के प्रिय विषय हैं। इस संबंध में उसका सबसे प्रसिद्ध ओड साम्राज्ञी एलिज़ाबेथ पेत्रोव्ना के राज्याभिषेक का दिन है जिसमें रूस में विज्ञान, रूस की प्राकृतिक समृद्धि के उद्घाटन तथा अध्ययन के लिए भविष्य के विद्वानों का आह्वान, जन्मभूमि की महत्ता तथा देश के उज्ज्वल भविष्य की भावना आदि के संकेत मिलते हैं।

अत्यन्त सामान्य परिवार का यह बालक लमनोसोव अपनी प्रतिभा, अध्यवसाय तथा जन हितकारी कार्यकलाप के कारण अपने देश का यशस्वी पुत्र बन गया। उसकी काव्यात्मक कृतियाँ रूसी साहित्य के इतिहास में प्रथम बार रूसी राष्ट्रवादी चेतना के रूप में प्रकट हुई और उनकी सर्जना में अभिव्यक्त देशभक्ति के भाव को अठारहवीं सदी के रूसी साहित्य के रदीश्चेव, देर्झाविन जैसे श्रेष्ठ प्रतिनिधियों ने ग्रहण किया और उसे व्यापकता प्रदान की।

पुश्किन ने इसे अपना प्रथम विश्वविद्यालय कहा और बेलिन्स्की ने इसे रूसी साहित्य का पिता तथा रूसी साहित्य का पीटर महान् कहा।

६. देनिस इवानोविच फानवीज़िन

[१७४५-१७९२]

(फानवीज़िन व्यंग्यकार, नाटककार और निबन्ध-लेखक है। उसकी गिनती अठारहवीं शती के महान् लेखकों में है।)

बचपन और शिक्षा

फानवीज़िन का जन्म १४ अप्रैल सन् १७४५ में हुआ। नाटक और रंगमंच के प्रति उसके हृदय में आकर्षण मास्को विश्वविद्यालय के 'जिमनेज़ियम' (पाठशाला) में पढ़ते हुए ही जाग गया था। सन् १७६० में विश्वविद्यालय का डाइरेक्टर इस 'जिमनेज़ियम' के सबसे अच्छे विद्यार्थियों को पीतरबुर्ग ले गया। फानवीज़िन भी इन्हीं में था। वहाँ उसे लमनोसोव से मिलाया गया। उसे वहाँ के राजप्रासादों को देखने का अवसर मिला तथा उसने राजकीय अभिनय देखा। अभिनय तथा कलाकारों की बातचीत ने रंगमंच तथा नाटकों के प्रति उसके बाल-हृदय में बड़ी उत्सुकता तथा रुचि उत्पन्न कर दी।

पाठशाला के बाद मास्को विश्वविद्यालय में दाखिल होने पर वह अभिनयों में भाग लेता रहा। वह विश्वविद्यालय के पत्र 'ज्ञानकारी मनोरंजन' का सम्पादक हो गया। पढ़ने के साथ वह साहित्यिक अनुवाद में भी लगा।

व्यंग्य की प्रवृत्ति उसमें बहुत जल्दी लक्षित हुई। अपनी व्यंग्यात्मक कृतियों में उसने बड़े साहस से अभिजात वर्ग तथा धार्मिक समाज की रूढ़ियों की हँसी उड़ाई है तथा आलोचना की है। उसकी व्यंग्यात्मक कविता 'अपने सेवकों, शूमिलोव, वान्का और पेत्रुश्का को संदेश' बहुत प्रसिद्ध हुई। फानवीज़िन अपने साथ बराबर घूमनेवाले इन सेवकों से पूछता है कि 'जीवन कैसा है?' वे सेवक, जो कि अपने मालिक के साथ [illegible] के शासक तथा बड़े-बड़े लोगों के घरों को देख चुके हैं, जवाब देते हैं कि

'लोगों का जीवन निरर्थक तथा खोखला है। सब एक दूसरे को धोखा देते हैं और अपनी जेबें भरने की कोशिश में लगे हैं। चर्च का पोप जनता को धोखा देता है। दरबार के नौकर सामन्तों को, और 'बयार' राजा को धोखा देना चाहते हैं।' इस उत्तर के माध्यम से फानवीज़िन अपने समय के समाज का बड़ा व्यंग्यपूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है।

कमेडी ब्रिगेडियर

फानवीज़िन की सर्जना का महत्वपूर्ण चरण उसकी 'कमेडी ब्रिगेडियर' है। यह पहली रूसी कमेडी है। इसमें लेखक ने पुरानी पीढ़ी की अज्ञानता और नवीन पीढ़ी के बाहरी यूरोपीय भद्दे दिखावे तथा नीमहकीमी की खबर ली है। इसका मुख्य पात्र प्रत्येक फ्रांसीसी वस्तु के सामने सिर झुकाता है और उनकी अंधी उपासना करता है।

इस कमेडी का अभिनय हुआ और इसे बहुत बड़ी सफलता मिली। इसके अभिनय के बाद उसकी पानिन से मित्रता हुई जो कि उस समय का लिबरल राजनीतिक कार्यकर्ता था। पानिन लिबरल अभिजात-विरोधी दल का नेता था जो कि दास संबंधी अधिकारों तथा निरंकुशता को सीमित करना चाहता था। पानिन के संसर्ग से फानवीज़िन में भी उदार राजनीतिक विचारों का विकास हुआ और वह दरबारी रीति-रिवाजों, अशिक्षा आदि की बराबर व्यंग्यात्मक आलोचना करता रहा। पानिन के साथ फानवीज़िन ने राजनीतिक लेख (रूस में हर प्रकार के शासकीय संचालन का अन्त) लिखा और उसमें अत्याचार, पक्षपात तथा दास-प्रथा की नृशंसता का दिग्दर्शन कराया।

विदेश यात्रा

फानवीज़िन ने फ्रांस, जर्मनी, इटली आदि यूरोप के कई देशों की यात्रा की और अपनी इस विदेश-यात्रा के बीच उसने जो कुछ देखा उसका पत्रों में वर्णन किया। इन पत्रों में उसने उन देशों में जो कुछ अच्छा देखा उसका उल्लेख किया और रूसी जीवन की इन देशों के जीवन के साथ तुलना की। साथ ही रूस के अभिजात वर्ग द्वारा प्रत्येक विदेशी वस्तु की प्रशंसा और उसके प्रति मानसिक गुलामी की आलोचना की। इस समय

ई व्यंग्यात्मक लेख ('रूसी अभिजात वर्ग का अनुभव', 'अभि-
का सामान्य व्याकरण', 'प्रदन') लिखे जिनमें अभिजात वर्ग
तेरीना के प्रिय पात्रों तथा दरबार की व्यंग्यात्मक आलोचना
थी।

व्यंग्यात्मक कृतियों से साम्राज्ञी यक्तेरीना द्वितीय बड़ी क्रुद्ध
उसने उसका आगे छपना बन्द करा दिया।
विज़िन की सबसे महत्त्वपूर्ण और विख्यात कृति उसकी कॉमेडी
। नेदरस्ल का रूसी में अर्थ है जिसका विकास न हुआ हो
म 'मूर्ख' है। इसकी रचना में उसने बारह वर्ष लगाये।

ल' (मूर्ख)

ी में उसने उस युग की अत्यन्त महत्वपूर्ण समस्याओं
से अत्यन्त विषम समस्याएँ हैं जमींदारों का अपने अधि
ग, दास-किसानों पर अत्याचार, अभिजात वर्ग के न
शिक्षा का अभाव, जिसके फलस्वरूप उनका जीवन
रहा है और उनके बच्चे मूर्ख, अशिष्ट, आलसी तथा
।

त्र 'मित्रफ़ानुष्का' के रूप में जमींदारों के अशिक्षित
का चित्रण किया गया है जिनको या तो शिक्षा ही
क पुराने ख्याल के लोग जमींदारों के बच्चों के
समझते हैं और यदि शिक्षा का प्रबंध भी किया
क उपयुक्त नहीं होते और उन बच्चों का ज्ञान
मूर्ख, आलसी और अशिष्ट बने रहते हैं। मित्रोफ़ान
है और उसने कुछ भी न सीखा, उसे केवल
का शौक़ है। उसमें बेहद अहंमन्यता है और
कर वह भी अत्याचारी ही बनेगा। मित्रोफ़ान
हुए मूर्ख अशिष्ट बालक का पर्याय बन गया।

प्रस्ताकोवा

प्रस्ताकोवा और स्कोतीनिन ठेठ जमींदारों के प्रतिनिधि हैं। प्रस्ताकोवा (शाब्दिक अर्थ है वज्रमूर्खा) इस नाटक की मुख्य पात्र है। वह स्वयं अशिक्षित है और अपने दास किसानों के प्रति अत्यन्त कठोर है। वह जमींदारों के बच्चों के लिए शिक्षा अनावश्यक समझती है। फिर भी वह अपने लड़के 'मित्रोफ़ान' को बहुत चाहती है और उसके लिए शिक्षा का प्रबंध भी करती है। किन्तु अनुपयुक्त शिक्षक, वातावरण तथा लाड़-दुलार में वह कुछ भी न पढ़ सका और धृष्ट तथा निठल्ला मूर्ख ही बना रहा। अपने दास किसानों पर अत्यधिक अत्याचार करने के कारण वह अधिकार-वंचित कर दी जाती है। इस अशिक्षा का कुपरिणाम उसे स्वयं भोगना पड़ता है। जब दुःख में अनिभूत सांत्वना की आशा में वह अपने पुत्र की ओर मुड़ती है, जिसे कि वह बेहद चाहती है तो वह उसे अशिष्टता से धक्का देकर उससे विमुख हो जाता है।

स्कोतीनिन

स्कोतीनिन (शाब्दिक अर्थ पशु या ढोर) भी इसी प्रकार का जमींदार है जो अत्याचारी और धूर्त दोनों है। उसकी सबसे बड़ी विशेषता सूअरों से अत्यधिक प्रेम है। वह सोफ़िया से शादी इसलिए नहीं करना चाहता है कि वह उसे अच्छी लगती है, वरन् इसलिए कि उसके गाँव में सूअरों का पालन अच्छी तरह होता है। इस पात्र के माध्यम से फ़ानवीज़िन यह प्रकट करना चाहता है कि दास-अधिकार ने इन शिक्षाविहीन जमींदारों को बिलकुल पशु बना दिया है।

सत्पात्र

इस नाटक में सत्पात्र भी हैं, यद्यपि उनका चित्रण उतना रोचक तथा चटकीला नहीं हुआ है। वे हैं स्तारोदूम (प्रौढ़ विचार), प्राव्दिन (सत्य), मिलोन (कृपालु), प्रव्दोन (ईमानदार)। फिर भी इनके माध्यम से युग की समस्याओं पर नाटककार के विचार व्यक्त हुए हैं और उस युग की प्रगतिशील विचारधारा का संकेत दिया गया है और

बताया गया है कि वास्तव में जमीदारों का जीवन कैसा होना चाहिए। उस युग के प्रगतिशील लोगों के बीच शिक्षा के संबंध में, जमीदारों के अत्याचार के संबंध में तथा ईमानदारी के साथ देशसेवा की आवश्यक के संबंध में 'स्तारोदुम' के विचारों को बड़ा समर्थन प्राप्त हुआ। इ प्रकार अभिजात वर्ग के या उच्च समाज के प्रगतिशील वर्ग का चित्रण क फानवीज़िन ने अशिक्षित अभिजात जमीदार की निरंकुशता के विरुद्ध रूसी समाज के प्रगतिशील वर्ग द्वारा संचालित संघर्ष का आभास दिया और उसका समर्थन किया।

उच्च वर्ग की तीखी आलोचना तथा नाटक के दासविरोधी दृष्टि- कोण एवं गतिविधि के कारण फानवीज़िन की इस कमेडी का रूप तेज राजनीतिक व्यंग्य का हो गया। स्कोतीनिन के समान जमीदार पात्र चित्रण में हास्यात्मक अतिशयोक्ति का उपयोग किया गया है और दा की कठोरताओं का व्यापक चित्र प्रस्तुत किया गया है जिस पर हंसी आती है और (देश की अधःपतित स्थिति का ध्यान कर) दुःख भी है।

'नेदरस्ल' रूस में यथार्थवादी कमेडी के विकास के इतिहास की पूर्ण मंज़िल है। रूसी रंग-मंच के विकास में भी इसका बड़ा है।

दरस्ल अठारहवीं सदी की श्रेष्ठ कमेडी है। इसी की परंपरा लकार ग्रिबयेदव की कमेडी 'बुद्धिमान का दुःख' का विकास हुआ में गोगोल का 'इन्स्पेक्टर' लिखा गया और बाद में अस्त्रोवस्की प्रस्तुत किये गए।

ता, अशिक्षा आदि का विरोध करने के कारण तथा प्रगतिशील का पक्ष लेने के कारण पुश्किन ने उन्हें 'स्वतंत्रता का बन्धु'

सन् अस्सी के वर्षों ने रदीश्चेव दार्शनिक, पत्रकार तथा लेखक के रूप में सामने आया और अपनी कृतियों मे किसान-विद्रोह के विचारों का प्रचार करने लगा। कलात्मक तथा राजनीतिक-सामाजिक दृष्टि से उनकी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा विख्यात कृतियाँ 'स्वतन्त्रता' (ओड) तथा 'पीतरबुर्ग से मास्को की यात्रा' है।

स्वतन्त्रता

'स्वतन्त्रता' कविता मे कवि रदीश्चेव क्रान्ति का आवाहन कर रहा है तथा उसकी प्रशंसा कर रहा है। इसमे ज़ार के विरुद्ध जन-विद्रोह का विचार प्रस्तुत किया है। यह 'ओड' रूस की पहली क्रान्तिकारी कविता है।

'पीतरबुर्ग से मास्को की यात्रा'

१७९० मे रदीश्चेव ने 'पीतरबुर्ग से मास्को की यात्रा' छपायी। सम्राज्ञी एकातेरिना द्वितीय ने इसे पढ़कर कहा कि इसका लेखक पुगाचोव से भी अधिक खतरनाक विद्रोही है। रदीश्चेव को पीतर पाव्लॉस्क के किले मे बंद कर दिया गया और उसे मृत्यु की सजा सुनायी गयी। बाद में जनमत से भयभीत होकर मृत्युदण्ड साइबेरिया-निर्वासन मे बदल दिया गया। एकातेरिना ने आदेश दिया कि यह पुस्तक कहीं भी न बिके जिससे कि लेखक का नाम विस्मृत हो जाय। किंतु जनता ने उसे और भी दूने उत्साह से अपनाया और केवल इस पुस्तक को पढ़ने के लिए लोगों ने बहुत अधिक पैसा खर्च किया।

रदीश्चेव जानता था कि यदि वह क्रान्तिकारी विचारों से युक्त कोई पुस्तक लिखेगा तो वह रूस मे न छप सकेगी। इसलिए उसने अपनी कृति को यात्रा-पुस्तक का रूप दिया और उसके विभिन्न अध्यायों को पीतरबुर्ग से मास्को के बीच पड़नेवाले स्टेशनों का नाम दिया। करमज़ीन की यात्रा-पुस्तक 'रूसी यात्री के पत्र' इसके पहले छप चुकी थी।

किंतु रदीश्चेव की यह कृति सामान्य यात्रा विवरण नहीं है, जिसमें कि लेखक प्रायः स्थलविशेष या प्राकृतिक सौन्दर्य चित्रित किया करते हैं। इसमे जनता के दुःख तथा पीड़न का चित्र है। ज़मींदारों की धाँधली का अंकन है तथा रूस के निरंकुश शासन की बुराइयों का दिग्दर्शन है। इसमें

दास-किसानों के कठोर परिश्रम, दरिद्रता और भूख का तथा शाही दरबार में उच्चाधिकारियों के छल-कपट, खुशामद, झूठ, बेईमानी आदि का नग्न चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार इस रचना में रदीश्चेव ने कई महत्वपूर्ण प्रश्न—जमींदारों तथा किसानों के पारस्परिक संबंध, ज़ार तथा जनता के बीच का संबंध नैतिकता, शिक्षा आदि की समस्या—उठाये हैं, जिन्होंने रूसी समाज के प्रगतिशील लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। रदीश्चेव की इस कृति में अठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध के रूसी समाज का जीवन प्रस्तुत किया गया है और उसकी दुरवस्था का दिग्दर्शन कराया गया है तथा रूस की दुर्दशा के मूल निरंकुश शासन पर निर्मम प्रहार किया गया है। लेखक निरंकुशता को स्वेच्छाचारी व्यवस्था बताता है और कहता है कि इसके बीच दासता अन्याय, पीड़न तथा नाश फलते-फूलते हैं। रदीश्चेव का विश्वास है कि ऐसी व्यवस्था अधिक समय तक नहीं टिक सकती और इसका अन्त करना आवश्यक है। रदीश्चेव इसी या क्रान्ति के लिए रूसी जनता का आवाहन करता है।

रदीश्चेव और उसकी कृतियों का समस्त प्रगतिशील रूसी साहित्य पर बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा है। इनसे प्रेरणा पाकर दिकब्रिस्ट ने अपनी कविताएं रचनी लिखीं। रदीश्चेव के विचारों का रायेव, पुश्किन, लेरमन्तोव आदि की रचना पर प्रभाव है और क्रान्तिकारी दिकाब्रिस्टों के निरंकुश शासन का पतन का प्रयत्न भी इसी से अनुप्राणित था।

दासप्रथा के बीच तड़पती हुई रूसी जनता के जीवन का यथार्थ अंकन प्रस्तुत कर रदीश्चेव ने रूसी साहित्य के विकास की नयी दिशा निर्धारित की। वह नयी दिशा आलोचनात्मक यथार्थवाद की है।

एकातेरिना की मृत्यु के बाद उस निर्वासन के कारण साइबेरिया की अनुमति मिली और वह निकोलाई कुमार के आवास (मस्कोवा) में निर्वासित किया गया। मस्कोव में काम करते हुए उसने विधानों की विधि सुधार का प्रस्ताव किया, इस कारण अधिकारी उससे नाराज़ हो गये और उसके विरुद्ध कार्रवाई करने लगे। दुबारा फिर निर्वासन की आशंका पर, उसने ११ सितम्बर १८०२ को ज़हर खा लिया और उसकी मृत्यु हो गयी।

८. उन्नीसवीं शती

दिकाब्रिस्टों का आन्दोलन और उन्नीसवीं शती के पूर्वार्ध के रूसी साहित्य में उनके विचारों की अभिव्यक्ति।

प्रगतिशील रूसी साहित्य का विकास स्वतन्त्रता आंदोलन के विकास के साथ बड़े घनिष्ठ रूप से संबंधित रहा है। रूस के स्वतन्त्रता आंदोलन की जो तीन मंजिलें लेनिन द्वारा निर्धारित की गयी हैं, वे हैं प्रथमतः अभिजात वर्ग का आंदोलन (१८०५ से १८२७), द्वितीय बुर्जुआ आंदोलन (१८६१ से १८९५) और तृतीय प्रोलितारियत या सर्वहारा वर्ग का आंदोलन।

अभिजात वर्ग का आंदोलन रूस के निरंकुश शासन के विरुद्ध प्रथम क्रांतिकारी राजनीतिक संघर्ष था और इसी में उसका महत्त्व है। निरंकुशता तथा दासप्रथा के विरुद्ध संचालित इस क्रांतिकारी संघर्ष का मूल रूसी राष्ट्रीय चेतना थी जिसे कि सन् १८१२ के (नैपोलियन से) युद्ध ने जगाया और विकसित किया।

सन् १८१२ के युद्ध ने रूसी जनता की राष्ट्रीय भावना को और भी पक्का बना दिया। इस युद्ध में रूसी जनता न केवल विजयिनी हुई वरन् उसने दूसरे देशों की जनता को नैपोलियन की पराधीनता से मुक्त किया। फिर भी सबसे बड़ी विषमता यह थी कि अन्य देशों को नैपोलियन के अधिकार से मुक्ति दिलानेवाली रूसी जनता स्वयं ज़ार के निरंकुश शासन में तड़प रही थी। वह दासता के बंधनों में जकड़ी हुई थी और राजनीतिक स्वाधीनता से वंचित थी।

जमींदार तथा शासक वर्ग की धांधली तथा दास-किसान-अधिकारों के विरुद्ध जनता का असंतोष नैपोलियन-युद्ध के बाद किसान-विद्रोहों के रूप में प्रकट हुआ; किन्तु यह अचेतन विस्फोट के रूप में था। दासाधिकार तथा निरंकुशता के विरुद्ध पहला चेतन संघर्ष उन लोगों का था जो कि

अभिजात वर्ग के चिंतनशील तथा प्रगतिशील पक्ष के प्रतिनिधि थे। इस पक्ष को देश के राजनीतिक तथा आर्थिक निम्न स्तर का स्पष्ट ज्ञान था और वह अच्छी तरह समझता था कि दासाधिकार तथा निरंकुशता देश के विकास के सबसे बड़े अवरोध हैं। फलत उन्होंने शासन की निरंकुशता और सामन्तवादी दासाधिकारी स्तर के विरुद्ध संघर्ष छेड़ दिया।

सन् १८१२ के युद्ध द्वारा प्रबुद्ध राष्ट्रीय चेतना के ऐसे उद्वेलित वातावरण के बीच रूस के स्वतन्त्रता आंदोलन का जन्म और विकास हुआ।

दिकाब्रिस्टों की खुफिया सभा

अभिजात वर्ग के क्रांतिकारियों ने इस युद्ध के बाद शीघ्र ही खुफिया संगठन शुरू किया। उनके इस पहले संगठन का नाम 'पितृभूमि के सच्चे और वफ़ादार बेटों का संघ' था। सन् १८१६ में पीतरबुर्ग में 'रक्षा-समिति' बनी। १८१८ में 'समृद्धि संघ' बना। इसके टूटने के बाद तुलचिना में 'दक्षिणी सभा' और पीतरबुर्ग में 'उत्तरी सभा' बनी।

दिकाब्रिस्ट निरंकुशता तथा दासाधिकार का अन्त करना चाहते थे और उसकी जगह नयी प्रगतिशील व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे। 'दक्षिणी सभा' रूस में रिपब्लिक स्थापित करना चाहती थी किंतु 'उत्तरी सभा' राजा के अधिकारों को नियम द्वारा सीमित करना चाहती थी। फिर भी ये दिकाब्रिस्ट जनता की दासाधिकार-विरोधी भावना को प्रतिबिम्बित करते हुए भी जनता से दूर थे। उनका यह संघर्ष जन-आंदोलन न था, इसी से उनकी क्रान्ति में व्यापकता का अभाव था और वह अत्यन्त सीमित थी।

१४ दिसम्बर १८२५ में दिकाब्रिस्टों ने पीतरबुर्ग में सशस्त्र क्रांति शुरू की जिसमें उनकी पराजय हुई। रील्येव पेस्तेल, मुराव्योव-अपोस्तल, काखोव्स्की, बेस्तूजेव र्यूमिन जैसे प्रधान दिकाब्रिस्टों को मृत्यु-दंड मिला और सौ से अधिक दिकाब्रिस्ट साइबेरिया निर्वासित कर दिये गये।

दिकाब्रिस्टों के विचारों की साहित्यकारों की सर्जना में अभिव्यक्ति

यद्यपि दिकाब्रिस्टों की पराजय हुई और जारशाही ने उनका क्रूरता से दमन किया किन्तु उनके विचार किसी भी तरह दबाये न जा सके। तत्कालीन युग के प्रगतिशील साहित्यकारों ने उनके स्वतन्त्रताप्रेमी और निरंकुशता तथा दासता-विरोधी विचारों का स्वागत किया और उनको कलात्मक अभिव्यक्ति दी। ऐसे लेखकों में पुश्किन, रील्येव, ग्रिबयेदोव आदि मुख्य हैं।

पुश्किन यद्यपि दिकाब्रिस्टों की गुप्त सभा का सदस्य न था फिर भी उसका उनके साथ घनिष्ठ संबंध था। पुश्किन के प्रगीत मुक्तकों में दिकाब्रिस्टों के विचारों—क्रान्तिकारी देशभक्ति, स्वतन्त्रता के आह्वान, दासाधिकार तथा अत्याचार के विरोध की पूरी पूरी अभिव्यक्ति मिलती है और उसकी प्रौढ़ कृतियों में जन-जीवन के साथ पूरी घनिष्ठता है। जनसंपर्क का अभाव नहीं है जो दिकाब्रिस्टों की लोकदृष्टि की बड़ी कमी थी। दिकाब्रिस्टों के विचारों से सिक्त पुश्किन की सर्जना का लरमेन्तोव तथा गोगल की लोक-दृष्टि की रचना में बहुत बड़ा हाथ

पुश्किन के समान ग्रिबयेदोव की भी दिकाब्रिस्टों के साथ बड़ी थी। अपने विचारों के प्रचार के लिए दिकाब्रिस्टों ने उसकी 'चतुराई से दुःख' का व्यापक उपयोग किया, क्योंकि ग्रिबयेदोव ने दासाधिकारी स्तर पर व्यंग्य किया था और इसके विरुद्ध संघर्ष का संकेत दिया था। इसका मुख्य नायक चात्स्की दिकाब्रिस्टों के का अभिवक्ता है।

रील्येव 'उत्तरी सभा' का नेता था। निरंकुशता पर उसका कुठाराघात उसका व्यंग्यात्मक ओड 'प्रिय पात्र को' था। इसमें जार के प्रिय पात्र, उसके अत्यन्त प्रतिक्रियावादी मंत्री अरकचे कटु व्यंग्यपूर्ण आलोचना की थी। रील्येव ने ऐतिहासिक विषयों कविताएँ लिखीं जिनको उसने विचार कहा। इनमें से 'एर मृत्यु' लोकगीत बन गया और 'इवान सुसानिन' से प्रेरणा पाक ने 'इवान सुसानिन' नाम का आपेरा बनाया। उसके काव्य

नाटकों' में विदेशी पराधीनता के विरुद्ध युक्रेन के देशभक्त नायिकाओं का संघर्ष दिखाया गया है। इनके अतिरिक्त नागरिकता की उच्च भावना से पूर्ण उनके कई प्रगीत मुक्तक हैं। उन्होंने न्यायप्रियता के आदर्श पर कतिपय गीतों की भी रचना की।

दिसम्बरिस्टों के विचारों की सबसे अधिक कलात्मक अभिव्यक्ति उनकी कविता 'नागरिक' में हुई है जिसे उसने दिसम्बरिस्ट क्रान्ति के उपक्रम पर लिखा था। उसमें उसने निरंकुशता के विरुद्ध तथा व्यक्ति की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष का आह्वान किया है। दिसम्बरिस्टों के विचारानुसार साहित्य का काम नागरिकों को शिक्षा देना है और उनमें उच्च भावनाएँ जगाना है। रिलेयेव ने लिखा 'मैं कवि नहीं, नागरिक हूँ।' क्रान्तिकारी देश-भक्ति, स्वतन्त्रता के आह्वान, निरंकुशता की आलोचना आदि की दिसम्बरिस्टों के गद्य तथा पद्य में पूरी अभिव्यक्ति मिलती है। इससे उन्नीसवीं शती के सन् बीस के वर्षों के उन अन्य प्रगतिशील लेखकों को भी प्रेरणा मिली जो गुप्त सभाओं के सदस्य न थे।

दिसम्बरिस्ट लेखकों तथा कविता की समेकता रूसी साहित्य की एक नयी प्रवृत्ति—रोमांटिसिज्म से सम्बन्धित है जिसे निष्क्रिय या रूढ़िगत रोमांटिसिज्म के प्रतिरूप में प्रगतिशील या क्रान्तिकारी रोमांटिसिज्म कहते हैं। इस प्रगतिशील रोमांटिसिज्म के लेखकों ने क्लासिसिज्म के स्वच्छन्दता-विरोधी नियमों का विरोध किया और साथ ही अभिजात वर्ग और उसकी विचारधारा का भी विरोध किया जिससे कि क्लासिसिज्म का समर्थन प्राप्त होता था। उन्होंने निष्क्रिय रोमांटिसिज्म का भी विरोध किया जिसके समर्थक (जैसे जुकोव्स्की, बत्यूश्कोव आदि) जीवन से दूर हटने वाले, अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों में लीन रहनेवाले, उसमें मन के अन्तर्जगत का चित्र प्रस्तुत करते थे।

दिसम्बरिस्टों की पराजय के बाद प्रतिक्रिया और दमन का युग शुरू हुआ जिसमें स्वतन्त्र या ऊँचे विचारों को व्यवहार में दबा दिया। इस समय केवल पुश्किन की जादुभरी आवाज गूँजती रही जिसमें दिसम्बरिस्टों के विचारों के अनुरूप स्वतन्त्रता के आह्वान का आशावादी स्वर था।

पुश्किन के जीवन के अंतिम चरण में स्वतन्त्रता के सेनानियों की न
पीढ़ी सामने आ गयी। यह पीढ़ी क्रांतिकारी 'डिमोक्राटों' की थी जि
दिकाब्रिस्टों की क्रान्तिकारी परंपरा विरासत में मिली और जिसने
व्यापक तथा गंभीर बनाया। इसका प्रसिद्ध प्रतिनिधि बेलिंस्की
पुश्किन के प्रभाव तथा बेलिंस्की के समर्थन से दिकाब्रिस्ट युग के
लेरमन्तोव तथा गोगल की प्रतिभा का विकास हुआ। लेरमन्तोव
बस्था में ही दिकाब्रिस्ट कवियों की कविताओं से परिचित था और बा
उनसे कारावास में मिला था। अदोयेव्स्की से उसकी मित्रता भी
लेरमन्तोव की रचनाओं में दिकाब्रिस्ट भावों की अन्तिम तथा गंभी
मिलती है। बाद में पुश्किन के समान वह भी क्रांतिकारी रोमांटि
में यथार्थवाद की ओर चला आया।

इसी प्रकार गोगल ने भी निकोलस के प्रतिक्रियावादी युग के
स्वतन्त्रता-संघर्ष की परंपरा को बनाये रखा। अपनी कहानियों
नाटक 'मृत आत्मा' में उसने रूस के दासाधिकारी स्तर की जघन्य
जमींदार और शासनाधिकारियों के मानसिक सारहीनता का न
प्रस्तुत किया। उसकी व्यंग्यात्मक शैली में रूस में उठी हुई उ
प्रगतिशील पीढ़ी की शक्ति थी जो रूढ़िवादी स्तर तथा निरं
समर्थकों को चुनौती दे रही थी।

क्रीलोव तत्कालीन नाटक के अभिनेता दिमित्रियेव्स्की के सम्पर्क में आया और उसने नाटककार बनने का निश्चय किया।

आरम्भिक कृतियाँ

इस बात की सभावना प्रकट की जाती है कि चौदह वर्ष के क्रीलोव ने हास्यप्रधान आपेरा 'काफी की चक्की' लिखी जिसमें अधिकारविहीन किसानों का चित्रण तथा दासताविरोधी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया था। उसकी यह कृति न छपी और न रंगमंच पर इसका प्रदर्शन हुआ।

इसके बाद उसने क्लासिकल ट्रेजेडी 'क्लिओपात्रा' लिखी किन्तु दिमित्रियेव्स्की द्वारा समर्थित न होने के कारण क्रीलोव ने स्वयं इसे नष्ट कर दिया।

क्रीलोव ने १७८६-८८ में दो कामिक आपेरा 'पागल परिवार' तथा 'अमेरिकन' लिखे किन्तु कलात्मक दृष्टि से यह उच्च कोटि के नहीं माने जाते। फिर भी यह समकालीनों के नाटकों से खराब नहीं हैं। क्रीलोव अपनी 'कॉमेडियों' में अभिजात वर्ग की बुराइयों की—उनकी अज्ञानता, फ्रांसीसी वस्तु तथा विचार की गुलामी, राष्ट्रीय भावना के अभाव, फिजूलखर्ची आदि की हँसी उड़ाता है। उनमें नौकर मालिकों से अधिक बुद्धिमान् चित्रित किये गये हैं जो कि अपने मूर्ख मालिकों को बेवकूफ बनाते रहते हैं।

पत्रकारिता

बीस वर्ष के इस नवयुवक लेखक ने इसके बाद पत्रकारिता आरम्भ की। चार वर्ष तक (१७८९-१७९३) वह व्यंग्यात्मक पत्रों के प्रकाशन में लगा रहा। उसके तीन पत्र 'आत्मिक डाकखाना', 'प्रेक्षक', 'पीटर-बुर्ग मर्करी' निकले।

'आत्मिक डाकखाना' लेखों का संग्रह है जो पत्रों के रूप में है। यह पत्र पाताल, पानी और हवा में रहनेवाली आत्माओं के जादूगर 'मलिकुल-मुल्क' को लिखे गये पत्र हैं जो सब जगह जा सकते हैं और सब कुछ देखते हैं। इनमें व्यंग्यात्मक ढंग से तत्कालीन दास प्रथाओं [illegible] तथा नौकरशाही का चित्रण हुआ है।

'प्रेक्षक' पत्र में उसकी व्यंग्यात्मक प्रतिभा का विकास और भी देखने को मिलता है। इस पत्र में उसकी लिखी गयी कृतियों में से 'कैब' और 'बाबा का मरसिया' अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। 'कैब' में अन्योक्तिपूर्ण कथा के माध्यम से ज़ार की निरंकुशता पर बड़ा ही मार्मिक आक्षेप किया गया है और यह दिखाया गया है कि ज़ार अपने वज़ीरों पर निर्भर रहता है और प्रजा इन वज़ीरों के अत्याचार से कराहा करती है। 'बाबा का मरसिया' में सामान्य ज़मींदारों का व्यंग्यात्मक चित्र प्रस्तुत किया गया है। रूस के व्यंग्यात्मक साहित्य में क्रीलोव की इस कृति का बड़ा उच्च स्थान है।

१७९२ में पुलिस ने उसके प्रेस की तलाशी ली। कोई पक्का सबूत न मिलने के कारण उस पर अभियोग न चलाया गया, लेकिन पुलिस उस पर निगरानी रखने लगी। बाद में यह पत्र बंद हो गया। यह कठिन समय था। आत्म-रक्षा के लिए उसने राजधानी छोड़ दी और प्रांतों में बिना किसी साधन तथा संरक्षण के घूमने लगा। १८०० में उसने निरादृत राजकुमार गलीत्सिन के परिवार में शिक्षक की नौकरी कर ली और उसने कई नाटक प्रस्तुत किये।

बास्न्या

१८०६ से वह अन्योक्तिपूर्ण पद्यात्मक लघु कथाएँ 'बास्न्या' लिखने लगा, जिनके पात्र पशु-पक्षी हैं और जिनसे कोई-न-कोई नैतिक शिक्षा प्राप्त होती है। क्रीलोव की ये 'बास्न्या' व्यंग्यात्मक, नैतिक तथा अन्योक्तिपूर्ण हैं। इनमें उस समय के सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक और घरेलू जीवन के सभी वर्ग और कोटि—ज़ार, शासनाधिकारी, अभिजात वर्ग, सौदागर, किसान आदि—का स्पष्ट चित्रण है। इनमें प्रस्तुत जीवन-पर्यवेक्षण, जीवन-अभिव्यंजना, व्यंजक-यथार्थता, भाषा की सजीवता और समास-शक्ति ने क्रीलोव की 'बास्न्या' को कला के उच्च स्तर पर पहुँचा दिया। क्रीलोव के जीवन काल ही में इनका व्यापक प्रचार हो गया और इन्होंने उसे विश्वख्याति प्रदान की। यूरोप की कई भाषाओं में इनका अनुवाद हुआ।

कि रूस में भविष्य के दिकाब्रिस्टों की 'गुप्त सभाएं' शुरू हो गयी । यद्यपि वह दिकाब्रिस्टों की सभाओं का सदस्य न था, फिर भी उनके ष्टिकोण और विचारों से उसे सहानुभूति थी । एक व्यक्तिगत घटना न्द्व युद्ध में साथी के रूप में विद्यमान रहने के कारण जिसमें एक की त्यु हुई) के कारण उसे राजनीतिक मिशन का सेक्रेटरी बनाकर ईरान ज दिया गया । पीतरबुर्ग का जीवन समाप्त हो गया । इन्हीं वर्षों में समने 'चतुराई से दु:ख' कमेडी लिखने की सोची ।

'चतुराई से दु:ख' कमेडी

ईरान में रहते हुए वह तिफिलस प्राय: आता था । तिफिलस में उसने इस कमेडी के दो अंक पूरे किये और उसे अपने साथी दिकाब्रिस्ट कवि क्यूखेल बेकर को सुनाये । १८२३ में उसे छुट्टी मिली और उसने दो वर्ष पीतरबुर्ग तथा मास्को में बिताये । इस समय उसने अपनी यह कमेडी पूरी कर ली ।

उसने अपनी यह कमेडी अपने मित्रों तथा परिचितों को सुनायी थोड़े समय में इसकी हस्तलिखित प्रतियां सारे देश में फैल गयीं । प्रग नता के समर्थकों को इसमें अपना व्यंग्य-चित्र मिला और उन्होंने इ जब्त करने की बात उठायी और दिकाब्रिस्टों ने उसका समर्थन कि क्योंकि इसमें उन्हें निरंकुशता तथा दासता विरोधी अपने विचारों झलक मिली ।

किन्तु ग्रिबयेदोव अपने जीवनकाल में न इसका मुद्रण और न इस रंगमंच पर अभिनय ही देख सका । सन् १८३३ में यह पहली बार छ इसके पहले ही ईरान में उसकी हत्या कर दी गयी ।

१८२६ में उसे दिकाब्रिस्टों के साथ अभिसंधि के संदेह में गिरफ़ कर लिया गया । उसके मित्र जेनरल येर्मोलोव ने उसे गिरफ़्तारी से ऐसे कागजों को जला डालने का अवसर दिया । कुछ महीने बा मुक्त कर दिया गया और अपनी नौकरी पर चला गया ।

रूसी-ईरानी युद्ध के बाद वह ईरान में रूस का राजदूत बनाकर भेजा गया । रूस की राजनीति से असंतुष्ट तेहरान के मुल्लाओं ने १८२९

मे रूसी राजनीतिक मिशन पर हमला किया। ११ फरवरी १८२९ को दूतावास के सभी सदस्य (केवल एक को छोड़कर) मार डाले गये। इन मृतको मे ग्रिबयेदेव भी था। उसका शव तिफ्लिस लाया गया और वही दफनाया गया।

ग्रिबयेदेव की कमेडी 'चतुराई मे दुख' रूसी साहित्य का अनुपम रत्न है। उसका उच्च वस्तु तत्व, युक्तियुक्त-चित्रण, चुस्त भाषा, और सुन्दर कविता इन सब ने इसे रूस मे अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया।

'चतुराई से दुःख' कमेडी का वस्तु तत्त्व

इस कमेडी का मूलभूत विचार प्राचीन तथा नवीन विचारधारा का संघर्ष है। इसमे अभिजात वर्ग के उन प्रतिनिधियो पर तीक्ष्ण व्यग्य है जो रूढ़िवादी हैं, जो दासाधिकार को बनाये रखना चाहते हैं और जो शिक्षा, प्रगतिशीलता आदि के कट्टर विरोधी है।

फामुसोव

इनका सबसे बडा प्रतिनिधि फामुसोव और उसके साथी स्कालाजूबोव (दाँत किटकिटाने वाला), मल्चानिन (चुप्पा) हैं। फामुसोव के जीवन का लक्ष्य किसी न किसी तरह अमीरी तथा पदवी-प्राप्ति, अपने बच्चो की अमीरो से शादी और आनन्दमय जीवन है। वह विगत युग का समर्थक और नवीन विचारो का कट्टर शत्रु है।

इसी प्रकार स्कालोज्ब प्रतिक्रियावादी मत्री अरकचेयेव का समर्थक है, निरकुशता तथा दासाधिकार का पक्षपाती है और शिक्षा का विरोधी है।

मल्चानिन अफसरो की खुशामद करता रहता है। वह उन लोगो का प्रतिनिधि है जो नौकरी का मतलब, ईमानदारी से काम करना नही वरन् अफसर की ताबेदारी समझते है और इस प्रकार ऊपर उठते हैं। वह सोफ़िया से प्यार नही करता किन्तु प्यार का ढोग रचता है क्योकि वह अमीर की लड़की है और वह उससे शादी करना चाहता है।

चात्स्की

फामुसोव के प्रतिपक्ष में चात्स्की का चित्र है जो प्रगतिशील व्यक्ति और भविष्य के दिकाब्रिस्ट का चित्र है। वह अभिजात वर्ग के प्रगतिशील

जब कि रूस में भविष्य के दिकाब्रिस्टों की 'गुप्त सभाएँ' शुरू हो गयी थीं। यद्यपि वह दिकाब्रिस्टों की सभाओं का सदस्य न था, फिर भी उनके दृष्टिकोण और विचारों से उसे सहानुभूति थी। एक व्यक्तिगत घटना (द्वन्द्व युद्ध में साक्षी के रूप में विद्यमान रहने के कारण जिसमें एक की मृत्यु हुई) के कारण उसे राजनीतिक मिशन का सेक्रेटरी बनाकर ईरान भेज दिया गया। पीतरबुर्ग का जीवन समाप्त हो गया। इन्हीं वर्षों में उसने 'चतुराई से दुःख' कमेडी लिखने की सोची।

'चतुराई से दुःख' कमेडी

ईरान में रहते हुए वह तिफ़्लिस प्रायः आता था। तिफ़्लिस में उसने इस कमेडी के दो अंक पूरे किये और उसे अपने साथी दिकाब्रिस्ट कवि क्यूखेल बेकर को सुनाये। १८२३ में उसे छुट्टी मिली और उसने दो वर्ष पीतरबुर्ग तथा मास्को में बिताये। इस समय उसने अपनी यह कमेडी पूरी कर ली।

उसने अपनी यह कमेडी अपने मित्रों तथा परिचितों को सुनायी। थोड़े समय में इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ सारे देश में फैल गयीं। प्राचीनता के समर्थकों को इसमें अपना व्यंग्य-चित्र मिला और उन्होंने इसे ज़ब्त करने की बात उठायी और दिकाब्रिस्टों ने उसका समर्थन किया, क्योंकि इसमें उन्हें निरंकुशता तथा दासता विरोधी अपने विचारों की झलक मिली।

किन्तु ग्रिबयेदेव अपने जीवनकाल में न इसका मुद्रण और न इसका रंगमंच पर अभिनय ही देख सका। सन् १८३३ में यह पहली बार छपी। इसके पहले ही ईरान में उसकी हत्या कर दी गयी।

१८२६ में उसे दिकाब्रिस्टों के साथ अभिसंधि के संदेह में गिरफ़्तार कर लिया गया। उसके मित्र जेनेरल येरमेलोव ने उसे गिरफ़्तारी से पहले ऐसे कागजों को जला डालने का अवसर दिया। कुछ महीने बाद वह मुक्त कर दिया गया और अपनी नौकरी पर चला गया।

रूसी-ईरानी युद्ध के बाद वह ईरान में रूस का राजदूत बनाकर भेजा गया। रूस की राजनीति से असंतुष्ट तेहरान के मुल्लाओं ने १८२९

मे रूसी राजनीतिक मिशन पर हमला किया। ११ फरवरी १८२९ को दूतावास के सभी सदस्य (केवल एक को छोडकर) मार डाले गये। इन मृतको मे ग्रिबयेदेव भी था। उसका शव तिफ्लिस लाया गया और वही दफ़नाया गया।

ग्रिबयेदेव की कमेडी 'चतुराई से दुख' रूसी साहित्य का अनुपम रत्न है। उसका उच्च वस्तु तत्व, युक्तियुक्त-चित्रण, चुस्त भाषा, और सुन्दर कविता इन सब ने इसे रूस मे अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया।

'चतुराई से दुःख' कमेडी का वस्तु तत्त्व

इस कमेडी का मूलभूत विचार प्राचीन तथा नवीन विचारधारा का सघर्ष है। इसमे अभिजात वर्ग के उन प्रतिनिधियो पर तीक्ष्ण व्यग्य है जो रूढ़िवादी हैं, जो दासाधिकार को बनाये रखना चाहते हैं और जो शिक्षा, प्रगतिशीलता आदि के कट्टर विरोधी हैं।

फामुसोव

इनका सबसे बडा प्रतिनिधि फामुसोव और उसके साथी स्कालाज़ूगोव (दाँत किटकिटाने वाला), मल्चालिन (चुप्पा) हैं। फामूसोव के जीवन का लक्ष्य किसी न किसी तरह अमीरी तथा पदवी-प्राप्ति, अपने बच्चों की अमीरो से शादी और आनन्दमय जीवन है। वह विगत युग का समर्थक और नवीन विचारो का कट्टर शत्रु है।

इसी प्रकार स्कालोज़ुव प्रतिक्रियावादी मत्री अरकचेयेव का समर्थक है, निरकुशता तथा दासाधिकार का पक्षपाती है और शिक्षा का विरोधी है।

मल्चालिन अफसरो की खुशामद करता रहता है। वह उन लोगों का प्रतिनिधि है जो नौकरी का मतलब, ईमानदारी से काम करना नही वरन् अफसर की ताबेदारी समझते हैं और इस प्रकार ऊपर उठते हैं। वह सोफ़िया से प्यार नही करता किन्तु प्यार का ढोंग रचता है क्योंकि वह अमीर की लड़की है और वह उससे शादी करना चाहता है।

चात्स्की

फामुसोव के प्रतिपक्ष मे चात्स्की का चित्र है जो प्रगतिशील व्यक्ति और भविष्य के दिकाब्रिस्ट का चित्र है। वह अभिजात वर्ग के प्रगतिशील

नवयुवकों का प्रतिनिधि है। एक प्रकार से वह ग्रिबयेदेव का ही जीवन है। वह फामूसोव के समाज का कट्टर आलोचक है, क्योंकि उस समाज के जीवन का स्तर अत्यन्त निम्न और गिरा हुआ है। इसी प्रकार वह उन दासाधिकारियों का व्यंग्यचित्र प्रस्तुत करता है जिन्होंने दास-कृषकों को पशु से भी नीचा और पतित बना दिया है और जिन्हें वे पशु के समान मां को पिता से और बच्चों को माता-पिता से अलग कर बेचते हैं।

इस प्रकार यह सामाजिक कमेडी है जिसमें न केवल पात्रों की व्यक्तिगत विशेषताएँ अंकित की गयी हैं वरन् युग का सामाजिक, राजनीतिक संघर्ष भी प्रस्तुत किया गया है। इसमें सन् १८१२ के युद्ध के बाद अभिजात वर्ग के प्रगतिशील विचारों का प्रादुर्भाव और प्राचीनतावादी स्तर के साथ उसकी टक्कर दिखायी गयी है। दिकाब्रिस्टों ने दास-प्रथा के प्रति विरोध लक्षित किया और उन्हें इसमें रूढ़िवादी समाज की अधःपतित दशा की व्यंग्यपूर्ण प्रखर आलोचना तथा प्रगतिशील विचारों का प्रतिपादन मिला।

इस कमेडी की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सजीव, चलती और चुनती भाषा है। इसके बारे में पुश्किन ने कहा था कि इसका आधा हिस्सा तो शीघ्र ही लोकोक्ति बन जायगा और सचमुच में इसकी बहुत सी उक्तियों का मुहाविरे के रूप में प्रयोग होने लगा। इसका मार्मिक व्यंग्य, शक्तिशाली, चुस्त, बिजली-स्पर्श की तरह भाषा, स्वच्छन्द तथा सजीव संवाद, इसकी जोरदार अभिव्यक्ति और जनात्मकता, पात्रों का अनेकांगी चित्रण, इन सब ने इसे रूसी साहित्य की लोकप्रिय और अमर कृति बना दिया।

ग्रिबयेदेव ने अपनी इस कमेडी में उन्नीसवीं सदी के सन् दस में बीस के वर्षों के रूसी जीवन की यथार्थता का चित्र अंकित किया। उसकी बुराइयों की आलोचना की और नायक के रूप में प्रगतिवादी व्यक्ति का यथार्थवादी एवं कलात्मक चित्र प्रस्तुत किया। इस कमेडी ने रूसी नाट्य साहित्य में एवं रंग-मंच पर यथार्थवाद को प्रतिष्ठित कर दिया।

के फ्रांसीसी लेखकों की रचनाओं से बहुत अच्छी तरह परिचित हो चुका था। लीसियम में उसने छः वर्ष बिताये और इसका उसके जीवन तथा लोकदृष्टि पर गहरा असर पड़ा। यहीं पर उसका सेना के अफसरों तथा भविष्य के 'दिकाब्रिस्टों' और विशेषतया चदाएव से परिचय हुआ और उसने रदीश्चयेव की कृतियों को पढ़ा।

सन् १८१४ में पुश्किन ने 'त्सारस्कोये सेलो' (जार का गाँव) की स्मृति-'कविता लिखी जिसे उसने १८१५ में अपनी पब्लिक परीक्षा में सुनाया। देरजाविन जो परीक्षकों में था इसे सुनकर बड़ा प्रभावित हुआ। इसमें नेपोलियन से रूस के साहसपूर्ण युद्ध का वर्णन है। लीसियम में पढ़ते हुए ही वह साहित्यिक गोष्ठी 'अरजामस' का सदस्य बना लिया गया और यहीं उसने अपनी बड़ी कविता 'रूसलान और ल्युदमिला' लिखनी शुरू की।

लीसियम के बाद वह विदेश विभाग के कालेज में पढ़ने के लिए पीतरबुर्ग भेजा गया।

प्रगीत मुक्तक (१८१७-१८१९)

सन् १८१७ से १८१९ के बीच उसने स्वतन्त्रता प्रेम से युक्त कई कविताएँ लिखीं जिनमें 'स्वतन्त्रता', 'चदाएव को', 'गाँव' प्रमुख हैं। राजनीतिक समकालीनता और क्रान्तिकारी वेग के कारण उसका प्रगीत 'स्वतन्त्रता' अभिजात वर्ग के नवयुवकों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय हुआ।

'चदाएव को' प्रगीत में समवयस्कों को देश सेवा के लिए अपनी आत्मा अर्पित कर देने का आह्वान है। कवि का विश्वास है कि निरंकुशता का पतन होगा और रूस में स्वतन्त्रता का प्रभात होगा। इस समय उसने बहुत से जार विरोधी क्षेपक भी लिखे जो इतने चुस्त और तेज थे कि सारे समाज में वे बड़ी जल्दी व्याप्त हो गये और उन्होंने राजनीतिक चेतना को बहुत उभारा। पुश्किन की इन राजनीतिक कविताओं से जार बहुत असन्तुष्ट हुआ। जार अलेक्सान्द्र प्रथम ने लिखा कि उसने (पुश्किन ने) सारे रूस में क्षोभकारिणी कविताओं की बाढ़ ला दी, अतः उसे साइबेरिया निर्वासित करने का विचार किया गया। किन्तु करमजीन और

जुकोव्स्की के बीच में पड़ने से उसे साइबेरिया न भेजकर दक्षिण भेजा गया। उसे पीतरबुर्ग छोड़कर यकातेरिनोस्लाव जाने का हुक्म दिया गया। इसी समय (१८२०) उनने 'रूसलान और लुदमिला' काव्य पूरा किया।

दक्षिण का निर्वासन

यकातेरिनोस्लाव में पुश्किन अधिक समय तक न रहा। पुश्किन वहाँ बीमार था। जब कि कवि का परिचित जनरेल रएव्स्की वहाँ आया और उसे कवकाज ले जाने की आज्ञा प्राप्त कर ली। कवकाज तथा क्रीम के प्राकृतिक दृश्यों—समुद्र, झील, दक्षिणी प्रकृति आदि—का कवि पर बड़ा प्रभाव पड़ा। क्रीम में उसने गिरेई खा द्वारा अपनी मृत बंदिनी प्रियतमा की स्मृति में निर्मित आंसुओं का फव्वारा देखा जिसके आधार पर उसने बाद में 'बाख्ची सराय का फव्वारा' काव्य लिखा।

इसके बाद उसे तीन साल किशीनेव में रहना पड़ा जहाँ उसका 'दिकाब्रिस्टों' की दक्षिणी सभा के कई अफसरों से, विशेषतया उसके नेता पेस्तेल से परिचय हुआ। पुश्किन की क्रान्तिकारी मनोवृत्ति का संकेत उसकी इस समय की लिखी कविता 'खंजर' से मिलता है जिसे कि दिकाब्रिस्टों ने ज़ार की हत्या के संकेत के रूप में लिया। उसकी 'कवकाजी कैदी', 'डाकू भाई', 'जिप्सी' आदि कविताएं भी कवि के क्रान्तिकारी भावों का अंकन करती हैं। इनमें कवि के कलात्मक विकास का भी परिचय मिलता है।

उपन्यास

सन् १८२३ में किशीनेव में कवि ने अपना पद्यात्मक 'येवगेनिई अन्येगिन', शुरू किया। इसका पहला अध्याय कवि ने अदेसा में पूरा किया जहाँ वह किशीनेव से भेजा गया था। इस पूरे समय में पुलिस उसके पीछे थी। उसके पत्र पढ़े जाते थे। उसके एक ऐसे ही पत्र के आधार पर—जिसमें उसने अपनी अनास्तिकता के बारे में लिखा था—उसे नया निर्वासन दिया गया। उसे शहर से दूर निरे देहात मिखाइलोवस्कोएसेलो में रहने को भेजा गया।

('ताँबे का घुड़सवार') की समस्या का संकेत मिलता है। १८३३ में पुश्किन ने 'पुगाचोव का इतिहास' लिखा। पुगाचोव विद्रोह से संबंधित सामग्री एकत्रित करने के लिए वह कज़ान, ओरेनबुर्ग आदि पुगाचोव से संबंधित कई स्थानों में गया तथा संग्रहालय में अध्ययन किया। पुगाचोव विद्रोह से संबंधित 'कप्तान की लड़की' पुश्किन के इसी विद्रोह के ऐतिहासिक अध्ययन का कलात्मक परिणाम है।

प्रसिद्ध उपन्यास 'कप्तान की लड़की' पुश्किन के गद्य की सर्वोच्च उपलब्धि मानी जाती है। इसमें पुगाचोव विद्रोह के युग की कलात्मक तस्वीर है, प्रान्तीय अभिजात परिवार (ग्रिनेव) का चित्र है। मारिया इवानोव्ना का चित्रण है और किले के कमांडर कैप्टन मिरोनोव का अंकन किया गया है। सबसे महत्वपूर्ण इसमें पुगाचोव का चित्रण है जो कि किसान-विद्रोह का नेता है।

पुश्किन-गद्य की सर्वोत्तम कलात्मक कृतियों 'कप्तान की लड़की' तथा 'हुक्म की बेगम' का रूसी गद्य के विकास पर बड़ा महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

इसी समय उसने लोक-कथा के रूप में मछली और मछुआ की कथा, पादरी और उसका नौकर, बाल्दा और पश्चिमी स्लावों के गीत लिखे।

'ताँबे का घुड़सवार' पीतर प्रथम से संबंधित पीतरबुर्ग की पद्यात्मक कथा है। पीतर प्रथम से संबंधित उसकी अन्य दो कृतियाँ 'पीतर प्रथम का गुलाम' और 'पलतावा' हैं। 'ताँबे का घुड़सवार' रूस की शक्ति और उसकी प्रगतिशीलता का काव्य है। इस शक्ति का प्रतीक राजधानी पीतरबुर्ग है जो कि पीतर प्रथम की सर्जना है और जो जंगलों के अंधकार और दलदलों के बीच से निकली है। यह कृति पुश्किन के उत्तम काव्यों में गिनी जाती है।

अन्तिम वर्षों के प्रगीत मुक्तक

पुश्किन के जीवन के अंतिम वर्षों के प्रगीत मुक्तकों का मुख्य विषय राजनीतिक और दार्शनिक है। सन् तीस के वर्षों में उसने कई देशभक्ति-पूर्ण रचनाएँ लिखीं ('रूस को बदनाम करने वालों को', 'पवित्र समाधि

इनका उपयोग अच्छे जीवन की उपलब्धि के लिए नहीं कर सकता। इस समाज की आलोचना करते हुए भी वह न उसे ठीक कर सकता है और न उसे छोड़ ही सकता है। इसी से उसकी बुद्धि की प्रखरता उसे और भी चुभती है। वह इस समाज में सबसे अलग हो जाता है, फलतः वह अकेला पड़ जाता है, उसका जी ऊबता है और वह निरर्थक व्यक्ति बन जाता है। वह ततियाना लिरीना के प्रेम-प्रस्ताव को ठुकरा देता है। उसका अपने पड़ोसी लेन्स्की से झगड़ा हो जाता है और वह द्वन्द्व-युद्ध में उसे मार डालता है। इस अप्रत्याशित हत्या का उस पर बड़ा प्रभाव पड़ता है और वह पीतरबुर्ग को छोड़कर रूस की यात्रा पर निकल पड़ता है।

ततियाना

ततियाना के रूप में पुश्किन ने भावुक किंतु कर्तव्यशीला नारी का चित्र प्रस्तुत किया है। ततियाना अन्येगिन को चाहती है और वह स्वयं प्रेमपत्र भेजती है, अन्येगिन के रूखे उत्तर से उसे चोट लगती है फिर भी वह अपने को सँभाल लेती है। धीरे-धीरे इस भावुक बालिका का पूर्ण विकास होता है और उसका दूसरे से विवाह हो जाता है। अन्येगिन के लिए उसके हृदय में अब भी स्नेह है किंतु वह अब पत्नी है, अपना कर्तव्य समझती है और अपने पति के प्रति सच्ची रहना चाहती है।

लेन्स्की

लेन्स्की के रूप में कवि ने आदर्शवादी स्वप्नदर्शी नवयुवक का चित्र अंकित किया है। वह सन् बीस-तीस के अभिजात वर्ग के स्वप्न देखने वाले नवयुवकों का प्रतिनिधि है।

इस उपन्यास में यथार्थवादी अंकन के साथ-साथ प्रगीतात्मक अंश भी बड़े भावुक हैं और प्रकृति का चित्रण भी बड़ा सुंदर हुआ है। वसन्त तथा पतझड़ के प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त मार्मिक हैं।

यह उपन्यास अपनी भाषा तथा शैली के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। इसे पढ़ते हुए ऐसा मालूम होता है कि पाठक बराबर कवि से बात कर रहा है। पुश्किन ने इसे बातचीत की शैली में लिखा है। कवि इसे

के सामने', 'सेनापति')। इन वर्षों की कविताओं मे उसने अपनी जवानी के दोस्तो को याद किया है और जीवन तथा मृत्यु के बारे में चिंतन किया गया है।

पुश्किन की मृत्यु

पुश्किन का व्यक्तिगत वैवाहिक जीवन कुछ सुखमय न था। पति-पत्नी के मानसिक दृष्टिकोण मे सामजस्य न था। पत्नी को आमोद-विनोद, नाच आदि का जीवन पसंद था और कवि के कार्यकलाप मे इससे बाधा पड़ती थी। उसकी पत्नी की ओर ज़ार का ध्यान गया और पुश्किन को दरबार से बांधने के लिए उसने उसे सबसे छोटा (किंकर का) पद दिया जिसे कि कवि ने अपना अपमान समझा। फ्रांसीसी दान्तेस का उसकी पत्नी से कुछ घनिष्ठ परिचय था। उच्च समाज इससे संबधित कुछ खबरें भी उडा रहा था। पुश्किन ने आत्मसमान की रक्षा मे दान्तेस का द्वन्द्व युद्ध के लिए आह्वान किया। १८३७ की आठ फरवरी को यह द्वन्द्व-युद्ध हुआ जिसमे पुश्किन बुरी तरह घायल हुआ।

दो दिन बाद दस फरवरी (सन् १८३७) को पुश्किन की मृत्यु हो गयी।

जन-प्रदर्शन के डर से पुलिस ने रातों रात उसका शव पीतरबुर्ग से हटा दिया। वह स्वित गोर्स्की के मठ में दफ़नाया गया।

येवगेनिई अन्येगिन

पुश्किन की सबसे महत्वपूर्ण कृति उसका पद्यात्मक उपन्यास 'येवगेनिई अन्येगिन' है। *यह रूसी का पहला यथार्थवादी उपन्यास है।* इसमें उन्नीसवीं शती के सन् बीस के रूसी जीवन और समाज का अंकन हुआ है।

अन्येगिन

अन्येगिन इस उपन्यास का मुख्य पात्र है और वह उन्नीसवीं शती के सन् बीस के अभिजात समाज के प्रगतिशील विचारशील पक्ष का प्रतिनिधि है। उसके माध्यम से पुश्किन ने उस व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत किया है जिसमें कि बुद्धि और विवेक है किन्तु जो व्यर्थ है क्योंकि वह

इनका उपयोग अच्छे जीवन की उपलब्धि के लिए नही कर सकता। इस समाज की आलोचना करते हुए भी वह न उसे ठीक कर सकता है और न उसे छोड़ ही सकता है। इसी से उसकी बुद्धि की प्रखरता उसे और भी चुभती है। वह इस समाज मे सबसे अलग हो जाता है, फलत. वह अकेला पड़ जाता है, उसका जी ऊबता है और वह निरर्थक व्यक्ति बन जाता है। वह ततियाना लिरीना के प्रेम-प्रस्ताव को ठुकरा देता है। उसका अपने पड़ोसी लेस्की से झगड़ा हो जाता है और वह द्वन्द्व-युद्ध मे उसे मार डालता है। इस अप्रत्याशित हत्या का उस पर बड़ा प्रभाव पड़ता है और वह पीतरबुर्ग को छोड़कर रूस की यात्रा पर निकल पड़ता है।

ततियाना

ततियाना के रूप मे पुश्किन ने भावुक किंतु कर्तव्यशीला नारी का चित्र प्रस्तुत किया है। ततियाना अन्येगिन को चाहती है और वह स्वयं प्रेमपत्र भेजती है, अन्येगिन के रूखे उत्तर से उसे चोट लगती है फिर भी वह अपने को सँभाल लेती है। धीरे-धीरे इस भावुक बालिका का पूर्ण विकास होता है और उसका दूसरे से विवाह हो जाता है। अन्येगिन के लिए उसके हृदय मे अब भी स्नेह है किंतु वह अब पत्नी है, अपना कर्त्तव्य समझती है और अपने पति के प्रति सच्ची रहना चाहती है।

लेस्की

लेस्की के रूप मे कवि ने आदर्शवादी स्वप्नदर्शी नवयुवक का चित्र अंकित किया है। वह सन् बीस-तीस के अभिजात वर्ग के स्वप्न देखने वाले नवयुवको का प्रतिनिधि है।

इस उपन्यास मे यथार्थवादी अकन के साथ-साथ प्रगीतात्मक अश भी बड़े भावुक हैं और प्रकृति का चित्रण भी बड़ा सुंदर हुआ है। वसन्त तथा पतझड़ के प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त मार्मिक हैं।

यह उपन्यास अपनी भाषा तथा शैली के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। इसे पढ़ते हुए ऐसा मालूम होता है कि पाठक बराबर कवि से बात कर रहा है। पुश्किन ने इसे बातचीत की शैली मे लिखा है। कवि इसे

संवादों, अपने भाषणों, प्रश्नों तथा पत्रों द्वारा अत्यन्त सजीव बनाता हुआ कथा कहता चलता है। इन सबसे इस उपन्यास को बातचीत की अत्यन्त सहज, स्वाभाविक, सजीव और चलती हुई शैली प्राप्त हो गयी है।

पुश्किन की सबसे बड़ी सेवा साहित्यिक रूसी (भाषा) की रचना मानी जाती है। तुर्गनेव के कथनानुसार पुश्किन ने दोहरा काम किया। रूसी भाषा की प्रतिस्थापना और साहित्य की रचना। पुश्किन ने साहित्यिक रूसी भाषा के मूल मे जनता की भाषा रखी जिसमे सजीव बोलचाल की भाषा का भी रूप था और प्राचीन रूसी लोक-कथाओ और गीतो की भी भाषा थी।

रूसी रंगमंच और संगीत के विकास पर भी पुश्किन की प्रतिभा का गभीर प्रभाव पड़ा। उसकी रचनाओ के आधार पर कई आपेरा और बैले बनाये गये। ग्लीनका ने 'रूसलान' और 'लुदमीला' का आपेरा लिखा। दर्स्गोमोके ने 'रूसाल्का' और 'मुसोर्गस्की ने 'बरीजगंदुनोव' लिखा। चाइकोव्स्की ने 'येवगेनिई अन्येगिन', 'मजेपा' तथा 'हुक्म की बेगम' का आपेरा लिखा। इसी प्रकार ग्लीएर ने' 'तांबे का घुड़सवार' का बैलेड तैयार किया और असाफियेव ने 'बाख्ची सराय का फव्वारा' और 'कवकाजी कैदी' का बैले तैयार किया।

अपनी प्रतिभा और काव्य के द्वारा पुश्किन रूस का राष्ट्रीय कवि बन गया। उसके काव्य में रूसी जनता की सारी विशिष्टताएँ अभिव्यजित हो गई हैं।

१३. मिखाइल यूरेविच लेरमन्तोव

[१८१४-१८४१]

बचपन

लेरमन्तोव का जन्म १४–१५ अक्टूबर १८१४ में हुआ। मातृपक्ष से वह एक प्राचीन अभिजात वर्ग मे आता है। लेरमन्तोव तीन ही वर्ष का था जब कि उसकी माँ का देहान्त हो गया। उसका पालन नानी के घर मे हुआ। सास-दामाद मे अच्छे संबंध न होने के कारण उसे बराबर पितृ वियोग सहना पडा जिसका उसे बडा दुःख रहा।

अभिजात वर्ग की तत्कालीन प्रथा के अनुसार लेरमन्तोव की शिक्षा भी विदेशी गवर्नर तथा अभिभावकों के अधीन ही हुई। वह बचपन मे फ्रांसीसी भाषा स्वच्छन्दता से बोलने लगा। लेरमन्तोव ने इस बात पर दुःख प्रकट किया कि उसके शिक्षक विदेशी थे, क्योंकि इस कारण वह रूसी साहित्य से परिचित न हो सका।

विश्वविद्यालय की पाठशाला

१८२० मे लेरमन्तोव अपनी नानी के साथ मास्को आ गया और दूसरे वर्ष वह मास्को विश्वविद्यालय की पाठशाला (पेंशिनो) मे दाखिल हुआ। लेरमन्तोव को निजी तौर से पढ़ाने के लिए यूनिवर्सिटी के कतिपय प्रोफेसरों का प्रबन्ध उसकी नानी ने कर दिया।

विश्वविद्यालय की पाठशाला के अपने इस आवासकाल में उसने कई कविताएँ और तस्वीरें 'तुर्क की शिकायत', 'स्वगत कथन' लिखी जिनमें उसके काव्य का दासता-विरोधी दृष्टिकोण तथा उनसे सहानुभूति स्पष्ट है। उस समय उसने सबसे अधिक कविताएँ लिखीं तथा कतिपय काव्य 'कफ़काज़ी क़ैदी,' 'दैत्य का आख्यान' भी लिखे।

सन् १८३०–३१ के बीच उसने राजनीतिक वस्तुओ पर कविताएँ लिखी। सन् १८३० की कविता मे उसने पोलिश विद्रोहियो के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की। १८३० मे ही फ्रांस की जुलाई क्रान्ति पर भी रचना की।

संवादों, अपने भाषणों, प्रश्नों तथा पत्रों द्वारा अत्यन्त सजीव बनाता हुआ कथा कहता चलता है। इन सबसे इस उपन्यास को बातचीत की अत्यन्त सहज, स्वाभाविक, सजीव और चलती हुई शैली प्राप्त हो गयी है।

पुश्किन की सबसे बडी सेवा साहित्यिक रूसी (भाषा) की रचना मानी जाती है। तुर्गनेव के कथनानुसार पुश्किन ने दोहरा काम किया। रूसी भाषा की प्रतिस्थापना और साहित्य की रचना। पुश्किन ने साहित्यिक रूसी भाषा के मूल में जनता की भाषा रखी जिसमे सजीव बोलचाल की भाषा का भी रूप था और प्राचीन रूसी लोक-कथाओं और गीतों की भी भाषा थी।

रूसी रंगमंच और संगीत के विकास पर भी पुश्किन की प्रतिभा का गंभीर प्रभाव पड़ा। उसकी रचनाओं के आधार पर कई आपेरा और बैले बनाये गये। ग्लीनका ने 'रूसलान' और 'लुदमीला' का आपेरा लिखा। दर्गोमीस्की ने 'रूसाल्का' और 'मुसोर्गस्की ने 'बरीजगंदुनोव' लिखा। चाइकोव्स्की ने 'येवगेनिई अन्येगिन', 'मजेपा' तथा 'हुक्म की बेगम' का आपेरा लिखा। इसी प्रकार ग्लीएर ने 'तांबे का घुड़सवार' का बैलेड तैयार किया और असाफियेव ने 'बाख्ची सराय का फव्वारा' और 'कवकाजी कैदी' का बैले तैयार किया।

अपनी प्रतिभा और काव्य के द्वारा पुश्किन रूस का राष्ट्रीय कवि बन गया। उसके काव्य में रूसी जनता की सारी विशिष्टताएँ अभिव्यजित हो गई हैं।

१३. मिखाइल यूरेविच लेरमन्तोव

[१८१४–१८४१]

बचपन

लेरमन्तोव का जन्म १४–१५ अक्टूबर १८१४ मे हुआ। मातृपक्ष से वह एक प्राचीन अभिजात वर्ग मे आता है। लेरमन्तोव तीन ही वर्ष का था जब कि उसकी माँ का देहान्त हो गया। उसका पालन नानी के घर मे हुआ। सास-दामाद मे अच्छे संबंध न होने के कारण उसे बराबर पितृ वियोग सहना पडा जिसका उसे बडा दुःख रहा।

अभिजात वर्ग की तत्कालीन प्रथा के अनुसार लेरमन्तोव की शिक्षा भी विदेशी गवर्नर तथा अभिभावको के अधीन ही हुई। वह बचपन मे फ्रासीसी भाषा स्वच्छन्दता से बोलने लगा। लेरमन्तोव ने इस बात पर दुःख प्रकट किया कि उसके शिक्षक विदेशी थे, क्योंकि इस कारण वह रूसी साहित्य से परिचित न हो सका।

विश्वविद्यालय की पाठशाला

१८२० मे लेरमन्तोव अपनी नानी के साथ मास्को आ गया और दूसरे वर्ष वह मास्को विश्वविद्यालय की पाठशाला (पेंशिनो) मे दाखिल हुआ। लेरमन्तोव को निजी तौर से पढ़ाने के लिए यूनिवर्सिटी के कतिपय प्रोफेसरो का प्रबन्ध उसकी नानी ने कर दिया।

विश्वविद्यालय की पाठशाला के अपने इस आवासकाल मे उसने कई कविताएँ और तस्वीरें 'तुर्क की शिकायत', 'स्वगत कथन' लिखीं जिनमें उसके काव्य का दासता-विरोधी दृष्टिकोण तथा उनसे सहानुभूति स्पष्ट है। उस समय उसने सबसे अधिक कविताएँ लिखीं तथा कतिपय काव्य 'क़फ़क़ाज़ी कैदी,' 'दैत्य का आख्यान' भी लिखे।

सन् १८३०–३१ के बीच उसने राजनीतिक वस्तुओं पर कविताएँ लिखीं। सन् १८३० की कविता में उसने पोलिश विद्रोहियो के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की। १८३० मे ही फ्रास की जुलाई क्रान्ति पर भी रचना की।

रूस की सन् १८३० की किसान-हलचल से संबंधित उसकी कविता 'भविष्यवाणी' है। इसमें कवि ने ऐसे आनेवाले समय की भविष्यवाणी की है जब कि जार का ताज गिर पड़ेगा और मौत तथा खून ही बहुतों की खुराक होगी।

मास्को विश्वविद्यालय

सन् १८३० में लेरमन्तोव जब मास्को विश्वविद्यालय में दाखिल हुआ उस समय इस विश्वविद्यालय में बेलिंस्की, स्तानकेविच, गेर्त्सेन, ओगार्योव आदि भी पढ़ते थे। लेरमन्तोव अपने विद्यार्थी-जीवन के इन वर्षों को बड़ी भावुकता के साथ 'मास्को' कविता में याद करता है।

विश्वविद्यालय के इस जीवन-काल में लेरमन्तोव ने सौ से अधिक कविताएँ, कतिपय ट्रैजेडी और काव्य लिखे। इन्हीं वर्षों में 'दैत्य' काव्य की प्रथम योजना सामने आयी और 'निर्धन', 'देवदूत', 'पाल' जैसी कविताएँ रची गयी। 'पाल' कविता में कवि की विद्रोही प्रवृत्ति का परिचय मिलता है। इसमें उसका रोमानटिक रूप भी सामने आता है। जिस तरह कि नाव का पाल खोकर नाविक तट की शांति, सुरक्षा और सुख को छोड़कर तूफान की ओर चल देता है, मानो तूफानों में ही शांति हो, उसी तरह कवि भी क्रियाशीलता और संघर्ष चाहता है। इस समय वह अँगरेज कवि बायरन की ओर भी आकृष्ट हुआ और उससे प्रभावित हुआ। विश्वविद्यालय के कतिपय प्रोफ़ेसरों के विरुद्ध भाषण करने के कारण अन्य विद्यार्थियों के साथ उसे भी विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया। पीतरबुर्ग विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने में वह असफल रहा। इसके बाद वह सैनिक स्कूल में भर्ती हो गया। इस समय उसने 'हाजी अब्रेक' काव्य लिखा, 'दैत्य' काव्य का नया रूप प्रस्तुत किया और 'वादिम' कथा का आरम्भ किया जो अपूर्ण रही।

सैनिक स्कूल

'वादिम' कथा का नायक निर्धन किन्तु अभिजात वंश का व्यक्ति है जिसे अमीर जमींदारों ने नष्ट कर दिया है। वह अपने अपमानकर्ता की ही नौकरी करता है। बाद में वह अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने

के लिए किसान-विद्रोह के नेता के रूप में प्रकट होता है। लेरमन्तोव की यह कथा 'दुब्रोव्स्की' से मिलती है और विद्रोह की भावना तथा जमींदारों की निरंकुशता के प्रति घृणा से परिपूर्ण है।

सैनिक स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के बाद वह फ़ौजी अफ़सर बन गया और 'हुसार' दस्ते में 'त्सारस्कोए सेलो' भेजा गया। सन् १८३५–३६ में उसने काव्य 'बयारिन अर्शा', नाटक 'छद्मवेश' और कई कविताएँ लिखीं। इसी समय उसने 'राजकुमारी लिगोव्सकया' लिखा। उसमें न केवल उच्च अभिजात वर्ग का जीवन ही चित्रित किया गया है वरन् राजधानी के छोटे-छोटे कर्मचारियों का भी अंकन हुआ है।

सन् १८३७ में कवि की महत्वपूर्ण रचना 'बरोदिनो' छपी। रूसी देश-भक्ति की भावना से ओत-प्रोत इस कविता में बरोदिनो के विख्यात युद्ध का वर्णन हुआ है। इसमें रूसी सैनिकों के साहस और दृढ़ता का गान है।

पुश्किन की (द्वन्द्व युद्ध में) मृत्यु पर लेरमन्तोव को दारुण शोक और क्रोध हुआ, क्योंकि उसने निरंकुश ज़ारशाही को असली हत्यारा माना। पुश्किन की मृत्यु पर उसने 'कवि की मृत्यु' कविता लिखी जिसमें सारे राष्ट्र के शोक और क्रोध की व्यंजना हुई।

पहला निर्वासन

'कवि की मृत्यु' कविता बड़ी ही लोक-प्रिय हुई और ज़ार उतना ही असन्तुष्ट हुआ। फलतः लेरमन्तोव गिरफ्तार किया गया और काकेशस की एक टुकड़ी में भेज दिया गया। यह काकेशस में उसका पहला निर्वासन हुआ। काकेशस के निवास-काल में लेरमन्तोव ने स्थानीय लोक-साहित्य की ओर अपनी विशेष रुचि दिखायी। उसने अज़रबाइजान की लोक-कथा 'आशिक किरीब' तथा अन्य स्थानीय कथाओं को लिपिबद्ध किया जिनका कि उसने अपने काव्य 'दैत्य' तथा 'मिछीरी' में उपयोग किया। यहीं उसने 'सौदागर कलाश्निकोव का गीत' पूरा किया जिसे कि उसने पीटरबर्ग में शुरू किया था।

पीतरबुर्ग में वापसी

सन् १८३८ के शुरू में लेरमन्तोव को पीतरबुर्ग वापस लौटने की आज्ञा मिली। इस समय उसकी प्रतिभा का और भी विकास हुआ। इसी समय उसकी कविता 'विचार' छपी जिसमें उसने अपनी समकालीन पीढ़ी की भीरुता तथा ज़ार की खुशामद पर क्षोभ प्रकट किया।

अपनी कविता 'कवि' में लेरमन्तोव समकालीन कवि की खंजर से तुलना करता है। खंजर कभी तो पहाड़ के घुड़सवारों का प्रतिष्ठापूर्ण शस्त्र था, किन्तु अब वह सम्मानहीन 'सुनहला खिलौना' मात्र रह गया है। इसी प्रकार आज का कवि भी अपना आशय गँवा चुका है।

धीरे-धीरे इस युग की राजनीतिक घुटन का वातावरण कवि को दबा रहा था। न अपने को इस वातावरण के अनुकूल पाकर और न वातावरण को अपने अनुकूल बना सकने के कारण उसमें गहरी उदासी तथा ऊब भरती जा रही थी और अकेलापन उसे दबाता जा रहा था। रंग-बिरंगी भीड़ में घिरा 'ऊब उदासी नहीं कि जिससे हाथ मिलाऊँ', 'बंदी राजा' (अंधकार के बीच मौन खिड़की पर बैठा), 'बादल', 'पड़ोसी' आदि कविताओं में उदासी, क्रोध तथा विरोध सभी कुछ व्यक्त हुआ है।

इसी समय फ्रांसीसी राजदूत के लड़के बरान्त और लेरमन्तोव के बीच द्वन्द्व हुआ। बरान्त निशाना चूक गया और लेरमन्तोव ने हवा में गोली छोड़ दी। द्वन्द्व युद्ध में भाग लेने के कारण लेरमन्तोव गार्ड रूम में बन्द कर दिया गया।

दूसरा निर्वासन

सन् १८४० में लेरमन्तोव कवकाज़ भेजा गया। इस नये निर्वासन में जाते समय उसका उपन्यास 'अपने समय का नेता' छपा। कवकाज़ जाते हुए वह मास्को रुका। ९ मई को वह गोगल के नाम-दिन पर उपस्थित था जहाँ उसने अपनी नयी कविता 'मिन्सीरी' सुनायी।

'मिन्सीरी' काव्य लेरमन्तोव की श्रेष्ठ रचनाओं में है। इसका नायक पहाड़ी युवक 'मिन्सीरी' है जो छोटी ही अवस्था में बंदी है और अपने देश से दूर पराधीनता में रहा है। वह मठ से निकल कर अपने देश

भाग जाना चाहता है जहाँ कि 'चट्टानें बादलों' में छिपी रहती है और जहाँ लोग बाज (चील) की तरह स्वच्छन्द हैं। इस काव्य में स्वातन्त्र्य-प्रेम और देश-प्रेम, संघर्ष की उत्कट इच्छा, क्रियाशील जीवन की लालसा प्रकृति-प्रेम आदि अनेक भावों की व्यंजना हुई है।

पीतरबुर्ग से जाने के समय उसकी एक और भावपूर्ण रचना 'जन्म-भूमि' प्रकाशित हुई जो कि कवि के गहरे देश-प्रेम से ओत-प्रोत है। इसमें कवि का रूसी जनता तथा रूसी प्रकृति से गभीर प्रेम प्रकट हुआ है।

सन १८३८ में 'दैत्य' काव्य की हस्तलिखित प्रतियाँ पीतरबर्ग में फैल गयी और पाठक आनन्द से भर गये। पाठक विशेष रूप से दैत्य के गर्वीले, तेजस्वी, विद्रोही रूप से बहुत प्रभावित हुए जो स्वयं आकाश और ईश्वर से संघर्ष करता है। दैत्य के आत्म-कथनों में असीमित अधिकारों की निंदा, स्वतन्त्र होने का प्रयत्न और किसी के सामने न झुकने वाले साहसी मानवीय व्यक्तित्व का मसोपान है। लेरमन्तोव दैत्य को ज्ञान और स्वाधीनता का राजा कहता है। दैत्य कवकाज़ की चोटियों के ऊपर उड़ते हुए तमारा को देखता है। उसका असाधारण सौंदर्य दैत्य में प्रेम को जन्म देता है और वह आकाश से सुलह करने की कोशिश करता है। इस काव्य में कवकाज़ के बड़े सुन्दर चित्र हैं।

अंतिम वर्षों के प्रगीत मुक्तक

पीतरबुर्ग से कवकाज़ जाते हुए 'बिदा रूस' कविता निकली जिसमें उसने 'गुलामों के देश, मालिकों के देश' रूस से बिदा ली है। लेखक अदोयेव्स्की ने लेरमन्तोव को जाते समय स्मृतिरूप में कापी दी, जिसमें उससे नयी कविताएँ लिखने की प्रार्थना की। लेरमन्तोव की मृत्यु के बाद वह कापी अदोयेव्स्की के पास चली गयी। इसमें कवि की अन्तिम कविताएँ लिखी हुई हैं जिनमें 'तर्क', 'स्वप्न', 'पेड़ की पत्ती', 'मैं पथ पर एकाकी आता,' 'चट्टान' जैसी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ हैं। इनमें कवि का अकेलापन और उदासी का भाव बड़ा प्रबल है।

उसकी अन्तिम कविता 'मत्सीरी' है जिसमें 'कवि मत्सीरी' का समकालीन समाज में दुःखद अन्त दिखाया गया है। समाज उसके प्रेम

और सत्य की शिक्षा का आदर नहीं करता वरन् कवि के शब्दों में 'मेरे प्रिय सब मुझ पर पत्थर बरसाते है।'

एक शाम लेरमन्तोव का सैनिक स्कूल के अपने सहपाठी मर्तीनोव से झगड़ा हो गया। मर्तीनोव ने उसका द्वन्द्व-युद्ध में आह्वान किया। यह द्वन्द्व-युद्ध मशूक पहाड़ के नीचे २७ जुलाई (१८४१) की शाम को हुआ। मर्तीनोव की गोली से लेरमन्तोव की मृत्यु हो गयी। लोगों का कहना है कि यह द्वन्द्व युद्ध भी जारशाही तथा अभिजात वर्ग के लेरमन्तोव के अन्य शत्रुओं की साजिश का ही परिणाम था जो कि मर्तीनोव को लेरमन्तोव के विरुद्ध बराबर भड़का रहे थे।

'हमारे युग का नेता'

'हमारे युग का नेता' लेरमन्तोव की सर्वोच्च कृति है। इस उपन्यास का रूसी गद्य के विकास पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

इसकी भूमिका में इस उपन्यास के नेता पेचोरिन के बारे में लेरमन्तोव ने लिखा कि 'हमारी पीढ़ी की सारी बुराइयों का यह संकलित चित्र है।' पेचोरिन की ऊब, अपने चारों ओर के वातावरण से समझौते की अनिच्छा तत्कालीन परिस्थिति के प्रति उसके विरोधाभिव्यंजन का ही एक रूप है। इस उपन्यास के द्वारा लेरमन्तोव ने यह प्रदर्शित किया है कि सन् तीस के प्रतिक्रियावादी वर्षों ने ऐसे लोगों को भी निष्क्रिय बना दिया जिनमे बुद्धि और प्रतिभा थी। व्यर्थता तथा विफलता की भावना पेचोरिन जैसे बुद्धिशाली व्यक्ति को बेचैन बनाये रहती है।

प्रबन्धात्मकता

मुख्य पात्र के अन्तस् का दिग्दर्शन कराने के लिए इसका अधिकांश पेचोरिन की डायरी के रूप में लिखा गया है। फिर भी पेचोरिन के बाह्य का परिचय देने के लिए लेरमन्तोव ने डायरी मे दो अध्याय भूमिका रूप मे जोड़े हैं जिनमे वह नायक के बारे मे अपने विचार व्यक्त करता है और उसके साथ मैक्सिम, मक्सीमिच, बेला आदि के सबंधों की व्याख्या करता है। यद्यपि इस उपन्यास मे पाँच अलग-अलग कथाएँ हैं, फिर भी वे

सब उपन्यास के मूलभूत भाव से घनिष्ठ रूप से सम्बंधित हैं।

पेचोरिन

इसमे पेचोरिन का चित्र अनेक-रूपात्मक है। उसके चित्रण मे लेखक ने नायक का हर पक्ष कलात्मकता तथा सचाई के भाव प्रस्तुत किया है। उपन्यास मे प्रस्तुत उसकी डायरी उसकी अपनी सारी दुर्बलता तथा बुराइयों का स्वीकरण है। बुद्धि और प्रतिभा के होते हुए उसे इनके सम्यक् उपयोग का अवसर नही मिलता, यही उसकी बेचैनी का मूल कारण है। अपनी प्रतिभा के सम्यक् प्रयोग के अवसर के अभाव में वह निरर्थक कामों मे अपनी शक्ति का अपव्यय करता है और इधर-उधर भटकता है। वह असली जीवन से वंचित रह जाता है और उसे शांति नही मिलती। वह समाज की आलोचना करता है, उसके खोखलेपन तथा तुच्छता को समझता है। किसी की सहानुभूति न प्राप्त कर सकने के कारण वह अकेलापन का अनुभव करता है और लक्ष्यविहीन जीवन के कारण उसका अस्तित्व ही निरर्थक हो जाता है। इसी से वह अशांत भटकता रहता है। वह दूर ईरान की यात्रा पर जा रहा है परन्तु क्यों ? यह उसे नही मालूम। अपनी अनुभूति के कारण वह अपने समाज के अन्य लोगों से कहीं ऊँचा ऊपर उठा हुआ है।

स्त्री पात्रों मे वेरा का चित्र अत्यन्त भावुक है। वह उन लोगों मे से है जिनके लिए प्रेम ही सब कुछ और उनका एक मात्र जीवन है। वह केवल एक बार ही प्रेम कर सकती है किन्तु फिर वह प्रेम जीवन भर चलता है।

उपन्यास मे उन जमींदारों के परिवारों तथा राजधानी के प्रतिनिधियों का व्यंग्य पूर्ण चित्र प्रस्तुत किया गया है, जो पानी द्वारा अपने इलाज के लिए स्वास्थ्य-केन्द्र नही आते वरन् अपना कारबार ठीक करने को या दिलबहलाव के लिए आते हैं। इसी प्रकार सेना के अफ़सर से वे जो ऊबने की शिकायत किया करते हैं और ताश खेला करते हैं। लेरमन्तोव इनके बारे में व्यंग्यपूर्ण शब्दों मे कहता है कि 'गंधक के सोते मे अपना थूक भरा गिलास डालकर ये बड़े ठाठ से खड़े होते हैं।'

'बेला' की कथा में रूसी साहित्य में पहली बार इन पहाड़ के रहने वालों का चित्र बिना किसी अतिशयोक्ति के प्रस्तुत किया गया है और उनके रीति-रिवाज तथा उनके स्वच्छन्द जंगली जीवन का अंकन हुआ है। इसके साथ ही उपन्यास में कवकाज की प्रकृति के बड़े सुन्दर चित्र मिलते हैं। ये प्राकृतिक दृश्य उपन्यास की प्रगीतात्मकता तथा भावुकता को और भी बढ़ाते हैं। प्रकृति का यथार्थवादी बाह्य अंकन अन्तर की प्रगीतात्मकता के साथ लेरमन्तोव द्वारा बड़ी ही कलात्मकता से संयोजित कर दिया गया है।

उसकी भाषा अत्यधिक स्पष्ट और साफ है और संवाद चुस्त तथा गठे हुए हैं। उसकी कथात्मकता बोलचाल की भाषा के अत्यन्त निकट है। लेरमन्तोव अपने गद्य में अत्यधिक अभिव्यंजना लाने का प्रयत्न करता है और शब्दों का बड़ा ही युक्ति-युक्त प्रयोग करता है। फिर पुश्किन की तुलना में लेरमन्तोव का गद्य अधिक भावप्रवण है। उसकी तुलनाएँ तथा उसके विशेषण बड़े ही व्यंजनापूर्ण होते हैं। फलतः इस उपन्यास की भाषा अन्य लेखकों का आदर्श बन गयी है।

लेरमन्तोव के गद्य ने तुर्गनेव, तॉल्स्तोय तथा चेखव की सर्जना को प्रभावित किया। उसके काव्य की नागरिकता तथा देशभक्ति की भावना से नेक्रासोव को प्रेरणा मिली।

लेरमन्तोव की रचनाओं के आधार पर प्रसिद्ध संगीतकारों ने कई रोमांस, आपेरा आदि की रचना की।

रूसी साहित्य में लेरमन्तोव का स्थान पुश्किन के समकक्ष है।

१४. निकोलाई वसीलिविच गोगल
[१८०९-१८५२]

निकोलाइ वसीलिविच गोगल का जन्म अप्रैल १८०९ में यूक्रेन के एक जमीदार वंश में हुआ था। उसका पिता शिक्षित व्यक्ति था और उसने कविताएँ तथा कमेडी लिखी थी तथा वह रंगमंच पर अभिनय किया करता था। इससे गोगल के हृदय में बचपन से ही रंगमंच के प्रति रुचि जग गयी। जिमनेज़ियम में नाटकों का अभिनय भी हुआ करता था। इनमें गोगल बड़ा अच्छा अभिनय करता था।

जिमनेज़ियम में गोगल की शिक्षा के वर्ष (१८२१-१८२८) रूस में दिकाब्रिस्टों की गुप्त सभाओं के संघठन तथा अभिजात वर्ग के बीच प्रगतिशील स्वच्छन्दतावादी विचारों के प्रचार के वर्ष थे।

जिमनेज़ियम में प्रगतिशील शिक्षकों का भी एक दल था, जिसका नेता बेलाऊसोव था। १८२० में ज़ार सरकार ने इन पर 'स्वच्छन्द विचारों' का अभियोग लगाया। इस सिलसिले में विद्यार्थी भी बुलाये गये। गोगल ने बेलाऊसोव के प्रति सहानुभूति प्रकट की और उसके पक्ष में प्रमाण दिये। बेलाऊसोव के लेक्चर, पुश्किन, रीलयेव तथा अन्य प्रगतिवादियों की रचनाओं ने गोगल के प्रगतिशील दृष्टिकोण के निर्माण में बड़ा योग दिया। १८२८ में जिमनेज़ियम की शिक्षा समाप्त कर गोगल पीतरबुर्ग चला गया।

पीतरबुर्ग का आरम्भिक जीवन

पीतरबुर्ग जाते हुए गोगल अपना रोमांटिक काव्य 'गान्स क्युखेल गार्टेन' छिपाकर ले गया, वह उस पर पुश्किन की सम्मति चाहता था किन्तु ऐसा न हो सका। यह कृति छपी तो इसकी बड़ी आलोचना हुई। फलतः गोगल ने उसकी सारी प्रतियाँ जला दीं।

पीतरबुर्ग में शुरू में उसे कोई सफलता न मिली। वह अलेक्सान्द्र थियेटर में अभिनेता बनना चाहता था लेकिन असफल रहा। वहाँ

मुश्किल से उसे एक विभाग में छोटे कर्मचारी की नौकरी मिली। यहाँ काम करते हुए वह शाम को कला अकेदमी में आया करता था और चित्र-कला सीखता था।

१८३० में गोगल की पहली कहानी 'इवान कुपाल से पहले की शाम' गुमनाम छपी। थोड़े समय बाद उसने नौकरी छोड़ दी और सारा समय साहित्यिक कार्यकलाप में लगाने लगा। सन् १८३१ (२० मई) में गोगल का पुश्किन से परिचय हुआ।

'दिकांका के निकट के गाँव की शामें'

१८३१ में गोगल का कहानी-संग्रह 'दिकांका के निकट के गांव की शामें' निकला और सन् १८३२ में इसका दूसरा भाग। पाठकों और आलोचकों ने इसका हार्दिक स्वागत किया।

इन कहानियों मे गोगल ने यूक्रेन के नवयुवक, नवयुवतियों का हास-परिहास-पूर्ण जीवन चित्रित किया है। इनमे विभिन्न लोक-कथाएँ तथा चुटकुले हैं जिनका सामान्य जनता से संबंध है और जो उनके बीच विस्तृत हैं। इनमे यथार्थ और कल्पना दोनो का योग है और गोगल के सूक्ष्म व्यंग्य से ये सारी कृतियाँ अनुस्यूत हैं। इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता इनका जनत्व है। इनमे जनता की आत्मा, उसका मानसिक पक्ष, उसका चरित्र तथा उसके जीवन का काव्यत्व सब कुछ सुरक्षित है।

इन कहानियों के प्रकाशन के साथ ही गोगल की गिनती रूस के उच्च कोटि के महत्वपूर्ण लेखको के बीच होने लगी।

मीर गोरद

गोगल का सर्जनात्मक विकास बड़ी तेजी से हुआ। उसकी प्रत्येक कृति उसकी प्रतिभा के विकास की नयी मंजिल बन गयी। १८३५ में उसकी नयी कृति (कहानी-संग्रह) 'मीर गोरद' प्रकाशित हुई, जिसमें 'तरास बुल्बा', 'इवान इवानोविच का इवान निकीफरोविच से कैसे झगड़ा हुआ', जैसी प्रसिद्ध कहानियाँ थीं। इन कहानियों में जीवन का चित्रण अधिक व्यापक तथा गहरा है और इनमें रोमांटिक लोक कथात्मकता कम है।

गोगल ने इसमें जमींदारों का रहन-सहन और उनके जीवन का खोखलापन प्रदर्शित किया है। इसके साथ ही उनकी जो मानवीयता है और एक दूसरे के प्रति जो प्रेम है उसका भी गोगल ने अंकन किया है। गोगल का व्यंग्य 'इवान इवानोविच का इवान निकोफेरोविच से कैसे झगड़ा हुआ' में प्रकट हुआ है। बड़ी मामूली सी बात पर वे लम्बा मुकदमा लड़ते हैं। इसमें उनकी मानसिक संकीर्णता तथा अविकासशील जीवन का अंकन हुआ है।

जमींदारों के संकीर्ण जीवन के प्रतिपक्ष में गोगल ने 'तरासबुल्बा' में जनजीवन का चित्रण प्रस्तुत किया है और 'स्वतन्त्र कज्जाकों के साहसपूर्ण अतीत का दृश्य सामने रखा है। कथा के केन्द्र में अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ने वाला 'तरासबुल्बा' है जो कि अपने देश-द्रोही पुत्र को भी मृत्यु-दंड देने में संकोच नहीं करता। यह कथा जन-जीवन का लोक-प्रबन्ध है।

पीतरबुर्गीय कहानियाँ

१८३५ में उसका कहानी-संग्रह 'अराबेस्की' (पच्चीकारी) निकला जिसमें 'नेव्स्की प्रास्पेक्त' (नेव्स्की सड़क) 'तस्वीर', 'पागल की टिप्पणियाँ' जैसी नयी कहानियाँ थी। बाद में लिखी गयी कहानियाँ 'नाक' तथा 'ओवरकोट' कहानियों के साथ वह 'पीतरबुर्गीय कहानियाँ' कहलायीं।

राजधानी के जीवन का चित्रण करते हुए गोगल ने अपनी लोक-दृष्टि बड़ी व्यापक रखी। इसमें नये प्रश्न, नये वस्तु-विषय रखे गये और नगर के जीवन की विषमताओं का चित्रण किया गया, जिनमें नगर के मामूली लोगों की गरीबी और उनके अत्यन्त निम्नस्तरीय जीवन का बड़ा सहानुभूतिपूर्ण अंकन हुआ है।

'नेव्स्की प्रास्पेक्त' में स्वप्नदर्शी कलाकार 'पिस्करेव और आत्म-तुष्ट तुच्छ तथा धृष्ट लेफ्टिनेंट पिरोगोव' का भाग्य चित्रित किया गया है। कलाकार नष्ट हो जाता है और लेफ्टिनेंट फलता-फूलता है। 'तस्वीर' कहानी में कलाकार चर्तकोव का ह्रास दिखाया गया है। पैसे

के दबाव में धीरे-धीरे उसकी प्रतिभा का ह्रास हो जाता है। 'पागल की टिप्पणियाँ' में उस समाज के बीच सामान्य व्यक्ति के जीवन की करुण स्थिति दिखायी गयी है जहाँ केवल धनी तथा उच्च कर्मचारियों का ही आदर होता है और सामान्य व्यक्ति मात्र घृणा का पात्र है। कहानी का नायक इस स्थिति को न सह सका और पागल हो गया। 'ओवरकोट' कहानी में एक गरीब कर्मचारी की कथा है जो किसी तरह पैसे जोड़-जोड़ कर नया ओवरकोट सिलवाता है और जो शीघ्र ही चोरी चला जाता है। दुःख तथा ठेस से इस कर्मचारी की मृत्यु हो जाती है। यह कहानी बड़ी प्रसिद्ध हुई। गोगल कर्मचारी की करुण दीनता का चित्र खींचता हुआ उच्च शासक वर्ग की हृदयहीनता पर व्यंग्य करता है। 'ओवरकोट' कहानी द्वारा गोगल ने साहित्य में विस्तृत तथा निम्न स्थिति के लोगों की रक्षा और सामाजिक अन्याय के विरोध की परंपरा की नींव डाली।

इन कहानियों में गोगल की प्रौढ़ कलात्मकता का पूर्ण परिचय मिल जाता है। उसकी सबसे बड़ी विशेषता उसका सूक्ष्म व्यंग्य है जो पाठकों को हँसाता है और उदास बनाता है तथा साथ ही यह सोचने को भी बाध्य करता है कि ये पात्र सर्वथा हास्यास्पद नहीं हैं, किन्तु परिस्थिति ने इनको यों दयनीय बना दिया है। बेलिन्स्की ने इसी से गोगल के व्यंग्य को 'आँसुओं के बीच हँसी' कहा है।

सन् १८३५–३६ में गोगल और पुश्किन की घनिष्ठता बढ़ी। पुश्किन द्वारा प्रकाशित पत्र 'समकालीन' में गोगल सहयोग देने लगा। इसी वर्ष (१८३५) गोगल ने अपनी कमेडी 'इंस्पेक्टर' लिखी और 'मृत आत्माएँ' का लेखन शुरू किया। इन दोनों कृतियों का वस्तु-विषय गोगल को पुश्किन से प्राप्त हुआ।

इन्स्पेक्टर

'इंस्पेक्टर' के बारे में गोगल ने कहा कि उसमें मैंने रूस की सारी बुराइयों को, जिनसे कि मैं अवगत हूँ, एक जगह एकत्रित करने का निश्चय किया है, तथा उन सारे अन्यायों को, जो कि उन जगहों और स्थितियों में किये जाते हैं जहाँ मनुष्य से सबसे अधिक

न्याय की मांग की जाती है और इन सब पर एक साथ हँसने का निश्चय किया है।

इसमें निकोलस के युग का जीवन तथा उन्नीसवीं शती के सन् तीस और चालीस के वर्षों का ठेठ शहर चित्रित किया गया है। उस नगर का अध्यक्ष शासकीय कर्मचारियों को सावधान रहने की सूचना देता है क्योंकि इंस्पेक्टर जांच करने के लिए आ रहा है। कमेडी का सारा कार्यकलाप इसी के चारों ओर केंद्रित है।

इस कमेडी में रिश्वतखोरी, गबन, शासकीय अत्याचार, कर्मचारियों की ब्यूरोक्राटिज्म, इन सब पर मार्मिक व्यंग्य है। गोगल ने दास-प्रथा और ब्यूरोक्राटिज्म की व्यवस्था का नग्न चित्र प्रस्तुत किया है, जिसमें कर्मचारी, न्यायाधीश सभी रिश्वतखोर, बेईमान और धनी व्यक्ति का पक्ष लेकर सामान्य व्यक्ति को सताने वाले हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि यह सारा चित्र गोगल के सूक्ष्म एवं गंभीर हास्य तथा व्यंग्य से मंडित है। तीक्ष्ण एवं अतिशयोक्तिपूर्ण चित्रण पात्रों को हास्यास्पद बनाता हुआ भी तत्कालीन जीवन के सत्य को अत्यन्त कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है।

इस कमेडी के अभिनय से प्रगतिशील तो प्रसन्न हुए पर प्रतिक्रियावादी बड़े रुष्ट हुए और इसे कर्मचारियों पर आक्षेप कहा और इस नाटक को जब्त करने की मांग करने लगे। इन सब से गोगल बड़ा परेशान हुआ। इस समय उसका स्वास्थ्य भी खराब हो गया। फलतः गोगल ने थोड़े समय के लिए विदेशयात्रा का निश्चय किया जिससे कि वह थोड़ा आराम कर सके और 'मृत आत्माएँ' के लेखन-कार्य में लग सके।

विदेश-यात्रा

फलतः १८३६ में गोगल विदेश चला गया। कुछ समय तक पेरिस में रहने के बाद वह रोम में बस गया। 'मृत आत्माएँ' के प्रकाशन के संबंध में वह कभी-कभी रूस आता था।

सन् १८४१ में गोगल ने 'मृत आत्माएँ' का पहला भाग पूरा किया और प्रकाशन के लिए उसे रूस भेजा। मास्को के सेंसर ने इसके प्रकाशन

गोगल ने 'काव्य' कहा है। जीवन के अकन की सर्वांगीणता के कारण तथा उच्च विचारात्मकता के वेग के कारण उसने इसे काव्य की सज्ञा दी और इस प्रकार इसे सामान्य उपन्यासो से अलग किया, क्योंकि सामान्य उपन्यास सम्पूर्ण जीवन को न लेकर उसकी कतिपय घटनाओं का ही चित्रण करते हैं।

इस उपन्यास मे एक ओर तो अभिजात एव शासक वर्ग का व्यग्यात्मक चित्रण हुआ है जिसके प्रतिनिधि मानिलोव, चिचिकोव, नज्द्रेव प्ल्यूश्किन आदि हैं और दूसरी ओर रूस की सामान्य जनता है जिसका वर्णन भावावेश के साथ गोगल ने किया है। अपने नायक को अनेक घटनाओ तथा परिवर्तनो के बीच प्रदर्शित करते हुए लेखक ने पूरे रूस का जीवन प्रस्तुत किया और इस प्रकार तत्कालीन युग की सारी त्रुटियो और बुराइयो का बड़ा व्यापक एवं गभीर उद्घाटन किया। मृत व्यक्तियो को खरीदने के सिलसिले मे चिचिकोव की सारे रूस की यात्रा गोगल को दासाधिकारी जमीदारों, चोर तथा धूर्त कर्मचारियो तथा दास किसानो की दयनीय दशा के चित्रण एवं उद्घाटन का पूर्ण अवसर प्रदान करती है। तत्कालीन युग के रूसी जीवन का नग्न चित्र प्रस्तुत करने के कारण गेरत्सेन ने 'मृत आत्माए, को 'त्रास और शर्म की चीख' कहा।

'मृत आत्मा' का आरम्भ चिचिकोव के एक शहर मे आगमन के साथ होता है और फिर बाद मे चिचिकोव को जल्दी-जल्दी इस शहर को छोड़कर भागता हुआ दिखाकर उपन्यास समाप्त हो जाता है। इस पहले भाग मे ग्यारह अध्याय हैं। पहले छः अध्यायों में शहर और विभिन्न प्रकार के जमीदारो का वर्णन है। सात से दसवें अध्याय मे इन कर्मचारियों के शहरी जीवन का चित्रण है और अन्तिम ग्यारहवें अध्याय मे इस उपन्यास के मुख्य नायक चिचिकोव का अंकन है। जिसमे उसके जीवन के बारे में बताया गया है और इसका रहस्योद्घाटन हुआ है कि वह किस उद्देश्य से मृत व्यक्तियो को खरीद रहा है।

गोगल की इस कृति में दास प्रथा के युग के रूसी जीवन का अत्यन्त मार्मिक चित्रण हुआ है। इसके पात्रो की अपनी विशिष्टता है और इसके

साथ यह पात्र उस परिस्थिति का भी दिग्दर्शन कराते हैं जिसने कि उनको ऐसा बना दिया है। इसमें जमींदारों का विकास रहित आत्मतुष्ट एवं पशुतापूर्ण जीवन का अभिव्यंजन हुआ है। गोगल की व्यंग्यपूर्ण हँसी उनके तथाकथित सांस्कृतिक बाने को उघार देती है और उनका वास्तविक रूप हमारे सामने प्रस्तुत कर देती है।

मानिलोव

इस उपन्यास के पात्रों में मानिलोव का कोई व्यक्तित्व नहीं है। दास प्रथा के वातावरण ने उनकी भावनाओं को कुंठित कर दिया है और उसे खोखला बना दिया है। यथार्थ जीवन से असंबद्ध योजनाएं बनाना, आत्मप्रदर्शन और खाली बातें बनाना उसकी विशिष्टता है।

करोबोचका

इसके विपरीत करोबोचका (डिबिया) गृह संचालन में अत्यन्त पटु है। उसके पास रुपए रखने के बहुत से बटुए हैं। वह प्रत्येक पाई का मूल्य समझती है और उसे बचाकर रखती है। इस तरह पैसा बचाने की आदत उसे सूम बना देती है। उसकी सारी भावनाएं सूख जाती हैं और वह स्वयं 'मृत आत्मा' हो जाती है। वह प्रत्येक नयी चीज को संशय की दृष्टि से देखती है। वह अकेली नहीं है वरन् वह उस समय के प्रान्तीय अभिजात वर्ग के अज्ञानपूर्ण रूढ़िवादी जमींदारों की प्रतिनिधि है।

नज्द्रेव

नज्द्रेव उन लोगों का प्रतिनिधि है जिनकी प्रपंच और झगड़े में बड़ी रुचि है, जो गप्पें हाँकते हैं और शेखी बघारते हैं और जो बिना मतलब के झूठ बोला करते हैं। वह शोर-गुल मचाने वाला आदमी है।

सवाकेविच

सवाकेविच (कुत्ते का पिल्ला) 'कुलक' और शोषक है। उसके यहाँ जो किसान जीवित थे वह इसलिए कि वह उसकी जायदाद थे और उनको एकदम मार डालना फायदेमंद न था। जब वह चलता था तो अवश्य किसी न किसी का पैर कुचल जाता था। उसका बोलना मानो भूंकना

ा। वह दास प्रथा का कट्टर समर्थक है और प्रत्येक प्रकार की नवीनता या सुधार का घोर शत्रु।

प्ल्यूश्किन

प्ल्यूश्किन अभिजात वर्ग के नैतिक पतन की चरम सीमा का प्रतीक है। वह बेहद कंजूस है और अब वह मनुष्य नहीं रह गया। उसकी सारी भावनाएं सूख गयी हैं। प्ल्यूश्किन का ऐसा चित्र प्रस्तुत करते हुए गोगल जीवन की उन परिस्थितियों का भी दिग्दर्शन कराता है जिन्होंने कि उसको ऐसा बना दिया। प्ल्यूश्किन के रूप में गोगल ने जमींदारों का दास-किसानों पर घोर अत्याचार प्रदर्शित किया है। प्ल्यूश्किन अपने दास-किसानों को भूखा मारता है। प्ल्यूश्किन के माध्यम से गोगल ने अभिजात वर्ग के नैतिक अधःपतन का बड़ा जोरदार चित्र प्रस्तुत किया है।

चिचिकोव

चिचिकोव भी अभिजात वर्ग का है किन्तु वह प्रखर बुद्धिवाला है और नयी पूंजीवादी परिस्थिति को समझता है जिससे कि प्राचीन जमींदार वर्ग नष्ट हो रहा है। उसमें प्रत्येक व्यक्ति तथा परिस्थिति से लाभ उठाने की क्षमता है। स्कूल की शिक्षा पूरी कर उसने नौकरी की। शुरू में तो उसे बड़ी सफलता मिली लेकिन बाद में उसकी चालबाजी खुल गई और वह नौकरी से निकाल दिया गया और वह सारी धन दौलत गंवा बैठा। उसने फिर काम शुरू किया। चुंगी 'कस्टम' में वह छिपाकर माल ले जाने वालों में मिल गया और उसे बड़ा फ़ायदा होने लगा। किन्तु अपने एक साथी कर्मचारी से झगड़ा हो जाने के कारण सारा भंडा फूट गया और सब कुछ नष्ट हो गया। इसके बाद उसकी बुद्धि ने उसे फिर अमीर बनने का रास्ता दिखाया और उसने मृत व्यक्तियों को खरीद कर शीघ्र अमीर बनने की योजना बनाई। उसे इसमें सफलता मिली किन्तु सहसा भेद खुल जाने से उसे जान बचाकर उस शहर से भागना पड़ता है। इसके साथ ही उपन्यास समाप्त होता है।

भाषा

पुश्किन की परंपरा का अनुसरण करते हुए गोगल भी साहित्यिक

ी को बोलचाल की भाषा के अत्यधिक निकट लाया।
त्यधिक सजीव बनाने के लिए और उसमें विभिन्न वर्गों की बोली का
ुट देने के लिए उसने कर्मचारियों, कारीगरों तथा किसानों आदि की
भाषा बड़े ध्यान से सुनी और उनके खास मुहाविरे, विशिष्ट शब्दावली
तथा कहावतों आदि को इकट्ठा किया। उनको यह सजीव बोलचाल
की सटीक भाषा सूक्ष्म हास्य और व्यंग्य में मयुक्त है। बोलचाल तथा
दैनिक जीवन की जन-भाषा को साहित्यिक भाषा में ढालने का गोगल
का यह प्रयत्न बडा सफल रहा और इसका परवर्ती लेखकों पर बड़ा प्रभाव
पड़ा। नेक्रासोव, साल्तिकोवश्च्येद्रिन, तुर्गनेव, अस्त्रोवस्की जैसे बाद के
लेखकों ने गोगल की इसी भाषा-परपरा को अपनाया और आगे बढ़ाया।
भावना तथा प्रवन्धात्मकता दोनों की दृष्टि से 'मृत आत्माएं' बड़ी
उच्च स्तर की कलात्मक कृति है। तत्कालीन युग के रूसी जीवन तथा
सामाजिक विचारों की इसमे बड़ी यथार्थ और गहरी अभिव्यक्ति हुई है
गोगल को इसी कारण यथार्थ जीवन का कवि कहा गया है।
गोगल की वाणी मे कठोर मर्मस्पर्शी व्यग्य है। सत्य तथा उ
भावनावादी आदर्शों की शिक्षा मे ही गोगल के यथार्थवाद को ध
है और विश्व साहित्य मे उसका महत्व है।

१५. बेलिंस्की

[१८११–१८४८]

रूसी समालोचना के क्षेत्र में बेलिंस्की का महत्वपूर्ण स्थान है। उसने कला तथा साहित्य की प्रगतिशील सामाजिक तथा जनात्मक व्याख्या प्रस्तुत की जिसने रूसी साहित्य में यथार्थवादी प्रवृत्ति को और भी बढ़ाया। समालोचक के रूप में बेलिंस्की का तत्कालीन साहित्यिक गति-विधि में महत्वपूर्ण योगदान है।

मास्को विश्वविद्यालय में पढ़ते हुए उसने सेंसर के पास एक 'नाटकीय' कहानी (१८१३) भेजी जिसमें सत्ताशीलों के अत्याचारों की निंदा और दास प्रथा की बुराइयों का चित्रण किया गया। वह विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया। १८३४ में उसका प्रथम महत्वपूर्ण लेख 'साहित्यिक भावनाएं' छपा जिसने लोगों का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट किया।

उसकी आर्थिक स्थिति ठीक न थी। इसलिए उसे गंभीर लेखन और चिंतन के साथ-साथ जीवन-यापन के लिए पुस्तक लेखन तथा 'ट्यूशन' भी करना पड़ता था और अन्त में वह 'पितृ भूमि समाचार' में काम करने लगा।

उसके दार्शनिक चिन्तन ने उसे आदर्शवाद से भौतिकवाद तथा यथार्थवाद की ओर उन्मुख किया और उसने 'शुद्धकला' व 'कला कला के लिये' के सिद्धान्त को अस्वीकार कर कला को जनसेवा तथा समाजसेवा का साधन माना। उसका कला का प्रगतिशील सामाजिक कर्तव्य उसकी लोकगत जातीय भावना तथा उसका जन उद्धारक शक्ति में विश्वास था और वह कला की स्वतन्त्रता तथा उच्च सामाजिक उद्देश्यों के लिए आह्वान करता था। उसका कहना है कि 'कला वास्तविकता की सत्यता से अभिव्यक्ति है। साहित्य हमेशा समाज की झलक दिखाता है। उसे सामाजिक सेवा के अधिकार से अलग करना, कला को ऊंचा उठाना

नहीं, प्रत्युत नीचे गिराना है। क्योंकि वह हमेशा इसमें अपनी जीवन शक्ति अर्थात् विचार में वंचित हो जायगी और स्वंगता तथा विलास की चीज हो जायगी।'

बेलिन्स्की रूसी साहित्य की यथार्थवाद की ओर बढ़ती हुई प्रवृत्ति के महत्त्व को ठीक-ठीक समझ सका और उसको प्रोत्साहन दिया। उसे प्रकृतिवादी 'गोगल स्कूल' की रचनाओं में प्रगतिवादी सामाजिक आदर्श तथा रूसी जीवन के यथार्थ अंकन की झलक मिलती है। फलतः सन् १८४० के आस पास नगर तथा ग्राम जीवन में संबंधित यथार्थवादी रेखा-चित्रों को उसने तत्कालीन रूसी जीवन की वास्तविकताओं तथा आवश्यकताओं की अनुरूप अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया और उनका स्वागत किया। बेलिस्की ने सामान्य जनता, क्लर्क, कारीगर, किसान के जीवन की कुरूपता और वीभत्सता के लेखकों का स्वागत और समर्थन किया क्योंकि वे सत्तासीनों के द्वारा समर्थित शुद्ध सौन्दर्य के आदर्श के प्रतिपक्ष जीवन की कटु वास्तविकताओं को सामने लाकर जन-चेतना को जगा कर बहुत बड़ी सेवा कर रहे थे। ऐसे प्रकृतिवादी विषयों के अंकन में बेलिस्की को आत्यन्त महत्त्वपूर्ण सामाजिक आंदोलन की झलक मिली। साहित्य के बीच इसी प्रकृतिवाद यथार्थवाद की आलोचना बेलिस्की का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान है। अपनी साहित्यिक आलोचनाओं के द्वारा वह बराबर निरकुश ज़ारशाही के विरुद्ध जनता के पक्ष में युद्ध करता रहा।

१८४६ मे वह 'समकालीन' पत्र मे काम करने लगा। इसी पत्र मे उसने गोगल के 'मित्रों से पत्र व्यवहार' की तीव्र आलोचना की जिसमे गोगल ने अपनी क्रान्तिकारी कृतियों का निराकरण किया था। बेलिस्की के इस पत्र से गोगल बड़ा दुखी हुआ और उसने बेलिस्की को पत्र लिखा। बेलिस्की ने इसका जो उत्तर दिया वह उस समय न छप सका। किन्तु वह साहित्य की अत्यन्त प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण कृति बन गयी। यह पत्र शासन, अत्याचार, नैतिक पतन की तीव्र एव कलात्मक निन्दा है। इसमें उसने लिखा कि रूसी जनता को रूसी लेखकों ही मे निरकुशता से रक्षा करनेवाले दिखाई पड़ते हैं। उन्ही मे जनता की आशा है। इसलिए जनता

लेखक के कलाहीन पुस्तक के लिए क्षमा कर सकती है किन्तु दुष्ट पुस्तक के लिए कदापि नहीं। दूसरे साल 'पेत्राशेव्स्की गोष्ठी' के लोगों को बेलिंस्की के इस पत्र का प्रचार करने के कारण कड़ी क़ैद की सजा दी गयी।

१८४७ मे बेलिंस्की ने 'रूसी साहित्य पर विचार' लेख लिखा जिसका कलात्मक सिद्धान्त के विकास मे महत्त्वपूर्ण स्थान है। बेलिंस्की तपेदिक का रोगी हो गया था। उसके मित्रों ने उसे आर्थिक सहायता देकर चिकित्सा के लिए विदेश भेजा। १८४८ मे उसकी मृत्यु हो गयी। मौत ने उसे शारीरिक यातना और जेल की सभावना दोनो से छुटकारा दिला दिया।

बेलिंस्की ने केवल साहित्य के अतिरिक्त सभी तत्कालीन विषयों पर रगमच, इतिहास, दर्शन, सांख्यिकी, कोश, विदेशी साहित्य—अपने क्रान्तिकारी एव जनवादी विचार प्रस्तुत किये।

उसके शत्रु उसे 'साहित्यिक विद्रोही' कहा करते थे। बेलिंस्की के बारे मे तुर्गनेव लिखता है कि 'वह सुन्दरता और अनुपयुक्त दोनो को पहचान लेता था। और सच को झूठ मे अलग कर निर्भीकता और साहस से अपना निर्णय देता था।' वह लेखकों की प्रतिभा को तुरत पहचान लेता था और उनको प्रोत्साहित करता था। उसका बड़ा प्रभाव था और यद्यपि उसके निजी मित्रो मे तुर्गनेव, नेक्रासोव जैसे प्रसिद्ध लेखक थे फिर भी वह अप्रसिद्ध और अज्ञात लेखकों को बराबर प्रोत्साहन देता था। प्रसिद्ध रूसी लेखकों के सबध मे बेलिंस्की के लिखे गये लेख रूसी आलोचना की सर्वोत्तम कृति के रूप मे मान्य है।

१६. इवान अलेक्सेविच याकोव्ल्येव (गेर्त्सेन)

[१८१२–१८७०]

यह मास्को के एक सौदागर का जर्मन लड़की से गैरकानूनी पुत्र था। माता पिता ने उसे वहर्जेन (रूसी मे गेर्त्सेन) कहते थे और बाद में वह इसी नाम से विख्यात हुआ।

उसकी शिक्षा दीक्षा, विश्वविद्यालय के मित्रो के वातावरण ने उसे प्रगतिशील विचारवाला व्यक्ति बना दिया। उसके निजी शिक्षको में से एक ने फ्रांस की राज्यक्रान्ति मे भाग लिया था और दूसरे ने उसे पुश्किन तथा रील्येव की गैरकानूनी कविता से परिचित कराया था। ग्रेजुएट होने के एक वर्ष बाद गेर्त्सेन और उसके दोस्त गिरफ्तार कर लिये गये और मास्को से निर्वासित कर दिए गये।

पाँच वर्ष के निर्वासन के बाद उसने पीतरबुर्ग मे नौकरी कर ली। वहाँ पर बेलिंस्की के निकट आया और उसके पत्र में लिखने लगा। थोड़े समय के बाद उसने सरकारी नौकरी छोड़ दी और सामाजिक साहित्यिक कार्य मे लग गया। यह समय पाश्चात्यवादी तथा स्लावोफिलें की गरमागरम बहस, गोगल की ख्याति तथा बेलिंस्की के प्रभाव का था। गेर्त्सेन प्रगतिवादियो का नेता बन गया था।

गेर्त्सेन की रुचि दर्शन, विज्ञान, इतिहास तथा समाजवादी साहित्य सभी की ओर थी। उसने बहुत अधिक लिखा। उसकी कृतियों मे विज्ञान में लालित्यवाद, प्रकृति के अध्ययन पर पत्र, डाक्टर क्रुओव, किसका अपराध, विशेष रूप से उल्लेखनीय थी।

गेर्त्सेन का उपन्यास 'किसका अपराध' उसकी बहुत प्रसिद्ध कृति है। यह साधारण स्थिति के पति-पत्नी के गार्हस्थ्य जीवन की कहानी है। इसका मुख्य उद्देश्य यह बताता है कि विवाहित जीवन और व्यक्तिगत आनन्द ही सब कुछ नहीं है एवं उसे जीवन की पूर्णता मान लेना बहुत बड़ी गलती है। यद्यपि बहुत से व्यक्ति ऐसी भ्रान्त धारणा मे पड़े

हैं। गेर्त्सेन का कहना है कि उसका दोष व्यक्तियों पर नहीं है। वास्तव में 'अपराध' समाज का है और उस व्यवस्था का है जो ऐसी भ्रान्त धारणा फैलाता है, जिसके फलस्वरूप लोग संकुचित व्यक्तिगत जीवन में सीमित रहते हैं और सामाजिक कार्यों से विमुख रह कर अपने जीवन के पूर्ण विकास से वंचित रह जाते हैं। इस उपन्यास का महत्व गार्हस्थ्य जीवन के करुण अन्त में न होकर उन छोटे पात्रों के जीवन के कुशल चित्रण में है जिनके द्वारा गेर्त्सेन विशेष रूप से गुलामी प्रथा पर अपने विचार प्रकट करता है। बेलिंस्की ने इस उपन्यास की बड़ी प्रशंसा की। यह उपन्यास यथार्थवादी गद्य का उत्कृष्ट ग्रंथ है।

गेर्त्सेन १८४७ में पेरिस गया और वहाँ से इटली और फिर स्विटजरलैंड। ज़ार निकोलस प्रथम की आज्ञा पर वापस न लौटने के कारण उसे शेष जीवन प्रवास में बिताना पड़ा। इन वर्षों के अनुभवों का अंकन उसकी पुस्तक 'दूसरे तट से' में हुआ है जिसने रूसी तथा विदेशी सभी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। १८५२ में वह लंदन आया और उसके प्रगतिशील आंदोलन के पक्ष में कई पत्र 'ध्रुवतारा' तथा 'घंटा' चलाए। यह पत्र क्रान्तिकारी विचारों के केन्द्र बन गये। इस प्रकार देश से दूर रहते हुए भी वह रूस देश की सेवा करता रहा। उसकी अच्छी-अच्छी राजनीतिक कृतियाँ इन पत्रों में छपीं।

बाद में प्रगतिशीलों के बीच दो दल हो गए और धीरे-धीरे उसका प्रभाव घटने लगा, फिर भी वह बराबर लिखता रहा। १८७२ में उसकी मृत्यु हो गई।

गेर्त्सेन की कृतियाँ रूस में १९०५ तक ज़ब्त रहीं। उसके ग्रंथों का प्रथम पूर्ण संस्करण अक्तूबर की समाजवादी क्रान्ति के बाद प्रकाशित हुआ। उसकी सर्वोत्तम कृति 'बीती चीजें और विचार' है जो उसके जीवन के विविध प्रकार के अनुभवों और विचारों से पूर्ण है और जिसमें उसके व्यक्तिगत जीवन की झलक भी है। यह अपनी हल्की व्यंग्यात्मक, आवेश-पूर्ण तथा वैयक्तिक शैली का अत्यन्त कलात्मक ग्रंथ है।

१७. इवान अलेक्सान्द्रोयीय गंचरोव

[१८१२-१८९१]

गंचरोव का जन्म सिम्बिर्स्क नगर के व्यापारी परिवार में हुआ था। परिवार सपन्न था और उसकी शिक्षा दीक्षा अच्छी तरह हुई थी। मास्को विश्वविद्यालय में पढ़ते हुए उसकी बेलिंस्की, गर्त्सेन, स्तानकेविच आदि प्रगतिशीलों से मित्रता थी किन्तु वह किसी दल मे शामिल न हुआ तथा राजनीति से अलग ही रहा।

उसकी पहली महत्वपूर्ण कृति 'सामान्य इतिहास' १८४७ में 'समकालीन' पत्र में छपी और उसने लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। १८४९ मे उसने अपने दूसरे उपन्यास के आरम्भिक अध्याय उसी पत्र मे 'अब्लोमोव के स्वप्न' नाम से छपाने शुरू किए किन्तु यह इस समय अधूरा ही रह गया। यह कृति १८५७ मे पूरी हुई और १८५९ मे छपी। उसकी तीसरी प्रसिद्ध कृति 'कगार' है। १८५२ मे वह एडमिरल के सेक्रेटरी की हैसियत से विश्व-यात्रा पर निकला और उसे अमेरिका और जापान के तट की यात्रा का हाल लिखने का आदेश दिया गया। फलतः १८५८ में दो भागों मे गचरोव की यात्रा का ग्रंथ "पलड्डा जहाज" के शीर्षक से निकला ।

'सामान्य इतिहास' में सन् चालीस के युग के रूसी जीवन का चित्र प्रस्तुत किया गया है और पितृसत्ता के तथा बुर्जुआ संस्कृति के बीच का संघर्ष दिखाया गया है। लेखक ने इस उपन्यास में प्रगतिशील मध्यम वर्ग का समर्थन किया और दूसरे पक्ष की त्रुटियों का उद्घाटन किया।

'कगार' उपन्यास सन् साठ की चीज है। इस समय तक पितृसत्तात्मक जीवन समाप्त हो चुका था और बुर्जुआ स्थिति दृढ़ हो गई थी। किन्तु ' क्रान्तिकारी, जनात्मक शक्ति भी विकसित हो रही थी और चुनौती दे रही थी जिससे कि बुर्जुआ पक्ष चिन्तित हो उठा

था। गोंचरोव अब अनुदार और अपरिवर्तनवादी बन गया था। उसने बूर्जुआ पक्ष का, उच्च पक्ष का समर्थन किया और नयी प्रगतिशील जनात्मक शक्ति से विमुख रहा।

उसकी सब से प्रसिद्ध कृति 'अब्लोमोव' है। इस उपन्यास में सन् पचास के ज़माने का तीव्र संघर्ष प्रस्तुत किया गया है। दास प्रथा का प्रश्न इस समय की ज्वलन्त समस्या थी। गोंचरोव इसमें प्रगतिशील लेखक के रूप में आता है। वह प्राचीन व्यवस्था की आलोचना करता है यद्यपि उसके मन के एक कोने में इसके प्रति थोड़ी सहानुभूति भी है।

इस उपन्यास का नायक अब्लोमोव साहित्यिक संसार में बड़ा प्रसिद्ध हुआ और रूसी में आलसी व्यक्ति का प्रतीक बन गया। अब्लोमोव भावुक, सुसंस्कृत और बुद्धिमान युवक है किन्तु वह कोरा स्वप्नदर्शी ही बना रहता है और धीरे-धीरे क्रियाशून्य बन जाता है। उसमें संघर्ष में पड़ने की न शक्ति रह जाती है और न इच्छा ही होती है और वह सामाजिक जीवन से बिलकुल अलग हो जाता है। 'सोफ़ा' पर लेटा हुआ वह केवल भावनाओं के स्वप्निल संसार में डूबा रहता है और उसके स्वप्न कोरे स्वप्न रह जाते हैं। आरम्भ में उसके मित्र उसे सुधारने का प्रयत्न करते हैं किन्तु वे भी निष्फल रहते हैं और उसका साथ छोड़ देते हैं। अब्लोमोव अब किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं चाहता क्योंकि जीवन की स्थिर गतिविधि में बाधा पड़ने का भय है। वह अब पढ़ना भी छोड़ देता है और ज़मींदारी की देखभाल भी नहीं करता। उसका जीवन अब सर्वथा क्रियाशून्य हो जाता है। वह पढ़ा-लिखा बेकार आदमी है।

गोंचरोव बताता है कि नायक की इस अधोगति का मूल कारण ज़मींदारी तथा दास प्रथा है। जब सेवा के लिए अनगिनत दास हैं और रियासत की आमदनी पर जीवन बिना किसी आशंका के सुखपूर्वक बिताया जा सकता है, तो कोई संघर्ष में क्यों पड़े। फलतः इस ज़मींदारी तथा दास प्रथा ने ज़मींदारों को परोपजीवी बना दिया और खाने-सोने के सिवा उनका कोई उच्च ध्येय न रहा। इस सामन्तशाही प्रथा और वातावरण ने उन्हें किसी काम का न रखा। अब्लोमोव प्रेम करना भी छोड़ देता है।

उपन्यास की 'नायिका' ओल्गा के रूप में उन्नीसवीं शती के मध्य रूसी स्त्री का चित्र प्रस्तुत किया गया है। अब्लोमोव की दुर्बलताओं जानते हुए भी वह उससे प्रेम करती है और उसे सुधारने की कोशिश कर है। किन्तु जब वह हार जाती है तो उससे प्रेम करना छोड़ देती है और उस मित्र से शादी कर लेती है। ओल्गा उस ज़माने की नयी मनोवृत्ति की है जो सार्वजनिक जीवन में सहयोग देने के अपने अधिकार का अनु करने लगी है।

ओल्गा के विपरीत एक और स्त्री है जिसका अब्लोमोव के प्र सर्वथा दूसरा दृष्टिकोण है। उसका ध्येय अब्लोमोव को हर प्रकार आराम देना है। वह स्वयं निम्न वर्ग की है और अब्लोमोव को वि महत्त्व व्यक्ति मानती है। वह उसके चारों ओर शान्ति और आराम वातावरण बना देती है जो उसे अपने बचपन की याद दिलाता है। इस प्रकार उसके मानसिक ह्रास को पुष्ट कर देती है। उपन्यास मध्य ज़मींदारों के पारिवारिक जीवन का चित्रण है।

यह उपन्यास अपनी वास्तविकता तथा सामाजिक वस्तु-स्थि यथातथ्य चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। ज़मींदारों की जीवन पद्धति उनकी रीति-रस्मों का लेखक का ज्ञान बड़ा विस्तृत है और उनके कोई बात छूटने नहीं पायी है। इसके साथ ही इनका रोमांटिक [illegible] इनको आकर्षक बनाने का प्रयत्न नहीं किया गया है। यह प्रतिदिन वातावरण में घटने वाली प्रतिदिन की कहानी है। इसमें न तो अतिशयो है और न किसी प्रकार की अस्वाभाविकता। कला की दृष्टि से 'अब्लोमो रूसी साहित्य का उत्कृष्ट ग्रंथ है जिसकी यथार्थता आलोचनात्मक यथार्थ के अनुरूप रह सकती है।

१८. सन् १८६०-७० का सामाजिक, राजनीतिक संघर्ष

रूस में दास प्रथा की व्यवस्था की संकटपूर्ण स्थिति

उन्नीसवी शती के पूर्वार्ध के जीवन और साहित्य दोनों मे दास प्रथा के विरुद्ध बराबर आवाज़ उठाई जाती रही। यह व्यवस्था आर्थिक दृष्टि से भी अनुपयुक्त सिद्ध हो रही थी क्योंकि देश के आर्थिक विकास मे औद्योगिक तथा कृषि क्षेत्र मे इन बेगार दास-कृषकों के परिश्रम का उत्पादन बहुत नीचा था और लाभकारी न था।

दासाधिकार के विरुद्ध अब किसान आन्दोलन भी बड़ा तेज़ चल रहा था। क्रीमिया (१८५३-१८५७) के युद्ध के बाद यह आन्दोलन और भी उग्र हो गया क्योंकि युद्ध के फलस्वरूप कृषि तथा कृषकों की दशा और भी ख़राब हो गयी और जमींदारों द्वारा उनका शोषण और भी क्रूर हो गया। क्रीमिया के युद्ध ने निकोलस सरकार की अयोग्यता और दास प्रथा वाले रूस के आर्थिक पिछड़ेपन को स्पष्टता से प्रदर्शित कर दिया। युद्ध के बाद किसानों की यह हलचल कम न हुई वरन् और भी बढ़ गयी। सारे देश मे क्रान्तिकारी वातावरण घना होने लगा।

क्रीमिया के युद्ध मे पराजय के फलस्वरूप कमज़ोर हो जाने के कारण और ज़मीदारों के विरुद्ध किसानों विद्रोहों से भयभीत होकर ज़ार सरकार ने दास प्रथा को समाप्त कर दिया। सन् १८६१ के सुधारों से भी स्थिति में कोई सुधार न हुआ और किसानो का असंतोष और संघर्ष बढ़ता ही गया।

ऐसे क्रान्तिकारी वातावरण के बीच प्रगतिशील रूसी संस्कृति तथा सामाजिक-राजनीतिक विचारों का विकास हुआ। उन्नीसवी शती के सन् बीस और चालीस के वर्षों की अपेक्षा सन् साठ के वर्षों मे प्रजातन्त्रात्मक और समाजवादी तत्वों का अधिक वेग से प्रचार हुआ। क्रान्तिकारी डिमोक्राट बेलिंस्की के विचारों की चेर्निशेवस्की तथा दोब्रोल्यूबोव द्वारा विशद् व्याख्या की गयी और उनको बड़ी व्यापकता प्राप्त हुई।

इस सामाजिक संघर्ष ने नये प्रकार के बुद्धिजीवियों को जन्म दिया। अब राजनीतिक सामाजिक संघर्ष में वे डिमोक्राट बुद्धिजीवी सामने आये जो उच्च वर्ग से नहीं संबंधित थे वरन् जनता के बीच से आये थे। स्वयं अभाव और निर्धनता के बीच जीवन बिता चुकने के कारण ये (राज्नोचिन्त्सी) उच्च वर्ग से असंबद्ध बुद्धिजीवी अच्छी तरह जानते थे कि निरंकुश शासन तथा जमींदार और कर्मचारियों के अत्याचार के बीच जनता का जीवन कितना दयनीय तथा असह्य हो रहा है।

राज्नोचिन्त्सी

इस प्रकार रूसी साहित्य के क्षेत्र में अब नये बुद्धिजीवी 'राज्नोचिन्त्सी' लेखक—पम्यालोव्स्की (१८३५–१८६३), उस्पेन्स्की (१८४३–१८८९), स्लेप्त्सोव (१८३६–१८७८) तथा अन्य आये जिनकी रचनाएं सताई हुई जनता के प्रति गहरी सहानुभूति से परिपूर्ण थीं और जिनकी रचनाओं में सामाजिक असमानता और शोषण के विरुद्ध उग्र प्रतिवाद था। इन सब लेखकों ने एक स्वर से जमींदार-कर्मचारियों तथा बुर्जुआ व्यवस्था की कड़ी आलोचना की।

क्रान्तिकारी डिमोक्राट

सन् साठ के रूसी समाज के प्रगतिशील पक्ष का संचालन यही क्रान्तिकारी डिमोक्राट कर रहे थे, जिनके नेता चेर्निशेव्स्की और दोब्रोल्युबोव थे। इन लोगों ने बड़े साहस और दृढ़ता के साथ निरंकुशता का विरोध किया और जनता में क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार किया। इन लोगों ने सन् १८६१ के सुधारों की आलोचना की। उनकी भर्त्सना का दिग्दर्शन कराया और जनता में यह विचार फैलाया कि सुधारों से नहीं वरन् केवल क्रान्ति द्वारा ही जनता का जीवन ऊपर उठाया जा सकता है।

इन लोगों ने क्रान्तिकारी प्रचार को बड़ा महत्व दिया और [illegible]

'कला जीवन को प्रतिबिम्बित करती है और साहित्य को जीवन की पाठ्य-पुस्तक बनाना चाहिए। लेखक का प्रथम कर्त्तव्य जनता का उद्धारक बनना और अत्याचार से मुक्ति दिलाना है।' इसी प्रकार दोब्रोल्यूबोव ने साहित्य से सत्य तथा जीवन के आलोचनात्मक अभिव्यंजन और चित्रण की माँग की।

निक्लासेव ने दोब्रोल्यूबोव के बारे में लिखा कि गरीबी और कठोरता से भरा बाल्य-काल, भूख से भरे स्कूल के दिन, फिर चार साल का अथक परिश्रम, और बाद में अपनी मृत्यु का आभास—यह दोब्रोल्यूबोव के जीवन की पूरी कहानी है। दोब्रोल्यूबोव पच्चीस वर्ष की अवस्था में मर गया था। फिर भी उसका समकालीनों तथा बाद की पीढ़ियों पर बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा। पेडागागिक इंस्टीट्यूट में पढ़ते हुए उसका १८५६ में पहला लेख 'समकालीन' में छपा था और इस तरह वह 'समकालीन' के संपर्क में आया। १८५७ में उसने इंस्टीट्यूट छोड़ दिया और 'समकालीन' पत्र में काम करने लगा।

दोब्रोल्यूबोव ने समालोचना के स्तर को ऊँचा उठाया। उसने अपनी आलोचना को यथार्थवादी आलोचना कहा। उसके मतानुसार आलोचना का काम कलाकार के योगदान की व्याख्या और कृति के कलात्मक और सामाजिक मूल्य के निर्धारण में पाठक की सहायता करना है और कभी-कभी कलाकार की कृति में छिपे हुए मंतव्य को समझाना है। प्रगतिशील परंपरा को आगे बढ़ाने वाले उसके लेखों ने उसे सामान्य वर्ग के लेखकों का नेता बना दिया। साल्तीस्कोव चेद्रिन, अस्त्रोवस्की, गंचरोव, तुर्गनेव, आदि पर उसके आलोचनात्मक लेख रूपी साहित्य की स्थायी निधि माने जाते हैं।

दोब्रोल्यूबोव ने विशेष रूप से साहित्य के आलोचकों के सामने बड़ा ऊँचा आदर्श रखा और बताया कि आलोचक का कर्त्तव्य, युक्तियुक्त समीक्षा द्वारा पाठकों में साहित्यिक कृतियों से सामाजिक तथा कलात्मक तत्वों के चयन और ग्रहण की क्षमता उत्पन्न करना है। कलाकार तथा कृति के गहन और सूक्ष्म विचारों की व्याख्या है और कृति

लिबरल विचारधारा की आलोचना भी की और उसकी संकीर्णता का दिग्दर्शन कराया।

'समकालीन पत्र'

सन् साठ के वर्षों का सबसे अधिक प्रगतिशील पत्र 'समकालीन' था। इससे डिमोक्राटिक विचारधारा के प्रचार को महत्वपूर्ण योग प्राप्त हुआ। इसके संचालन और संपादन में चेर्निशेव्स्की, दोब्रोल्यूबोव और नेक्रासोव थे और कुछ समय बाद इसमें साल्तिकोव श्चेद्रिन आये। १८६१ के सुधार के समय और उसके बाद भी यह पत्र इन सुधारों का खोखलापन प्रदर्शित करते हुए बराबर किसान क्रान्ति के पक्ष में प्रचार करता रहा। यह पत्र बड़ा लोकप्रिय रहा। विशेष रूप से चेर्निशेव्स्की तथा दोब्रोल्यूबोव के क्रान्तिकारी लेखों ने पाठकों का ध्यान अपनी ओर सबसे अधिक आकृष्ट किया।

फलतः इस पर शासन की कुदृष्टि पड़ी और सेंसर का दमन चक्र चला। सन् साठ के युग का पूर्वार्ध इसके लिए विशेष संकट का समय था। १८६१ में दोब्रोल्यूबोव की मृत्यु हो गयी और १८६२ में चेर्निशेव्स्की गिरफ्तार कर लिया गया। सन् १८६२ में यह पत्र आठ महीने के लिए बंद कर दिया गया। इस जब्ती के बाद जब इसका पहला अंक निकला तो स्पष्ट हो गया कि यह पत्र पूर्ववत् लोकप्रिय है और प्रगतिशील है। इसे दो बार और चेतावनी दी गई और १८६६ में जब अलेक्सान्द्र द्वितीय की हत्या का प्रयत्न हुआ तो यह पत्र एकदम बन्द कर दिया गया।

१८६१ के सुधार के साथ बुद्धिजीवियों के बीच कला के संबंध में दो विचारधाराओं का संघर्ष छिड़ गया। उनमें एक दल (फ्येत, त्यूचेव, द्रुजीनिन आदि) तो 'शुद्ध कला' का समर्थक था। उसका कहना था कि सब कुछ परिवर्तनशील है। मानवता का केवल सत्य, शिव और सुन्दर का विचार सतत् है। इसलिए उन्होंने अपरिवर्तनशील समय तथा देश से परे 'शुद्ध कला' के सर्जन की बात कही और उसे जीवन तथा जनता से अलग कर दिया। उनकी दृष्टि से काव्य सामान्य जनता के लिए न होकर केवल कतिपय चुने हुए 'विशिष्ट जनों' के लिए है।

इसके विपरीत क्रान्तिकारी डिमोक्राट चेर्निशेव्स्की, दोब्रोल्यूबोव आदि का पक्ष था, जो कि 'शुद्ध कला' के सिद्धान्त का विरोधी था। वह कला को सामाजिक अभिव्यक्ति मानता था और उसे जनहित का साधन कहता था तथा उसका जनता की राजनीतिक, सामाजिक स्वतन्त्रता के लिए उपयोग करता था। इस दल का रूसी साहित्य पर बड़ा प्रभाव पड़ा और फलतः रूसी साहित्य की यथार्थवादी विचारधारा इससे और पुष्ट हुई। आगे चलकर रूसी साहित्य प्रधानतया समाजोन्मुख बन गया और उसने जनहित का पक्ष लिया जिसकी परिणति अक्तूबर की समाजवादी क्रान्ति थी। सन् साठ के क्रान्तिकारी डिमोक्राटों का सबसे महत्वपूर्ण योगदान इस क्रान्ति की भावना का संवर्द्धन, गठन और पोषण है।

१९. इवान सेर्गेइविच तुर्गेनेव

[१८१८–१८८३]

इवान सेर्गेइविच तुर्गेनेव का जन्म सन् १८१८ में एक जमीदार परिवार मे हुआ। इस परिवार मे दासो के साथ बड़ा कठोरतापूर्ण व्यवहार होता था। तुर्गेनेव की माता बड़ी ही कठोर थी और तुर्गेनेव को अक्सर सजा मिला करती थी। तुर्गेनेव के हृदय मे बचपन से ही दास अधिकार के प्रति घृणा पैदा हो गयी।

शिक्षा

तुर्गेनेव पहले तो मास्को विश्वविद्यालय मे दाखिल हुआ और बाद में पीतरबुर्ग विश्वविद्यालय में पढ़ने लगा। यहाँ की शिक्षा समाप्त कर वह दर्शन की पढ़ाई पूरी करने के लिए बर्लिन विश्वविद्यालय चला गया। वह दर्शन का प्रोफ़ेसर बनना चाहता था किन्तु उसकी यह इच्छा पूरी न हो सकी क्योकि ज़ार सरकार ने पच्छिम तथा रूस मे स्वतन्त्रता आदोलन की लहर से डरकर विश्वविद्यालयो मे दर्शन की पढाई बंद कर दी। इसके बाद तुर्गेनेव ने अपने को पूर्ण रूप से साहित्य सर्जन मे लगा दिया।

सन् १८४३ मे उसका पहला काव्य 'पराशा' छपा। इसी समय के आस-पास उसकी कहानी 'अन्द्रेइ कालीसोव' और नाटक 'धनाभाव' प्रसिद्ध हुए।

शिकारी की डायरी

इस समय की उसकी महत्वपूर्ण कृति उसकी कहानियाँ और टिप्पणियाँ है जो कि बाद मे 'शिकारी की डायरी' मे सकलित हुई। सन् १८४७ मे 'समकालीन' पत्र मे उसकी कहानी 'खोर और कलीनिच' छपी जिसमे दास-किसानो का चित्रण किया गया है। खोर अनुभवी है और अपने कार्य मे बड़ा कुशल है। कलीनिच भावुक और काव्य प्रेमी है। स्वभाव मे अन्तर होते हुए भी दोनो मित्र हैं और एक दूसरे के पूरक हैं। इस कहानी मे सामान्य किसानो के चित्रण द्वारा किसानों का आत्मिक

सौन्दर्य पहली बार प्रस्तुत किया गया। बेलिंस्की ने इस कहानी का उच्च मूल्यांकन करते हुए कहा कि 'तुर्गनेव जनता के पास उस ओर से पहुँचा जिस ओर से उसके पास तुर्गनेव को छोड़कर इसके पहले कोई न पहुँचा था।' इसके बाद किसानों के जीवन से संबंधित उसकी अन्य कहानियाँ ('एरेमोलाइ' और 'पनचक्की वाले की स्त्री,' 'ल्गोव,' 'गायक' आदि) छपीं जो बाद मे 'शिकारी की डायरी' में संकलित हो गईं। इस पुस्तक पर तुर्गनेव ने कई वर्ष तक परिश्रम किया और वह बराबर इसमे नयी कहानियाँ तथा टिप्पणियाँ जोड़ता रहा। इनमें से प्रत्येक कहानी महत्त्वपूर्ण साहित्यिक घटना बन गयी। प्रत्येक नयी कहानी में रूसी किसान का जीवन अधिकाधिक व्यापकता के साथ चित्रित किया गया है। सामान्य रूसी व्यक्ति की आत्मिक समृद्धि का चित्रण करते हुए तुर्गनेव ने दास-कृषक के जीवन की कठिन और असह्य परिस्थितियो पर कठोर आक्रमण किया है। इन कहानियो मे जमींदारो द्वारा विनष्ट गावो का चित्र भी मिलता है। 'शिकारी की डायरी' दास प्रथा के विरुद्ध अभियोग है और इसमें उनको मुक्त करने का आह्वान है।

१८५२ मे गोगल की मृत्यु पर तुर्गनेव ने उसके बारे मे लेख लिखा जिसे पीतरबुर्ग के सेंसर ने छापने की आज्ञा नही दी। तुर्गनेव ने इसे मास्को भेजा और वहाँ यह लेख छपा। इसी सबध मे सेंसर के किसी नियम-भंग के अपराध में उसे गिरफ़्तार कर लिया गया। गिरफ़्तारी की इस अवधि मे उसने अपनी प्रसिद्ध कहानी 'मूमू' लिखी जिसका वस्तु विषय दास प्रथा विरोधी है। इसके बाद वह स्पास्कोये-नितोलिनोवो निर्वासित कर दिया गया। यह निर्वासन डेढ़ वर्ष का था।

रुदिन

१८५५ में उसने 'रुदिन' उपन्यास लिखा। इसका प्रधान नायक रुदिन सार चालीस के वर्षों के रूसी बुद्धिजीवियों का ठेठ प्रतिनिधि है। वह उच्च विचारों का प्रचारक है किन्तु प्रतिक्रियावादी परिस्थिति के बीच वह स्वयं निष्क्रिय बना रहता है। जीवन के अनुकूल अपने को ढालने की क्षमता का अभाव और दृढ़ इच्छाशक्ति की कमी तथा संघर्ष

की असमर्थता उसे अनावश्यक व्यक्ति बना देते हैं और वह बराबर असफल रहता है। फलतः कई गुणो के होते हुए भी रुदिन अपने युग की बलि चढ़ जाता है। लेखक के समकालीनो ने इस कृति का स्वागत किया और इसका उच्च मूल्यांकन किया। इस कृति मे उन्हे युग के ज्वलन्त प्रश्नो की झलक मिली और व्यक्तिगत जीवन मे अपने को सीमित न कर इन प्रश्नो को सुलझाने का आह्वान मिला।

अभिजात वर्ग का नीड़

'रुदिन' उपन्यास के बाद 'अभिजात वर्ग का नीड' (१८५९) और 'उपारम्भ पर' (१८६०) उपन्यास निकले जिनमे लेखक ने उन्नीसवी शती के मध्य के रूसी जीवन से सबधित प्रश्नो को प्रस्तुत किया।

'अभिजात वर्ग का नीड़' उपन्यास मे अभिजात वर्ग के नीड को विशृंखलन दिखाया गया है। इसका नायक लाव्रेत्स्की सुसस्कृत किन्तु परिश्रम के लिए अक्षम व्यक्ति है। उसे लीज़ा से हार्दिक प्यार है। लीज़ा भी उसे चाहती है, किन्तु उनका विवाह न हो सका क्योंकि लाव्रेत्स्की की पत्नी की मृत्यु की खबर गलत निकली। भाग्य के इस आघात को न सह सकने के कारण लीज़ा मठ मे सन्यासिनी बन जाती है और पत्नी के रहते हुए भी लाव्रेत्स्की का जीवन एकाकी ही रहता है। यह उपन्यास उस समय भी बहुत लोकप्रिय था और आज भी है। लीज़ा का कर्तव्यशील और आत्मबलिदानी रूप बड़ा ही आकर्षक है।

उपारम्भ पर

'उपारम्भ पर' उपन्यास का नायक इसारोव बुल्गारिया का रहने वाला है और रुदिन तथा लाव्रेत्स्की के विपरीत कर्मठ व्यक्ति है। उसके जीवन का लक्ष्य अपने देश की जनता को तुर्कों की अधीनता से मुक्त करना है और वह इसके लिए अपने को पूरी तरह से तैयार करता है।

उसकी जीवन सगिनी रूसी लड़की एलेना स्तारवोवा है। इस व्यक्ति के साथ अपने को सयोजित कर वह अपने पिता द्वारा अपने लिए निर्णीत व्यक्ति को अस्वीकार कर देती है और इसारोव के साथ उसकी

सहायता के लिए बुलगारिया जाने को तैयार है। इन्सारोव की रास्ते में मृत्यु हो जाती है किन्तु यह लड़की अपने मित्र के इस साहसपूर्ण कार्य को आगे बढ़ाती है।

तुर्गेनेव के इस उपन्यास में क्रान्तिकारी नायक के रूप में रूसी की जगह बुलगारिया के निवासी को प्रस्तुत करने का मुख्य कारण यह था कि उसके द्वारा तुर्गेनेव यह प्रदर्शित करना चाहता था कि रूसी यथार्थता के बीच अभी क्रान्तिकारी भावना का आविर्भाव नहीं हुआ है। तुर्गेनेव के समकालीनों ने इसे रूसी वास्तविकता की ही अभिव्यक्ति मानी और इन्सारोव के रूप में उन्हें अपने देशभक्तों के प्रयत्नों की ही झलक मिली।

दोब्रोल्यूबोव ने इस उपन्यास की आलोचना की और अपना क्रान्तिकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। तुर्गेनेव इससे सहमत न था क्योंकि उसका अभी तक 'सुधारों' में विश्वास था और वह सोचता था कि दास-किसानों को बिना क्रान्ति के मुक्त किया जा सकता है। फलतः दोनों में मतभेद बढ़ गया और तुर्गेनेव 'समकालीन' पत्र के सहयोगी मंडल से अलग हो गया। फिर भी वह प्रतिक्रियावादियों की श्रेणी में नहीं गया।

सन् १८६२ में तुर्गेनेव की सर्वोत्तम कृति, उसका उपन्यास 'पिता और पुत्र' निकला। जिसमे उसने लिबरल अभिजात वर्ग की आलोचना की और जनवादी बुद्धिजीवियों के प्रतिनिधि का बड़ी सहानुभूति के साथ चित्रण किया।

पिता और पुत्र

उपन्यास मे केवल 'पिताओं' अर्थात् पुरानी पीढ़ी तथा 'पुत्रों' अथवा नवीन पीढ़ी की ही चर्चा नहीं है वरन् पुरानी पीढ़ी से लेखक का आशय प्राचीन रूढ़िवादी दृष्टिकोण से है और नई पीढ़ी से उसका मतलब उस जनवादी 'राज्नोचिन्त्सी' या बुद्धिजीवी वर्ग से है जो नयी सामाजिक शक्ति के रूप मे अभिजात वर्ग की प्राचीन विचारधारा के विरुद्ध संघर्ष कर रहा है। 'पिता और पुत्र' की मुख्य विषय-वस्तु इन दो सामाजिक वर्गों की विचारधारा एवं दृष्टिकोण का संघर्ष है। प्राचीन दृष्टिकोण का प्रतिनिधि पावेल पेत्रोविच है और नवीन का येवगेनिई बजारोव है।

बजारोव प्रत्येक वस्तु का निराकरण करता है और तुर्गनेव उसे 'निहिलिस्ट' (नास्तिवादी) कहता है। वह अभिजात वर्ग की संस्कृति, जीवन पद्धति, आदर्शवादी दर्शन तथा रोमांटिक प्रेम आदि सभी का निराकरण करता है। अपनी प्रखर बुद्धि तथा तीक्ष्ण तर्क से सबको पराजित करता है।

ऐसी प्रतिभा से नवयुवक बजारोव बहुत कुछ कर सकता था किन्तु वह बिना कुछ किए ही मर जाता है, लोगों ने इसका अर्थ यह लगाया कि तुर्गनेव का विचार यह है कि 'रूसी इसारोव' तो आ गये किन्तु अभी उनका कार्य समय शुरू नहीं हुआ है। बजारोव के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए भी लेखक उसके दृष्टिकोण से सहमत नहीं है और इसी से उसने इस पात्र के चरित्र की केवल विषमता ही प्रदर्शित की है। बजारोव बड़े कामों की बात करता है फिर भी कुछ कर नहीं पाता। प्रेम का निराकरण करता है और फिर भी प्रेम करता है। इन विषमताओं को प्रदर्शित करते हुए भी लेखक ने उसे प्राचीन पीढ़ी के 'पिताओं' से उत्तम ही चित्रित किया है।

अपनी कलात्मक विशिष्टताओं के कारण 'पिता और पुत्र' की गिनती रूसी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कृतियों के बीच की जाती है। यह उपन्यास बहुत बड़ा नहीं है फिर भी इसमें तत्कालीन रूसी समाज के ज्वलन्त प्रश्नों का बड़ा व्यापक समावेश है। तुर्गनेव के अन्य उपन्यासों की तरह इसमें भी ऐसे अनेक स्थल हैं जहाँ कई प्रश्नों और समस्याओं पर वाद-विवाद प्रस्तुत किया गया है जिससे पात्रों की विशिष्टता और उनके चरित्र की झलक मिलती है।

तुर्गनेव रूसी प्रकृति के चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। प्रकृति के यह चित्रण पात्रों की अनुभूतियों से उनके आनन्द और दुख से घनिष्ठता से सम्बन्धित है। उपन्यास का अन्तिम दृश्य शोक और प्रगीतात्मकता से ओत-प्रोत है और यह तुर्गनेव की उच्च कलात्मकता का नमूना है।

जीवन के अन्तिम वर्ष

तुर्गनेव की अन्तिम बड़ी कृति उसका उपन्यास 'अछूती जमीन' है

जिसमें रूसी बुद्धिवादियों की जनता के बीच 'यात्रा' दिखाई गयी है।

सन् ७० के वर्षों में तुर्गनेव ने 'गद्य मे काव्य' और 'साहित्यिक तथा दैनिक सस्मरण' लिखे।

तीन सितम्बर १८८३ मे तुर्गनेव की मृत्यु हो गयी।

तुर्गनेव की कथाएँ, कहानियाँ और उपन्यास उन्नीसवी शती के सन् चालीस से लेकर सन् सत्तर तक के वर्षों के रूसी जीवन का व्यापक चित्र प्रस्तुत करते हैं।

सामाजिक चेतना के बीच उभरते हुए युग के नये विचारों और नयी आवश्यकताओं को वह तुरन्त समझ गया और अपनी कृतियों में उसने उन प्रश्नों को प्रस्तुत किया जो कि समस्त को मथने लगे थे।

. तुर्गनेव ने रूसी साहित्य को विश्व साहित्य के प्रांगण में उच्च एवं सम्मानित स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया।

२०. निकोलाइ अलेक्सेन्द्रेविच नेक्रासोव

[१८५१-१८७८]

नेक्रासोव के नाम के साथ रूसी काव्य के विकास का उन्नीसवी शती के सन् चालीस से लेकर सन् सत्तर तक का पूर्ण युग जुड़ा हुआ है। वह रूसी क्रांतिकारी जनवादी, प्रतिभाशाली कवि है। वह बेलिंस्की का अनुगामी और क्रान्तिकारी जनवादी चेर्निशेव्स्की और दोब्रोल्यूबोव का सहयोगी है।

निकोलाइ अलेक्सेन्द्रेविच नेक्रासोव का जन्म १० दिसम्बर १८२१ में हुआ। उसका बचपन अपने पिता की जमींदारी मे बीता जहाँ वह प्रथम बार दास-कृषकों के कठोर जीवन से परिचित हुआ। उसके पिता का अपने दास-कृषको के प्रति बडा ही कठोर व्यवहार था। वोल्गा पर उसने नाव खीचनेवालों को देखा और उनके गीत सुने और व्लदीमिर की सड़क पर उसने बेड़ियो मे जकडे साइबेरिया भेजे जाते हुए राजनीतिक बंदियों के समूहों को देखा। इन सबने बालक नेक्रासोव के हृदय में शोषकों और अत्याचारियों के प्रति घृणा और क्रोध भर दिया।

साहित्यिक कार्यकलाप का आरम्भ

नेक्रासोव का पिता चाहता था कि उसका पुत्र पीतरबुर्ग जाकर सेना का अफ़सर बने। नेक्रासोव पीतरबुर्ग तो आया किन्तु सेना मे न जाकर पीतरबुर्ग विश्वविद्यालय मे दाखिल होने की असफल कोशिश की। वह कवि और लेखक बनना चाहता था। फलतः पिता ने रुष्ट होकर उसकी आर्थिक सहायता बंद कर दी। विवश होकर नेक्रासोव को रोटी के लिए काम की खोज में भटकना पड़ा।

उसने अपना पहला काव्य संग्रह 'स्वप्न और स्वर' के नाम से छपाया, जिसकी बड़ी कड़ी आलोचना हुई। असफलताओं के बावजूद नेक्रासोव बराबर व्यंग्यात्मक कविताएँ, छोटी कहानियाँ तथा टिप्पणियाँ आदि पत्रों मे लिखता रहा। उसकी सबसे अधिक सहायता बेलिंस्की ने

की तथा बेलिंस्की के प्रभाव में ही उसका साहित्यिक मार्ग प्रशस्त हुआ।

सन् चालीस और पचास के वर्षों में नेक्रासोव की सर्जना

१८४५ में नेक्रासोव का संग्रह 'पीतरबुर्ग का रूप रंग' निकला। उसमें उसका लेख 'पीतरबुर्ग के कोने' भी था। उसने इसमें शहर के दूर के हिस्सों का चित्र प्रस्तुत किया था जिसमें गंदे घर और उनके आनन्द-विहीन रहने वालों का जीवन दिखाया था। बेलिंस्की ने इस लेखक की असाधारण पर्यवेक्षण शक्ति और चित्रण कौशल की बड़ी प्रशंसा की।

इसके बाद नेक्रासोव ने कई कविताएँ लिखी जिनमें लोगों की निर्धनता का बड़ा व्यापक चित्र था और जीवन के ऐसे दृश्यों का अंकन था जिनकी अभिव्यक्ति उसके पहले किसी कवि ने न की थी। अपनी कविता 'जा रहा हूँ रात में' वह दम्पति के शोक का चित्रण कर रहा है। घर में दरिद्रता और अभाव है। बच्चे का ताबूत खरीदने को भी पैसा नहीं है। बच्चे के अंतिम संस्कार के लिए और भूखे पति को भोजन देने के लिए पत्नी अपना शरीर बेचने का निश्चय करती है। उस कविता के मार्मिक प्रभाव की चर्चा तुर्गनेव और साल्तिकोवश्चेद्रिन ने भी की।

शहर वालों की दरिद्रता का चित्रण नेक्रासोव की 'सड़क पर' तथा 'मौसम के बारे में' कविताओं में भी हुआ है। इन कविताओं में जन-जीवन की विरूपता तथा सामान्य जनता के आँसू हैं। और सबसे बड़ी बात यह कि नेक्रासोव पूर्ववर्ती कवियों के विपरीत दरिद्रता का बड़ा व्यापक चित्रण प्रस्तुत करता है। वह कुछ भी नहीं छिपाता और पाठकों के सामने कटु-सत्य प्रस्तुत कर देता है।

नेक्रासोव की इस समय की कविताओं में शहरी जीवन के वस्तु-विषय के साथ किसानों के जीवन का वस्तु-विषय भी प्रमुख है। बेलिंस्की से प्रभावित होकर ही नेक्रासोव ने इन विषयों को चुना था। किसान जीवन से संबंधित नेक्रासोव की प्रथम प्रभावपूर्ण कविता 'सड़क में' है। इसमें रूसी दास लड़की की दुःख-भरी कथा है जिसका ताल्लुक़ेदार की लड़की के साथ ही लालन-पालन हुआ है किन्तु जिसे नये ताल्लुक़ेदार ने घर से

निकाल दिया है। किसान के कठिन परिश्रमी जीवन से अनभ्यस्त हो जाने के कारण उस लड़की का जीवन अब बड़ा दारुण हो जाता है।

नेक्रासोव द्वारा काव्य में प्रस्तुत किसान जीवन की विषय-वस्तु भी इस समय के लिए नयी थी। इसका प्रगतिशील पक्ष ने हार्दिक स्वागत किया।

इस समय किसान जीवन से संबंधित नेक्रासोव की कई कविताएँ निकलीं, जिनमें 'मातृभूमि', 'गाँव में', 'विस्मृत गाँव', आदि बड़ी प्रभावपूर्ण रचनाएँ हैं। मातृ-भूमि में कवि दुःख और असंतोष के साथ अपने पिता के खोखले जीवन और उसकी निरंकुशता को याद करता है। इसमें जमींदारों के अत्याचार और उत्पीड़न के मार्मिक चित्र हैं।

'विस्मृत गाँव' में किसानों के अभावों और उनकी अधिकारहीनता का चित्र है। तास्लुकेदार गाँव से बड़ी दूर रहता है और उसके कारिंदे किसानों पर मनमानी करते रहते हैं। गाँव वालों को आशा है कि मालिक आएगा और सब ठीक करेगा, किन्तु मालिक नहीं आता, नहीं आता। एक दिन रास्ते में लोगों ने भीड़ देखी और ऊँची गाड़ी पर ताबूत देखा। ताबूत के अन्दर मालिक था और ताबूत के पीछे नया मालिक। पुराने मालिक के लिए प्रार्थना पढ़ी गई। नये मालिक ने आँसू पोंछे, गाड़ी में बैठा और फिर वापस शहर चला गया। यह कविता एक प्रकार से सारे रूस के दास-कृषकों की दयनीय अवस्था का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती है।

'प्रधान प्रवेश द्वार पर विचार विमर्श' (१८५८) कविता में ग़रीब किसान अपने मालिक से भेंट करने के लिए मुख्य द्वार पर इन्तज़ार करते रहते हैं किन्तु मालिक उनसे नहीं मिलता और उनको निकलवा देता है। कविता में यह बताया गया है कि जिनके हाथों में अधिकार है वे जनता की ओर आँख उठाकर देखना भी नहीं चाहते। ग़रीब किसान निराश होकर मुख्य द्वार से खाली हाथ वापस लौटते हैं।

१८५६ में नेक्रासोव का पहला काव्य संग्रह निकला। यह संग्रह अपनी ताज़गी, साहस तथा युद्धशील प्रवृत्ति के कारण बड़ा ही लोकप्रिय हुआ। इसमें जनता की तड़पन, देहात के कठिन दारिद्र्य, दास अधिकार की

दारुणता तथा अमीर उत्पीड़कों के प्रति घृणा का अभिव्यंजन हुआ। इसके प्रकाशन से शासक वर्ग मे बड़ी हलचल हुई और इसके छपने की आज्ञा देने वाले सेंसर को डांट पड़ी।

विशेष रूप से इस संग्रह की कविता 'कवि और नागरिक' से शासक वर्ग बड़ा असंतुष्ट हुआ। इसमे कवि ने 'शुद्ध कला' पर आक्षेप किया और बताया कि कवि कोई हो या न हो उसे नागरिक अवश्य होना चाहिए। कवि को भी नागरिक होना चाहिए और देश के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिए। उसने कहा कि 'शोक के वर्षों में आकाश, समुद्र और घाटियों की सुन्दरता और प्रेम का गान अत्यन्त लज्जाजनक है।' उसने कहा कि 'तू चाहे कवि न हो सके किन्तु नागरिक होना तो तेरे लिए अत्यावश्यक है और नागरिक क्या है ?—मातृ-भूमि का सुयोग्य पुत्र होना। पुत्र अपनी माँ के दुख को शान्तिपूर्वक नहीं देख सकता।' उसी तरह योग्य नागरिक देश के प्रति उदासीन नहीं हो सकता। नेक्रासोव की ये पंक्तियाँ देश के कोने-कोने मे फैल गयीं और प्रगतिशील युवक वर्ग ने इसे कण्ठस्थ कर लिया तथा इसे अपने नारे के रूप मे ग्रहण किया।

प्रकाशन और सम्पादन कार्य

अपने साहित्यिक कार्यकलाप के साथ-साथ नेक्रासोव प्रकाशन और सम्पादन कार्य भी करता जाता था। सन् १८४७ में वह 'समकालीन' पत्र के सम्पादन और प्रकाशन मे लग गया। पुश्किन की मृत्यु के बाद इस पत्र की स्थिति बड़ी खराब हो गई थी किन्तु नेक्रासोव के हाथ मे आकर यह पत्र चमक उठा। करीब बीस वर्ष तक उसने इसका प्रकाशन किया। इसमे उस समय के सभी प्रसिद्ध रूसी लेखकों—बेलिंस्की, दोस्तोयेव्स्की, तुर्गेनेव, टाल्स्टाय, गोंचारोव आदि की रचनाएँ छपीं। क्रान्तिकारी जनवादी राजनीतिक पत्र होने के कारण इस पर शासकों की बराबर कड़ी दृष्टि रही। उसे कई बार चेतावनी मिली। कई बार यह कुछ समय के लिए बंद किया गया और फिर १८६६ में हमेशा के लिए बन्द कर दिया गया।

सन् ६० और सन् ७० के वर्षों में नेक्रासोव की सर्जना

'समकालीन' पत्र के बन्द होने पर वह हताश न हुआ और ६८

काशन के लिए प्रयत्न करने लगा। सन् १८६८ में 'पितृभूमि टिप्पणियाँ' त्र निकाला। इस पत्र मे साल्तिकोवश्चेद्रिन, अस्त्रोव्स्की, ग्लेबइस्पेस्की से शक्तिशाली लेखको ने सहयोग दिया। इस पत्र का तत्कालीन ामाजिक, राजनीतिक जीवन मे बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान था।

सन् साठ और सन् सत्तर के वर्षों में भी रूसी गाँव और रूसी जन जीवन ही नेक्रासोव के काव्य की मुख्य विषय-वस्तु हैं। अपनी कविता ऐलेजी (शोक गीत) मे उसने राजनीतिक सुधारो के बाद की जन स्थिति का चित्रण किया है और यह संकेत किया कि जनता की हालत सुधारी नही गई वरन् पूर्ववत् बड़ी दयनीय है। नेक्रासोव ने इसे अपनी प्रिय कविता कहा है।

अपनी कविता 'सैनिक की माँ अरीना, मे सेना के सामान्य सैनिको का असह्य जीवन चित्रित किया गया है और अपने सैनिक पुत्र की मृत्यु पर कृषक स्त्री के शोक का वर्णन किया गया है। निकोलस प्रथम के समय मे सेना मे सामान्य सैनिकों पर बड़ी सख्ती होती थी। सैनिक नियम भंग करने पर कोड़ो की मार पड़ती थी और कभी-कभी कोड़ो द्वारा मृत्यु दंड दिया जाता था। संभवतः ऐसा ही दंड पाकर अरीना का पुत्र सेना से वापस घर लौटा। सेना में जाने के पहले वह बड़ा शक्तिशाली और हृष्ट-पुष्ट था और जब वापस लौटा तो रोगी। नौ दिन वह तड़पता रहा और दसवें दिन मर गया। सेंसर इस कविता के आलोचनात्मक प्रभाव को अच्छी तरह समझता था और उसने इसके छपने की इजाजत नही दी। नेक्रासोव अपनी चतुरता से ही किसी प्रकार बड़ी मुश्किल से यह कविता छपा सका।

'पाला-लाल नाक' कविता में कवि का रूसी जनता के प्रति असीम प्रेम व्यक्त हुआ है और रूसी स्त्रियो की शक्ति और सौंदर्य का गुण-गान किया गया है। इस कविता मे एक परिवार की दुःखद कथा है। प्रोकल परिश्रमी और ईमानदार व्यक्ति है। समय के फेर से उसे कोचवान बनना पड़ता है। एक यात्रा मे उसे सर्दी लग जाती है और वह मर जाता है। उसकी स्त्री दार्या बड़ी ही हिम्मती है और रात मे अकेले मठ से मूर्ति लाने

मात्रेव्ना तिमोफ्येवना के रूप में नेक्रासोव ने रूसी कृषक स्त्री का जीवन भी प्रस्तुत किया है। खोजी किसानों को किसी ने बताया कि इस स्त्री का जीवन आनन्दपूर्ण है लेकिन पता चलता है कि वस्तुस्थिति इससे उल्टी है। बचपन से ही इसका जीवन बड़ा कठोर परिश्रम का था। शादी होने पर वह पति की मार और सास ससुर की खरी-खोटी सहती रही। उसके पहले बच्चे को सुअर ने मार डाला और पति को ग़ैरकानूनन फ़ौज में रगरूट बना लिया गया। स्त्रियों के संबंध में वह कहती है कि 'नारी के सुख और स्वतन्त्रता की कुंजी तो फेंक दी गयी है, खो गयी है।'

सलाशनिकोव, फोगेल आदि को कठोर अत्याचारी के रूप में चित्रित किया गया है। एक दूसरा ज़मींदार अवोल्त अवोलगयेव कहता है कि 'जिसे चाहूँ उस पर कृपा करूँ, जिसे चाहूँ उसे सज़ा दूँ। मेरी इच्छा क़ानून है, मेरा घूंसा पुलिस है।'

रूसी जीवन का चित्रण करते हुए भी स्वयं कवि का दृष्टिकोण क्रान्तिवादी था। वह अपने काव्य से स्पष्ट कर देता है कि किसान तब तक सुखी नहीं हो सकता जब तक कि ज़मींदार हैं। केवल क्रान्ति ही किसानों का मुक्ति द्वार है और काव्य में इसी क्रान्ति के लिए आह्वान है।

ग्रीशा के रूप में कवि की इन्हीं भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। ग्रीशा को जनता के नेता और उसके आनन्द मार्ग को प्रशस्त करने वाले के रूप में चित्रित किया गया है। ग्रीशा ही इस काव्य में प्रसन्न व्यक्ति है क्योंकि उसके सामने जीवन का लक्ष्य और मार्ग स्पष्ट है और वह यह भी जानता है कि उसका मार्ग बड़ा कँटीला है, भाग्य ने उसके लिए सम्मान का मार्ग तैयार किया है, जनरक्षक का नाम तैयार किया है, क्षय और साइबेरिया तैयार किया है। ग्रीशा निर्भय इस रास्ते पर चलता है। कवि का यह संकेत है कि यदि वह सात किसान इस जनरक्षक ग्रीशा के बारे में जानते होते तो उनको सच्चा सुखी आदमी मिल जाता।

नेक्रासोव के इस काव्य को 'रूसी जीवन की इन्साइक्लोपीडिया' कहा जाता है।

कठोर परिश्रम के कारण उसका स्वास्थ्य बड़ा जर्जर हो गया था। लम्बी और असाध्य बीमारी के बीच ८ जनवरी १८७८ मे उसकी मृत्यु हो गयी। हजारों आदमियों ने उसे अंतिम श्रद्धांजलि समर्पित की।

नेक्रासोव रूसी साहित्य मे क्रान्तिवादी डिमोक्राटिक काव्य का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि माना जाता है। उसकी कृतियो ने युवक वर्ग में क्रान्ति की प्रेरणा और स्फूर्ति भर दी।

अपनी सर्जना के द्वारा उसने रूसी जीवन के एक लम्बे युग (सन् चालीस से सन् सत्तर तक) को अभिव्यक्ति दी और उसका ऐसा सजीव वर्णन किया कि अतीत की जनता के उत्पीड़न की और उसके संघर्ष की स्पष्ट तस्वीर हमारे सामने आ जाती है। नेक्रासोव की यही सबसे बड़ी सेवा है और इसी मे उसके काव्य का महत्त्व है।

२१. फ्योदोर मिखाइलोविच दस्तयेव्स्की

[१८२१–१८८१]

विश्व के महान् लेखकों में गिने जानेवाले इस कलाकार का सर्जनात्मक कार्य उन्नीसवीं शती के सन् चालीस में शुरू हुआ। उसकी प्रतिभा का विकास 'ग़रीब' (१८४५–१८४६) नामक पुस्तक से मिलने लगता है जिसकी शैली गंभीर और मनोवैज्ञानिक है तथा इसमें एक नवयुवक के आत्मगौरव का चित्रण है। बेलिन्स्की ने उसकी प्रतिभा को पहचाना और उसकी ख्याति की भविष्यवाणी की। दस्तयेव्स्की पेत्राशेव्स्की गोष्ठी का सदस्य था। १८४९ में इसके सदस्य गिरफ़्तार कर लिये गये. और १८४९ में अन्य सदस्यों के साथ दस्तयेव्स्की को फाँसी की सज़ा मिली। फाँसी के तख्ते पर वह और उसके साथी खड़े किये गये किन्तु उसी मिनट एक अफ़सर ने आकर मुक्ति की घोषणा सुनाई। जब वे लोग तख्ते से उतारे गये तो वह पागल हो गया और दस्तयेव्स्की ने चार वर्ष की कड़ी कैद साइबेरिया में बिताई। और फिर पाँच वर्ष सेना की एक बटालियन के साथ रहा। निर्वासन से लौटने के बाद उसका दृष्टिकोण बदल गया और प्रगतिशील गोष्ठियों से उसका संबंध न रहा और वह रहस्यवादी बन गया। विषमताओं को सुलझाने के लिए सामाजिक क्रांति की जगह वह पारस्परिक सामंजस्य और नैतिक सुधार की आवश्यकता बताने लगा। १८५९ में 'स्तेपान चिकोवो का गाँव' छपा। १८६१ में उसने 'समय' और 'युग' पत्र चलाये। इन पत्रों के कारण उस पर बड़ा कर्ज़ हो गया। कर्ज़दारों से बचने के लिए वह कई वर्षों तक विदेश में घूमता रहा। उसकी महत्वपूर्ण पुस्तकें 'मेरे घर के समाचार' और 'जुर्म और सज़ा' १८६६ में छपीं।

लेखक के निर्वासन के बाद के विचार 'जुर्म और सज़ा' में बड़ी कलात्मकता के साथ व्यक्त हुए हैं। इसका नायक यह समझता है कि

सबल व्यक्ति सब कुछ कर सकता है और उसके लिए सब कुछ क्षम्य है। वह कर्ज देनेवाली एक स्त्री की हत्या कर देता है। बाद में अपने गुनाह के बोझ से दबकर वह अपने मन से अपने को अधिकारियों को सौंप देता है और सपरिश्रम कारावास स्वीकार करता है। इसमें नायक की विद्रोही वैयक्तिकता की निंदा और ईसाइयों की नम्रता और दुःख सहन का प्रचार है। मनोवैज्ञानिक चित्रण की गहराई तथा तत्कालीन युग के शक्तिशाली अंकन के कारण दस्तयेवस्की की यह कृति विश्व-साहित्य की महान् रचना बन गयी है। यह उपन्यास दस्तयेवस्की की अपूर्व कलात्मकता का अन्यतम उदाहरण है।

उसने 'बेवकूफ' और 'शैतान' उपन्यास लिखे। इस दूसरे उपन्यास में दस्तयेवस्की ने अपने समकालीनों पेत्राशेव्स्की, तुर्गेनेव आदि के चित्र प्रस्तुत किए हैं। लोगों ने इसे अशिष्ट व्यक्तिगत आक्रमण माना। इस पुस्तक से लेखक की प्रतिक्रियावादी प्रवृत्ति स्पष्ट हो जाती है। उसने दो और महत्वपूर्ण उपन्यास 'करामाजोव भाई' और 'जवान' लिखे जिनसे लेखक की कलात्मक शक्ति और उसकी दुर्बलता दोनों प्रकट होती हैं।

२२. अलेक्सान्द्र निकोलाएविच अस्त्रोव्स्की

[१८२३-१८८६]

अलेक्सान्द्र निकोलाएविच अस्त्रोव्स्की रूस के बड़े नाटककारों में गिना जाता है और रूसी राष्ट्रीय रंगमंच का संस्थापक माना जाता है।

अस्त्रोव्स्की का जन्म सन् १८२३ में मास्को में हुआ। नाटकों की ओर उसकी रुचि बचपन से ही थी और उसे पढ़ने का बड़ा शौक था। मास्को विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त करने के बाद उसने मास्को की कचहरी में नौकरी कर ली जहाँ बालकों और माता-पिता के बीच के झगड़े निबटाये जाते थे। इसके बाद वह व्यापारियों की अदालत में काम करने लगा। न्यायालय के इस अनुभव ने उसे मास्को के व्यापारियों के पारिवारिक जीवन के धूमिल पक्ष से पूर्णतया परिचित करा दिया और उसे सर्जना के लिए प्रचुर सामग्री दी।

सन् १८४६ में उसने अपनी पहली कमेडी 'अपने लोगों का ख्याल रखेंगे' के शुरू के दृश्य लिखे। इसमें अस्त्रोव्स्की ने रूसी व्यापारियों की बर्बरता, कठोरता का उद्घाटन किया और यह दिखाया कि ये व्यापारी जल्दी से जल्दी अमीर बनने के लिए सब कुछ करने को तैयार हैं और मुनाफाखोरी इनको मनुष्य नहीं बने रहने देती।

यह कमेडी बहुत सफल रही। इसके बाद उसने 'गरीब बहू' तथा 'अपनी गाड़ी में न बैठो' लिखे। इस अन्तिम नाटक का १८५३ में 'मास्को थियेटर' में अभिनय हुआ। इसके साथ ही नाटककार के रूप में अस्त्रोव्स्की की ख्याति बढ़ गयी।

सन् ५० से ६० के बीच की अस्त्रोव्स्की की सर्जना

सन् पचास-साठ के बीच के वर्षों में अस्त्रोव्स्की [illegible] स्लावप्रेमियों के निकट आया। इस [illegible] में [illegible], [illegible], तुर्गेनेव, पीसेम्स्की, [illegible], [illegible] और

कलाकार थे। इन लोगों को रूस के अतीत से बड़ा प्रेम था और वे यथार्थता से दूर थे और प्राचीनता का आदर्शीकृत रूप प्रस्तुत करते थे। वे परंपरा तथा परिवार के कुल-ज्येष्ठ द्वारा संचालन की परिपाटी का आकर्षण तथा आदर्श चित्र प्रस्तुत करते थे। अस्त्रोव्स्की पर भी इस वर्ग का प्रभाव पड़ा और वह इस वर्ग के अपरिवर्तनवादियों को सहयोग देने लगा। वह थोड़े समय के लिए गोगल की आलोचनात्मक परंपरा से दूर चला गया और उसका ध्यान नैतिक समस्याओं की ओर गया।

'ग़रीबी दोष नहीं है'

व्यापारियों के रहन-सहन का आदर्शीकृत रूप 'ग़रीबी दोष नहीं है' कमेडी में और स्पष्टता से प्रकट हुआ है। इसमें परिवार के कुल-ज्येष्ठ के अधिकारों को स्वीकार किया गया है और यह दिखाया गया है कि वह परिवार का संचालन करता है और परिवार के अन्य सदस्य उसकी आज्ञा को कर्त्तव्य रूप में स्वीकार करते हैं।

अपरिवर्तनवादी स्लाववादियों ने इस कमेडी से बहुत प्रसन्नता प्राप्त की; क्योंकि इसमें उनके आदर्शों को कलात्मक रूप मिला। किन्तु चेर्निशेव्स्की ने इसकी 'समकालीन' पत्र में आलोचना की और कहा कि नाटककार ने उस परंपरा को ऐसा लुभावना और आकर्षक रूप दिया है जो कि न लुभावनी है और न जिसे ऐसा लुभावना होना चाहिए। चेर्निशेव्स्की ने अस्त्रोव्स्की से सत्य और निर्मम आलोचना के अपने पूर्वपरिचित रास्ते पर चलने को कहा। चेर्निशेव्स्की की आलोचना, तत्कालीन सामाजिक तथा अन्य कारणों का उस पर प्रभाव पड़ा और वह स्लाववादियों से अलग हट गया। १८५६ से वह उस युग के प्रगतिशील पत्र 'समकालीन' में सहयोग देने लगा।

'फ़ायदे की जगह'

सन् १८५७ में अस्त्रोव्स्की ने 'फ़ायदे की जगह' नाटक लिखा जिसमें उसने यथार्थता का आलोचनात्मक अंकन प्रस्तुत किया। इसमें विभिन्न सामाजिक स्तरों से आए हुए किन्तु समान दृष्टि, कोटिवाले कर्मचारियों का समान जीवन दिखाया गया है। सब का लक्ष्य है ऐसी जगह पहुँचना

या ऐसे पद पर पहुँचना जो फायदेमंद हो; जहाँ अधिक से अधिक रिश्वत मिल सके। नाटकों के बहुत से रिश्वतखोर कर्मचारियों के बीच एक पात्र ऐसा भी है जो ईमानदारी का जीवन व्यतीत करना चाहता है और जादोव ऐसे ही नये ईमानदार और शिक्षित लोगों का प्रतिनिधि है।

सन् १८५६ में अस्त्रोव्स्की ने मछुओं के जीवन से परिचित होने के लिए वोल्गा की यात्रा की। इस यात्रा ने उसे वोल्गा की प्रकृति और उसके तट के निवासियों के जीवन का गहरा परिचय दिया और इसका उसके ऊपर प्रभाव भी बहुत पड़ा। वह 'वोल्गा पर रातें' नाम से एक नाटक माला प्रस्तुत करना चाहता था। यद्यपि नाटककार की यह इच्छा पूरी न हुई फिर भी वोल्गा यात्रा के प्रभावों की छाप उसके कई नाटकों में मिलती है।

'बिजली तूफ़ान'

'बिजली तूफान' अस्त्रोव्स्की की सर्वोत्तम कृति है जिसमें नाटककार की वोल्गा यात्रा की छाप है। इसकी घटनाएँ एक छोटे-से प्रान्तीय शहर में होती है जहाँ आदमीयत क्रूरता से कुचल दी जाती है और जहाँ स्वेच्छा का जीवन दूभर है तथा जहाँ धनी का शासन चलता है।

दीकोय ऐसा ही धनी हठी व्यापारी है। उसकी शक्ति का स्रोत उसका धन है। वह लालची और अहमन्य है। फ़ायदे के लिए वह हर प्रकार का कपट जाल रचने को तैयार है। वह व्रत, उपवास तथा अन्य धार्मिक कर्मकाड बराबर करता है फिर भी इससे उसके शोषण तथा अत्याचार में कोई कमी नही आती। वह क्रूरता से अपने भतीजे बरीस को साइबीरिया भेज देता है। दीकोय के रूप मे व्यापारियों का ठेठ रहन-सहन दिखाया गया है।

कुलीगिन का चित्र इसके विपरीत है। वह इन लोगों की हठधर्मी और अत्याचार की आलोचना और विरोध करता है और वह उन लोगों से सहानुभूति प्रदर्शित करता है जो कि इस अत्याचार के

तुर्गेनेव,

कुलीगिन के समान केतेरिना भी झूठ तथा झूठी नैतिकता से कोई समझौता नही कर सकती। केतेरिना का पति उसे नही समझ पाता और उसकी सास उस पर अपनी इच्छाएं लादती है। उसका घरेलू जीवन अत्यन्त कठिन हो जाता है। पहले तो वह बरीस से, जिसे कि वह चाहती है, नही मिलती परन्तु फिर उससे खुलकर मिलती है। इस प्रकार वह सामाजिक परिस्थितियों मे अपना विरोध प्रकट करती है। अन्त मे अपने घरेलू जीवन की परिस्थितियो से ऊबकर वह वोल्गा मे कूद कर अपनी जान दे देती है। इस प्रकार जान देकर वह अपना विरोध प्रकट करती है, पर आत्म समर्पण नही करती।

'बिजली तूफान' नाटक उस समय (१८६१) प्रकाशित हुआ जब कि रूसी जीवन का मुख्य प्रश्न दास-किसानो की मुक्ति और मानवीय व्यक्तित्व की स्वतन्त्रता थी। इस नाटक मे जबरदस्ती और निरंकुशता के प्रति जो विरोध प्रकट किया गया है और नये जीवन की प्रतिष्ठा का जो प्रयत्न किया गया है उसका दोब्रोल्यूबोव ने हार्दिक स्वागत किया। नवीन का प्राचीन से संघर्ष ही इस नाटक का मूलभूत द्वन्द्व है।

इसकी भाषा बड़ी ही कलात्मक, समृद्ध, सजीव तथा जनात्मक है। प्रत्येक पात्र की अपनी विशिष्ट भाषा है जिससे उसकी अपनी विशेषता प्रकट हो जाती है। लेखक बड़ी ही कलात्मकता के साथ प्रत्येक व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक चित्र प्रस्तुत कर देता है।

सन् ६० से सन् ८० के वर्षों में अस्त्रोव्स्की की सर्जना

अस्त्रोव्स्की अपने आरम्भ के नाटको मे व्यापारियो के जीवन और रहन-सहन के व्याख्याता तथा आलोचक के रूप मे सामने आता है। किन्तु ज्यों-ज्यों उसका अनुभव बढ़ता गया उसकी लोकदृष्टि व्यापक होती गयी। फलतः उसके बाद के नाटको मे जीवन-चित्रण की व्यापकता तथा गहराई अधिकाधिक मिलती जाती है। नाटककार का ध्यान सम्पूर्ण रूसी जीवन की ओर जाता है और वह रूसी समाज के विभिन्न वर्ग तथा विभिन्न सामाजिक स्तरो का दिग्दर्शन कराता है। वोल्गा यात्रा के बाद उसने ऐतिहासिक विषयों पर भी नाटक लिखे फिर भी उसकी रुचि तत्कालीन यथार्थता

के चित्रण की ओर अधिक है। पूंजीवादी नये शोषक और अभिजात वर्ग के नाश का वस्तु-विषय अब उसके नाटकों में प्रधानता प्राप्त करता है। इस दृष्टि से उसके सब से महत्वपूर्ण नाटक हैं—'जगल', 'भेड़ें और भेड़िये' तथा 'बिना दहेज की लड़की।'

'जगल' कमेडी में अभिजात वर्ग के नैतिक ह्रास का चित्रण है। इसमें अभिजात वर्ग से सबधित एक लड़की का चित्रण है जिसकी शादी धनाभाव के कारण धनी व्यापारी के लड़के से नहीं हो पाती। यद्यपि उसको वह चाहती है। व्यापारी दहेज चाहता है। इसमें सभी धनी व्यक्ति ढोंगी हैं और सहारा देने का स्वांग रचते हैं। इस घने जगल में सभी पशु हैं, सहृदय मनुष्य कोई नही। केवल एक अभिनेता इस लड़की के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करता है और अपनी आखिरी पाई तक उसकी मदद में दे देता है। इसी प्रकार 'भेड़ें और भेड़िये' में भी अभिजात वर्ग के नैतिक ह्रास का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

'बिना दहेज की लड़की' में मनुष्य को विक्रय की वस्तु बना देने वाले समाज की आलोचना की गयी है। इसमें एक लड़की लरीसा का भाग्य दिखाया गया है जो कि उच्चवर्ग के परातोव से प्रेम करती है और जो अन्त में उसे धोखा देता है। दो अन्य व्यापारी उसे अपनी धनशक्ति द्वारा खरीदना चाहते हैं। लरीसा आत्मसमर्पण नहीं करती और अन्त में आत्महत्या कर लेती है।

अस्त्रोवस्की ने सामाजिक जीवन के विकास में भी सक्रिय योग दिया। उसने कई साहित्यिक कलात्मक सस्थाओं की स्थापना के लिए बड़ा प्रयत्न किया। वह रूसी राष्ट्रीय रगमंच की स्थापना करना चाहता था। यद्यपि वह इसमें कृतकार्य न हुआ, फिर भी बाद में उसने थियेटर स्कूल की स्थापना की जिसमें अभिनेता तैयार किए जाते थे। इसके अतिरिक्त उसने विद्वानों तथा साहित्यिकों की सहायता सभा 'कलात्मक गोष्ठी' तथा रूसी नाटककारों और ओपेरा संगीतकारों की सभा स्थापित की।

२ जून सन् १८८६ में अस्त्रोव्स्की की मृत्यु हो गई।

अस्त्रोव्स्की रूसी नाटको का जनक कहलाता है। इसके पहले रूसी रगमच पर फ्रेंच मे अनूदित कमेडियो, ट्रेजिडियो आदि का ही प्रदर्शन होता था। पुश्किन और ग्रिबयेदोव के नाटक इस समय तक रगमच पर अभिनीत नही हुये थे। मुद्रण के बहुत समय बाद उनका अभिनय हुआ। इस प्रकार अस्त्रोव्स्की के नाटक ही सबसे पहले रगमच पर प्रस्तुत किए गये। अस्त्रोव्स्की ने बावन नाटक लिखे। छ. नाटक उसने अन्य नाटककारो के सहयोग से लिखे।

दोब्रोल्यूबोव ने उसके नाटको को 'जीवन के नाटक' की सज्ञा दी। उसकी सर्वोत्तम कृतियो मे जन-जीवन और जन-प्रयत्न का चित्रण हुआ है और उनमे मूलभूत सामाजिक सघर्ष का उद्घाटन है। रूसी साहित्य की यथार्थवादी परपरा को अस्त्रोव्स्की के नाटको से बड़ा बल मिला।

२३. मिखाइल येवग्राफोविच साल्तिकोवश्चेद्रिन

[१८२६-१८८९]

विश्व के प्रसिद्ध व्यंग्यकारों में गिने जाने वाले इस लेखक का जन्म २७ जनवरी सन् १८२६ में हुआ। इसका बचपन दास प्रथा वाली ठेठ जमीदारी में बीता और इसने जमींदारों के निरकुश अत्याचार और दास-कृषकों की दयनीय स्थिति के अनेक दारुण दृश्य देखे। स्वयं साल्तिकोवश्चेद्रिन के शब्दों में वह दासाधिकार की गोद मे बड़ा हुआ।

आरभिक शिक्षा उसे घर में मिली। उसके बाद अभिजात वर्ग के इंस्टिट्यूट में भेजा गया और फिर बहुत अच्छा विद्यार्थी होने के कारण उसे त्सारकोएसेलो के स्कूल में भेजा गया, वहाँ जहाँ कि कभी पुश्किन ने शिक्षा पाई थी। वहाँ की शिक्षा समाप्त करने पर उसे युद्ध मंत्री के विभाग में नौकरी मिली किंतु यह उसे पसंद न आयी। वह लेखक बनना चाहता था।

साहित्यिक कार्यकलाप का आरम्भ

पीतरबुर्ग में पेत्राशेव्स्की की गोष्ठी थी जिसमे साल्तिकोवश्चेद्रिन जाया करता था। वह इस गोष्ठी के निरकुशता-विरोधी और दास-प्रथा विरोधी रुख से बड़ा प्रभावित हुआ। इसी गोष्ठी से प्रभावित होकर उसने अपनी पहली कहानियाँ 'विषमताएं' (१८४७), 'गड़बड़ घोटाला' (१८४८) लिखी और उनमें समाजवाद के विचार का प्रचार किया।

फ्रांस की राज्यक्रान्ति से ज़ार सरकार डर गयी थी और उसने रूस में क्रान्तिकारियों की गिरफ़्तारी शुरू कर दी। इन कहानियों के कारण साल्तिकोवश्चेद्रिन पर भी शक हुआ और उसे मई १८४८ में गिरफ़्तार कर व्यात्का निर्वासित कर दिया गया। सात वर्ष उसने निर्वासन मे बिताये और प्रान्तीय विभाग में काम करता रहा। १८५५ मे उसे

पीतरबुर्ग वापस आने की आज्ञा मिली और वह साहित्यिक कार्य में लग गया।

प्रान्तीय रेखाचित्र

इस निर्वासन के बीच प्रान्तीय विभाग में उसे जो अनुभव प्राप्त हुआ उसके आधार पर उसने अपनी पुस्तक 'प्रान्तीय रेखाचित्र' श्चेद्रिन नाम से छपाई। इस पुस्तक ने निरंकुशता, नौकरशाही की धांधली रिश्वतखोरी तथा ग़बन का नग्न चित्र प्रस्तुत किया। पुस्तक बड़ी ही सफल और लोकप्रिय हुई। १८५५ में उसे रयाज़न का उपगवर्नर नियुक्त किया गया और दो वर्ष बाद त्वेर में उसे यही पद दिया गया।

पत्रकारिता

वह १८६० में 'समकालीन' पत्र का सहयोगी बन गया और सरकारी नौकरी छोड़ दी तथा अब पूरी तरह से साहित्यिक कार्य में लग गया। 'समकालीन' में उसके नये रेखा चित्र 'गद्य में व्यंग्य' छपे।

'समकालीन' पत्र के बंद कर दिए जाने पर उसने 'पितृभूमि समाचार' पत्र चलाया जिसका लक्ष्य 'समकालीन' की प्रगतिशील परंपरा पर आगे बढ़ना और प्रगतिशील लेखकों को एकत्रित करना था।

एक नगर का इतिहास

साल्तिकोवश्चेद्रिन की पैनी व्यंग्य प्रतिभा का परिचायक उसकी विख्यात पुस्तक 'एक नगर का इतिहास' है। इसमें राजनीतिक व्यंग्य है और अठारहवीं शती के जीवन के चित्रण की आड़ में तत्कालीन रूसी जीवन की वास्तविकता का व्यंग्यात्मक चित्र प्रस्तुत किया गया है। इन चित्रों में गवर्नर के चित्र ने विशेष ध्यान आकृष्ट किया। गवर्नर के पास खोपड़ी के डिब्बे में एक बाजा था जिससे केवल दो शब्द निकलते थे। 'नहीं बरदाश्त करूंगा' और 'नष्ट कर दूंगा।'

सन् ७०–८० के वर्षों में जब कि 'नरोदनिकी' कहते थे कि रूस में पूंजीवाद कभी न होगा साल्तिकोवश्चेद्रिन ने कहा कि पूंजीवाद आ गया और जम गया। बुर्जुआई शासकों, कुलकों और पूंजीवादियों को उसने

गदे मुंहवाला कहा। देरुनोव, रज्वाएव, कल्पाएव के माध्यम से लेखक ने जमींदारो के स्थानापन्न, ज़िदगी के नये मालिकों के शोषक रूप का व्यंग्य चित्र प्रस्तुत किया है। देरुनोव धीरे-धीरे बड़ा धनी बन जाता है। वह कुछ भी नही छोड़ता और सब चीजों का व्यापार करता है। चारो ओर से उसके पास रुपया आ रहा है। पाठक जानते हैं कि यह जनता को लूट कर धनी बन रहा है। लेखक ने इन पात्रों पर मार्मिक व्यंग्य किया है।

१८७५ में माल्तिकोवश्चेद्रिन बीमार पड़ा और उसे दवा के लिए विदेश जाना पड़ा। स्वदेश लौटने पर उसने नये रेखाचित्र 'विदेश से' लिखे जिसमें उसने बड़े जोरदार शब्दों में यूरोपीय पूंजीवाद के नग्न सत्य का उद्घाटन किया।

श्रीमान् गलयवेव

सन् सत्तर के वर्षों मे उसने रूसी जमींदारों के बारे में बड़ा उपन्यास लिखने का विचार किया। इसके आरम्भिक अध्याय अलग-अलग रेखा-चित्र के रूप मे 'शुभचिन्तक वाणी' पुस्तक में छपे। पूरा उपन्यास सन् १८८० मे 'श्रीमान् गलवयेव ' के नाम से छपा। इस उपन्यास के मुख्य नायक इवदूरुश्का गलवयेव के माध्यम से तात्कालीन शोषक वर्ग की कठोरता, उत्पीड़न, दंभ तथा उसके ढोंग का बड़ा ही व्यंग्यात्मक चित्रण किया गया है। दास प्रथा के जीवन पर जो कुप्रभाव और संस्कार पड़ गए हैं इवदूश्का उनका मूर्त रूप है और शोषण, उत्पीड़न, प्रवंचना तथा मानवता के प्रति घृणा का प्रतीक है।

अपने जीवन के अन्तिम वर्षों मे उसने नये रेखाचित्र प्रस्तुत 'पुरु और पशेकोम्स्कांयेसमय' लिखा जिसमें दास प्रथा के अवशेषों का मार्मिक वर्णन था।

इन्हीं वर्षों मे वह एक और लेखमाला 'विस्मृत शब्द' प्रस्तुत करना चाहता था जिसमें वह क्रान्तिकारी डिमोक्राट बेलिंस्की का चित्र प्रस्तुत करना चाहता था। किन्तु उसकी मृत्यु हो गई और यह विचार

कार्यान्वित न हो सका। मई १८८९ की १० तारीख को सात्तिकोव-श्चेद्रिन की मृत्यु हो गई।

इन्ही वर्षों में उसने अन्योक्तिपूर्ण कथाए भी लिखी, जो बड़ी प्रसिद्ध हुईं।

कथाएँ

सन् ८० के कठोर प्रतिक्रियावादी युग में भी सात्तिकोवश्चेद्रिन निरकुश शासन, लिबरल तथा शोषक सेठो पर व्यग्य करता रहा। किंतु सॅसर से बचने के लिए अब वह ईसप के ढंग की अन्योक्तिपूर्ण कथाए लिखने लगा जिनके पात्र पशु, पक्षी तथा मछली आदि होते थे किन्तु जिनका सकेत स्पष्टतया व्यक्तियो की ओर होता था। पशु-पक्षियो का यह वर्णन वास्तव मे छिपे रूप मे उस समय के व्यक्तियो पर ही आक्षेप और व्यंग्य था। इन कथाओ के द्वारा लक्ष्य पर मर्माघात भी होता था और लेखक सॅसर की पकड से बाहर और सुरक्षित भी रहता था। इनमें से अधिकांश कथाए सन् १८८४–८५ में निकली। सब मिलाकर श्चेद्रिन ने तीस से अधिक कथाएं लिखी। लेखक की साहित्यिक सर्जना की अन्तिम कृति होने के कारण उनमे उसके चालीस वर्ष के साहित्यिक अनुभव तथा प्रौढ़ता का निचोड़ है। इनमें ज़ारकालीन रूस के शासक वर्ग पर (सेनापति भालू 'दीन भेडिया'), खोखली बात करने वाले बिके हुए और कायर 'लिबरल' (उदार दल वाले) पर, लिबरल आदर्शवादी कार्प (मछली) पर, जनता के शोषको और उत्पीड़को पर (जगली जमींदार) तथा अन्य लोगों पर तीक्ष्ण व्यग्य है।

'लद्दू घोड़ा' कथा मे उस घोड़े का वर्णन है जिसे बहुत परिश्रम करना पड़ता है किन्तु जिसे भर पेट भोजन ही नही मिलता। परिश्रम के बोझ से वह दबा जा रहा है। घोड़ा किसान का प्रतीक है और केवल खाली बात करने वाले लिबरल स्लावोफिल तथा नरोदनिको के प्रतिनिधि है। इनमें से प्रत्येक घोड़े के कठिन जीवन पर वाद-विवाद करता है किन्तु इनमें से कोई भी सचमुच उसकी मदद नही करना चाहता। लेखक कहता है कि औरो को तो अच्छा भोजन किन्तु घोड़े को घास भी

नहीं। इन शब्दों के द्वारा जारकालीन रूस में किसान के शोषण का व्यंग चित्र और भी स्पष्ट हो जाता है।

सेनापति भालू से तप्तीगिन प्रथम रक्तपात द्वारा ही इतिहास में अमरता प्राप्त करना संभव समझता है। इससे वह भेड़ों को और छापेखाने को नष्ट करता है।

अपने पिता के अनुभव पर तप्तीगिन द्वितीय किसान के घोड़े को तथा भेड़ और सुअर को मार डालता है। किन्तु वह इनको नहीं ले जा पाता कि लोग आ जाते हैं और उसे मार डालते हैं।

इतिहास के इस अनुभव से चतुर बनकर तप्तीगिन तृतीय बड़ी सावधानी से काम करता है और वह लिबरल नीति चलाता है। कई वर्षों तक उसे किसानों से सुअर, मुर्ग, शहद आदि मिलता रहा किन्तु अन्त मे उसका भी वही हाल हुआ जो कि सभी लम्बे बाल वाले जानवरों का होता है। लोगों ने उसे मार डाला।

तप्तीगिनों की कथा द्वारा व्यंग्यकार ने जारशाही के जनविरोधी रूप को और उसके अनिवार्य नाश का संकेत दिया है।

इसी प्रकार ज्ञानी मछली में उन लोगों पर व्यंग्य है जो भय से अपने में संकुचित रहते हैं और सामाजिक जीवन में हिस्सा नहीं लेते। राजनीतिक प्रतिक्रिया के युग में इस कथा का बड़ा महत्त्व था। अपने पिता के इच्छानुसार दुनिया की सब चीजों से मछली डरती रही, वह जीवित रही और कांपती रही—बस जीवन में यही उसने किया। सौ वर्ष से अधिक वह अपनी अंधेरी ठंडी जगह मे जीती रही, न उसने किसी को जाना और न किसी ने उसको जाना। वह सोचती है कि 'ईश्वर को धन्यवाद (किसी ने मुझको नहीं मारा) मैं अपनी मृत्यु से ही मर रही हूं जैसे कि मेरे माता पिता मरे।' इस अन्योक्ति ने लोगों की राजनीतिक चेतना जगाई और उनमें संघर्ष की भावना भरी।

आदर्शवादी (कार्प) मछली कथा का विशेष महत्त्व है। इसमें स्वप्निल कल्पनात्मक समाजवाद पर व्यंग्य है जिसकी ओर जवानी में स्वयं लेखक आकृष्ट हुआ था।

इन कथाओं की उच्च विचारात्मकता, राजनीतिक तीक्ष्णता तथा विषय-वस्तु की सामयिकता का प्रभाव इसलिए और भी बढ़ गया कि यह ऐसे रूप में (कथा) प्रस्तुत की गयी कि वह जनता के अत्यधिक निकट आ गयी और उसके लिए अत्यन्त सुबोध थी। इसमें उसे क्रीलोव की व्यंग्यात्मक लघु कथाओं से बड़ी प्रेरणा और शिक्षा मिली।

व्यंग्यकार के रूप में साल्तिकोवश्चेद्रिन क्रीलोव, फ़िवयेदोव और गोगल की परंपरा में आता है। उसकी तीक्ष्ण पर्यवेक्षण तथा विश्लेषणात्मक शक्ति और गंभीर देशभक्ति उसकी सर्जना की बहुत बड़ी विशेषताएं हैं। उसकी व्यंग्य की प्रतिभा उसे देशकाल की सीमा से ऊपर उठाकर विश्व-साहित्य के प्रांगण में प्रतिष्ठित कर देती है।

साल्तिकोवश्चेद्रिन की व्यंग्य प्रतिभा की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। उसने प्रगतिशील लेखकों की कृतियो का क्रान्तिकारी प्रचार में उपयोग किया। वह प्रगतिशील युवक वर्ग का अत्यन्त लोकप्रिय लेखक बन गया।

किन्तु ज्यों-ज्यो उसकी लोकप्रियता बढ़ती गयी वह ज़ार सरकार की नजरों मे खटकने लगा। उसका क्रान्ति का कार्य बराबर चल रहा था और वह कई गुप्त क्रान्तिकारी सभाओं का संचालन करता था तथा क्रान्ति का आह्वान करते हुए लेख और मैनिफ़ेस्टो लिखा करता था।

गिरफ़्तारी

सन् १८६२ मे वह गिरफ़्तार कर लिया गया। प्रमाण के अभाव में भी उस पर दो वर्ष तक मुकदमा चलता रहा और उसे चौदह साल का कठिन परिश्रम और साइबेरिया-निर्वासन का दण्ड मिला। निर्वासन के पहले उसे आम जगह पर सज़ा सुनायी गई और नागरिक अधिकारों से वंचित करने की रस्म अदायगी हुई। उसे एक तख्ते पर खड़ा किया गया। खम्भे से बांधा गया और गले में तख्ती लटकाई गयी जिस पर लिखा था 'सरकारी अपराधी'। चेर्निशेव्स्की को खुले आम ज़लील करने के लिए ज़ार सरकार ने यह स्वांग रचा और यह सब किया। किन्तु जनता ने अपने प्रिय व्यक्ति को श्रद्धांजलि अर्पित की और उस पर चारों ओर से फूलों की वर्षा होने लगी। तख्ता फूलों से भर गया और पुलिस ने चेर्निशेव्स्की को जल्दी से वहाँ से हटा दिया।

निर्वासन का जीवन

खानों में उसने परिश्रम के कठिन सात वर्ष बिताए। कठोर परिस्थि[illegible] के बीच भी उसका साहित्यिक कार्यकलाप चलता रहा। गिरफ़्[illegible] होने पर उसने अपना उपन्यास 'क्या किया जाय' चार मही[illegible] में समाप्त किया। उसने 'सफ़ेद साल में कहानियां', 'प्रांदुधान' औ[illegible] 'सार्था' लिखा। उसकी सब कृतियां लोगों को न प्राप्त हो सकीं [illegible] छापों के भय से उसने स्वयं कई कृतियों को नष्ट कर दिया।

कठिन परिश्रम के दण्ड की अवधि समाप्त होने पर भी उसे स्व

आने की आज्ञा न मिली और उसे याकूतिया भेज दिया गया। प्रतिकूल जलवायु और परिस्थितियों ने उसका स्वास्थ्य नष्ट कर दिया। अन्त में जून १८८९ में उसे सरातोव वापस लौटने की आज्ञा मिली। अक्तूबर १८८९ मे उसकी मृत्यु हो गयी।

क्या किया जाय

उसका उपन्यास 'क्या किया जाय' बड़ा ही लोकप्रिय हुआ और सब से पहले 'समकालीन' पत्र मे सन् १८६३ में छपा। इसे चेर्निशेव्स्की ने अपनी गिरफ्तारी के बीच चार महीने मे लिख डाला। इस उपन्यास मे लेखक ने बताया कि देश और जनता की सेवा करते हुए लोगो को कैसे जीना चाहिए। इसमे 'नये लोगो' की आशा और आकांक्षाओं का चित्र है और जीवन के नये आदर्शों के लिए संघर्ष है।

नये लोगों का चित्रण किरसानोव, लकूखोव और वेरापाव्लोव्ना के माध्यम से हुआ है। ये लोग सन् ६० के जमाने के स्वतन्त्र विचारो के संवाहक और नयी सामाजिक शक्ति के प्रतिनिधि हैं। इन सामान्य लोगो के बीच क्रान्तिकारी युवक वर्ग के नेता रखमेतोव का विशिष्ट स्थान है। इसके साथ ही इस उपन्यास मे पुराने विचारवालों का भी चित्रण हुआ है।

किरसानोव और लकूखोव सामान्य जनता के व्यक्ति हैं जो ईमानदार हैं और अपने स्वार्थसाधन के लिए नही वरन् जनता की सेवा के लिए परिश्रम करते हैं। लेखक का कहना है कि 'नये लोगो' को ऐसा ही होना चाहिए।

इसकी नायिका वेरापाव्लोव्ना भी नये लोगों में है। वह दृढ़ और स्वतन्त्र है। अपनी माता द्वारा निर्णीत व्यक्ति को न स्वीकार कर वह लकूखोव से प्रेम करती है। वह स्त्रियों की शिक्षा और सुधार का काम करती है और स्त्रियो की स्वतन्त्रता और समानाधिकार के लिए संघर्ष करती है। वह परिश्रमशीला है और काफ़ी समय समाज सेवा में लगाती है।

चेर्निशेव्स्की का कहना है कि सब गुणों से युक्त होते हुए भी ये

'नये लोग' असाधारण व्यक्ति न होकर सामान्य व्यक्ति ही हैं और जो चाहे वही ऐसा बन सकता है।

क्रान्तिकारी रखमेतोव का चित्र विशिष्ट है। चेर्निशेव्स्की कहता है कि भविष्य का मार्ग क्रान्ति के बीच से ही गया है और क्रान्तिकारी को नेता रूप में जीवन का नव-निर्माता बनना होगा। रखमेतोव के जीवन का लक्ष्य क्रान्ति है और वह दृढ़ता के साथ क्रान्ति द्वारा शक्ति हस्तगत करने के लिए अपने को तैयार करता है। 'नये लोगों' और रखमेतोव के चित्रण द्वारा चेर्निशेवस्की ने प्रगतिशील रूसी युवकों को क्रान्तिकारी बनना सिखाया।

'वेरापाव्लोव्ना' के स्वप्न के माध्यम से लेखक भविष्य के समाज और जीवन का चित्र प्रस्तुत करता है जिसमें सभी लोग प्रसन्न हैं और उनके समानाधिकार हैं। चेर्निशेव्स्की कहता है कि 'भविष्य सुन्दर है और उज्ज्वल है। इससे प्यार करो। इसकी ओर बढ़ो। इसे निकट लाओ और इसमें से जितना वर्तमान में ला सकते हो ले आओ।' भविष्य के आकर्षक चित्रण ने लोगों को क्रान्ति के लिए संघर्ष करने को प्रेरित किया और समाज के क्रान्तिकारी पुनर्निर्माण की प्रेरणा दी।

इस उपन्यास ने पश्चिम के, विशेषतया स्लाव देशों के प्रगतिशील लोगों को बहुत प्रभावित किया। अपनी ओर से बहुत कुछ कहने के साथ साथ लेखक सेंसर से बचने के लिए अन्योक्तिपूर्ण भाषा और सांकेतिक भाषा का भी प्रयोग करता है। उपन्यास में व्यंग्य की भी कमी नहीं है।

रूसी साहित्य में क्रान्तिकारी विचारों के व्याख्याता रूप में चेर्निशेव्स्की का बहुत बड़ा महत्त्व है। उसकी कलात्मक कृतियों तथा साहित्यिक आलोचनात्मक लेखों ने रूसी कला विशेषतया चित्रकला के विकास को बहुत अधिक प्रभावित किया।

देश हित चेर्निशेव्स्की के जीवन का सर्वोच्च आदर्श था। उसने लिखा 'अपने देश की क्षणिक नहीं वरन् शाश्वत प्रतिष्ठा में और मानवता के कल्याण में सहायता देने से ऊंचा और स्पृहणीय काम और क्या हो सकता है?' क्रान्ति और देश हित के लिए चेर्निशेव्स्की ने अपनी सारी प्रतिभा, सारी शक्ति और अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया।

५. लेव निकेलाएविच तोल्स्तोय

[१८२८-१९१०]

बचपन

तोल्स्तोय का जन्म सन् १८२८ मे ९ सितम्बर को यास्नयापल्याना मे एक अभिजात परिवार मे हुआ। वह दो वर्ष का भी न हुआ था कि उसकी माँ की मृत्यु हो गई और नौ वर्ष की अवस्था मे उसके पिता परलोक सिधारे। इसके पश्चात् पूरा तोल्स्तोय परिवार कज़ान चला गया।

सोलह वर्ष का तोल्स्तोय आरम्भ मे कज़ान विश्वविद्यालय के प्राच्य भाषा विज्ञान मे दाखिल हुआ। किन्तु पढ़ाई कुछ अधिक पसद न आने के कारण क़ानून के विभाग में पढने लगा। इसी समय से तोल्स्तोय जीवन के गभीर प्रश्नो का मनन करने लगा है और नैतिक पूर्णता को जीवन की अनिवार्य आवश्यकता मानकर अपने को विगत जीवन तथा उच्च परिवार की परपरा से सर्वथा अलग कर सर्वथा नये रास्ते पर चलने की कोशिश करने लगा।

आरम्भिक जीवन

१८४७ में उसने कज़ान विश्वविद्यालय छोड़ा। उसी समय भाइयों के बीच जायदाद का बँटवारा हुआ और यास्नयापल्याना का इलाक़ा उसके हिस्से में आया। विश्वविद्यालय छोड़कर वह अपनी ज़मींदारी मे आ गया और अच्छा सचालक तथा कुशल ज़मींदार बनने का लक्ष्य अपने सामने रखा। यास्नयापल्याना में रहते हुए वह न्याय, इतिहास, भूगोल, विदेशी भाषाएँ, कृषि व्यवस्था, सगीत आदि के अध्ययन में लगा। उसने कला के सबध मे लेख लिखे। उपन्यास रचना का विचार किया। स्कूल का सघटन किया और किसानो की दशा सुधारने की योजना बनायी।

उसके इन सब कार्यों का आरम्भ तो हो गया किन्तु इनका अन्त तक निर्वाह न हो सका।

इसके बाद वह कवकाज चला गया और कज़ाकों के बीच रहने लगा। इनके बीच उसको आत्मिक शान्ति मिली और उसने साहित्यिक कार्य शुरू करने का निश्चय किया। शीघ्र ही वह सैनिक कारखाने के तोपखाने में नौकरी करने लगा। कवकाज के जीवन और सैनिक नौकरी ने उसे और भी जनता के अधिक निकट ला दिया जिससे उसे साहित्यिक सर्जना के लिए बड़ी सामग्री मिली।

सन् पचास के वर्षों की साहित्यिक सर्जना

उसका पहला साहित्यिक कार्य उसकी आत्मकथा 'बचपन' है जो 'समकालीन' पत्र में सन् १८५२ में छपी और जिसकी काफी प्रशंसा हुई। उस सफलता से प्रेरणा पाकर उसने 'कौमार्यावस्था' तथा 'जवानी' लिखी जो एक प्रकार से प्रथम कृति का ही क्रमिक विकास है।

आत्मकथात्मक त्रयी

इस त्रयी का मुख्य पात्र निकोलेंका इर्तेनियेव है जो एक प्रकार से तोल्स्तोय का ही रूपान्तर है। तोल्स्तोय के समान इसे भी मनुष्य की सार्थकता, जीवन के लक्ष्य, नैतिक कर्तव्य आदि के प्रश्न जीवन के आरम्भ में ही उद्वेलित करने लगते हैं। नैतिक पूर्णता की प्राप्ति का प्रयत्न, जो कि निकोलेंका की विशिष्टता है, तोल्स्तोय की आगामी कृतियों में और भी व्यापकता से अभिव्यक्त हुआ है। निकोलेंका अभिजात वर्ग की शिक्षा दीक्षा और वातावरण में पलकर भी तोल्स्तोय के समान ही अभिजात वर्ग से दूर चला जाता है।

यह 'त्रयी' हमें अभिजात वर्ग के रहन-सहन से परिचित कराती है और हमें तोल्स्तोय के आत्मिक विकास को समझने में सहायता देती है। कलात्मक कृति के रूप में रूसी साहित्य के बीच इस 'त्रयी' का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

कवकाज के निवास ने उसे सैनिक जीवन के चित्रण का अवसर उसे

किया। 'आक्रमण' तथा 'जगल का काटना' ऐसी ही कहानियाँ हैं। १८५३ में क्रीमिया के युद्ध के शुरू होने पर उसने इस युद्ध में सक्रिय भाग लेने का निश्चय किया और सेवास्तोपोल भेजा गया जो कि युद्ध के भयानक स्थलों मे से एक था। सेवास्तोपोल के युद्ध के अनुभव के आधार पर उसने १८५५ मे 'दिसम्बर मे सेवास्तोपोल', 'मई में सेवास्तोपोल' और 'अगस्त मे सेवास्तोपोल' कहानियाँ लिखी।

'सेवास्तोपोलीय कहानियाँ' रूसी तथा विश्व-साहित्य मे बडी महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि तोल्स्तोय से पहले युद्ध का ऐसा सच्चा वर्णन किसी ने नहीं प्रस्तुत किया था। तोल्स्तोय ने सबसे पहले इन कहानियो में युद्ध की भयकरता, वीभत्सता तथा उसके कष्टो का यथातथ्य अकन प्रस्तुत किया। उन कहानियो मे सेवास्तोपोल की रक्षा के साहसपूर्ण कृत्यो का वर्णन है जिसमे कि वीरो ने स्वदेश रक्षा के लिए अपने प्राणो की आहुति दी।

सन् १८५६ मे तोल्स्तोय की प्रारम्भिक कृतियो 'बचपन' और कौमार्यावस्था' तथा 'युद्ध की कहानियाँ' के अलग-अलग सस्करण प्रकाशित हुए। चेर्निशेव्स्की ने इन कृतियो का स्वागत किया और तोल्स्तोय की प्रतिभा की विशेषता बताते हुए अपने लेख मे लिखा कि 'हम भविष्यवाणी करते हैं कि अब तक जो काउंट तोल्स्तोय ने हमारे साहित्य को दिया है यह उसका बयाना मात्र है जो कि वह बाद मे सपन्न करेगा। कितना समृद्ध और कितना सुन्दर यह बयाना है।' चेर्निशेव्स्की की यह भविष्यवाणी एकदम सच निकली।

'ज़मींदार का सवेरा'

सन् १८५६ मे उसने 'ज़मींदार का सवेरा' लिखा। इसमें नेख्ल्यूदोव के रूप मे स्वतः तोल्स्तोय का ही जीवन है जब कि वह विश्व-विद्यालय छोड़कर यास्नयापोल्याना में बस गया था। नेख्ल्यूदोव किसानो का जीवन सुधारने के लिए वैयक्तिक रूप से प्रयत्न करता है और उनके लिए स्कूल तथा अस्पताल बनाता है किन्तु किसानो की सहानुभूति उसे प्राप्त नही होती और वे उसका विश्वास नही करते । इस कहानी मे

कृषक जीवन के प्रति लेखक की गहरी रुचि और किसानों के मानस का यथातथ्य अंकन है।

अध्यापन कार्य

सन् १८५७ में तोल्स्तोय ने विदेश की यात्रा की जिसका उस पर बड़ा गभीर प्रभाव पड़ा। वहाँ से लौटकर वह किसानों के अधिकाधिक निकट आने का प्रयत्न किया है। उसका यह विश्वास था कि किसानों के जीवन के सुधारने का सर्वोत्तम साधन शिक्षा है और इस उद्देश्य से १८५९ में यास्नयापोल्याना में किसानों के बच्चों के लिए स्कूल स्थापित करता है और स्वयं अध्यापन कार्य करता है।

सन् १८६१ के सुधार के पहले ही तोल्स्तोय ने अपने किसानों को मुक्त करने की योजना बना ली थी। १८६१ के सुधार के बाद किसानों के लाभ के लिए वह जमींदारों और किसानों के बीच के झगड़ों को तय करानेवाली कमेटी का निर्णायक बन गया। निर्णायक के रूप में तोल्स्तोय ने किसानों का पक्ष लिया जिससे जमींदार उससे बहुत असंतुष्ट हो गये।

स्कूल तथा निर्णायक के कार्य-कलाप ने तोल्स्तोय को जनता के और भी निकट ला दिया और उसे जनहित को समझने में बड़ी सहायता दी।

कज़ाकी

सन् साठ के वर्षों में उसने 'कज़ाकी' और 'पोलिकूश्का कथाएँ' पूरी कीं और 'युद्ध और शांति' उपन्यास की रचना में लगा। 'कज़ाकी' कहानी में कज़ाकों के जीवन का चित्रण हुआ है। ये कज़ाक बड़े सादे लोग हैं और इनके जीवन और मन में कोई जटिलता नहीं है। उच्च समाज का ओलेनिन शोरगुल की दुनिया से थक कर कवकाज आता है, वहाँ के किसानों से मिलता-जुलता है, वहाँ की प्रकृति से आनन्दित होता है फिर भी उसे शांति नहीं मिलती। तोल्स्तोय इसके द्वारा यह प्रकट करना चाहता है कि प्रकृति के साहचर्य द्वारा उस व्यक्ति में नवजीवन का संचार नहीं किया जा सकता जो कि कृत्रिम समाज द्वारा बिगड़ चुका है।

युद्ध और शांति

१८६३–१८६९ में तोल्स्तोय ने विश्व-साहित्य की अन्यतम कृति 'युद्ध और शांति' प्रस्तुत की।

'युद्ध और शांति' उपन्यास में उन्नीसवीं शती के प्रथम दो दशकों के रूसी जीवन का अत्यन्त विशद् चित्र प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि उपन्यास के आरम्भिक अध्यायों में जार के यूरोपीय (१८०५–१८०७) युद्ध का विस्तार से वर्णन किया गया है फिर भी उपन्यास का मुख्य आकर्षण केन्द्र सन् १८१२ का नेपोलियन का आक्रमण और रूसी युद्ध है। युद्ध के दृश्यों के साथ-साथ इसमें शान्तिमय जीवन के भी अनेक चित्र हैं जिनका विधान तोल्स्तोय द्वारा संगृहीत विशाल ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर और यास्नायापोल्याना के लेखक के जीवन तथा वातावरण के आधार पर तथा मास्को और पीतरबुर्ग के राजधानी के जीवन के आधार पर किया गया है।

सामान्य जनता

इस उपन्यास में सामान्य जनता को ऐतिहासिक घटनाओं की प्रधान तथा निश्चयात्मक शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। इसमें प्रदर्शित किया गया है कि नेपोलियन से युद्ध के बीच रूसी जनता में देश-भक्ति का किस प्रकार उदय हुआ और उसने अपने अपूर्व साहस एवं दृढ़ता का परिचय दिया, शत्रुओं को नष्ट करने के लिए जनता ने छापामार टोलियाँ बनाईं। लेखक ने इस उपन्यास में इन छापामार टोलियों के कार्य-कलाप को जनता के स्वदेश-रक्षा के जन-आन्दोलन के रूप में चित्रित किया है। इस प्रकार सामान्य जनता का चित्रण करते हुए लेखक ने उसके साहस, दृढ़ता, देश-भक्ति आदि सामान्य विशिष्टताओं का बराबर चित्रण किया है।

कुतुसोव

सेनापति कुतुसोव इस युद्ध का मुख्य सचालक है। लेखक ने उसे बहुत बड़े देश-भक्त और बुद्धिमान नेता के रूप में चित्रित किया है। वह घटनाओं की गतिविधि को ठीक-ठीक समझता है और तदनुसार अपने को इसके अनुकूल बनाने की शक्ति रखता है। वह जानता है कि कब लड़ना

चाहिए और कब हट जाना चाहिए। और हटने में अपनी मान-हानि नहीं समझता। तोल्स्तोय ने उसे युद्ध-कला के आचार्य के रूप में चित्रित किया है। युद्ध-मंत्रणा के अवसर पर मास्को छोड़ देने और सेना को पीछे हटने की आज्ञा देने की शक्ति उसी में है जब कि सब सेनानी उसके इस मत के विरुद्ध हैं। वह निर्भीक है और ज़ार के सामने अपनी सम्मति निस्संकोच प्रकट करता है। युद्ध के भयानक क्षणों में भी वह सैनिकों से हँसकर बोलता है और उनको प्रोत्साहित करता है। कुतुसोव की शक्ति सेना तथा जनता के साथ उसकी एकता में है। इसीलिए एक ओर जहाँ वह सेना का संचालन करता है वहाँ जनता की छापामार टोलियों का भी समर्थन करता है।

अभिजात वर्ग के चित्रण में वह दमीली कुरीगिन जैसे अवसरवादियों का नग्न रूप भी प्रस्तुत करता है जिनमें देश-भक्ति का लेशमात्र भी नहीं है और उच्च विचारवाले रस्तोव तथा बलकोन्स्की-परिवार का भी अंकन करता है जो शिक्षित, शिष्ट और सिद्धान्तवादी हैं। अभिजात वर्ग के दो व्यक्तियों-अन्द्रेइ बलकोन्स्की और पियोर बेज़ूखोव—का उपन्यास में विशेष रूप से चित्रण हुआ है।

अन्द्रेइ बल्कोन्स्की

अन्द्रेइ बल्कोन्स्की उच्च विचारों का व्यक्ति है। तथाकथित उच्च समाज में उसे अहंभाव और दम्भ ही दिखाई पड़ता है और वह इस समाज के जीवन से छुटकारा चाहता है, किन्तु अभिजात वर्ग के संस्कारों के कारण इससे मुक्त नहीं हो पाता। उसका जीवन खोज का जीवन है और उत्थान-पतन तथा दिल बहलाव और निराशा का जीवन है। पहले वह यश और कीर्ति का इच्छुक था किन्तु आस्टरलित्स के युद्ध ने इस यश का नग्न रूप उसके सामने प्रस्तुत कर दिया और अब उसे इसकी भी इच्छा न रही। निराशा उसके जीवन में घर कर गई है और उसे अपने जीवन में आनंद की कोई आशा नहीं है। वह किसी के काम में बिना व्याघात डाले किसी प्रकार जीवन के दिन बिताना चाहता है, किन्तु सहसा नताशा रस्तोवा के प्रति प्रेम जग पड़ने के कारण उसके लिए जीवन में फिर आकर्षण आ

जाता है, किन्तु यह आकर्षण अधिक समय तक न रह सका क्योंकि नताशा दूसरे व्यक्ति अनातोली के प्रति आकृष्ट हो गयी। अब युद्ध की घटनाएँ उसमें जीवन जगाती हैं। सामान्य रूसी सैनिकों के साथ रहने पर अन्त में उसकी समझ में आता है कि जीवन की सार्थकता जनता की सेवा और उससे प्रेम करने में ही है। बोरोदिनो के युद्ध में अन्द्रेइ बुरी तरह घायल हुआ। मृत्यु से कुछ दिन पहले वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि जीवन की सार्थकता प्रेम में है—अपने निकट के लोगों से प्रेम करने में और अपने शत्रुओं से भी प्रेम करने में। इस समय उसके हृदय में उस अनातोली के प्रति भी विद्वेष न था जिसने कि उसके जीवन के व्यक्तिगत आनन्द को नष्ट कर दिया था।

अन्द्रेइ बल्कोन्स्की के माध्यम से तोल्स्तोय ने क्षमा, अहिंसा और आत्मिक प्रेम के अपने आदर्श की अभिव्यंजना की है। अन्द्रेइ बल्कोन्स्की तोल्स्तोय के ही क्षमा, दया, अहिंसा और प्रेम के आदर्शों का अनुगामी बन जाता है।

पियोर बेजूखोव

उपन्यास का एक अन्य पात्र पियोर बेजूखोव का भी इन्हीं सिद्धान्तों में विश्वास है। इस आरम्भ में वह उच्च वर्ग के राग-रंग के जीवन में व्यस्त रहता है किन्तु बाद में वह इससे ऊब जाता है और उपकार, धर्म, रोमांटिक प्रेम आदि में जीवन का सच्चा अर्थ ढूंढ़ता है। युद्ध की घटनाएँ उसके जीवन में भी परिवर्तन लाती हैं। वह युद्ध के बाद नेपोलियन की हत्या करने के लिए मास्को में ही रह जाता है। वह बाद में बंदी हो जाता है और सामान्य रूसी प्लतोन करातायेव के सम्पर्क में आता है। उसके सहवास में धीरे-धीरे उसकी आत्मा से संदेह का बोझ हटता है और उसे स्पष्ट हो जाता है कि जीवन की सार्थकता प्रेम, हिंसा द्वारा बुराई के विरोध न करने और अपने को भाग्य के अधीन कर देने में है।

अपने एक पत्र में तोल्स्तोय ने लिखा 'आनन्द, चिन्ता, परिश्रम, संघर्ष, त्याग—ये अनिवार्य परिस्थितियाँ हैं। जिनसे एक सेकेंड के लिए भी एक भी आदमी को छुटकारा पाने की बात न सोचनी चाहिए।

पात्र के माध्यम से तोल्स्तोय ने सामान्य रूसी जनता की सामान्य जातीय विशिष्टताओ को प्रस्तुत करने की चेष्टा की है किन्तु सोवियत आलोचको का यह मत है कि रूसी जातीय चरित्र के निदर्शन के रूप मे करातायेव का चरित्र सत्य से दूर चला गया है। उनका कहना है कि करातायेव के चरित्र मे हिंसा द्वारा बुराई के विरोध न करने की तथा निष्क्रियता की ओर अपने को भाग्य के आधीन समर्पित कर देने की जो प्रवृत्ति है वह रूसी जनता की जातीय विशिष्टता कदापि नही है। तोल्स्तोय ने यह प्रदर्शित किया कि जनता के अधिकाश को महत्त्वपूर्ण घटनाओं से कोई दिलचस्पी नही है और वह इनकी ओर विशेष ध्यान न देती हुई अपना व्यक्तिगत जीवन बिताती रहती है। करातायेव का जीवन भी ऐसा ही है। उसे तथा-कथित महत्त्वपूर्ण प्रश्न उद्वेलित नही करते और वह भाग्य द्वारा दिये गये अच्छे-बुरे को एक भाव से कबूल करता चलता है।

सोवियत आलोचक तोल्स्तोय के प्रेम करने के सिद्धान्त तथा हिंसा द्वारा बुराई के अवरोध के सिद्धान्त को उसकी शिक्षा का अत्यन्त प्रतिक्रिया-वादी पक्ष मानते हैं।

उपन्यास का मुख्य भाव यह है कि सत्य, शिव और सादगी की सवाहिका जनता ही है और जनता ही हो सकती है। सभी जनविरोधी मिथ्या और बुराई की ओर जा रहे हैं। उसी दृष्टिकोण से तोल्स्तोय ने उन सबकी आलोचना की है जो जनता से विच्छिन्न हो गये हैं, और उन सब का अत्यन्त सहानुभूति पूर्ण चित्रण किया है कि जो जनता के साथ और उसके हित में काम कर रहे हैं।

उपन्यास की घटनाओ का चित्रण प्रधान पात्रों के माध्यम से भी हुआ है और स्वयं लेखक द्वारा भी उन पर टिप्पणियाँ दी गई हैं। इसी कारण उपन्यास में कई विशेष अध्याय हैं जिनमें दार्शनिक वाद-विवाद और लेखक का स्व मत सपादन है। कुछ पात्रो का चित्रण (कुतुसोव, करातायेव) स्थिर है। उनका मार्ग निश्चित है और उनमें कोई विषमता नही लक्षित होती। दूसरे पात्र वे हैं जो जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य की खोज में लगे हुए हैं, इन जिज्ञासु तथा खोजी पात्रो का

चरित्र गत्यात्मकता के बीच तथा विकासशील दिखाया गया है।

प्रकृति का चित्रण भी पात्रों के अनुरूप हुआ और उपन्यास के प्राकृतिक दृश्य पात्रों के मनोभाव और अनुभूतियों के उद्घाटन में सहायता करते हैं। उदाहरणतः वसन्त का चित्रण अन्द्रेइ के रस्तोवों के यहाँ जाने के समय दो बार हुआ है। पहली बार तो उसमें उसकी निराशा बिखरती है और दूसरी बार वसन्त का चित्रण अन्द्रेइ की आशावादिता पर जोर देता है।

तोल्स्तोय का उपन्यास अपनी समाविष्ट विषय वस्तु की व्यापकता और विशदता के कारण सर्वदा नया साहित्यिक रूप प्राप्त करता है जिसे 'उपन्यास महाकाव्य' कहते हैं जिसमें ऐतिहासिक अतीत की अनेक सामाजिक अभिव्यक्तियों का गंभीर उद्घाटन हुआ है और जिसमें रूसी जीवन का अनेक रूपात्मक तथा बहुदर्शी चित्रण उसकी नैतिकता तथा वातावरण के साथ समन्वित है। इसी से 'युद्ध और शांति' का जातीय तथा विश्वात्मक महत्त्व है। युद्ध और शांति रूस की महान साहित्यिक कृति है।

सन् ७०-९० के वर्षों में उसकी सर्जना

सन् सत्तर के वर्षों में उसकी सर्जना में उसके दृष्टिकोण की विशेषता और भी तीक्ष्ण तथा स्पष्ट हो जाती है। उसने स्पष्टतया जान लिया था कि रूस के सामाजिक जीवन में अब अभिजात वर्ग की प्रधानता और प्रभुता नष्ट हो रही है और बुर्जुआ वर्ग सामाजिक उत्तराधिकारी के रूप में सामने आ रहा है। अभिजात वर्ग के जीवन में अब उसे सार्थकता नहीं दिखाई पड़ती थी क्योंकि इस वर्ग का जीवन नैतिक, सामाजिक हर दृष्टिकोण से ह्रासोन्मुख था। इसके साथ ही उसे बुर्जुआ विकास में भी रूस के लिए कोई अच्छाई नहीं दिखाई पड़ रही थी। वह तो बुर्जुआ विकास को साधारण जनता के लिए बहुत बड़ा खतरा समझता था। क्योंकि उसकी दृष्टि में यह व्यक्तिवादी [illegible] को नैतिक ह्रास की ओर ले जा रहा है। इसलिए वह अभिजात वर्ग और बुर्जुआ वर्ग दोनों की आलोचना करता है। [illegible] नैतिक [illegible] की शिक्षा देता है और किसानों के पितृसत्तात्मक व्यवस्था का आदर्श जीवन के रूप में ग्रहण करता है। और

इन्ही के द्वारा वह अपने युग की बुराइयों का निराकरण सभव समझता है। परिश्रम मे वह मनुष्य का त्राण देखता है और परोपजीवियो, प्रभुवर्ग, शासन तथा शासन के सेवक रूप मे अधिकृत चर्च की आलोचना करता है। तोल्स्तोय परिश्रमशील जनता के और भी निकट आने का प्रयत्न करता है और उसके जीवन मे घुल-मिल जाना चाहता है।

अन्ना करेनिना

'अन्ना करेनिना' उपन्यास मे इन्ही विषमताओ का चित्रण हुआ है। इसमें लेखक के मन को उद्वेलित करनेवाले समकालीनता के सभी प्रश्न प्रस्तुत किये गए हैं। इस उपन्यास के लेखन मे उसे पाँच वर्ष लगे।

इस उपन्यास की प्रधान नायिका अन्ना करेनिना है जिसका उस अभिजात वर्ग के वातावरण से असामजस्य हो जाता है जिसमे कि उसका जन्म हुआ है और जिसमे वह पली है। अन्ना को अपने पति से प्यार नही है और वह व्रोन्स्की से प्यार करती है और उसी मे उसे जीवन की खुशी प्राप्त होती है। उच्च समाज द्वारा परित्यक्ता और अपने प्रिय पुत्र से जबरदस्ती अलग की हुई अन्ना अत्यन्त व्यथित है और तलाक की कोशिश करती है। हर प्रकार से तिरस्कृत और असफल होने के कारण तथा किसी से सहानुभूति न प्राप्त कर सकने के कारण वह आत्महत्या कर लेती है।

शहरी जीवन और बुर्जुआ सस्कृति की आलोचना करते हुए तोल्स्तोय ने इस उपन्यास में बड़ी सहानुभूति के साथ पितृसत्तात्मक जीवन का चित्रण किया है क्योंकि उसमें उसका विश्वास था और उसका वही आदर्श था तथा वह इसी को जनता की रक्षा और सुधार का साधन समझता था। इसी से उसने अन्ना करेनिना के समाज के लोगो का जीवन विफल और खोखला दिखाया है और उनके परिवारो को विशृखलन चित्रित किया है और इसके विपरीत लेविन का जीवन आनन्दमय दिखाया है। उसे अपने पारिवारिक जीवन मे आनन्द की प्राप्ति होती है यद्यपि उसकी आत्मा जीवन को सार्थकता की खोज में व्यस्त है। किसानो के अधिकाधिक निकट आते हुए और उनके परिश्रमपूर्ण जीवन मे हिस्सा लेते हुए वह

पितृसत्तात्मक कृषक व्यवस्था में संयुक्त हो जाता है और इसमें आत्मिक शांति प्राप्त करता है।

तोल्स्तोय अभिजात वर्ग और बुर्जुआ दोनों की आलोचना करता है किन्तु जानता है कि सामाजिक शक्ति के रूप में अब बुर्जुआ प्रबल हो रहा है और अब वही जीवन का मालिक है। रिबोनिन के रूप में तोल्स्तोय ने जीवन के इसी नवीन मालिक को प्रस्तुत किया है। लेखक के मतानुसार रिबोनिन और उसके साथी ,परिश्रमशील कृषकों को और भी नष्ट कर रहे हैं।

१८८१ में तोल्स्तोय परिवार के साथ मास्को आ गया। मास्को की जन गणना में हिस्सा लेते हुए उसने परिश्रमशील जनता की घोर ग़रीबी को लक्षित किया किन्तु क्रान्तिकारी संघर्ष की जगह उसने नैतिक आत्म-सुधार को ही इस अन्याय के निराकरण का साधन माना।

इन वर्षों मे उसकी कृतियों में 'हिंसा द्वारा बुराई के अवरोध का भाव' और भी प्रबल हो जाता है और न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के निर्माण के लिए संघर्ष का रास्ता न जाननेवाली जनता की निराशा की भावना और भी तीक्ष्ण तथा गहरी हो जाती है। तोल्स्तोय समझता है कि सुदूर अतीत में, पितृसत्तात्मक जीवन की परिस्थितियों में, सामान्य जनता का जीवन. बुर्जुआ समाज के बीच पनपते हुए उसके जीवन से, कहीं अधिक अच्छा था। इसी से समकालीन समस्याओं के समाधान के रूप में बराबर नैतिक पूर्णता या नैतिक आत्मसुधार और पितृसत्तात्मक जीवन की आदर्श व्यवस्था पर जोर देता रहा और उसने अपने समय के क्रान्तिकारी विचारों को नहीं ग्रहण किया। उसकी सर्जना के आरम्भ में उसकी कृतियों में दृष्टिकोण का जो वैषम्य लक्षित होता है वह इन वर्षों मे और भी तीव्र तथा तीक्ष्ण हो जाता है।

पुनर्जन्म

उसकी बुर्जुआ व्यवस्था की आलोचना का निदर्शन उसका उपन्यास 'पुनर्जन्म' है जिसे कि उसने १८८९ में शुरू किया और कई व्यवधानों के बीच दस वर्ष में पूरा किया। तोल्स्तोय की यह कृति उन्नीसवी शती

के अन्त के आलोचनात्मक यथार्थवाद की श्रेष्ठ कृति मानी जाती है। इसमें रूसी समाज के विभिन्न स्तरों और वर्गों के जीवन का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

उपन्यास के केन्द्र में राजकुमार नेख्लूदोव और कत्यूशा मास्लोवा (सामान्य लड़की) है। न्यायालय में वह अभियुक्त के रूप में खड़ी कत्यूशा को पहचानता है जो कि उसके दिलबहलाव का शिकार बन चुकी है और उसकी आत्मा पश्चाताप करने लगती है। इस अभागी स्त्री के प्रति किये गये अपने पाप के प्रक्षालन का प्रयत्न करता हुआ उसका 'पुनर्जन्म' होता है। वह अपने सामाजिक विशेषाधिकारों को छोड़ देता है, अपनी जमीन किसानों को पट्टे पर उठा देता है और बाद में इस जमीन से अपना अधिकार त्याग देता है। इस प्रकार वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि मनुष्य का आनन्द निकटवर्तियों से प्रेम में है। सब को क्षमा करने में है, तथा ईश्वरीय इच्छा के अविरोध में है।

कत्यूशा में भी बड़ी मानसिक हलचल है। नेख्लूदोव द्वारा प्रवंचित होकर वह इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि ईश्वर के बारे में जो कुछ कहा जाता है वह सब केवल इसलिए कि लोगों को धोखा दिया जाय। उसका 'अच्छाई' या 'भलाई' से विश्वास उठ जाता है। थोड़े समय के लिए उसकी आत्मा कुंठित हो जाती है किन्तु फिर शनैः शनैः उसके अन्तर में जो कुछ 'अच्छा' बचा है उसका पुनर्जन्म होता है और वह उसे आत्मिक 'पुनर्जन्म' की ओर ले जाता है।

इन पात्रों की ट्रेजेडी का मूल स्रोत लेखक के मत में रूस के अभिजात वर्ग और बुर्जुआ वर्ग की कुत्सित सामाजिक तथा शासकीय व्यवस्था है। फलतः तोल्स्तोय सत्ताशील लोगों की अवसरवादिता, तथा ढोंग को, न्यायालय की बेईमानी को, और धोखा देने वाले शासन के सहायक बने हुए धर्म के मिथ्यात्व की कड़ी आलोचना करता है। उसे प्रत्येक व्यक्ति की आत्मशुद्धि में तथा नैतिक पूर्णता में ही इससे छुटकारा दिखाई देता है। ईश्वरीय (शासन) जारशाही (शासन) हमारे भीतर है ऐसा वह जोर देकर कहता है।

९

पितृसत्तात्मक कृषक व्यवस्था से संयुक्त हो जाता है और इसमें आत्मिक शांति प्राप्त करता है।

तोल्स्तोय अभिजात वर्ग और बुर्जुआ दोनों की आलोचना करता है किन्तु जानता है कि सामाजिक शक्ति के रूप में अब बुर्जुआ प्रबल हो रहा है और अब वही जीवन का मालिक है। रिबीनिन के रूप में तोल्स्तोय ने जीवन के इसी नवीन मालिक को प्रस्तुत किया है। लेखक के मतानुसार रिबीनिन और उसके साथी परिश्रमशील कृषकों को और भी नष्ट कर रहे हैं।

१८८१ में तोल्स्तोय परिवार के साथ मास्को आ गया। मास्को की जन गणना में हिस्सा लेते हुए उसने परिश्रमशील जनता की घोर गरीबी को लक्षित किया किन्तु क्रान्तिकारी संघर्ष की जगह उसने नैतिक आत्म-सुधार को ही इस अन्याय के निराकरण का साधन माना।

इन वर्षों में उसकी कृतियों में 'हिंसा द्वारा बुराई के अवरोध का भाव' और भी प्रबल हो जाता है और न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के निर्माण के लिए संघर्ष का रास्ता न जाननेवाली जनता की निराशा की भावना और भी तीक्ष्ण तथा गहरी हो जाती है। तोल्स्तोय समझता है कि सुदूर अतीत में, पितृसत्तात्मक जीवन की परिस्थितियों में, सामान्य जनता का जीवन बुर्जुआ समाज के बीच पनपते हुए उसके जीवन से, कहीं अधिक अच्छा था। इसी से समकालीन समस्याओं के समाधान के रूप में बराबर नैतिक पूर्णता या नैतिक आत्मसुधार और पितृसत्तात्मक जीवन की आदर्श व्यवस्था पर जोर देता रहा और उसने अपने समय के क्रान्तिकारी विचारों को नहीं ग्रहण किया। उसकी सर्जना के आरम्भ में उसकी कृतियों में दृष्टिकोण का जो वैषम्य लक्षित होता है वह इन वर्षों में और भी तीव्र तथा तीक्ष्ण हो जाता है।

पुनर्जन्म

उसकी बुर्जुआ व्यवस्था की आलोचना का निदर्शन उसका उपन्यास 'पुनर्जन्म' है जिसे कि उसने १८८९ में शुरू किया और कई अवरोधों के बीच दस वर्ष में पूरा किया। कलाकार की यह कृति [illegible] [illegible]

के अन्त के आलोचनात्मक यथार्थवाद की श्रेष्ठ कृति मानी जाती है। इसमें रूसी समाज के विभिन्न स्तरों और वर्गों के जीवन का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

उपन्यास के केन्द्र में राजकुमार नेख्ल्यूदोव और कत्यूशा मास्लोवा (सामान्य लड़की) है। न्यायालय में वह अभियुक्त के रूप में खड़ी कत्यूशा को पहचानता है जो कि उसके दिलबहलाव का शिकार बन चुकी है और उसकी आत्मा पश्चाताप करने लगती है। इस अभागी स्त्री के प्रति किये गये अपने पाप के प्रक्षालन का प्रयत्न करता हुआ उसका 'पुनर्जन्म' होता है। वह अपने सामाजिक विशेषाधिकारों को छोड़ देता है, अपनी जमीन किसानों को पट्टे पर उठा देता है और बाद में इस जमीन से अपना अधिकार त्याग देता है। इस प्रकार वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि मनुष्य का आनन्द निकटवर्तियों से प्रेम में है। सब को क्षमा करने में है, तथा ईश्वरीय इच्छा के अविरोध में है।

कत्यूशा में भी बड़ी मानसिक हलचल है। नेख्ल्यूदोव द्वारा प्रवंचित होकर वह इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि ईश्वर के बारे में जो कुछ कहा जाता है वह सब केवल इसलिए कि लोगों को धोखा दिया जाय। उसका 'अच्छाई' या 'भलाई' में विश्वास उठ जाता है। थोड़े समय के लिए उसकी आत्मा कुंठित हो जाती है किन्तु फिर शनैः शनैः उसके अन्तर में जो कुछ 'अच्छा' बचा है उसका पुनर्जन्म होता है और वह उसे आत्मिक 'पुनर्जन्म' की ओर ले जाता है।

इन पात्रों की ट्रेजेडी का मूल स्रोत लेखक के मत में रूस के अभिजात वर्ग और बुर्जुआ वर्ग की कुत्सित सामाजिक तथा शासकीय व्यवस्था है। अतः तोल्स्तोय समकालीन समाज की अवमूल्यकारिता, सत्ता तन्त्र की, न्यायालय की बेईमानी की, और धोखा देने वाले शासन के सहायक बने हुए चर्च के मिथ्याचार की कड़ी आलोचना करता है। उसे प्रत्येक व्यक्ति की आत्मशुद्धि से सत्य नैतिक पुनर्जन्म में ही इसमें सुधार दिखाई देता है। ईश्वरीय (शाश्वत) बादशाहत (शासन) हमारे भीतर है ऐसा वह बार बार कहता है।

१

य के होते हुए भी ...
उपन्यास का बड़ा महत्त्व है। इसमें ...
ासन के बीच रूसी जनता की कठिन परिस्थिति का यथातथ्य
ता है।

...अन्तिम वर्ष

...न और चर्च दोनों का नग्न रूप प्रस्तुत करने के कारण और उनकी
...चना करने के कारण दोनो ही उसके विरुद्ध थे। किन्तु लेखक
...क लोकप्रियता तथा प्रभाव के कारण शासन उसके दमन में डरता
...र्च ने फतवा पढ़ा और तोल्स्तोय को चर्च से निकाल दिया। इसका
... यह हुआ कि तोल्स्तोय जनता में और भी लोकप्रिय
...।

...वन के अन्तिम वर्षों में तोल्स्तोय किसानों की तरह रहने लगा।
...ीन जोतता था, लकड़ी काटता था, जूते सीता था, पानी खींचता
...र किसानों की तरह कपड़े पहनता था।

...८९१, १८९३, १८९८ में उसने अकाल पीड़ित किसानों के लिए
...ता का आयोजन किया। सन् १९०५ की क्रान्ति के दिनों में उसने
... कि वह करोड़ो किसानों के पक्ष मे है और जब क्रान्ति के बाद उसने
... दमन, असख्य मृत्यु दंड तथा निर्वासन का दृश्य देखा तो वह
...लित हो उठा और 'मैं मौन नहीं रह सकता' लेख लिखा। इसके बाद
...अभिजात वर्ग के अपने विशेषाधिकार और भी बोझ मालूम पड़ने
... १० नवम्बर १९१० को सुबह तोल्स्तोय अपने डाक्टर मित्र (डा०
...वित्स्की) के साथ यास्नायापल्याना छोड़कर दक्खिन की ओर
...पड़ा। रास्ते में उसे निमोनिया हो गया और २० नवम्बर को अस्तो-
... स्टेशन पर स्टेशन मास्टर के घर में उसकी मृत्यु हो गई। यास्नाया-
...ाना में इस महान् लेखक की अत्यन्त साधारण कब्र है जिससे उसकी
...मा की महानता और भी प्रकट होती है।

...रूस के इस महान लेखक की सर्जना का रूस के अन्य महान् व्यक्ति
...लेनिन ने मुक्त कंठ से आदर किया। तोल्स्तोय के विषय में लेनिन ने कहा

लेख ('रूसी क्रान्ति का दर्पण लेव तोल्स्तोय', 'लेव नकोलाएविच तोल्स्तोय', 'तोल्स्तोय और उसका युग', 'तोल्स्तोय और समकालीन श्रमिक आन्दोलन' 'तोल्स्तोय और प्रोलितारियत संघर्ष' आदि) लिखे जिनमे उसने तोल्स्तोय की महत्ता और उसकी सर्जना की विषमता का विश्लेषण किया था। उसकी प्रगतिशीलता और उसकी प्रतिक्रियावादिता को स्पष्ट किया और उसकी समकालीनता तथा उसकी प्राचीनवादिता के कारण बताये। उसने लिखा कि तोल्स्तोय ने 'कलात्मक कृतियों की ऐसी माला दी जिसने उसे संसार के उच्च लेखकों के बीच प्रतिष्ठित कर दिया। जिसने बड़ी शक्ति, विश्वास और ईमानदारी के साथ समकालीन राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था की मूलभूत विशिष्टताओं से सम्बंधित प्रश्नों की एक पूर्ण शृंखला प्रस्तुत की।'

लेनिन आगे लिखता है कि 'तोल्स्तोय की कृतियों, दृष्टिकोणों, शिक्षाओं और 'स्कूल' की विषमताएँ बड़ी मुखर हैं। एक ओर तो वह मौलिक कलाकार है, जिसने न केवल रूसी जीवन का अतुलनीय चित्र प्रस्तुत किया वरन् विश्व-साहित्य की प्रथम कोटि की रचनाएँ प्रस्तुत कीं दूसरी ओर जमींदार और ईसा में विश्वास करनेवाला सनकी। एक ओर तो सामाजिक मिथ्यात्व और ढोंग का जोरदार, सीधा और ईमानदारी से पूर्ण विरोध है—और दूसरी ओर तोल्स्तोयवादी अर्थात् समय से पिछड़ा हुआ चिल्लानेवाला मूर्ख, वंचित (रूसी 'इंटेलिजेंट' बुद्धिमान) पब्लिक में अपनी छाती ठोंकता हुआ कहता है कि 'मैं खराब हूँ, मैं कुत्सित हूँ किन्तु मैं 'नैतिक आत्मपूर्णता' में लगा हुआ हूँ, मैं अब मांस नहीं खाता हूँ और चावल के कटलेटों पर जीवित रहता हूँ।' एक ओर तो पूँजीवादी शोषण की खरी आलोचना, शासकीय जबरदस्ती, न्यायालय तथा सरकारी संचालनों के नाटक का पर्दाफाश, बढ़ती समृद्धि तथा सांस्कृतिक सम्प्राप्तियों की वृद्धि और गरीबी, बर्बरता तथा जनता के तड़पन की वृद्धि के बीच की विषमता का गंभीर उद्घाटन और दूसरी ओर 'बुराई के अविरोध' की कुत्सापूर्ण शिक्षा। एक ओर तो गंभीर यथार्थवाद; हर प्रकार के चेहरों को उतार फेंकना और, दूसरी ओर दुनिया की

अत्यन्त कुत्सित वस्तुओं में से एक की शिक्षा—अर्थात् धर्म की शिक्षा, धर्म के पुरोहितों की जगह—नैतिक विश्वास के पुरोहितों को स्थापित करने का प्रयत्न अर्थात् अत्यन्त सूक्ष्म और फलतः अत्यन्त घृणित पुरोहिती की स्थापना।'

मानवता के त्राण का नया नुस्खा प्रस्तुत करने वाले मसीहा के रूप में तोल्स्तोय हास्यास्पद है किन्तु उन विचारों और मनोभावों के अभिव्यंजक के रूप में वह महान् है 'जो कि रूस के बुर्जुआ आन्दोलन के आरम्भ के समय तक करोड़ों रूसी किसानों में प्रादुर्भूत हो गये थे।

तोल्स्तोय विश्व का अत्यन्त लोकप्रिय लेखक और बहुत से योरोपीय साहित्यकारों को प्रेरणा देनेवाला सिद्ध हुआ।

छोटी कहानियों की विषय वस्तु बड़ी ही व्यापक और सारगर्भित होती थी। इन कृतियों में रूसी जीवन के विविध पक्ष प्रतिबिम्बित हैं। धीरे-धीरे चेखव की इन कहानियों में मनोवैज्ञानिक अंकन के साथ-साथ सामाजिक विषय वस्तु भी अधिकाधिक व्यापक होती गयी। और फलतः उसकी आरम्भिक रचनाओं में 'मोटा और दुबला', 'चेहरा', 'गिरगिटान' 'प्रिशिबेयेव' जैसी महत्त्वपूर्ण कहानियां भी हैं। जिनमें अन्याय, शोषण, शासन की निरंकुशता, जनता पर अत्याचार, मानवीय अधिकार की अवमानना आदि तत्कालीन सामयिक प्रश्नों की ओर संकेत किया गया है।

गिरगिटान

'गिरगिटान' कहानी में तत्कालीन कर्मचारियों की अपने से बड़े अफसर की खुशामद चित्रित की गई है और जनता के प्रति उनका रोष-पूर्ण रवैया दिखाया गया है। यह कर्मचारी सामान्य जनता की शिकायतों की ओर कोई ध्यान नहीं देते।

प्रिशिबेयेव

'प्रिशिबेयेव' में चेखव सन् अस्सी के जमाने के पुलिस शासन का उद्घाटन कर रहा है। प्रिशिबेयेव इस पुलिस शासन का मूर्त रूप है। वह हर एक के व्यक्तिगत जीवन में दखल देता है और किसी को चैन से नहीं बैठने देता। वह लोगों को आम सड़क पर एकत्रित होने से भी मना करता है। पुलिस शासन पर व्यंग्य के कारण सेंसर ने इसके छापने की आज्ञा नहीं दी।

कर्मचारी की मृत्यु

'कर्मचारी की मृत्यु' में साधारण व्यक्ति की खुशामदी प्रवृत्ति तथा अफसरों से भय आतंकित रहने की स्थिति का चित्रण किया गया है। मामूली क्लर्क चेर्व्याकोव थियेटर में आगे बैठे हुए जनरल के सिर पर छींक देता है। क्लर्क इस बात का आतंक उसकी शान्ति नष्ट कर देता है। कई बार उसके बंगले के चक्कर-चक्कर काटने का परिणाम था,

लेकिन उसे संतोष न हुआ । अन्त में भय से उसकी मृत्यु हो जाती है।

सन् नब्बे के वर्षों में चेखव की सर्जना

सन् अस्सी के युग के अन्त से चेखव की प्रौढ़ रचनाएँ सामने आती हैं। 'स्तेप' कहानी ऐसी ही है जिसमें मनमोहक प्राकृतिक पृष्ठ-भूमि में उस समय का अरोचक रूसी जीवन प्रस्तुत किया गया है।

सखालिन टापू

रूसी जीवन का व्यापक परिचय प्राप्त करने की इच्छा से चेखव १८९० में सुदूर पूर्व गया। उसका ध्यान विशेष रूप से सखालिन ने आकृष्ट किया जो कि उस समय के रूस से निर्वासितों और दंडितों की बस्ती थी। निर्वासितों पर किये जानेवाले अत्याचारों से वह काँप उठा और रूस लौट कर उसने 'सखालिन टापू' पुस्तक लिखी। यद्यपि पुस्तक निर्वासितों की दशा सुधारने के अपने लक्ष्य में सफल न हुई क्योंकि सखालिन निर्वासितों का पूर्ववत् नरक बना रहा, फिर भी पुस्तक एक दृष्टि से कृतकार्य हुई। पुस्तक ने जारशाही के विरुद्ध जनता के हृदय में घृणा जगायी।

वार्ड नम्बर ६

१८९२ में उसकी प्रसिद्ध कहानी 'वार्ड नंबर छ' छपी जिसमें अस्पताल के मानसिक रोगियों के वार्ड का चित्र प्रस्तुत किया गया है। इसमें तोल्स्तोय के 'बुराई के अविरोध' के सिद्धान्त की आलोचना की गई है। डाक्टर रागिन मनुष्य का त्राण आत्मपूर्णता में देखता है और मानसिक रोगी ग्रोमोव से उसका मतभेद है जो कि 'बुराई के अविरोध' का विरोधी है। तोल्स्तोय के सिद्धान्तों का यह समर्थक डाक्टर निष्क्रिय रहता है और अस्पताल में फैलती हुई बुराइयों को रोकने की कोशिश नहीं करता है फलतः वहाँ अस्पताल में इंसानियत नहीं है और रोगी पीटे जाते हैं। अन्त में डाक्टर स्वयं बीमार होकर रोगी के रूप में इस वार्ड में आता है और जब वार्ड के नौकरों द्वारा, वहाँ की परिस्थितियों का विरोध करने पर पीटा जाता है तो उसे 'बुराई के अविरोध' के सिद्धान्त की गलती का अनुभव होता है। मार खाने के बाद डाक्टर उस दिन से एक

शब्द भी न बोला और न उसने खाना ही छुआ। थोड़े दिन बाद वह मर गया। पाठकों ने इस कहानी को समकालीन रूसी जीवन की आलोचना के रूप में ग्रहण किया।

जनसेवा

चेखव जनसेवा के बारे में बराबर सोचा करता था। १८९२ में उसने मध्य वोल्गा के अकाल पीड़ित किसानों के लिए धन एकत्रित किया। उसी साल उसने मेलिखोवो में, मास्को के बाहर के अपने निवास स्थान पर सामाजिक कार्य का आयोजन किया। उसने हैजा स्टेशन खोला और वहां की जनता को मुफ्त दवा दी। अपने साधनों के बल पर उसने मेलिखोवो और पास के गांवों में स्कूल खोले तथा गरीबों को कपड़ों आदि से सहायता की।

किसान

गांवों के जीवन का चेखव ने जो पर्यवेक्षण किया उसके आधार पर उसने 'किसान' कहानी लिखी जिसमें पूंजीवाद द्वारा नष्ट किये गये किसानों के अभाव-ग्रस्त अंधकारपूर्ण जीवन का चित्र है।

सन् अस्सी और नब्बे के जमाने के रूसी जीवन के अपने पर्यवेक्षण में चेखव ने उस 'ब्यूरोक्रेसी' को भी देखा जो कि जीवन की स्वच्छन्द गति को रोकती है और इस प्रकार जारशाही का अवलम्ब बनी हुई है। वह प्रत्येक प्रकार की नवीनता और प्रगति का विरोधी है। चेखव ने इसे केवल नौकरशाही के ही बीच नहीं लक्षित किया वरन् जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी इसके पोषकों को देखा।

आवेष्टित व्यक्ति

'आवेष्टित व्यक्ति' में चेखव ने इसी प्रकार के व्यक्ति का चित्रण किया है। इस कहानी का नायक स्कूल में ग्रीक भाषा का शिक्षक है जो कि सरकारी कायदे कानून पर चलने वाला व्यक्ति है और हर प्रकार की नवीनता और स्वतंत्रता का कट्टर शत्रु है। वह अपने को बराबर ढंके रहता है कि उसे हवा भी न लगने पाए। हर मौसम में वह लम्बे बूट,

छाता और रूई वाले अंगरखे में आवेष्ठित रहता है। इसी प्रकार उसका व्यक्तिगत जीवन भी ढंका हुआ है और दूसरों से छिपा हुआ है। स्कूल के बच्चे उससे डरते हैं और उसके दबाव में स्कूल के शिक्षक विद्यार्थियों के अंक घटा देते हैं और हल्की शरारतों पर भी उनको स्कूल से निकाल देते हैं। स्कूल के अतिरिक्त वह शहर के लोगों के लिए भी भयानक है। उसके कारण लोग जोर से बात करते हुए भी डरते हैं। इस कहानी के द्वारा चेखव ने मानवीय व्यक्तित्व के विकास और स्फुरण को रोकनेवाले प्रतिक्रियावादी शासन तथा वातावरण के नष्टकारी प्रभाव का संकेत दिया है। इस कहानी में दूसरे शिक्षक भी हैं जो केवल 'सर्कुलर' के आधार पर ही नहीं जीवित रहना चाहते, जो गतिहीनता के विरोधी हैं और जो नव संचार चाहते हैं। जीवन को बदलना ही होगा—यह कहानी का संकेत है।

इओनिच

इसी वर्ष (१८९८) चेखव की कहानी 'इओनिच' प्रकाशित हुई जिसमें रूसी बुद्धिजीवियों की संकीर्ण आराम पसंद ज़िंदगी का अंकन और उसकी आलोचना है। इसमें डाक्टर स्तारत्सेव की करुण कहानी है जो समाज के लिए उपयोगी बनना चाहता है लेकिन धीरे-धीरे आत्मसेवी बन जाता है और उसके आरम्भ के उच्च आदर्श लुप्त हो जाते हैं।

जिन्दगी और जीवन के उत्साह और जनता के प्रति प्रेम से पूर्ण, युवक डाक्टर प्रान्त के एक छोटे से शहर में आता है। शहर के पास के अस्पताल में वह बड़े आत्मत्याग के साथ काम करता है। किन्तु अधिक समय तक वह ऐसा न बना रह सका। धीरे-धीरे वह स्वयं आत्मसेवी बन जाता है। अब उसका लक्ष्य सम्पन्न समाज सेवा नहीं वरन् आत्मसेवा है और धन संचित करना उसके जीवन का उद्देश्य रह जाता है। अब वह समाज और जनता के बीच बहुत कम दिखाई पड़ता है। अब वह लोगों के यहाँ इसलिए नहीं जाता कि रोगियों की चिकित्सा करे वरन् उन लोगों का घर देखकर अपने लिए घर खरीदने की इच्छा से। समाज सेवा के उसके स्वप्न सब सदा के लिए लुप्त हो गये।

चेखव की कहानियों में उसके समकालीनों को केवल पूंजीवाद का ही उद्घाटन न मिला वरन् किसानों की सहकारिता की आशा लगाए हुए 'नरोद्‌निकी' के भ्रम की भी आलोचना दिखाई पड़ी। उनकी कहानियों में तोल्स्तोय के 'बुराई के अविरोध' के सिद्धान्त और 'बुर्जुआई छोटे कामों के सिद्धान्त' का भी विरोध था।

'नरोद्‌निकी' तोल्स्तोय तथा बुर्जुआ सिद्धान्तों की आलोचना करते हुए भी चेखव के पास अपना कोई जीवन-दर्शन या सामाजिक दर्शन न था जो वह अपने देश को दे सकता और जनता को किसी एक निश्चित रास्ते पर चला सकता। क्योंकि वह सामाजिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण के क्रान्तिकारी मार्ग से अवगत न था तथा उससे दूर था फिर भी उसकी कृतियों में आशा-वादिता का सूत्र है। जिसे उसके उज्ज्वल भविष्य में विश्वास है और वह जानता है कि महान् रूसी जनता का सर्जनात्मक परिश्रम निकट भविष्य में इस देश को पुष्पित उद्यान में परिणत कर देगा। उसकी अन्तिम कहानियो में 'दुलहिन' रूस के उज्ज्वल भविष्य के विश्वास से ओत-प्रोत है। इसमें अभिजात वर्ग की लड़की नाद्या का चित्र है जो इस वर्ग की परोपजीवी जिन्दगी को छोड़कर भविष्य में विश्वास रखती हुई संघर्ष के रास्ते पर चल पड़ती है। जीवन का निरीक्षण करते हुए चेखव के पास अनुभव की प्रभूत सामग्री एकत्रित होती दिखाई दी जिसकी विस्तृत अभि-व्यक्ति कहानी की लघु सीमा में ज्यों की त्यो पूरी-पूरी सभव न थी। इसी से युग के द्वन्द्व और सघर्ष के सजीव अंकन के लिए उसने साहित्य के एक अन्य रूप नाटक को चुना। सन् नव्वे के वर्षों और उन्नीसवी शती के अन्त में चेखव की नाटकीय प्रतिभा का अपूर्व प्रतिफल देखने को मिलता है। नाटककार के रूप में उसे प्रथम महत्वपूर्ण सफलता 'चाइका' (समुद्री पक्षी), (१८९६) नाटक में मिली। उसके अन्य प्रसिद्ध नाटक 'चाचा वान्या' (१८९७) 'तीन बहनें' (१९०१), 'चेरी की बगिया' (१९०३) हैं। सामान्यतया इन नाटकों मे युग का पूरा-पूरा चित्र उतर आया है। इन नाटकों में अभिजात वर्ग के बुर्जुआ शक्ति के प्रादुर्भाव, विचारशीलों की निराशा, जो कि बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाते हैं किन्तु

घरेलू तथा पारिवारिक जीवन का व्यक्तिगत नाटक है जिसके बीच से यह तथ्य अपने आप प्रस्फुटित होते हैं। इसके पात्र अत्यन्त सजीव हैं। उनकी अपनी व्यक्तिगत विशिष्टताएं है और उनमें मानव सुलभ सभी भावनाएं हैं।

गायेव बातूनी है और उसमें कर्मशीलता नहीं है। वह हमेशा यही सोचता है कि कितना अच्छा होता यदि कहीं से विरासत मिल जाती। कितना अच्छा होता यदि आन्या की शादी किसी अमीर से हो जाती।

उसकी बहन रनेव्स्काया का चरित्र अत्यन्त भावुक है। उसका पुत्र इसी जमीदारी के तालाब में खेलता हुआ डूब गया। बाद में पति की भी मृत्यु हो गई। पुत्र और पति को खोकर शोक विह्वला यह नारी पेरिस चली जाती है और वहां एक व्यक्ति से प्रेम करने लगती है और वह भी अन्त में उसे धोखा देता है। सब ओर से दु.खी यह नारी अब अपने जीवन के अन्तिम दिन बिताने स्वदेश लौटती है। इस जायदाद का एक स्थान उसके लिए अनेक स्मृतियों से समन्वित है। यहीं उसका बचपन बीता और यहीं उसके पुत्र की मृत्यु हुई। अनेक स्मृतियों में लिपटी हुई चेरी की बगिया को छोड़ने में इन लोगों को बड़ा कष्ट हो रहा है। चेखव ने इस मानवीय पक्ष का बड़ा ही स्वाभाविक एवं भावपूर्ण अंकन किया है। अभिजात वर्ग का यह परिवार बुरा नहीं है। उसमें दया, कृपा सब कुछ है। केवल यह कार्यकुशल और कर्मठ नहीं है।

लोपाखिन इन लोगों से सर्वथा भिन्न है। लोपाखिन के पूर्वज इसी परिवार के दास कृषक थे जो अपने परिश्रम से ही अपनी मुक्ति प्राप्त कर सके हैं। लोपाखिन इसी परिश्रम और शक्ति का मूर्त रूप है। वह बिना काम के रह ही नहीं सकता। व्यापारी होने के कारण वह हर चीज का हिसाब-किताब जोड़कर उस काम में लगता है। चेरी की बगिया वह इसलिए नहीं खरीदता कि वह बड़ी सुन्दर है वरन् इसलिए कि वह आमदनी बढ़ाने का जरिया है। वह इस बगिया के पुराने मालिकों के चले जाने तक भी नहीं रुकता और पेड़ों का कटाना शुरू कर देता है। लोपाखिन नयी बढ़ती हुई सामाजिक शक्ति का प्रतीक है।

फिर भी चेखव की सहानुभूति लोपाखिन के प्रति नहीं है।

चेखव की सहानुभूति युवक पात्र त्रफीमोव और आन्या के साथ है, जो चेरी की बगिया को प्राचीन रूढ़िग्रस्त समाप्तप्राय जीवन की प्रतीक मानते हैं और जो उसे छोड़कर इसके बंधनों से अपने को मुक्त कर बड़े उत्साह के साथ जीवन के नये मार्ग पर चलना चाहते हैं। इसी से चेखव ने लोपाखिन को सच्चे नायक के रूप में नहीं प्रस्तुत किया। नाटक का सच्चा नायक प्रयत्नशील, परिश्रमशील, नये जीवन का नया राही युवक वर्ग है जिसके प्रतिनिधि त्रफीमोव और आन्या हैं। यद्यपि नाटक में इनकी अभिव्यक्ति कुछ धुंधली ही हुई है।

त्रफीमोव और आन्या अतीत की ओर न देखकर भविष्य की ओर उन्मुख और प्रयत्नशील हैं। उनमें परिश्रम का संकल्प है। असीम उत्साह है और उज्ज्वल भविष्य का दृढ़ विश्वास है।

त्रफीमोव तथा आन्या की यह आशावादिता स्वतः चेखव की आशावादिता है जिसकी झलक उसकी अनेक कृतियों में मिलती है। प्रतिक्रिया के अंधकार के बीच चेखव की अपने देश के प्रकाशमान उज्ज्वल भविष्य के विश्वास से आलोकित कृतियाँ अनेक हृदयों को आशा और उत्साह से दीप्त करती रहीं।

चेखव को बहुत पहले तपेदिक हो गया था। सन् नब्बे के अन्त में उसकी बीमारी बढ़ गई और उसे याल्ता जाना पड़ा। १९०४ में उसकी मृत्यु हो गयी।

रूसी साहित्य के इतिहास में चेखव आलोचनात्मक यथार्थवाद का बहुत बड़ा प्रतिनिधि माना जाता है। उसका नाम 'रूसी साहित्य के अन्यतम लेखकों—पुश्किन, गोगल, लेरमन्तोव, तुर्गनेव, तोल्स्तोय—के साथ बड़े आदर के साथ लिया जाता है। बर्नर्ड शा ने चेखव के बारे में लिखा कि 'योरोपीय नाटककारों के नक्षत्र मंडल में चेखव अत्यन्त प्रकाशमान तारे के सदृश चमक रहा है।

फिर भी चेखव की सहानुभूति लोपाखिन के प्रति नहीं है।

चेखव की सहानुभूति युवक पात्र अफीमोव और आन्या के साथ है, जो चेरी की बगिया को प्राचीन रूढ़िग्रस्त समाप्तप्राय जीवन की प्रतीक मानते हैं और जो उसे छोड़कर इसके बंधनों से अपने को मुक्त कर बड़े उत्साह के साथ जीवन के नये मार्ग पर चलना चाहते हैं। इसी से चेखव ने लोपाखिन को सच्चे नायक के रूप में नहीं प्रस्तुत किया। नाटक का सच्चा नायक प्रयत्नशील, परिश्रमशील, नये जीवन का नया राही युवक वर्ग है जिसके प्रतिनिधि अफीमोव और आन्या हैं। यद्यपि नाटक में इसकी अभिव्यक्ति कुछ धुंधली ही हुई है।

अफीमोव और आन्या अतीत की ओर न देखकर भविष्य की ओर उन्मुख और प्रयत्नशील हैं। उनमें परिश्रम का संकल्प है। असीम उत्साह है और उज्ज्वल भविष्य का दृढ़ विश्वास है।

अफीमोव तथा आन्या की यह आशावादिता स्वतः चेखव की आशावादिता है जिसकी झलक उसकी अनेक कृतियों में मिलती है। प्रतिक्रिया के अंधकार के बीच चेखव की अपने देश के प्रकाशमान उज्ज्वल भविष्य के विश्वास से आलोकित कृतियाँ अनेक हृदयों को आशा और उत्साह से दीप्त करती रहीं।

चेखव को बहुत पहले तपेदिक हो गया था। सन् नब्बे के अन्त में उसकी बीमारी बढ़ गई और उसे याल्ता जाना पड़ा। १९०४ में उसकी मृत्यु हो गयी।

रूसी साहित्य के इतिहास में चेखव आलोचनात्मक यथार्थवाद का बहुत बड़ा प्रतिनिधि माना जाता है। उसका नाम 'रूसी साहित्य के अन्यतम लेखकों-पुश्किन, गोगल, लेरमन्तोव, तुर्गनेव, तोल्स्तोय—के साथ बड़े आदर के साथ लिया जाता है। बर्नार्ड शा ने चेखव के बारे में लिखा कि 'योरोपीय नाटककारों के नक्षत्र मंडल में चेखव अत्यन्त प्रकाशमान तारे के सदृश चमक रहा है।

स्थापना हुई और शासन सूत्र कम्यूनिस्ट पार्टी के हाथ में आ गया तो इस नये युग मे रूसी साहित्य के निर्माण और विकास को अपूर्व अवसर मिला और वह सर्वथा नयी दिशा की ओर प्रवृत्त हुआ। अक्तूबर क्रान्ति के बाद का रूसी साहित्य 'सोवियत साहित्य' कहलाता है जिसका संस्थापक मैक्सिम गोर्की है और जिसका मूल प्रेरक लेनिन है, जिसका रूप पार्टीवादी है, जो प्रोलितारियनीय समाजवादी संस्कृति का पोषक है और जो कम्यूनिस्ट पार्टी के निर्देशन मे समाजवाद के निर्माण के बीच निर्मित हुआ है। आगे के पृष्ठों में इसी 'सोवियत साहित्य' की रूपरेखा प्रस्तुत की जायगी।

भाग २

१. मैक्सिम गोर्की

जीवन

अक्तूबर क्रांति के साथ रूसी साहित्य ने जो समाजवादी पथ अपनाया उस पर मैक्सिम गोर्की प्रकाश-स्तम्भ के समान स्थित है। कलात्मक क्षेत्र में मैक्सिम गोर्की सर्वहारा-साहित्य का प्रस्थापक और समाजवादी यथार्थवादिता का कलाकार तथा व्याख्याता माना जाता है। क्रांतिकारी आंदोलन तथा गोर्की ने एक दूसरे को विकसित तथा पुष्ट किया। अतएव सोवियत साहित्य के उल्लेख के आरम्भ में मैक्सिम गोर्की के जीवन और उसके साहित्य का उल्लेख अत्यावश्यक है।

आविर्भावकाल की परिस्थिति

उन्नीसवीं शती के अंत में गोर्की का निर्माण या गठन होता है और यही समय है जब कि स्वाधीनता या स्वतंत्रता आंदोलन का नया युग शुरू होता है जिसमे मजदूर वर्ग सबसे आगे हैं। इस संबंध में सन् १९१४ में लेनिन ने लिखा कि[1] रूसी स्वाधीनता आंदोलन की तीन मंजिलें हैं जो कि रूसी समाज के तीन मुख्य वर्गों के अनुरूप हैं। इन वर्गों की इस आन्दोलन पर अपनी छाप है :

(१) सन् १८२५ से १८६१ तक—दरबारी युग।

(२) १८६१–१८९५ तक—बुर्जुआ डिमोक्रेटिक युग।

(३) १८९५–वर्तमान समय तक—सर्वहारा या प्रोलितारियन् युग

१८८४ से १८९४ के समय को लेनिन रूस में क्रांतिकारी मार्क्सवादी सिद्धान्त की रचना का युग मानता है और १८९४ से १८९८ के समय को जनव्यापी क्रांतिकारी आन्दोलन में इन सिद्धान्तों के समावेश का समय समझता है।

---

[1] स्टकना साचेस्कन्या लितेरातूरा, ल० इ० डिमोटेवेव पृ० २८।

१८७५ में 'मजदूरों का दक्खिनी रूसी संघ' स्थापित होता है। १८७८ में पीतरबुर्ग में 'रूसी मजदूरों का उत्तरी संघ' बनाया जाता है। १८८३ में प्लेखानोव ने जेनेवा में 'श्रम की स्वाधीनता' की स्थापना की। सन् १८९० के आसपास मास्को तथा अन्य नगरों में मजदूरों के विभिन्न क्रांतिकारी संगठन बन जाते हैं। १८९३ में लेनिन पीतरबुर्ग आता है और असंख्य क्रांतिकारी समुदायों को एक में मिलाकर १८९५ में "मजदूर वर्ग की स्वाधीनता युद्ध का संघ" की रचना करता है। १८९८ में "रूसी-सोशल-डिमोक्रेटिक मजदूर पार्टी" का प्रथम अधिवेशन होता है। दिसम्बर १९०० में लेनिन विदेश के प्रसिद्ध पत्र 'चिनगारी' (इस्क्रा) का प्रकाशन करता है जिसका क्रांतिकारी आंदोलन के संगठन में बड़ा हाथ रहा है। जुलाई १९०३ के रूसी-सोशल-डिमोक्रेटिक पार्टी के द्वितीय अधिवेशन (ब्रुसेल्स-लंदन) ने श्रमिक क्रांतिवादी आंदोलन में मार्क्सवाद को और भी दृढ़ बनाया और पार्टी के अधिनियम और कार्यक्रम को निश्चित किया।

इस प्रकार मार्क्सवाद से सुसज्जित और सन्नद्ध मजदूर या श्रमिक वर्ग स्वतंत्रता आंदोलन में सबसे आगे आया, जिसने लेनिन तथा स्तालिन के नेतृत्व में इस आंदोलन का रूप ही बदल दिया और उसे नयी दिशा की ओर उन्मुख किया। देश में अब हड़तालों की लहरें उठने लगीं जिससे शासन कांप उठा और जिससे प्रोलितारियत् या सर्वहारा को बढ़ती हुई शक्ति का परिचय मिला। इन हड़तालों में लाखों मजदूरों ने शामिल होकर अपनी दृढ़ता और एकता का प्रदर्शन किया।

सन् १९०० में क्रांतिकारी आंदोलन का नया रूप समने आया जो सशस्त्र विद्रोह का रूप था। १९०१ में पीतरबुर्ग के अबुखोवस्की कारखाने में पहली मई को मजदूरों की हड़ताल में सिपाहियों का शस्त्रों के साथ मुकाबिला किया गया। क्रांतिकारी विचार तथा आंदोलन अब फौज तथा नौसेना में भी फैलने लगा। १९०५ की क्रांति ने सारे देश को हिला दिया। क्रांतिकारी आंदोलन की व्यापकता का आभास या अंदाज इसी से मिल सकता है कि इस क्रांति की पराजय के बाद जो दमन-चक्र

चला उसमें आंदोलन में भाग लेने के अपराध में तीन लाख व्यक्ति पिसे, फिर भी क्रांतिकारी-आंदोलन नष्ट न हुआ और निरंकुश शासन के अत्याचारों को झेलते हुए मजदूर या सर्वहारा वर्ग मजबूत तथा सुदृढ़ होकर सामने आया। इसने स्पष्टतया प्रदर्शित कर दिया कि वह प्राचीन व्यवस्था को मिटाने तथा शासन की बागडोर अपने हाथ में ले लेने में पूर्णतया सक्षम तथा समर्थ है। आगे चलकर लेनिन ने इसी सर्वहारा वर्ग को संगठित कर जारशाही का तख्ता उलट दिया और देश में सोवियत शासन की स्थापना की।

जन्म, बचपन तथा जवानी

स्वाधीनता आंदोलन के नये युग का यह अत्यन्त संक्षिप्त चित्र है जो कि सन् नब्बे (१८९०) से शुरू होता है। इसी समय अलेक्सेइ मेक्सीमोविच गोर्की का कार्यक्षेत्र में प्रवेश होता है। अलेक्सेइ मेक्सीमोविच पेश्कोव (मैक्सिम गोर्की) का जन्म १६ (२८) मार्च सन् १८६८ में निज्नी नोवोगोरद में हुआ। उसके जन्म के चार वर्ष बाद ही उसके पिता की हैजे से मृत्यु हो गई और उसकी माँ (वारवरा वसीलयेव्ना) अपने पिता के परिवार में रहने चली गयी जहाँ रंगसाजी का काम होता था।

गोर्की की मां परिवार में बहुत कम रही, गोर्की का पालन-पोषण प्रधानतया उसकी नानी अकुलीना इवानोव्ना कशीरीना ने किया। यह बुद्धिमती तथा अत्यन्त सदय थी। इसका रूसी भाषा पर बड़ा अच्छा अधिकार था। यह बहुत सी कथाएं और गीत जानती थी और शिशु गोर्की को यह कथाएं तथा गीत सुनाया करती थी।

गोर्की का बचपन बड़ा कष्टपूर्ण बीता। उसे ठीक शिक्षा भी न मिल सकी क्योंकि नाना का परिवार निर्धन हो गया था। उसे स्कूल से तीसरे दर्जे से ही हटा लिया गया। बचपन में उसे सभी प्रकार के काम करने पड़े। परिवार की सहायता करने के लिए वह दरवाजे-दरवाजे चिथड़े, कागज, रद्दी आदि इकट्ठा किया करता था और उसे दो चार पैसों में बेंच दिया करता था। एक बार काम करते हुए उसके हाथ भी जल गये। वह एक 'ड्राफ्ट्स मैन' के यहाँ भी शिक्षा पाने के लिए भेजा गया किन्तु वहाँ

उसे बराबर बर्तन धोने पड़ते थे और फ़र्श साफ़ करनी पड़ती थी। गोर्की यहाँ से भाग गया।

यहाँ से भाग कर वह घर न गया और वोल्गा नदी पर बोझा ढोने वालों की सहायता करने लगा। इस समय उसकी उम्र कुल ग्यारह वर्ष की थी। उसने एक स्टीमर पर नौकरी कर ली जहाँ सुबह से शाम तक उसे बर्तन धोने पड़ते थे। इस तरह उसका बचपन बीत गया और वह यह न जान पाया कि 'बचपन कैसा होता है।' अब 'जनता के बीच' उसके जीवन का आरम्भ हुआ।

कई वर्षों तक गोर्की एक जगह से दूसरी जगह घूमता-भटकता रहा और हर पेशे का काम करता रहा। उसने नानबाई की नौकरी की, रेल पर सामान तोलता रहा तथा रात का पहरेदार बना। निज्नी से वह कज़ान पहुंचा और कज़ान से कैस्पियन सागर के तट पर मछली पकड़ने वालों के बीच जा पहुंचा। फिर भी वह बराबर पढ़ता रहा और परिश्रम द्वारा लिखने पढ़ने में पूर्ण पटु हो गया। ऐसे कठिन जीवन के बीच गोर्की का चरित्र दृढ़ हुआ, उसका अनुभव बढ़ा और जनता के साथ उसका संबंध घनिष्ठता से जुड़ा।

साहित्यिक कार्य-कलाप की तैयारी

नानी के गीतों और कथाओं से गोर्की के हृदय में कलात्मकता का बीज अंकुरित हुआ। फिर स्टीमर पर बर्तन धोने की नौकरी करते समय जब उसका परिचय स्टीमर के रसोइये से हुआ तो यह उसके विकास का दूसरा महत्त्वपूर्ण क्षण सिद्ध हुआ क्योंकि इस रसोइये (स्मूरी) को पढ़ने का व्यसन था और वह गोर्की से ज़ोर-ज़ोर से पढ़वा कर सुनता था। इस रसोइये का सन्दूक मानो एक छोटा सा पुस्तकालय था जिसमें गोर्की को गोगल, नेक्रासोव, ग्लेब उस्प्येन्सकी आदि की पुस्तकें पढ़ने को मिलीं।

१८८४ में कज़ान में आकर वह बुद्धिजीवियों तथा तरुण क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आया और उसका गम्भीर क्रान्तिकारी साहित्य से परिचय हुआ। गोर्की ने इस समय मार्क्स का ग्रंथ 'पूंजी' (कपिताल) पढ़ा। इस समय वह बड़े परिश्रम के साथ आत्म-शिक्षण में लगा और उसने रूस

तथा विदेशी 'क्लासिक' पढ़े। १८८९ तक वह इतना पढ़ गया था कि इस सन् मे वह निज्नी नगर आकर एक वकील का मुंशी बन गया। इसी समय उसका साहित्यिक कार्यकलाप शुरू हुआ। उसने एक बडी कविता (आख्यानक) 'पुराने वृक्ष का गीत' लिखी और बहुत सी दूसरी कविताए रची।

गोर्की ने यह बड़ी कविता कोरोल्येन्को को दिखलाई। कोरोल्येन्को की आलोचना इतनी तीखी थी कि गोर्की ने आगे न लिखने का निश्चय कर लिया और सचमुच दो साल तक उसने कुछ न लिखा।

१८९१ में गोर्की ने रूस की पहली लम्बी यात्रा पूरी की। इसमे वह वोल्गा, डान, यूक्रेन, बेसारेबिया, अदेसा, क्रीम, कुबान आदि की पैदल यात्रा करते हुए तिफ्लिस तक पहुंचा। रास्ते में किसी किसान के यहां काम करते हुए या बोझा ढोनेवाले का काम करते हुए वह बराबर आगे चलता गया। इस यात्रा ने गोर्की को अमूल्य सर्जनात्मक सामग्री प्रदान की। 'मकार चुद्रा', 'च्येलकश', 'बुढ़िया इजरगिल' आदि गोर्की की कृतियां इसी यात्रा के अनुभवों पर आधारित है। इस यात्रा ने उसे देश से, किसानो की जिन्दगी से, शहर के मजदूर, आवारा तथा भिखमगों, सभी से अच्छी तरह परिचित करा दिया।

गोर्की के 'बचपन', 'जनता के बीच', 'मेरे विश्वविद्यालय' का आत्मकथात्मक महत्त्व

गोर्की का व्यक्तित्व अब परिपुष्ट हो गया था। गोर्की ने अपने शैशव तथा जवानी की जो 'त्रयी' कथा लिखी है वह उसकी महत्त्वपूर्ण रचनाओ में मानी जाती है। उसकी इन कृतियों—'बचपन (१९१२ मे लिखित) 'जनता के बीच' (१९१४–१९१५), 'मेरे विश्वविद्यालय' (१९२३) का आत्मकथात्मक महत्त्व है। इन कथाओ से पता चलता है कि तरुण गोर्की का किस प्रकार निर्माण हुआ तथा उसके विचारों तथा आदर्शों ने उसे किस ओर प्रेरित किया, उसने इनमें न केवल अपने बचपन की ही तस्वीर खीची है वरन् उन्नीसवी शती के अन्त के

रूसी जीवन का व्यापक चित्र भी प्रस्तुत किया है जिसमें रूसी जनता के अनेक रोचक रूप एवं पक्ष अंकित किये गये हैं।

रूसी साहित्य में शैशव से सम्बंधित अनेक महत्त्वपूर्ण कलाकृतियाँ हैं और यह सभी ऐसे शैशव का चित्रण करती हैं जिसे 'सर्वसामान्य शैशव' कहा जा सकता है, जहाँ शिशु प्रेमपूर्ण परिवार में बड़ा होता है, जहाँ उसकी शिशु आत्मा का क्रमिक विकास होता है, जहाँ उसके मानवीय चरित्र का निर्माण होता है और जिसको याद लोग बाद में बड़ी कोमलता के साथ किया करते है। गोर्की शैशव के संस्मरण के रूप में ऐसी सर्वथा नयी विषय वस्तु को प्रस्तुत करता है जिसमें सामाजिक जीवन की ऐसी परिस्थितियों का चित्रण किया गया है जिसमें निम्न सामाजिक स्तर के बच्चों का बचपन बीतता है, जो निर्धनता के बीच बड़े होते हैं और जहाँ उनकी अच्छी-अच्छी अभिरुचियों का दम घुट जाता है।

किन्तु इसके साथ ही इन आत्मचरितात्मक कथाओं का मूल आधारभूत वस्तु-विषय गोर्की का व्यक्ति में विश्वास है—इस बात का विश्वास कि रूसी व्यक्ति आनन्दमय या खुशहाल जीवन के मार्ग की जितनी रुकावटें और कठिनाइयाँ हैं उनको दूर हटाने में पूर्णतया सक्षम है। उसने 'बचपन' में लिखा[1] :

रूसी जीवन की इन वीभत्सताओं तथा कुरूपताओं को याद करता हुआ मैं हर क्षण अपने से पूछता हूँ कि क्या इनकी चर्चा करने से कोई लाभ है? और बड़े विश्वास के साथ जवाब देता हूँ कि 'हाँ, लाभ है'।—यह वह सत्य है कि जिसको उसकी जड़ तक जानना अनिवार्य है, जिससे कि उसे स्मृति से, मनुष्य की आत्मा से, और अपनी दुःखद तथा शर्मनाक जिन्दगी से जड़ से उखाड़ कर फेंक दें। एक दूसरा कारण भी है जिसने मुझे इन कुरूपताओं के चित्रण [illegible] किया, यद्यपि ये कुरूपताएं अरुचिकर हैं और हमारा

[1] मैक्सिम गोर्की: बचपन, पृ० ३१।

दम घोट रही हैं—फिर भी रूसी व्यक्ति की आत्मा इतनी स्वस्थ तथा जवान है कि वह इन पर विजय पा रहा है और इन पर विजय पाएगा।"

इन तीनों कथाओं के बीच अल्योशा (अलेक्सेइ) का चरित्र प्रस्तुत किया गया है जो वास्तव में गोर्की ही है। कशीरिन परिवार में जीवन, स्टीमर पर काम, नानबाई की नौकरी, वोल्गा की यात्रा, किसानों के बीच क्रांतिकारी कार्य, तरुण गोर्की के जीवन के यह सभी महत्वपूर्ण क्षण इन कथाओं में चित्रित हैं। अल्योशा के माध्यम से गोर्की रूसी जीवन की विशिष्टता प्रदर्शित करने वाले विभिन्न लोगों तथा विभिन्न घटनाओं का चित्रण करता है। किंतु लोगों तथा घटनाओं का जो मूल्यांकन किया गया है वह अल्योशा का ही दृष्टिकोण है। उसकी मुख्य विशिष्टताएं हैं—न्यायप्रियता, अत्याचारी के प्रति घृणा, आत्मविकास के लिए अथक परिश्रम तथा सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति।

साहित्य की महत्ता, विशेषतया रूसी साहित्य का महत्त्व यह इन आत्मकथाओं के मूल भूत विषय-वस्तुओं में से एक है। गोर्की यह चित्रित करता है कि अल्योशा को साहित्य में वह आत्मिक शक्ति मिलती है जिससे कि वह पशुता के विरुद्ध व्यक्ति में अपना विश्वास घोषित करता है, शांति प्राप्त करता है, और अपने चारों ओर के लोगों को ऊपर उठाता है।

सन् नब्बे (१८९०) के रूसी जीवन की हीनता का जो चित्र गोर्की कटु तथा निष्पक्ष सत्यता के साथ अंकित करता है वह एकांगी ही रह जाता यदि गोर्की अपने को केवल इस नकारात्मक जीवन तक ही सीमित रखता। ऐसे जीवन के प्रतिपक्ष में—जो कि लोगों को दबाता और नीचे गिराता है—गोर्की उस आत्मिक शक्ति को चित्रित करता है जो कि रूसी जनता में है—और यह है रूसी जनता की प्रतिभा तथा उसकी उदारता। स्टीमर पर अल्योशा की मदद रसोइया स्मूरी करता है। ड्राफ्ट्समैन' के यहाँ काम करते हुए बहादुर तथा प्रसन्नचित्त धोबिन नतालया कज्लोव्स्काया उसका पक्ष लेती है इसी प्रकार उसे हर

कोई उदार तथा उच्च चरित्र वाला व्यक्ति मिल जाती

चित्रों के बीच नानी अकूलिना इवानोव्ना का चित्र महत्वपूर्ण
है। अठारह बच्चों की मां, जिन्दगी की सभी तकलीफों
हुई भी उसने अपनी आत्मिक समृद्धि की सुरक्षा की।
के रूप में रूसी नारी की सभी विशिष्टताएं संकलित हैं।
आर में घुसकर डरे और भड़के हुए घोड़े को रोक लेती
ाती है, नाचती है और अल्योशा को कथाएं सुनाती है।
ल्योशा के हृदय में कलात्मक सर्जना को जगाया, उसे सत्य
के लिए प्रयत्नशील बनाया।

की यह आत्मचरितात्मक कथाएं केवल उसके बचपन तथा
का स्पष्ट चित्र ही नहीं प्रस्तुत करतीं, वरन् उसकी सारी
सर्जना के समझने में सहायता देती हैं। वे यह प्रदर्शित
है कि गोर्की का जीवन के प्रति वह दृष्टिकोण तथा सबब
मित हुआ जो कि उसके सारे क्रिया-कलाप के मूल में है।

त्यक कार्य-कलाप का आरम्भ

८९१ में गोर्की तिफ्लिस पहुंचा जहां उसकी अलेक्सान्द्र म्फो-
कल्यूज़िन से भेंट हुई। यह हाल ही में राजनीतिक कार्य-
के अपराध में सज़ा काट कर लौटा था। इसने गोर्की को
त्यिक जीवन आरम्भ करने में बड़ी सहायता दी। इसका गोर्की
बड़ा प्रभाव पड़ा और इस प्रभाव को गोर्की ने स्पष्ट रूप से
उस पत्र में स्वीकार किया जो कि गोर्की ने उसे लिखा।
इसी कल्यूज़िन की मदद से उसकी पहली कहानी 'मकार चुद्रा'
काज' पत्र में १८९२ में छपी। इस समय गोर्की की आयु २४ व
थी। यह कहानी 'मैक्सिम गोर्की' उपनाम से छपी और इसी ना
वह बाद में सारे संसार में प्रसिद्ध हुआ।

१८९३ में गोर्की की फिर कोरोलेन्को से भेंट हुई। कोरोलेन्
गोर्की से पत्रिका के लिए जोरदार चीज़ लिखने को कहा। गो

ने 'च्येलकश' कहानी लिखी जिसे कोरोलयेन्को ने राजधानी की बड़ी पत्रिका 'रूसी समृद्धि' (रुस्कोये बगास्त्व) के पास भेज दी और जो वहाँ छपी। गोर्की की सर्जनात्मक प्रतिभा के संबध में कोरोलयेन्को की धारणा अब बदल गई थी और उसने यह कहा कि "सब से बड़ी बात यह है कि तुम आदमी का वैसा ही मूल्यांकन करते हो जैसा कि वह है।"

इसी समय गोर्की ने अपनी कहानियाँ पत्रों में छपाई। कोरोलयेन्को की सलाह से वह 'समारीय पत्र' में स्थिर रूप से काम करने के लिए समारा आया जहाँ उसने 'इएगुदिल ख्लमीदा' उपनाम से लिखा। धीरे-धीरे उसकी ख्याति बढ़ने लगी किंतु जब १८९८ में, दो भागो में, उसके लेखो और कहानियो का संग्रह छपा तो उसका नाम सारे देश में गूंजने लगा। अब उसके जीवन का नया युग शुरू होता है और उसका चेखव और तोल्स्तोय से परिचय होता है। १९०१ से उसकी कृतियो का विदेशी भाषाओं में अनुवाद होने लगता है और उसके नाटको का रूसी तथा विदेशी रंगमंच पर प्रदर्शन होता है। १९०२ में गोर्की अकेदमी का सम्मानित सदस्य चुना गया किन्तु जब ज़ार ने उसका नाम हटाने की आज्ञा दी तो चेखव और कोरोलयेन्को दोनों ने इसके विरोध में अकेदमी की सदस्यता से इस्तीफ़ा दे दिया, इससे पता चलता है कि लोगो के मन में गोर्की के प्रति कितना आदर और सम्मान का भाव था। इसी प्रकार जब १९०५ में गोर्की को गिरफ़्तार कर पेत्रोपाव्लोस्क के किले में बंद किया गया तो अनातोले फ्रांस ने लिखा[1]—"गोर्की का मामला हम सबका मामला है। गोर्की जैसी प्रतिभा एक देश की न होकर सारे विश्व की है। सारा संसार उसकी रिहाई में दिलचस्पी रखता है।"

गोर्की का क्रांति सम्बन्धी कार्य-कलाप

कज़ान में ही, जहाँ कि वह १८८४ में काम कर रहा था, गोर्की

---

[1] —रूस्काया सोवेत्स्काया लितेरातूरा, ल० इ० तिमोफ़ेयेव, पृ० ३६।

क्रांतिकारी नवयुवक मण्डलों के सम्पर्क में आया। १८८८ में उसने वोल्गा पर रहने वाले किसानों के बीच क्रांतिकारी प्रचार किया। १८८९ में गोर्की पहली बार गिरफ्तार किया गया किन्तु महीने भर में ही छोड़ दिया गया। इसके बाद वह कई बार गिरफ्तार किया गया। १९०५ में गोर्की ने एक घोषणा-पत्र तय्यार किया जिसमें निकोलाई द्वितीय की सरकार को उलट देने के लिए कहा गया था क्योंकि ९ जनवरी को उसने जनता के शांतिपूर्ण प्रदर्शन पर गोली चलाने का हुक्म दिया था।

दिसम्बर १९०५ में विद्रोह के दिनों में मास्को में गोर्की ने बड़ा काम किया। उसके घर में बम तय्यार किये जाते थे। हथियार खरीदने के लिए उसने बहुत रुपया इकट्ठा किया, उसने बोल्शेविक समाचार पत्र 'युद्ध' (बर्बा) के संगठन में योग दिया जो क्रांति के समय १९०५ में निकलता था, इसी समय पीतरबुर्ग में लेनिन और गोर्की की पहली बार भेंट हुई। मास्को क्रांति के दमन के बाद १९०६ में गोर्की पार्टी की आज्ञा से देश छोड़कर बाहर चला गया। वह इटली में कैप्री टापू पर रहने लगा। इन्हीं वर्षों में (१९०६) 'माँ' उपन्यास लिखा गया।

विदेश में गोर्की

विदेश में रहते हुए गोर्की बराबर साहित्यिक और सामाजिक कार्य करता रहा। इन वर्षों में (१९०८–१९१३) उसने 'अनावश्यक आदमी का जीवन', 'मत्वेइ कोझेम्याकिन का जीवन', 'बचपन,' 'गर्मी', 'इटली की कहानियाँ' आदि लिखी। रूसी क्रांतिकारियों के लिए उसने स्कूल का संगठन किया जहाँ वह स्वयं रूसी साहित्य के इतिहास पर लेक्चर देता था। १९०७ में वह 'रूसी-सोशल-डिमोक्रेटिक पार्टी' के सम्मेलन में लंदन गया। इस समय वह लेनिन के निकट आया और तब दोनों के बीच बड़ा प्रेमपूर्ण संबंध रहा।

रूस में गोर्की का पुनरागमन

मार्च १९१३ में स्वदेश वापस लौटा। इस की भाँति इस समय

भी वह तरुण रूसी लेखको से संबंध बनाए रहा। लेखन आरम्भ करने वाले तरुण प्रोलितारियत लेखकों की सहायता करना वह अत्यन्त महत्वपूर्ण समझता था। १९१४ मे उसने 'प्रोलितारियत लेखकों' की रचनाओं का संकलन प्रकाशित किया। १९१५-१६ में 'लेतोपिस' पत्र के संगठन में उसने योग दिया जिसमे कि उसने मायकोव्स्की की कविता 'युद्ध और शांति' छापी। इसी समय गोर्की का मायकोव्स्की से परिचय हुआ। 'जनता के बीच' इसी समय की चीज है। १९१७ मे उसने 'प्रोलितारियत लेखकों' का दूसरा संकलन निकाला। १९१७ मे गोर्की पेत्रोग्राद मे था जहाँ वह जारशाही के विरुद्ध बराबर (लेतोपिस पत्र मे) प्रचार करता रहा।

आरम्भ मे गोर्की १९१७ की क्रांतिकारी घटनाओं के महत्व को ठीक तरह से नही समझ सका। लेनिन तथा स्तालिन ने गोर्की की गलतियों की आलोचना की जिससे कि वह फिर ठीक रास्ते पर आ गया और वह बोल्शेविको के साथ हो गया। गोर्की ने अपने लेख 'लेनिन' में अपनी इस समय की गलतियों की चर्चा की है।

अक्तूबर क्रांति के बाद गोर्की का जीवन

अक्तूबर क्रांति के आरम्भिक दिनो से ही गोर्की सोवियत शासन को समाजवादी संस्कृति की स्थापना मे सहायता देने लगा। विद्वानो की सहायता के लिए उसने कमीशन की स्थापना की, और 'अखिल-विश्वसाहित्य' प्रकाशन की व्यवस्था की। १९१९ मे उसने लियो तोलस्तोय के संबंध में अपने संस्मरण लिखे।

कार्याधिक्य के कारण गोर्की की तपेदिक की बीमारी बढ़ गई और लेनिन के अत्यधिक आग्रह पर उसे इलाज के लिए विदेश जाना पड़ा। विदेश में उसने 'मेरे विश्वविद्यालय', 'आरतोमोनोवों का करम' तथा कोरोलेन्को, ब्लाक, एसेनिन, अन्द्रेयेव, लेनिन के संबंध में अपने संस्मरण लिखे और 'क्लिम समगिन का जीवन' का आरम्भ किया।

१९२८ में गोर्की स्वदेश वापस लौटा। मास्को में बेलारुस्की स्टेशन पर उसका भव्य स्वागत किया गया और वह 'सेन्ट्रल इस्पलती तेलनी

कमेटी" का सदस्य चुना गया। १८३२ में उसके साहित्यिक कार्यकलाप की चालीस वर्षीय जुबिली मनाई गयी। गोर्की के सम्मान में निज्नी नोवोगोरद (जहाँ वह पैदा हुआ था) का नाम बदल कर गोर्की रख दिया गया तथा बहुत सी संस्थाओं का नाम गोर्की के नाम पर रखा गया।

गोर्की के शत्रु उसकी हत्या के प्रयत्न में थे। १९३४ में उन्होंने उसके पुत्र (म० अ० पेश्कोव) की हत्या कर दी। गोर्की ने इस आघात को वीरतापूर्वक सहा और वह अपने काम में लगा रहा। इसी समय वह सोवियत लेखकों के संघ का सभापति चुना गया। अपने जीवन के अन्तिम वर्षों तक गोर्की साहित्यिक तथा प्रचारात्मक कार्य में लगा रहा। इन अन्तिम वर्षों में उसने जो कहानियाँ लिखी उन्हें उसने 'बहादुरों की कहानियाँ' नाम दिया। इन कहानियों में उसने उन मज़दूरों तथा अन्य काम करने वालों का चित्र खींचा है जो समाजवादी समाज की रचना कर रहे हैं।

धीरे-धीरे गोर्की का रोग बढ़ता गया और (१८ जून) १९३६ में उसका शरीरान्त हो गया।

गोर्की सोवियत-संस्कृति का केन्द्र बिन्दु बन गया था। इसके साथ ही वह विश्व-साहित्य का स्रष्टा भी था। इसी से उसका व्यक्तित्व तथा उसकी कृतियाँ विभिन्न देशों तथा विभिन्न रुचियों के लेखकों को सदा स्फूर्ति और प्रेरणा देती रही। फ्रांसीसी लेखक हेनरी बारब्यूस ने कहा कि "वर्तमान समय में गोर्की संसार को प्रकाशित करने वाला महान प्रकाश है।"

उसकी मृत्यु पर मोलोतोव ने कहा कि "हमारे देश तथा मानवता के लिए गोर्की की मृत्यु लेनिन की मृत्यु के बाद सबसे बड़ी हानि है।"

गोर्की के लेखन की पहली अवस्था

गोर्की की कलात्मक सर्जना का पहला युग १८९२ से १८९९ तक माना जाता है।

इस समय की उसकी रचनाए हैं—'मकार चुद्रा' (१८९२) 'एमेल्यिान पिल्याई' (१८९३) 'बाबा अरखीप और ल्योन्का' (१८९४), 'बाज का गीत' (१८९५), 'बुढ़िया इजरगिल' (१८९५) 'च्येलकश' (१८९५) 'कनवालोव' (१८९७), 'ऊब के कारण' (१८९८), 'वारेन्का अलेसोवा' (१८९८) तथा अन्य।

इन वर्षों की गोर्की की कलात्मक सर्जना की मुख्य विशेषता यह है कि उसे मनुष्य के सभी कार्यों से दिलचस्पी है और मानवता की तड़पन से उसके हृदय का स्पन्दन मिल जाता है। इसके साथ ही गोर्की केवल मानवता की तड़पन का ही चित्र नहीं खींचता वरन् उसका मनुष्य की शक्ति में विश्वास है, और सबसे अधिक उसे रूसी जनता की शक्ति में विश्वास है। उसने लिखा कि "मैं देखता हूँ कि रूसी जनता असाधारण तथा प्रतिभाशाली है। लोगों को आश्चर्य में डालनेवाली यह जनता वीरता की अनोखी जिन्दगी बिताएगी और बहुतों को सिखाएगी।"[1] गोर्की इसी मानवता के सुख तथा स्वाधीनता का मार्ग ढूंढ रहा है। गोर्की की इसी मानवता ने उसे सारे संसार का प्रिय लेखक बना दिया।

अपने लेखन की इस प्रथम अवस्था में गोर्की एक ओर तो रूसी क्लासिकल साहित्य के रूपों और युक्तियों के उत्तराधिकारी के रूप में सामने आता है और दूसरी ओर नये युग की नयी विषय वस्तुओं का इनमें समावेश करता है।

गोर्की के आरम्भिक युग का क्रांतिकारी रोमांटिसिज्म या स्वच्छंदतावाद

गोर्की की पहली कहानी 'मकार चुद्रा' रोमांटिक या स्वच्छंदतावादी रचना है जो पुश्किन, लेरमनतोव, गोगल की प्रगतिशील रोमांटिसिज्म के निकट है।

इसके मध्य में ऐसे पात्र—लोइको जबार और राद्दा हैं जो अपने विचार तथा विश्वासों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं, जैसे

[1] रुस्कया सवेत्स्कया लितेरातूरा, ल० इ० तिमोफेयेव, पृ० ४१।

मित्सी और तारस बुल्बा। उनके लिए जीवन की सबसे महत्वपूर्ण है स्वतन्त्रता और वे उसकी रक्षा मे सब कुछ होम कर देने तय्यार हैं।

रोमांटिक चित्र या चित्रण की प्रधान विशेषता यह है कि लेखक मानवीय चरित्र की ऐसी विशिष्टताओं को प्रदर्शित करता है जि वह जीवन के लिए अमूल्य मानता है और उनको ऐसी परिस्थितिय बीच चित्रित करता है जो कि वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से नहीं खाती। रोमांटिक चित्र की शक्ति, लेखक के आदर्श के स्पष्ट सबल अभिव्यंजन में है और उसकी सीमा इस बात में है कि आदर्श सिद्ध रूप में प्रदर्शित किया जाता है, और वास्तविक जीवन की प स्थितियों के बीच नहीं, जहाँ कि उसकी पूरी-पूरी परीक्षा हो सके।

स्वतन्त्रता का जोश, अपने आदर्श के लिए मौत तक के लिए तय्य रहना—मानव व्यक्तित्व की इस शक्ति और साहस की कथा गा अपनी पहली कहानी में पाठकों को सुना रहा है। उसने पाठकों में प्रति और दृढ़ता की वह भावना भरी जो कि आने वाले क्रान्तिकारी युद्ध लिए नितान्त आवश्यक थी। इसी में गोर्की का स्वच्छन्दतावाद क्रान्तिक स्वच्छन्दतावाद है। उसका नायक योद्धा है जो साहसपूर्ण कार्यों के लि तय्यार है, और जनता के लिये स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए मृत्यु भी परवाह नहीं करता।

'मकार चुद्रा' कहानी स्वच्छन्दतावादी रचनाओं की विशिष्टता से युक्त है। इसकी घटनाएँ वास्तविक जीवन की घटनाओं से असाधारण रूप में होती हैं। भाषा भावावेश की है जो कि कहानी के म लेखक के लगाव या आत्मगौरव को प्रकट करती है।

'बाज़ का गीत', 'बुढ़िया इज़रगिल', 'खान और उसका बेटा', 'लड़की और मौत' तथा गोर्की की अन्य रचनाएँ कथा, गान आदि के रूप लिखी गई हैं, जो जीवन को पुष्ट करने वाले रोमांटिसिज्म से पूर्ण हैं।

गोर्की का क्रान्तिकारी रोमांटिक नायक

गोर्की की रोमांटिक रचनाओं में मुक्त निर्भीक वीर पुरुष का [illegible]

है जो जनता के हित के लिए नि स्वार्थ कार्य करने को तय्यार है। ऐसे पक्ष के उद्घाटन में 'बुढ़िया इजरगिल' कहानी का विशेष महत्त्व है। कहानी का मुख्य भाव यह है कि "यदि मैं अपने लिए नहीं, तो कौन मेरे लिए ?" किन्तु "यदि मैं केवल अपने ही लिए तो फिर मैं किसलिए ?" इसमे वह दो कथाएं देता है जिसमे दाको तथा लार के दो चित्र एक दूसरे के प्रतिरूप उभरते हैं। दोनों ही शक्तिशाली व्यक्ति हैं किन्तु लार की सारी शक्ति केवल अपने लिए है। उसका कोई उच्च लक्ष्य नहीं है, और उसका अंत प्रतिष्ठाहीन होता है। उसके रूप मे गोर्की बुर्जुआ व्यक्तिवादिता की आलोचना करता है।

इस व्यक्तिवादिता के विरुद्ध गोर्की व्यक्ति के सबध मे ऐसी मानवतावादी भावना की प्रतिष्ठा करता है जिसमें व्यक्ति अपनी सारी शक्ति जनहित में लगा देता है। दाको ऐसा ही व्यक्ति है। वह अपनी जाति के सुख के लिए अपनी बलि चढ़ा देता है। रोमाटिक रूप मे गोर्की इस चित्र में ऐसे व्यक्ति का उद्घाटन करता है जो जनहित के साहसपूर्ण कार्यों मे आनद प्राप्त करता है।

इस कथा मे बूढ़ी इजरगिल के यथार्थ चित्र का भी विशेष महत्त्व है। इजरगिल बड़ी जिन्दादिल है। वह अपनी स्वतन्त्रता को सब से अधिक मूल्यवान समझती है। उसमे साहस भी है। वह 'अरकादेक' की रक्षा भी करती है किन्तु वह उसके पास से चली जाती है जब उसे यह मालूम होता है कि वह उसे प्यार नहीं करता। उसका जीवन आनदहीन हो जाता है। गोर्की इसके माध्यम से यह बताना चाहता है कि उसकी सारी शक्ति क्षीण हो गई क्योंकि वह केवल अपने लिए जी रही थी। उसके सामने कोई उच्च आदर्श नहीं था जिसके साथ वह बढ़ सकती और व्यक्तिगत जीवन में विफल होने पर भी उसकी आत्मा ऊँची उठी रहती।

यही साहस और उन्नयन की भावना 'बाज का गीत' में है। गोर्की लिखता है—"प्रखर साहस-बस यही जीवन का ज्ञान है। ओह! साहसी बाज! शत्रुओ से युद्ध मे तूने अपना खून बहाया। समय आयेगा और तेरे खून की गर्म बूंद जिंदगी के अंधेरे में चिनगारियों की तरह भड़क उठेगी

और बहुत से हृदय स्वतंत्रता और प्रकाश की लालसा से दीप्त हो उठेंगे।

"कोई बात नहीं कि तू मर गया। बहादुरों और ताकतवरों के गीतों के लिए तू सजीव उदाहरण है और स्वाधीनता तथा प्रकाश का गर्वपूर्ण आह्वान है।"

गोर्की ने जनता की इन विषय-वस्तुओं तथा प्रतीकों का आधार लेते हुए इनको लोक साहित्य रूपों से संयोजित कर दिया। उसने गीतों तथा कथाओं आदि लोक साहित्य-रूपों का उपयोग किया, अपनी रचनाओं में वह प्रायः जनगायक या जनकथा सुनानेवालों का समावेश करता है और जन-कथाओं की विशिष्टताओं को सुरक्षित रखता है। सबसे बड़ी बात यह है कि उसके नायकों का रूप लोक सर्जना पर आधारित है। बाज का परम्परा प्राप्त लोक-प्रतीक उसकी रचना 'बाज का गीत' के मूल में है। गोर्की की आरम्भिक रचनाओं में जन उद्धारक (या स्वतंत्रता दिलाने वाले) नायक का लोक-स्वप्न नया रूप प्राप्त करता है।

रूसी क्लासिक की प्रगतिशील रोमांटिक परम्पराओं का निर्वाह करने के साथ-साथ गोर्की ने उसमें अपनी ओर से कुछ नया (विषय-वस्तु) भी जोड़ा। उसकी रोमांटिक रचनाओं का महत्त्व इस बात में है कि जनता के उठते हुए क्रांतिकारी भाव की उन विशेषताओं को उसकी तीक्ष्ण दृष्टि ने पहचान लिया और कलाकार गोर्की ने उनको अंकित किया, यद्यपि वे अभी तक स्वतः जीवन में पूर्णतया स्थिर या निश्चित नहीं हुई थीं।

किसान तथा मजदूरों का पुलिस तथा फ़ौज के साथ संघर्ष उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में केवल शुरू ही हुआ था। किन्तु जनता में क्रांति का भाव इससे पहले ही परिपक्व हो चला था। गोर्की की रोमांटिक रचनाओं ने मजदूर तथा किसानों के इसी बढ़ते हुए क्रांतिकारी आंदोलन के उभार को व्यक्त किया। गोर्की के रोमांटिक युग की रचनाओं का यही व्यापक भाव है और इसी में उनका लोक महत्त्व है।

गोर्की के आरम्भिक युग की सर्जना में यथार्थवाद

रोमांटिक चित्रों के साथ साथ गोर्की इन्हीं वर्षों में ऐसी यथार्थवादी रचनाएं भी प्रस्तुत करता है जिनमें उसने आलोचनात्मक यथार्थवाद की

रूसी क्लासिकल परम्पराओं को विकसित किया। ऐसी रचनाओं में 'एमेलयान पिलाइ', 'बाबा अरखीप और ल्योन्का', 'निष्कर्ष', 'कनवालोव' आदि हैं।

रूस की यात्रा के बीच गोर्की ने जो कुछ देखा-सुना उसी की कटु अनुभूति, दुःख झेलते हुए और तड़पते हुए आदमी के चित्रण में व्यक्त हुई है, जो जीवन की परिस्थितियों की बलि बन जाता है। गोर्की की आरम्भिक यथार्थ रचनाएं ऐसे व्यक्ति के प्रति वेदना से परिपूर्ण हैं जो जीवन के निर्मम प्रहारों से नीचे गिर जाता है। फिर भी इसमें उसका कोई दोष नहीं है कि जिंदगी ऐसी हो गयी। कोई दूसरी निर्मम शक्ति उसे दुःख और नाश की ओर ढकेल देती है, और वह इसकी बलि चढ़ जाता है। इसी बलि-पशु या अन्यायपूर्ण जीवन की बलि चढ़े हुए व्यक्ति का चित्र आरम्भिक यथार्थ-वादी गोर्की की विशिष्टता है। 'बाबा आरखीप और ल्योन्का' में बाबा और पोता अकाल पीड़ित क्षेत्र से दरिद्र, रोगी और उन्हीं लोगों के घृणा-पात्र बनकर निकलते हैं जिन्होंने उन्हें भीख माँगने को छोड़ दिया। बच्चे में अब भी थोड़ी जीवन शक्ति अवशिष्ट है किन्तु उसके लिए भी कोई रास्ता नहीं है। मरते हुए बाबा के पास से मारे डर के भागता हुआ, रात में बिजली कड़कने पर वह करार से गिर कर डूब जाता है और मर जाता है। "निष्कर्ष" में औरत शराबी, जंगली, पति की बलि बन जाती है जो उसका मजाक बनाता रहता है। गोर्की ऐसे निरपराध तड़पते हुये व्यक्तियों के अनेक चित्र प्रस्तुत करता है।

तड़पते हुये व्यक्ति के चित्र के साथ प्रश्न उठता है कि अपराधी कौन है ? कौन इनको तड़पने के लिए बाध्य करता है और तड़पने को छोड़ देता है ? इसके उत्तर में गोर्की तड़पनेवालों के चित्रों के साथ उन नवीन चित्रों की सर्जना करता है जो दूसरों को तड़पाते हैं, जो अपने लाभ के लिए घृणित से घृणित काम करने को तय्यार हैं। इन कार्यकलापों के मूल में सामाजिक असमानता है और रुपए का लोभ है जिससे इस समाज में सब कुछ पाया जा सकता है और व्यक्ति निर्द्वन्द्व रह सकता है। ल्योन्का एक रोती हुई लड़की को देखता है और उससे बात करता है। किन्तु जब वह

उसको उसके घर तक पहुँचाना चाहता है तो वह कहती है कि "नहीं तुम मत चलो। माँ दरिद्रों को नहीं चाहती"। सामाजिक असमानता इ प्रकार छोटी बच्चों की आत्मा को मलिन करने लगती है और वह मानवी सबधों का अनुभव नहीं कर पाती। इसी प्रकार 'चेलकश', कहानी थोड़े रूबलों के लिए हत्या की तय्यारी भी दिखाई जाती है, औ गवरीला थोड़े रूबलों के लिए अपनी आत्मा को नष्ट करने तय्यार है।

गोर्की स्पष्ट रूप से देखता है कि वर्गीय समाज दो टुकड़ों में ब जाता है—बलि चढ़े हुए या सताए हुये लोगों की दुनियाँ और सतानेवाल की दुनियाँ, सामाजिक असमानता दुनियाँ को नष्ट कर रही है और स्व या 'सुनहला कोड़ा' मानवीय आत्मा को खा रहा है। गोर्की ने वास्तवि ससार की भयानकता के प्रतिपक्ष में ऐसे नायक की रोमांटिक कल्पना क प्रस्तुत किया जो मनुष्य के सुख या आनद प्राप्ति के रास्ते की बाधाओं प विजयी हो सकेगा और जब रूसी जनता की शक्ति जाग्रत हो गयी औ वह युद्ध के लिए तय्यार हो गयी तो गोर्की की रोमांटिक कल्पना पूर्णता साथ अभिव्यक्त हुई तथा और भी अधिक वास्तविक क्रांतिकारी विषय वस्तु से सयोजित हुई। जीवन की परिस्थिति में जितना ही अधिक तना आया और वह जितनी ही अधिक दयनीय हुई उतनी ही उसके साथ लड़ की तीव्र भावना जागी।

युद्धशील नायक में विश्वास

आरम्भ में यह नायक वास्तविक जीवन की परिस्थिति के बाह चित्रित किया गया है किंतु फिर गोर्की धीरे-धीरे—और यह उसक नवीनता या मौलिकता है—जीवन में ही, व्यक्ति में ही उस शक्ति क अनुभव करता है जो कि जीवन की व्यवस्था मे परिवर्तन प्रस्तुत क सकती है। धीरे धीरे उसके नायक साहित्य में सामाजिक आदर्श के संवाह बन जाते है।

जीवन चाहे कितना ही कठोर क्यों न हो गया हो फिर भी गोर्क का मनुष्य में और उसमें जो सत्-अंश है उसमें सदा विश्वास बना रहा

मानवीय आत्मा की इस उदात्तता में गोर्की ने सबसे पहले उस शक्ति को ढूंढा जो कि मनुष्य को जीवन की कठिनाइयों के विरुद्ध जम कर लड़ने में सहायता देगी।

जीवन से ठुकराया हुआ एमेल्यान पिलाइ हाथ मे लोहा लिए पुल पर व्यापारी अवईमोव की घात में है। वह हर प्रकार का अपराध करने को तय्यार है। किंतु जब दु.ख से पागल लड़की नदी मे डूबने के लिए पुल पर आती है तो इसी व्यक्ति में ऐसी अनुभूति और ऐसे शब्द जगते हैं जो इस लड़की मे शक्ति और जीवन मे विश्वास का फिर से सचार कर देते हैं और लड़की हँसने लगती है।

गोर्की का इस बात में दृढ विश्वास है कि मानवीय आत्मा की यह शक्ति (और सौन्दर्य) जीवन के अन्याय से कभी समझौता नही करने देती, चाहे आदमी कितना ही नीचे क्यो न गिर गया हो। और गोर्की स्वत· जीवन में प्रतिवाद, प्रतिरोध की तत्परता और दृढ़ता की उन विशिष्टताओं को ढूंढता है जिनको कि उसने सामान्य रूप मे अपने रोमांटिक चित्रो में प्राप्त कर लिया था।

अरीना ('ऊबके कारण') ने जीवन में कभी सुख न पाया। सहसा उसके हृदय में गमाजोव के प्रति प्रेम जग पड़ा। सचालक उनकी इस घनिष्ठता को जानकर उन पर व्यग्य करता है। अरीना इतनी असहाय है कि सताने वालो के प्रति उसके मन में न तो लड़ने की और न प्रतिवाद की ही भावना उठती है। फिर भी वह इस बात का अज्ञात तथा अचेतन रूप मे अनुभव करती है कि इस प्रकार को जिन्दगी वह और नही बिता सकती। रात मे वह फंदा लगा कर मर जाती है। यद्यपि अरीना ने कोई प्रतिवाद न किया फिर भी उसकी मौत स्वत: अत्याचार के विरुद्ध बहुत बड़ा प्रतिकार है। आगे इस प्रकार जीना असभव था। जीवन त्याग के द्वारा यह स्पष्ट हो गया कि वह अत्याचार के साथ कोई समझौता करने को तय्यार नहीं है।

अपने साहित्यिक कार्यकलाप के आरम्भ से ही गोर्की इसी प्रतिवाद की खोज में व्यस्त है (चाहे इस प्रतिवाद का रूप कितना ही सामान्य

क्यों न रहा हो)। वह फलतः स्वतः जीवन में ही इस शक्ति की खोज करता है जिसे जीवन की बुराइयों के विरोध में प्रस्तुत किया जा सकता है।

समाज में निम्नस्तर का चित्रण

यह खोज गोर्की को उन सर्वथा नये नायकों की ओर ले गयी जिन्होंने विशेष रूप से समाज का ध्यान आकृष्ट किया और जिनके चित्रण के कारण समाज का ध्यान गोर्की की ओर गया। यह थे—'आवारा' (ब्येलक्रय)।

इस ओर लोगों का ध्यान इसलिए गया कि सन् ९० के वर्षों में गांवों में निर्धनता बहुत बढ़ गई थी। लाखों आदमी गांव छोड़कर बेकारी की हालत में शहरों को ओर गये और वहां की बेकारी और भी बढ़ गयी। ये बेरोजगार लोग बिना घरबार के सारे देश में घूम रहे थे। 'आवारा' की समस्या पर इस समय के समाचारपत्रों में काफ़ी लिखा गया। इन पर लेख लिखे गये और कहानियां लिखी गईं।

गोर्की के 'आवारा' की नवीनता

गोर्की की 'आवारों' की कहानियों के विषय में लोगों का जो ध्यान गया, वह इसलिए नहीं कि उसने 'आवारों' के बारे में लिखा वरन् इसलिए कि उसने उनमें वह देखा जो कि दूसरों ने नहीं देखा। उसका मनुष्य में विश्वास था और उसने यह दिखाने की कोशिश की कि समाज के निम्नतम स्तर के आदमी में भी आत्मा सुरक्षित है, और सबसे बड़ी बात ये कि यह 'आवारे' गोर्की का ध्यान इसलिए आकृष्ट कर सके क्योंकि वह उनमें प्रतिवाद की वह शक्ति देख सका जिससे मनुष्य अत्याचार का जवाब दे सकता है।

गोर्की की रचनाओं में, समाज के निम्न स्तर पर अंकित किये गये यह आवारे उन लोगों की अपेक्षा अधिक मनुष्य हैं या उनमें उन लोगों से अधिक मनुष्यता है, जो कि शासक वर्ग में हैं और इनको घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

अनजान शहर में आया हुआ नवयुवक बिना पैसे और सहारे के है। उसे किसी से न सहायता मिलती है और न सहानुभूति। अन्त में उसे

चीजें उस दुःखी 'घूमनेवाली' लड़की से मिलती है जिसके साथ वह रात मे उलटी हुई नाव के नीचे छिपकर अपने को पानी से बचाता है। जब वह मारे दुःख के फूट कर रो पड़ता है तो यह लड़की उसे सान्त्वना देती है (एक बार शिशिर मे)।

केवल यह मानवता ही गोर्की के (समाज के) निचले तले के लोगो को विशिष्ट नही बनाती वरन् मुख्यतया उनकी प्रतिवाद की शक्ति और आन्तरिक स्वच्छंदता, जिसे उन्होने सामान्य जीवन के घेरे से बाहर निकल कर प्राप्त की। वे अब उन दुःखो की परवाह नही करते जिनकी छाया इस स्तर पर बराबर बनी रहती है। अरस्तीद कुवाल्दा न धन की शक्ति से डरता है (और इसी से व्यापारी पेतून्निकोव का विरोध करता है) और न शासन की शक्ति से। यह साहस और सामान्य जीवन की उन सीमाओं से परे जाने की शक्ति—जो कि सामान्य व्यक्ति को अपराजेय प्रतीत होती हैं—गोर्की के इन 'आवारो' को अपने चारो ओर के लोगों से अलग करती है।

निम्न स्तर के लोगों का दुर्बल पक्ष

इसके साथ ही गोर्की उनकी दुर्बलताओ का प्रदर्शन भी करता है। कुवाल्दा' तथा 'चेलकश' जैसे व्यक्तियो की दुर्बलता इसमें है कि उनके सामने कोई स्वीकारात्मक या प्रेरक उद्देश्य नहीं है जिसके लिए वह लड़ सकें। वह जो कुछ करते हैं उसका रूप नकारात्मक है। वे केवल अपने लिए लड़ते है और इस लड़ाई मे भी वह किसी नवीन आदर्श की रचना नही करते, वरन् उस प्राचीन का केवल निराकरण ही करते हैं जो कि सचमुच मे खराब है।

'निचले तले' के इन लोगों के इस दुहरे रूप (शक्ति तथा दुर्बलता) का पूरा-पूरा उद्घाटन गोर्की की कहानी "चेलकश" करती है। इसमें इस बात पर भी विचार किया गया है कि जीवन की परिस्थितियों से प्रतिवाद करनेवाले मनुष्य को कौन सा रास्ता अपनाना चाहिए यदि वह सचमुच मे इन परिस्थितियों को बदलना चाहता है।

गवरीला के रूप मे हमारे सामने वह किसान है जो जायदाद जोड़ना

अन्य ?" चूंकि वह असलियत मे मजदूर है इसलिए उसके प्रतिवाद में हल्की सामाजिक झलक भी है। इसमे अत्याचार और उसका विरोध दोनों का सकेत है। गोर्की ने यथार्थ परिस्थिति को पहचानकर उसी में उस शक्ति को भी प्राप्त किया जो इसीलिए पैदा हुई है कि परिस्थिति से युद्ध किया जाय। जार के सेंसर ने इसके कुछ पन्ने निकाल कर ही इसके छपने की आज्ञा दी। 'कनवालोव' कहानी पाठको को क्रान्तिकारी निष्कर्षों की ओर ले गयी यद्यपि कनवालोव स्वतः वास्तविक क्रान्ति से दूर है।

कथाकार गोर्की का रूप

गोर्की की रचनाओं मे केवल उनके पात्र ही नही कुछ कहते-सुनते दिखाई पड़ते हैं वरन् स्वयं लेखक भी कभी निरीक्षक के रूप मे, कभी साथी सहचर के रूप मे और कभी कहानीकार के रूप में अपनी ओर से टिप्पणियां जोड़ता चलता है और इस प्रकार अपनी रचनाओं में पूरक का काम करता है। इन टिप्पणियो से इस प्रकार उसके दृष्टिकोण तथा मनोभावो तथा व्यक्तित्व का सकेत भी मिलता रहता है। इसके कारण इन टिप्पणियो में वह उन चीज़ों पर जोर देता है जिन्हें पात्रों के कार्यकलाप या भावों के माध्यम से व्यक्त नही किया जा सकता है और इनके प्रयोग द्वारा वह नये प्रकार के व्यक्ति का संकेत देता है। स्वयं कथाकार के रूप में गार्की ऐसे व्यक्ति का चित्रण करता है जिसे जीवन की विषमताओं के हटाने का रास्ता मालूम है, जो सामाजिक विचारक है। इन्ही टिप्पणियो मे वह सामाजिक स्तर के पुनर्संगठन तथा राजनैतिक परिवर्तन का स्वप्न देखता है (एक वार शिशिर मे)। इसी प्रकार वह अन्य रचनाओं में भी पात्रो के गम्भीर प्रश्नों का उत्तर देता है ('एमेल्यान पिलाई,' 'कनवालोव')। इसी प्रकार उसके निष्कर्ष भी पाठकों को, कहानी के मुख्य विचार को अधिक गहराई से समझने को बाध्य करते हैं। इसी तरह विभिन्न पात्रो के अनुकूल विभिन्न प्रकार की भाषा का सफल प्रयोग उन पात्रों की विशिष्टताओं को बड़ी स्पष्टता के साथ हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार गोर्की के लेखन की पहली अवस्था के संबंध में कहा जा सकता है कि इसमें उसने एक ओर रूसी क्लासिकल साहित्य की मानवतावादी परम्पराओं को अपनाया और दूसरी ओर इसमें अपनी ओर से नवीनता का समावेश किया। मनुष्य के प्रति सहानुभूति, उसको बलिपशु बनानेवाली जीवन की परिस्थितियों का प्रतिवाद—इन सबने गोर्की की कलात्मक दृष्टि को वह पैनापन दिया और अभिव्यंजना की वह शक्ति दी जिसका पाठक पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सबसे बड़ी बात यह कि उसने नायक के स्वप्नों को जनता के अपने स्वातंत्र्य युद्ध के उन यथार्थवादी तथा वास्तविक रूपों के साथ गूंथ दिया जो (रूप) अब जीवन में निर्मित या आयोजित हो गये थे।

सन् नब्बे के वर्षों में गोर्की की साहित्यिक सर्जना का आरम्भिक युग प्रकट हुआ। इन्ही वर्षों में रूस में क्रान्तिकारी श्रमिक आंदोलन के विकास का आरम्भिक युग भी प्रस्फुटित होता है। इसकी बढ़ती हुई शक्ति के अनुरूप ही गोर्की भी पुष्ट हुआ और इसके विकास ने गोर्की को पक्का क्रान्तिकारी बना दिया।

गोर्की के लेखन की दूसरी अवस्था मूल रूप से क्रान्तिकारी आन्दोलन के उस उभार और तेजी से संबंधित है जो १९०० में शुरू होती है और प्रथम रूसी क्रान्ति के युग में अपना सर्वोच्च विकास प्राप्त करती है।

गोर्की के लेखन की दूसरी अवस्था

सन् नब्बे (१८९०) का अन्त और १९०० का आरम्भ—यह गोर्की के लेखन का नया युग है। इन वर्षों में उसने अन्य साहित्यिक रूपों—कहानी, उपन्यास, नाटक—की ओर ध्यान दिया।

फोमा गर्देयेव

१८९९ में गोर्की ने अपना उपन्यास 'फोमा गर्देयेव' प्रकाशित किया।

इसके पहले, अपनी कहानियों मे, गोर्की यह बता चुका है कि धनाधिपत्य या मिल्कियत किस प्रकार मनुष्य की आत्मा को नष्ट करती है और धन लिप्सा आदमी को आदमी नही रहने देती। वह बच्चों के मन को कलुषित कर देती है (बाबा अरखीप और ल्योन्का) और आदमी को अपराध करने को प्रेरित करती है (च्येलकश) और अत्याचारियों या पीड़कों को जन्म देती है (व्यापारी पेतूशिकोव) जिन्हें गोर्की 'जिन्दगी के मालिक' कहता है।

उपन्यास 'फ़ोमा गर्देयेव' में गोर्की ने इन्ही 'जिन्दगी के मालिकों' का चित्रण किया है। पाठकों के सामने रूसी व्यापारियों—इग्नात गर्देयेव, अनानी श्चूरोव, याकोव मयाकिन—की बड़ी स्पष्ट तस्वीरें आती हैं जिन्हें जीवन ने प्रभुत्वशाली और कठोर बना दिया है और जो अपने को दूसरों के जीवन का मालिक समझते हैं। किन्तु यह प्रभुत्व लोगों को सताकर और नष्ट करके प्राप्त किया गया है और यह अधिकार न्यायोचित नहीं हैं। गोर्की इसकी आलोचना करता है और यह प्रदर्शित करता है कि "यह जीवन के मालिक केवल दूसरों को सताते ही नहीं हैं वरन् स्वतः भी आदमी नहीं रह जाते (जैसे कि च्येलकश' में गवरीला)।

इस उपन्यास में गोर्की ने विभिन्न प्रकार के व्यापारियों के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया है और वह उस अन्यायपूर्ण मार्ग को दिखाता है जिस पर चलकर इन लोगों ने बुरे से बुरे ढंग से धन इकट्ठा किया, जिसने कि इनको अत्याचार करने की इतनी शक्ति दे दी। उपन्यास के अंत में फ़ोमा, उत्सव में एकत्रित हुए इन व्यापारियों और शहर के अमीरों की काली करतूतों को गिनाता है। चूंकि इन लोगों के पास शक्ति है, और धन है इसलिए उनका उत्पीड़न और भी गहरा हो जाता है। फ़ोमा का पिता इग्नात गर्देयेव ऐसा ही है जिसके समृद्ध चरित्र की विशिष्टताएं कुत्सा तथा मद व्यसन से नष्ट हो जाती हैं। याकोव मयाकिन में गोर्की उन विशिष्टताओं का प्रदर्शन करता है जो कि जनता के बीच से आये हुए न बने हुए व्यापारियों में सुरक्षित रहीं। उसमें दृढ़ता है, बुद्धि है तथा ज्ञान के प्रति अभिरुचि है। उसमें चातुरता भी है। किन्तु

इन्ही के सहारे उसका अत्याचार और भी विषम हो जाता है।

उपन्यास मे गोर्की व्यापारियो की दूसरी पीढ़ी का चित्रण भी करता है। ल्यूबा, तरास मयाकिन, और स्मोलिन दूसरी पीढ़ी के लोग हैं। धन ने ल्यूबा का लोगों से सजीव सबध न रहने दिया। वह किताबो में मग्न रहती है। उसके विचार अच्छे हैं, किन्तु आगे चलकर स्पष्ट हो जाता है कि उसके चारो ओर का वातावरण उसके विचारो तथा भावनाओ को नष्ट कर रहा है और वह वैसी ही है जैसे कि उसके वर्ग के अन्य लोग। मयाकिन और स्मोलिन सुसस्कृत व्यक्ति हैं और वे ज्ञान इसलिए चाहते हैं कि जनता को और सूक्ष्म किन्तु और गहराई से चूस सकें। दूसरी पीढ़ी का चित्रण करते हुए गोर्की यह कहना चाहता है कि यह उत्पीडन या अत्याचार इसलिए नही है कि यह व्यापारी अपढ़ या असस्कृत हैं वरन् यह बताना चाहता है कि सस्कृति या ज्ञान यदि धन वृद्धि की सेवा मे लगा दिया जाता है तो यह जनता के उत्पीड़न को और भी तीव्र कर देता है। सस्कृति तथा ज्ञान को जन कल्याणी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उसे इस पराधीनता से मुक्त किया जाय।

इस प्रकार गोर्की ने आलोचनात्मक यथार्थवाद के परम्परागत वस्तु-विषय को आगे बढ़ाया और उन बुराइयो का उद्घाटन किया जो कि पूँजीवादी समाज मे मनुष्य को नष्ट कर रही हैं। इस विषय-वस्तु को विकसित करते हुए गोर्की दूसरे ही निष्कर्ष पर पहुँचा। उसने केवल इस समाज का चित्रण ही न किया वरन् इस समाज का पूरा-पूरा निराकरण किया, और ऐसे समाज पर आक्षेप किया।

उपन्यास के केन्द्र मे फमा गर्देयेव है जिसे पिता की सारी सम्पत्ति विरासत मे मिली है। इसके साथ ही उसमे ऐसी अनभूतियाँ भी हैं जिनके कारण वह स्वतन्त्र स्वस्थ जीवन बिताना चाहता है। उसमे कभी-कभी यह भावना जगती है कि वह इस सम्पत्ति का मालिक नही वरन् गुलाम है। जब याकोव मयाकिन यह कहता है कि व्यापारी अग्रगण्य व्यक्ति हैं वह जवाब देता है कि "तुमने जीवन की नही जेल की रचना की, व्यवस्था नही स्थापित की, मनुष्य पर छुरी चला दी, दम घुट रहा है, सकीर्णता है,

आत्मा के लिए कोई जगह नही है, मनुष्य नष्ट हो रहा है।"

फमा के रूप में गोर्की ठेठ व्यापारी का चित्र नही प्रस्तुत कर रहा है। फमा तो इस वर्ग से बाहर निकल गया है। अब वह इस जात-बिरादरी के बाहर है, इसके माध्यम से गोर्की यह प्रदर्शित कर रहा है कि स्वाभाविक अनुभूतियों—उदात्तता, सहानुभूति, न्यायप्रियता—के लिए इस वातावरण मे कोई स्थान नही है जहाँ कि फमा स्थित है। फमा इस वातावरण से समझौता करने को तैयार नही है। फिर भी उसके सामने कोई दूसरी भावना या आदर्श नही है, जिससे कि उसे अपने प्रतिवाद में सहारा मिल सके, इस कारण उसका प्रतिकार शिथिल और अपूर्ण रह जाता है, यह एक व्यक्ति का प्रतिवाद है।

आगे चलकर 'आरतोमनोवो का काम' उपन्यास में गोर्की ने इल्या आरतोमोनोव के उदाहरण द्वारा यह दिखाया कि किस प्रकार व्यक्ति न केवल इस वर्ग से बाहर चला जाता है वरन वह जनता और बोल्शेविक पार्टी के पास पहुँच जाता है। किन्तु इस उपन्यास में गोर्की ने ऐसा कोई लक्ष्य न रखा। यहाँ वह केवल फमा की स्वाभाविक अनुभूतियों (उत्पीड़न पर आश्रित) का उसके चारो ओर के वातावरण से संघर्ष मात्र दिखाता है। उसकी भावनाओं का यह विस्फोट असफल ही रहता है। जब उसके विचार लोगों के लिए खतरनाक बन जाते हैं तो लोग उसे पागल कहने लगते हैं और वह पागलखाने मे डाल दिया जाता है। पागलखाने से वह सचमुच पागल बनकर निकलता है। ऐसे अन्त के द्वारा गोर्की यह बताना चाहता है कि यदि ऐसे वातावरण में स्वस्थ आत्मा पड़ जाती है तो वह पनप नही सकती, वह नष्ट हो जाती है। पूंजीवादी समाज की विकृतियों तथा विषमताओं का जो घातक प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है उसका इसमें पूरा-पूरा चित्र है।

इस उपन्यास में ऐसे लोग भी हैं जो इन व्यापारियों की तुलना में सर्वथा भिन्न हैं। यह मजदूर और श्रमिक हैं। फमा कहता है कि "यह

---

१. रुस्क्या सवेत्स्कया लितेरातूरा, ल० इ० तिमोफ़ेयेव, पृ० ६३.

दूसरो से सर्वथा भिन्न हैं, नम्र हैं, ठीक विचार करते हैं—सीधे स
मजदूर। उपन्यास मे मजदूरों का ऐसा सांकेतिक चित्र पाठको
बताता है कि जीवन में दूसरी शक्ति भी है। लेखक द्वारा चित्रित घटना
के भावो को समझने मे इनसे मदद मिलती है।

'फमा गर्देयेव' के बाद गोर्की ने 'त्रयी' कथा लिखी (१९००), जिस
बर्जुआ समाज में व्यक्ति के जीवन की करुण कथा या ट्रेजेडी को प्रदर्शि
किया गया है। कथा के मध्य मे तीन व्यक्ति हैं जिनका जीवन उनके समा
की विषमता को पूरा-पूरा चित्रित करता है। कथा का नायक ईल्या लून्यो
उस रास्ते पर चलता है जो उसे उत्पीड़कों के बीच ले जाता है। फिर भी
उसकी मानवीय भावनाएं एक दम नही लुप्त हो जाती। वह जीवन मे
व्याप्त मिथ्या और अन्याय का अनुभव करता है। वह इनकी आलोचना
करता है और नष्ट हो जाता है। यदि उसका एक दोस्त याकोविफिलियो
नोव इस दलदल से नही निकल पाता तो पावेल ग्रचोव समाजवादियो के
पास पहुंच जाता है और उनके साथ काम करके आदमी बन जाता है।
इस कहानी के द्वारा गोर्की एक कदम और आगे बढा और उसने उन्नीसवी
शती के अन्त के रूसी जीवन के मूलभूत सामाजिक भाव का उद्घाटन किया
तथा उस पथ का निर्धारण किया जिस पर चलकर ही बुर्जुआ समाज
की विषमताओं से छुटकारा पाया जा सकता है।

पावेल ग्रचोव का चित्र बड़ा गहरा नही है फिर भी क्रान्तिकारियों
के रूपों के उन रेखाचित्रों मे से एक है जिनकी रचना गोर्की की महत्वपूर्ण
देन मानी जाती है।

नाटक

१९०० से गोर्की ने नाटकों की ओर ध्यान दिया। १९०० मे उसने
'मेशचान्ये', १९०२ मे 'निचले तले पर', १९०४ मे 'दाचनिकी' (मकान
मे रहने वाले), १९०५ मे 'सूर्य के बच्चे', १९०६ में 'शत्रु' और 'असभ्य'
नाटक लिखे। सब मिलाकर गोर्की ने बीस नाटक लिखे। यह संख्या स्वयं
यह प्रकट करती है कि गोर्की नाट्य लेखन की अत्यन्त महत्वपूर्ण साहित्यिक

१२

...ननता है। साथ ही वह यह भी जानता है और अपने लेख 'नाटक'...
...हता है कि अन्य साहित्यिक रूपों की अपेक्षा नाटक कठिनतम ...
...कर भी वह नाटकों की ओर झुका क्योंकि वह जानता है कि ती...
...जिक संघर्ष के युग मे नाट्य-रूप विशेष प्रकार से युग की सामा...
...ता को गहराई के साथ अभिव्यक्त कर सकता है। इसी से
...ों की ओर आकृष्ट हुआ और चेखोवीय शैली के नाटकों की...
...वैज्ञानिक विशिष्टताओं को अपनाने के साथ-साथ उसने उनमें ...
...से नया योग भी दिया। उसने सर्वथा दूसरे प्रकार के—सामाजिक
...नीतिक— नाटकों की रचना की जिनमें उसने अपने समय की
...माजिक समस्याओं को प्रस्तुत किया—जैसे पूंजीवाद से मजदूर
...का युद्ध (शत्रु), बुर्जुआ समाज में व्यक्ति की 'ट्रेजेडी' और स्वतंत्रता
...प्ति के लिए उसका प्रयत्न ('निचले तले पर'), रूसी बुद्धिजीवियों
...भाग्य ('मकान में रहने वाले', 'सूर्य के बच्चे') आदि। गोर्की इस युग
...समय को स्वत. नाटकीय मानता है और इसी से वह नाटकों की ओर
आकृष्ट हुआ। युग के संबंध मे उसका कहना है कि "हम पूर्णतया गम्भीर
नाटकीय युग मे, नाश तथा निर्माण के तनावपूर्ण व्यापार के नाटकीय युग
में रह रहे हैं।"

'निचले तले पर' और 'शत्रु' नाटकों को छोड़कर सन् १९०० के
वर्षों के नाटक अधिकतर रूसी बुद्धिजीवी वर्ग के उस ह्रासशील मानसि...
स्थिति से युद्ध कर रहे हैं जिसने कि उन्हें संकीर्ण व्यक्तिवादी बना दि...
है। इसने 'मकान में रहने वाले' में इन बुद्धिजीवियों को उन लोगों में ब...
दिया जो जीवन से गहराई से नहीं बँधे हैं और जो जनता के हितों के स...
अपने को न जोड़ सकने के कारण उद्देश्यहीन और करुण जीवन बिता
हैं ('सूर्य के बच्चे')।

नाटकों में श्रमिकों का रूप

जनता से विच्छिन्न इन बुद्धिजीवियों के प्रतिपक्ष में गोर्की उन नये
लोगों को प्रस्तुत करता है जो इस विषय में बिल्कुल स्पष्ट हैं कि जीवन

कैसा होना चाहिए, जो दृढता के साथ जीवन के नये सत्यो का संवहन कर रहे हैं। ये नये लोग श्रमिक या मजदूर हैं। 'मेश्चान्ये' नाटक मे श्रमिक नील का विशेष स्थान है। साहित्य मे यह श्रमिक या मजदूर—क्रान्तिकारी का पहला चित्र है। उसमे जीवन के प्रति सामाजिक सबध की विशिष्टताएं स्पष्ट हैं। वह काम करना चाहता है और साथ ही अपने मनुष्य के अधिकारो के लिए लड़ने को भी तय्यार है। परिश्रम और युद्धशीलता द्वारा गठित यह नील साहित्य मे नया रूप है। उसके पीछे क्रान्तिकारी युद्ध के लिए सन्नद्ध मजदूर या श्रमिक वर्ग खडा है। फिर भी नील के रूप मे नये व्यक्ति का सर्वांगीण चित्र नही प्रस्फुटित हो सका है। वह समुदाय से बाहर प्रदर्शित किया गया है।

'शत्रु' नाटक इस दिशा मे नया क़दम है। इस नाटक में श्रमिकों का एक पूरा समूह है। ये अपने चारो ओर के लोगो—मिल मालिक, शासनाधिकारी, बुद्धिजीवी आदि—मे बिलकुल भिन्न है। ये जीवन के नये सत्य को जानते हैं और यह ज्ञान उन्हें दूसरों से ऊँचा उठा देता है। यह नया सत्य है—सोशलिज़म या समाजवाद, इससे उनको नैतिक शक्ति मिलती है। अपने साथ की रक्षा के लिए ये आत्मत्याग के लिए तय्यार हैं और यह हिम्मत के साथ जेल जाते है क्योकि उनका अपने कार्य के औचित्य मे विश्वास है। नाटक का अन्त इन शब्दो से होता है कि 'ये लोग जीतेंगे।' इस प्रकार 'नटखट बालक' से शुरू होकर नये व्यक्ति का रूप कदम बकदम उभरता और निखरता गया और पूर्ण होता गया। उसमे परिस्थितियों के विरुद्ध प्रतिवाद की विशिष्टताएं मिली जिनका पूर्ण उत्कर्ष, जनता के अत्याचारियों के विरुद्ध संघर्ष और युद्ध मे हुआ।

'निचले तले पर'

इस नाटक की रचना 'मास्को कला थियेटर' ('मखात' अर्थात् मस्कोव्स्की अकादमीचेस्की हुदोझेस्तवेन्नी तिआत्र) के साथ गोर्की के घनिष्ठ संबंध के फलस्वरूप हुई। गोर्की के पहले इस थियेटर की मनोदृष्टि व्यापक रूप से सामाजिक-राजनीतिक न थी। उसकी सबसे अच्छी कृतियां चेखव के मनोवैज्ञानिक नाटकों का अभिनय थीं। गोर्की के आगमन से यह थियेटर

आगे बढ़ा। इस थियेटर के संस्थापक के० एस० स्तानिस्लावस्की के शब्दों मे "हमारे थियेटर मे सामाजिक राजनीतिक मार्ग का निर्माता और प्रस्थापक गोर्की है।" इस थियेटर के प्रस्ताव पर गोर्की ने आरम्भ मे 'मेश्चान्ये' लिखा और फिर बाद मे (१८ दिसम्बर १९०२) 'निचले तले पर' नाटक का अभिनय हुआ। दोनो नाटकों का जनता ने बड़ा स्वागत किया। इनमे 'निचले तले पर' नाटक को अपूर्व सफलता मिली।

इस नाटक ('निचले तले पर') ने पाठकों और दर्शकों के आन्तरिक भावों और विचारों के मर्म को छू लिया। नाटक के मुख्य पात्र जीवन के यथार्थ व्यक्ति है (सातिन, बुबनोव, बरोन)। इनके चित्रण मे गोर्की की प्रतिभा की मूल विशेषताएं पूर्णतया स्पष्ट होती है—जनता के प्रति अगाध प्रेम। पात्रों का ऐसा चित्रण हुआ है कि वे पाठकों के बिल्कुल निकट आ जाते है। इस नाटक मे पाठक बराबर नायक के साथ रहता है।

मुख्य चरित्र

गोर्की ने इस नाटक मे विविध चरित्रों की सृष्टि की है और इनमे से प्रत्येक की अपनी विशिष्टता है। इस निचले तल पर मनुष्य के विविध [illegible] अवस्था के लोग भिन्न-भिन्न पहुंच जाते है। दिखाई [illegible] के रात्रि-निवास स्थान पर, जहाँ कि लोग [illegible] है—विविध प्रकार के लोग दिखाई पड़ते है। यह 'बरोन' (उच्च वर्ग का) है जिसका चरित्र और आत्म सम्मान के ह्रास को कहा कह रहा है। [illegible] मे बचपन, जनता का [illegible] पर शासन [illegible] करने वाला यह उच्च वर्ग का व्यक्ति [illegible] और [illegible] देता है और [illegible] दुष्कर्मों का शिकार बन जाता है और [illegible] करता है। वह अब [illegible] उसके [illegible] नहीं करता। वह इसे स्वीकार करता है और कहता है कि "[illegible] है कि मुझमे [illegible] रहा है।"

[illegible]
[illegible]

कर वह जीवन में अपना कोई स्थान बनावे। किन्तु दरिद्रता तथा अधिकारहीनता ने, जिसमें कि जारशाही रूस की जनता पड़ी हुई थी--कभी मनुष्य को ऊपर उठने का मौका न दिया यदि वह एक बार समाज के निचले तले पर पहुँच गया। इससे पाठकों को मालूम हो जाता है कि क्लेश का यह स्वप्न पूर्ण न होगा। शुरू में तो वह प्रयत्नशील है किन्तु अन्त में वह परिस्थितियों से समझौता कर लेता है।

रात्रि-निवास-स्थान में रहनेवालों में से अधिकाश जीवन की परिस्थितियों से युद्ध करना छोड़ देते हैं। रोगी, शराबी अभिनेता अपने तथा दूसरों के बारे में कहता है कि उसे किसी में विश्वास नहीं है। पेपेल कहता है कि "मेरा पिता जीवन भर जेल में रहा और वही जगह मेरे लिए भी है।"

पूँजीवादी समाज को विभक्त करनेवाली सामाजिक विषमताओं का गोर्की बड़ा व्यापक चित्रण करता है। पीड़क तथा पीड़ित का यह युद्ध इस रात्रि-निवास-स्थान में भी बराबर चलता रहता है। लोग इस स्थान के मालिक केस्तिल्योव की मुट्ठी में हैं और वह इनको खटमल की तरह चूस रहा है। उसकी पत्नी वसिलीसा उससे भी बढ़कर है। ऐसे पूँजीवादी समाज में जहाँ कि मनुष्य मनुष्य का सहायक नहीं वरन् एक दूसरे के लिए भेड़िया है, जहाँ एक की खुशी दूसरे की व्यथा पर ही निर्भर है, उसकी पत्नी अपने आनद के लिए अपने पति की हत्या के लिए भी तय्यार है, और उसकी हत्या करवा देती है, और हत्यारे को पकड़वा भी देती है।

इस नाटक के विविध पात्रों का अपना व्यक्तित्व है, अपनी जबान है और अपना विशिष्ट चरित्र है। गोर्की ने उनका बड़ा सजीव चित्रण किया है। वे कितने ही नीचे क्यों न गिर गए हों फिर भी उनमें कुछ न कुछ मानवता सुरक्षित है। वे भी आदमी बन जाते यदि इनके मार्ग में बुर्जुआ समाज की शक्ति बाधा स्वरूप आकर खड़ी न हो जाती। पात्रों के ऐसे जीवन्त चित्रण के कारण नाटक का वस्तु-तथ्य बड़ा शक्तिशाली बन गया है। इसके सार तत्व को 'समाजवादी मानवता' कहा जा सकता है।

यह नाटक मानवतावादी भावना से ओतप्रोत है। गोर्की पाठक को इस बात का अनुभव करा देता है कि प्रत्येक व्यक्ति में—चोर, वेश्या,

दरादी—उदात्त मानवीय भावनाएं जीवित और सुरक्षित हैं। य
ये भावनाएं पूर्णतया विकसित नहीं हो पाती तो वह व्यक्ति का द
नहीं, यह उसका दुर्भाग्य है, उसकी व्यथा है और यह उन अन
सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम है जिसमें कि वह पड़ा हुआ है
यह अनुभूति पाठकों को इस क्रान्तिकारी निष्कर्ष की ओर प्रेरि
करती है कि मनुष्य मनुष्य बन सके। इसलिए उन सामाजिक विधा
का तोड़ना परमावश्यक है जो जीवन को 'निचले तले पर' पटक देत
है। इस विचार ने इस नाटक को अत्यधिक सामाजिक महत्त्व प्रदान
किया।

गोर्की बड़ी कलात्मकता के साथ उस विषमता को प्रकट करता है जो कि व्यक्ति के सामाजिक अध:पतन और उसके अपने उद्धार के स्वप्न में लक्षित होती है। प्रत्येक पात्र का अपना स्वप्न और अपना प्रयत्न है और व्यक्ति की उदारता और शक्ति में विश्वास है। यह विश्वास नताशा के स्वप्नों में पेपेल के फिर से आदमी बनने के प्रयत्न में और अभिनेता के उस चमत्कारी नगर के विश्वास में, जहाँ कि वह नीरोग हो जायगा प्रकट होता है। इस प्रकार नाटक के प्रत्येक पात्र की अपनी विशिष्टता है और प्रत्येक के साथ उसका विशिष्ट सामाजिक वातावरण है।

सातिन का चित्र

सातिन का चित्र इस नाटक में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस नाटक के पात्रों में केवल वही है जिसने हार नहीं मानी तथा जो बराबर परिस्थितियों से युद्ध करता रहा, और जिसका मानवीय उदात्तता तथा जीवन से विश्वास डिगा नहीं। फिर भी गोर्की ने इस पात्र की दुर्बलताओं पर पर्दा नहीं डाला है। इसी से इस पात्र के विश्वास को लेखक ने कार्य रूप में नहीं परिणत किया। गोर्की ने अपने नाटक के संबंध में स्वयं कहा है कि "मैं उन लोगों के मुख से समाजवाद की शिक्षा नहीं दिला सका जिन्हें कि जीवन ने नष्ट कर दिया है।" फिर भी महत्त्व की बात यह है कि उसने आत्म-समर्पण नहीं किया और वह सतत युद्ध करता रहता है। ऐसे लोगों के बीच जो कि अब पूरी तरह झुक गये हैं, जिनके लिए अब यह कहा जा

सकता है कि 'वे कभी आदमी थे' मानव की महत्ता की घोषणा करने वाले सातिन के यह शब्द गूंज उठते हैं : "मानव स्वतंत्र है, मानव महान् है, उसकी इज्जत करनी चाहिए। सान्त्वना या दया द्वारा उसे नीचे न गिराओ।"

मानव के प्रति इस विश्वास में, मानव के पक्ष मे उसकी स्वतन्त्रता के लिए युद्ध का आह्वान भी है। सातिन इस युद्धशीलता का प्रतीक है।

लुका का चित्र

इस नाटक में निरन्तर युद्धशीलता के मुख्य भाव के साथ दया या सान्त्वना का भाव भी मुख्य है। लुका इस दया या सान्त्वना के भाव का प्रतीक है। वह प्रत्येक पात्र को उसके लिए बिना कुछ करे-धरे सिर्फ सांत्वना दिया करता है और उनको शान्त करता रहता है। इस प्रकार का दुःख हल्का करने का हल्का ढग झूठ के सहारे ही चल सकता है और लुका इसी का आश्रय लेता है। इसी के सहारे वह लोगों को मोह लेता है। इस प्रकार की झूठी सान्त्वना क्षणिक शान्ति तो चाहे दे दे लेकिन वास्तव मे वह बड़ी घातक है। अपनी शक्ति को एकत्रित कर युद्ध के लिए सन्नद्ध करने के बजाय, ऐसी झूठी सान्त्वना लोगों को दुर्बल बनाती है, उनकी शक्ति को व्यर्थ कर देती है और उनको नष्ट कर देती है। गोर्की ने इस सबंध मे कहा है कि "इस प्रकार की झूठी सान्त्वना देनेवाले लोग बड़े बुद्धिमान और मिष्ठभाषी होते हैं और इसी से वे बड़े घातक भी हैं।"

सातिन इसी दुर्बल बनानेवाली झूठी सान्त्वना के विरुद्ध युद्ध करता रहता है। वह कहता है कि "बहुत से लोग हैं जो सान्त्वना देने के लिए झूठ बोला करते हैं। मैं जानता हूं कि झूठ शमनकारी होता है, परिस्थितियों से समझौता करानेवाला होता है। झूठ उस कठोरता का समर्थन करता है जिसने कि मजदूर के हाथ को कुचल दिया और जो भूख से मरनेवालो को दोषी ठहराता है। झूठ की जरूरत उनको है जो कमजोर दिल के हैं। जो स्वाधीन हैं उनको इसकी क्या जरूरत। झूठ

गुलामों का धर्म है और सत्य स्वतंत्र व्यक्ति का देवता है।"

सत्य, कठोर सत्य, जो झूठी आशाओं तथा झूठे आत्म-संतोष को कोई स्थान नहीं देता, वही मनुष्य को ऊपर उठा सकता है और उसे अत्याचार के विरुद्ध युद्ध करने की शक्ति दे सकता है। सातिन के शब्द इसी सत्य के द्योतक हैं।

नाटक का रचना-विधान और भाषा

इस नाटक के रचना विधान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जीवन्त परिस्थितियाँ—जो कि उस समय और साधन के यथार्थवादी सजीव संबंध के अनुकूल हैं—पात्रों के पारस्परिक संबंध और संघर्ष का अभिव्यंजन करती हैं। रात्रि-निवास-स्थान में रहनेवाले पात्रों के बीच जो आपसी संबंध हैं उनसे पाठक भली-भाँति परिचित हो जाता है और वह यह भी जान जाता है कि विभिन्न पात्र जीवन के किन रास्तों से चलते हुए इस 'निचले तल पर' पहुँचे हैं। लूका के आने पर थोड़े ही दिनों में ये संबंध और संघर्ष चरम स्थिति पर पहुँच जाते हैं, जो वास्का पेपेल को जेल में भेज देते हैं। नताशा को अस्पताल भेजते हैं और अभिनेता की आत्महत्या करा देते हैं। नाटक बड़ी ही तीक्ष्ण विषमताओं, वैपरीत्य और संघर्ष पर आधारित है जिनकी तीक्ष्णता नाटक की घटनाओं में स्वतः स्पष्ट है। स्वयं नाटक का शीर्षक 'निचले तल पर' यह ध्वनित करता है कि विषमताएँ जीवन को विभक्त कर रही हैं, फाड़ रही हैं। यदि ऐसा निचला तला वह स्तर है जहाँ कि लोग फेंक दिए गये हैं तो निश्चय ही सच्चा जीवन भी होगा जिससे कि वे अब वंचित हो गये हैं और जिसको विश्वास के आधार पर फिर से प्राप्त किया जा सकता है। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि जब तक मनुष्य का मनुष्य द्वारा उत्पीड़न है तब तक उत्पीड़ित व्यक्ति फिर से मनुष्य नहीं बन सकता। इसके साथ ही नाटक का यथार्थवादी आधार, क्रान्तिकारी रोमांटिक महत्त्व भी प्राप्त कर लेता है। सातिन का आत्म-कथन तथा दूसरे पात्रों की भावना इस बात का संकेत दे रही है कि यह विषमता स्वाभाविक नहीं है, इसे अवश्य बदलना चाहिए और यह अवश्य बदलेगी। नाटक में यथार्थ जीवन का ऐसा

जोरदार चित्रण हुआ है कि वह ऐसे जीवन के प्रति निरन्तर विरोध की आवाज़ उठाए बिना नहीं रहता।

नाटक के पात्रों की भाषा अत्यन्त वैयक्तिक है। प्रत्येक पात्र अपनी मनोवृत्ति तथा उस सामाजिक वातावरण के अनुरूप ही बोलता है जिसमें कि वह पला है। अभिनेता की भाषा अपने पेशे से पुष्ट है, बरोन की भाषा में अतीत की स्मृतियाँ हैं, नास्ता की भाषा में सस्ते उपन्यासों की विशिष्टता है और लुका की भाषा में किसानों की भाषा की झलक है। यह सब यथार्थवादी भाषा के उदाहरण हैं। फिर भी गोर्की ने भाषा की बाहरी क़लई को इतना गहरा नहीं किया कि सब अजीब या किसी दूसरी दुनिया के जीव लगने लगें। गोर्की में सामान्य व्यापक भाषा का प्रयोग है और यह भाषा उनके व्यक्तित्व को मुखरित करने के साथ-साथ सबसे अधिक यथार्थवादी सामाजिक समस्या—कि उनके अधःपतन का कारण उनका व्यक्तित्व नहीं वरन् सामाजिक परिस्थितियाँ हैं जिन्होंने उनके व्यक्तित्व को दबा दिया है—को स्पष्ट करती हैं।

नाटक का महत्त्व

गोर्की का यह नाटक एक ओर तो समाज के उस निचले तले को स्पष्टता के साथ प्रदर्शित करता है जो अत्याचार और उत्पीड़न पर आधारित है और जिसमें समा कर मनुष्य फिर उबर नहीं पाता और दूसरी ओर वह इस विश्वास में पूर्ण है कि मनुष्य स्वयं अपने को इस अत्याचार से मुक्त कर सकता है। यह मानवतावाद तो है किन्तु यह युद्धशील मानवतावाद है जो अपने रास्ते से सारी बाधाओं को दूर फेंकता चलता है। गोर्की के नाटक का यह आधारभूत वस्तु-तथ्य है। यह समाजवादी मानवतावाद है। यद्यपि जीवन ने इन पात्रों की कमर तोड़ दी है और वे स्वयं परिस्थितियों से अधिक लड़ने में समर्थ नहीं है फिर भी इनका अन्त नये विचारों को जन्म देता है और पाठकों को इस निष्कर्ष पर ले जाता है कि ऐसे समाज का अन्त कर देना चाहिए। यह नाटक मनुष्य के अधःपतन का विरोध करता है और उस झूठी मिथ्यापूर्ण सान्त्वना को भी ठुकराता है जो मनुष्य को परिस्थितियों से लड़ने की शक्ति नहीं देती वरन् शिथिल

गुलामों का धर्म है और सत्य स्वतंत्र व्यक्ति का देवता है।"

सत्य, कठोर सत्य, जो झूठी आशाओं तथा झूठे आत्म-संतोष को कोई स्थान नहीं देता, वही मनुष्य को ऊपर उठा सकता है और उसे अत्याचार के विरुद्ध युद्ध करने की शक्ति दे सकता है। सातिन के शब्द इसी सत्य के द्योतक हैं।

नाटक का रचना-विधान और भाषा

इस नाटक के रचना विधान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जीवन्त परिस्थितियाँ—जो कि उस समय और साधन के यथार्थवादी सजीव सबंध के अनुकूल हैं—पात्रों के पारस्परिक सबंध और संघर्ष का अभिव्यंजन करती हैं। रात्रि-निवास-स्थान में रहनेवाले पात्रों के बीच जो आपसी संबध हैं उनसे पाठक भली-भाँति परिचित हो जाता है और वह यह भी जान जाता है कि विभिन्न पात्र जीवन के किन रास्तों से चलते हुए इस 'निचले तले पर' पहुँचे हैं। लुका के आने पर थोड़े ही दिनों में ये सबध और संघर्ष चरम स्थिति पर पहुँच जाते हैं, जो वास्का पेपेल को जेल में भेज देते हैं। नताशा को अस्पताल भेजते हैं और अभिनेता को आत्महत्या करा देते हैं। नाटक बड़ी ही तीक्ष्ण विषमताओं, वैपरीत्य और संघर्ष पर आधारित है जिनकी तीक्ष्णता नाटक की घटनाओं से स्वतः स्पष्ट है। स्वयं नाटक का शीर्षक 'निचले तले पर' यह ध्वनित करता है कि विषमताएँ जीवन को विभक्त कर रही हैं, चीर रही हैं। यदि ऐसा निचला तला यह स्तर है जहाँ कि लोग ढकेल दिए गये हैं तो निश्चय ही सच्चा जीवन भी होगा जिससे कि वे अब वंचित हो गये हैं और जिसको विश्वास के आधार पर फिर से प्राप्त किया जा सकता है। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि जब तक मनुष्य का मनुष्य द्वारा उत्पीड़न है तब तक उत्पीड़ित व्यक्ति फिर से मनुष्य नहीं बन सकता। इसके साथ ही नाटक का यथार्थवादी आधार, क्रान्तिकारी रोमांटिक महत्व भी प्राप्त कर लेता है। सातिन का आत्म-कथन तथा दूसरे पात्रों की मानवता इस बात का संकेत दे रही है कि यह विषमता न्यायोचित नहीं है, इसे अवश्य बदलना चाहिए और यह अवश्य बदलेगी। नाटक में यथार्थ जीवन का ऐसा

ज़ोरदार चित्रण हुआ है कि वह ऐसे जीवन के प्रति निरन्तर विरोध की आवाज़ उठाए बिना नहीं रहता।

नाटक के पात्रों की भाषा अत्यन्त वैयक्तिक है। प्रत्येक पात्र अपनी मनोवृत्ति तथा उस सामाजिक वातावरण के अनुरूप ही बोलता है जिसमे कि वह पला है। अभिनेता की भाषा अपने पेशे से पुष्ट है, बरोन की भाषा मे अतीत की स्मृतियाँ हैं, नास्ता की भाषा में सस्ते उपन्यासों की विशिष्टता है और लुका की भाषा मे किसानो की भाषा की झलक है। यह सब यथार्थवादी भाषा के उदाहरण हैं। फिर भी गोर्की ने भाषा की बाहरी क़लई को इतना गहरा नही किया कि सब अजीब या किसी दूसरी दुनिया के जीव लगने लगे। गोर्की मे सामान्य व्यापक भाषा का प्रयोग है और यह भाषा उनके व्यक्तित्व को मुखरित करने के साथ-साथ सबमे अधिक यथार्थवादी सामाजिक समस्या—कि उनके अध:पतन का कारण उनका व्यक्तित्व नही वरन् सामाजिक परिस्थितियाँ हैं जिन्होने उनके व्यक्तित्व को दबा दिया है—को स्पष्ट करती हैं।

नाटक का महत्त्व

गोर्की का यह नाटक एक ओर तो समाज के उस निचले तले को स्पष्टता के साथ प्रदर्शित करता है जो अत्याचार और उत्पीडन पर आधारित है और जिसमे समा कर मनुष्य फिर उबर नही पाता और दूसरी ओर वह इस विश्वास से पूर्ण है कि मनुष्य स्वय अपने को इस अत्याचार से मुक्त कर सकता है। यह मानवतावाद तो है किन्तु यह युद्धशील मानवतावाद है जो अपने रास्ते से सारी बाधाओं को दूर फेंकता चलता है। गोर्की के नाटक का यह आधारभूत वस्तु-तथ्य है। यह समाजवादी मानवतावाद है। यद्यपि जीवन ने इन पात्रो की कमर तोड़ दी है और वे स्वय परिस्थितियों से अधिक लड़ने मे समर्थ नहीं हैं फिर भी इनका अन्त नये विचारो को जन्म देता है और पाठको को इस निष्कर्ष पर ले जाता है कि ऐसे समाज का अन्त कर देना चाहिए। यह नाटक मनुष्य के अध:पतन का विरोध करता है और उस झूठी मिथ्यापूर्ण सान्त्वना को भी ठुकराता है जो मनुष्य को परिस्थितियों से लड़ने की शक्ति नहीं देती वरन् शिथिल

बनाती है। बाद में गोर्की ने स्वयं कहा कि नाटक में विद्रोह का 'सिगनल' है। सचमुच में इस नाटक का क्रान्तिकारी महत्व है। नाटक की सफलता ने ज़ारशाही को इतना डरा दिया कि उसने आज्ञा निकाली कि प्रान्तीय नगरों में इसके प्रदर्शन के लिए वहाँ के चीफ़ की अनुमति आवश्यक है और इन चीफ़ों को गुप्त रूप से लिख भेजा गया कि यथाशक्ति इसके प्रदर्शन की आज्ञा न दें। यह सब होते हुए भी यह नाटक रूस में तथा देश-विदेश सब जगह अत्यन्त लोकप्रिय हुआ और कोई भी रोक या बाधा इसके सामाजिक कलात्मक प्रभाव को कम न कर सकी।

तूफ़ानी चिड़िया का गीत

गोर्की के उन विचारों की अभिव्यक्ति उन रोमांटिक रचनाओं में भी हुई जो १९०० के आरम्भिक वर्षों में लिखी गईं : 'तूफ़ानी चिड़िया का गीत' (१९०१) और 'मनुष्य' (१९०३)।

'तूफ़ानी चिड़िया का गीत' में गोर्की ने काव्यात्मक ढंग से बढ़ती हुई क्रान्ति की भावना का गीत गाया है। यह चिड़िया क्रोध से गरजते हुए समुद्र के ऊपर उड़ती हुई गाती है। 'शीघ्र ही तूफ़ान गरजेगा' यह इस गीत में कहा गया है। चिड़िया की कूक विजय का उद्घोष है : 'और ज़ोर से तूफ़ान गरजे।' ज़ारशाही ने उस पत्र ('जीवन') को बंद कर दिया जिसमें कि यह गीत छपा था। यह गीत अत्यधिक व्यापक हुआ और क्रान्ति के पूर्व के वर्षों में आनेवाली क्रान्ति का प्रतीक बन गया।

'मनुष्य'

यदि 'तूफ़ानी चिड़िया का गीत' आनेवाली क्रान्ति का प्रतीक है 'मनुष्य' में उसके उच्च लक्ष्य की अभिव्यक्ति—मनुष्य की स्वतन्त्रता—है। यह कविता 'मनुष्य का गीत' है। मनुष्य के इस प्रतीकात्मक में गोर्की बताता है कि मनुष्य को कैसा होना चाहिए। गोर्की के लिए के सारे कार्यकलाप का लक्ष्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति 'मनुष्य' बन सके। मनुष्य की शक्ति और उसकी उच्च प्रगति के विश्वास से ओत-प्रोत की मानवतावाद की ज़ोरदार अभिव्यक्ति है। 'सब कुछ

मनुष्य में है—सब कुछ मनुष्य के लिए—आत्मा की थकान के इस दुखद क्षण में मैं अपनी कल्पना की पूरी शक्ति के साथ अपने समक्ष मनुष्य की महानता के रूप का आह्वान कर रहा हूँ—देखो वह फिर स्वतन्त्र और उन्मुक्त, गर्व से अपना सिर उठाए धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ पगों से प्राचीन अंधविश्वासों के बीच से जा रहा है। मनुष्य के रास्ते का अन्त नहीं है। क्रान्तिकारी मनुष्य इस प्रकार बढ़ता चला जा रहा है—आगे और ऊँचे, आगे और ऊँचे।'

उपन्यास की 'मां'

१९०६ मे गोर्की ने अपनी विश्वविख्यात कृति 'मा' प्रस्तुत की जिसकी रचना उसने सन् १९०३ मे आरम्भ कर दी थी। १९०७ मे सोशल डिमोक्रेटिक पार्टी के अधिवेशन के समय जब गोर्की तथा लेनिन लदन मे मिले थे, लेनिन ने उसकी त्रुटियो का उल्लेख करते हुए भी इसके महत्त्व की चर्चा करते हुए गोर्की से कहा था कि "अब तक क्रान्तिकारी आन्दोलन मे बहुत से मजदूर अचेतन रूप मे योग दे रहे थे। अब वे इसे पढ़ेंगे और लाभ उठाएंगे। यह अत्यन्त समयोपयोगी पुस्तक है"[1]—यह लेनिन की टिप्पणी थी। इस भेंट के बाद लेनिन ने गोर्की को लिखा कि 'अपनी कलात्मक प्रतिभा के द्वारा तुमने रूस के और न केवल अकेले रूस के वरन् समस्त ससार—मजदूर आन्दोलन को बड़ा लाभ पहुँचाया है। आगे तुम और भी लाभ पहुँचाओगे।'

उपन्यास में प्रस्तुत समस्याओं की महत्ता के कारण, चित्रांकन की नवीनता, कलात्मक साधन तथा युक्तियों की मौलिकता और ससार भर के पाठकों पर अपनी प्रभावात्मकता के कारण गोर्की की यह कृति बीसवीं शताब्दी के आरम्भ की विश्व-साहित्य की महत्वपूर्ण पुस्तक बन गयी। इस पुस्तक का ससार की बहुत-सी भाषाओं मे अनुवाद भी हो चुका है।

'मां' उपन्यास मे गोर्की ने उस नयी शक्ति का पूरा-पूरा चित्रण किया

---

[1] रुस्काया सवेत्स्काया लितेरातूरा, ल० इ० तिमोफेयेव, पृ० ७७।

उपन्यास में मजदूर और क्रांतिकारी बुद्धिजीवी

इस समय का ज्वलन्त प्रश्न था मजदूर वर्ग का उत्पीडको के विरुद्ध आन्दोलन। 'मां' उपन्यास युग के इसी मूलभूत महत्वपूर्ण समस्या का पूरा-पूरा चित्रण कर रहा है। इसके पात्र दो शिविरो मे बंटे हुए है—उत्पीड़क और उत्पीड़ित—जो एक-दूसरे के जानी दुश्मन है और जिनका वर्ग सघर्ष बराबर चल रहा है। एक शिविर मे तो पूंजीपति हैं और उनके कारिन्दे ज़ारशाही के न्यायालय, ज़ारशाही की पुलिस तथा जासूस और उनके द्वारा धोखे में डाली गई जनता, और दूसरी ओर हैं मजदूर, मार्क्सवाद का मजदूर वर्ग मे प्रचार करनेवाले क्रातिकारी नवयुवक, तथा मजदूरो के साथ सयुक्त किसान।

इन पात्रों के माध्यम से सामाजिक संघर्ष के वे महत्त्वपूर्ण प्रश्न अभिव्यक्त हुए हैं जिनको गोर्की ने अपने उपन्यास मे प्रस्तुत किया है, और वर्ग संघर्ष के उस यथार्थ सबध को प्रकट किया गया है जिसने कि इस समय सामाजिक सघर्ष की गतिविधि को निश्चित किया।

प्रत्येक पात्र का चित्र या चित्राकन उपन्यास मे विशिष्ट कार्य का सम्पादन कर रहा है। पावेल का पिता पुरानी पीढ़ी के मजदूरो का प्रतिनिधि है जिसको कि उत्पीड़न ने पूरी तरह पीस दिया है। उसमे शक्ति थी लेकिन जीवन के प्रति उमडते हुए अन्दर के विरोध के अभिव्यंजन का उसे कोई ठीक चेतन मार्ग न मिल सका और मदिरा पान, लड़ाई-झगड़ा तथा पत्नी पर व्यंग्य कटाक्ष उसका मे अन्त होता है। पावेल की मां भी पिता की तरह दलित और दबी है जो सबसे डरती है किंतु जिसे क्रातिकारी नवयुवको के सम्पर्क ने आदमी बना दिया। उसने अब अपना रास्ता जान लिया और अब जीवन के प्रति उसका रुख निश्चित हो गया। पावेल नयी पीढ़ी का प्रतिनिधि है जो सरकार तथा पूंजीवाद के विरुद्ध चेतन रूप में खड़ा हो सका। रीबिन के रूप मे क्राति की ओर बढ़नेवाले किसानो की विशेषताएं प्रकट की गयी हैं। क्रातिकारी बुद्धिजीवियों का मजदूर वर्ग के साथ जो सबध था वह क्रातिकारी आन्दोलन का महत्त्वपूर्ण पक्ष था और

सका चित्रण साशा, नताशा, सोफ़िया आदि पात्रों के कार्यकलाप द्वार
ाया गया है।

इस प्रकार यह उपन्यास मज़दूर आन्दोलन तथा क्रांतिकारी युद्ध
भिन्न क्षणों को अंकित कर रहा है। इसमें आर्थिक संघर्ष, मज़दूरों क
ष्ठियों के संगठन, प्रदर्शन, सेना से मुठभेड़, न्यायालय तथा गांव
क्रान्तिकारी प्रचार; संक्षेप में क्रान्तिकारी कार्य कलाप के सभी पक्ष
विशिष्टताओं का चित्रण हुआ है।

का अंकन

इस उपन्यास में मां के चरित्र का विशेष महत्त्व है। इसका नाम भी
' है और यह मुख्यतया मां के चरित्र के विकास का इतिहास है।
के द्वारा उस मार्ग का अंकन हुआ है जिस पर चलकर लोग क्रांतिकारी
। पावेल की मां के चरित्र का यही महत्त्व है।

आरम्भ के पावेल की मां पेलागेया नीलोवना व्लासोवा बड़ी दबी हुई,
हुई और मौन अंकित की गयी है। वह अपने बारे में स्वयं कहती है
"मैं क्यों जीवित रही—झगड़ा–काम – पति के अतिरिक्त और
भी न देखा, भय के सिवा और कुछ न जाना, मुझमें सब कुछ पिस
आत्मा मार डाली गयी, अंधी हो गयी–कुछ नहीं सुनती।" भय का
जीवन पर शासन है। हर चीज़ का उत्तर वह आंसुओं से देती है
वह हर चीज़ को सहती रही। उपन्यास के आरम्भ में वह ऐसी ही
त की गयी है। किंतु उसके साथ ही अलक्षित रूप से उसके अन्दर
के प्रति असंतोष धीरे-धीरे बढ़ता रहा, यद्यपि इसे वह अभी स्वयं
समझ सकती। बाद में मज़दूर नवयुवक तथा क्रांतिकारी विचारों
पर्क में आकर वह अपने को तथा अपनी स्थिति को समझ सकी और
उस असंतोष को पहचाना जो कि अलक्षित रूप से उसके भीतर ही
उमड़ रहा था।

धीरे-धीरे उसमें परिवर्तन होता है। अचेतन से चेतन की ओर
त होनेवाले इस व्यापार या चरित्र-विकास को उपन्यास के बीच
बड़ी सूक्ष्मता से शनैः शनैः प्रदर्शित करता है और दिखाता है कि

वह किस प्रकार इन नवयुवकों की बातचीत को समझने लगती है, इस ज्ञान ने कर्म को जन्म दिया और अब वह क्रातिकारी कार्य मे अपने लडके का हाथ बटाना शुरू करती है। इसलिए नही कि वह उसका बेटा है, वरन् इसलिए कि वह उस लक्ष्य को समझ रही है जिसके प्रति उसका लडका प्रयत्नशील है और उसे अपने बेटे के इस कार्य से सहानुभूति है।

उपन्यास के अन्त मे उसका रूप बिलकुल दूसरा हो जाता है। अब वह सर्वथा निर्भीक है और बड़े धैर्य से जोखिम कामों को पूरा करती है। भय पर—जिसका कि उसके जीवन पर पूरा आधिपत्य था—उसने अब सदा के लिए पूरी विजय पा ली और अब उसमे साहस का आगमन हुआ, साहस जो कि युद्ध और विजय का आधार है। इसी से, यद्यपि बाह्य रूप मे क्रान्तिकारियो की पराजय के साथ उपन्यास की समाप्ति होती है, फिर भी पाठको का उनकी आनेवाली विजय मे पूर्ण विश्वास है क्योकि ये क्रान्तिकारी निर्भीक हैं और आन्तरिक शक्ति तथा साहस से परिपूर्ण हैं। वे भय से आत्म-समर्पण नही कर देते। मा के चरित्र का यह परिवर्तन क्रान्तिकारी आन्दोलन की प्रगति तथा विकास की महत्त्वपूर्ण मञ्जिल का द्योतक है।

पावेल का चित्रांकन

पावेल के चरित्र का उपन्यास मे अत्यधिक महत्त्व है। स्वाधीनता प्रेमी नायक की चरित्र-सृष्टि द्वारा गोर्की ने एक ओर तो साहित्य की क्लासिकल डिमोक्रेटिक या जनवादी परम्परा को आगे बढ़ाया और दूसरी ओर उसने नया वस्तु-तथ्य प्रदान किया जिससे कि पावेल का चरित्र सोवियत् साहित्य के नये पाठकों का पूर्वज या प्रवर्तक बना। पावेल के चरित्र का कलात्मक महत्त्व इस बात मे है कि उसके अंकन मे गोर्की ने बीसवी शताब्दी के आरम्भ के मजदूर क्रातिकारी की सभी अच्छी विशिष्टताओं को प्रतिष्ठित किया और इसके साथ ही पावेल के अथक परिश्रम तथा दृढ़ इच्छा शक्ति को प्रदर्शित कर उसके क्रान्ति मार्ग के उदाहरण द्वारा अपनी यह भावना भी प्रकट की कि मजदूर क्रातिकारी को कैसा होना चाहिए। पावेल में गोर्की के पूर्वांकित नायकों के चरित्रों

का सम्मिश्रण है। यदि रोमांटिक कृतियों में गोर्की ने साहसी स्वतन्त्रता प्रेमी नायकों (दांको, सोकल) की सृष्टि की, और यथार्थवादी कृतियों में प्रतिवाद तथा अत्याचार के विरुद्ध युद्ध-तत्परता की विशिष्टताओं (फ्लवास्लाव, नटखट बालक) को प्रदर्शित किया, तो पावेल के रूप में उसने संघर्ष तथा युद्ध के उद्देश्यों का चेतन अंकन किया है। वह जानता-बूझता हुआ इस संघर्ष के महत्त्व तथा उद्देश्यों को समझता हुआ इसमें प्रविष्ट होता है, और पूंजीवाद तथा अत्याचार के विरुद्ध लड़ता है। पावेल का चरित्र मुख्यतः निर्माणशील बोल्शेविक का चरित्र है। वह नवीन पीढ़ी का प्रतिनिधि है और उन वर्षों में बड़ा होता है जब कि रूस में मार्क्सवाद या क्रांतिकारी सिद्धान्त निश्चित हो चुका था और व्यापक मज़दूर आन्दोलन शुरू हो गया था। इसी से उसका प्रतिवाद चेतन प्रतिवाद है। वह क्रान्तिकारी संगठन का सदस्य है। स्वतन्त्रता के युद्ध के बीच उसका ज्ञान विकसित होता है और दृढ़ होता है। अनेक घटनाओं के बीच गोर्की इसी उभरते हुए आन्दोलन की गतिविधि को प्रदर्शित करता है जिसकी परिणति प्रदर्शन तथा पुलिस से मुठभेड़ में होती है।

उपन्यास के अन्त तक पहुँचते-पहुँचते पावेल अनुभवी क्रान्तिकारी नेता बन जाता है। उसमें इच्छा शक्ति है, दृढ़ता है, और योग्यता है तथा उसमें मज़दूर वर्ग की स्वाधीनता के महत्त्व की पूरी अभिव्यक्ति होती है। जनता और पार्टी के हितों की सेवा उसके चरित्र की मुख्य विशेषताएं हैं और इन्हीं से उसका जीवन संचालित होता है। पावेल के रूप में गोर्की ने विश्व-साहित्य में पहली बार नया चरित्र अंकित किया। मज़दूर-क्रान्तिकारी का चरित्र, जिसमें मज़दूर वर्ग की स्वाधीनता और युद्ध के आधार पर गुम्फित नये मनुष्य का नया सामाजिक आदर्श प्रतिष्ठित किया गया।

गोर्की ने इस उपन्यास पर कई वर्षों तक परिश्रम किया। अन्तिम ...शित होने के पहले गोर्की ने उसका पांच बार संशोधन किया। ...ने उन त्रुटियों को दूर करने का प्रयत्न किया जिनका निर्देश लेनिन ने किया था।

गोर्की ने विशेष रूप से भाषा की ओर बहुत ध्यान दिया। मनुष्यों और घटनाओं का चुनाव करता हुआ गोर्की जीवन के समान ही उनका यथार्थ अंकन करता है और उन विशिष्टताओं से उनको अधिक चटकीला बनाता है जिनको वह महत्त्वपूर्ण समझता है और जिनके साथ उसकी सहानुभूति है। और इस प्रकार इन युक्तियों के द्वारा वह पाठकों की सहानुभूति को विशिष्ट पक्ष की ओर प्रेरित करता है। व्यक्ति की अपनी खास विशिष्टताओं का मार्मिक चुनाव गोर्की को व्यक्ति के सजीव अंकन में बड़ी सहायता देता है और पात्र के प्रति पाठक के संबंध को निश्चित करता है। प्रत्येक पात्र की वाणी से, उसके चरित्र, स्थिति, मानसिक विकास का पता चलता है। भाषा की सहायता से गोर्की पात्रों के आन्तरिक मानसिक विकास का सूक्ष्म संकेत देता है जिससे कि उनकी विभिन्न विशिष्टताओं का पता चलता है। पात्रों का परिवर्तन इस उपन्यास में कृत्रिम नहीं प्रतीत होता। उपन्यास की घटनाओं के विकास के अनुरूप पात्रों के चरित्रांकन की विशिष्टताएँ बदलती जाती है और उनके साथ ही गोर्की इन चित्रों या पात्रों के भाषागत वैशिष्ट्य को बराबर बदलता रहता है, जिससे कि चित्रण अपने को समृद्ध करता हुआ नयी-नयी विशेषताएँ प्राप्त करता रहता है और जीवन पर अपने विकास की छाप छोड़ता है। नीलोव्ना तथा पावेल के अंकन में गोर्की का भाषा-कौशल विशेष रूप से लक्षित होता है।

ज़ारशाही सेंसर और उपन्यास

ऐसा उपन्यास ज़ारशाही की नज़रों से नहीं बच सकता था। सेंसर ने इसे अत्यधिक ख़तरनाक ठहराया और कहा कि यह समाजवादी विचारों के प्रति खुले रूप में सहानुभूति प्रकट करता है। वह संग्रह, जिसमें कि यह उपन्यास छप रहा था उसकी सब प्रतियाँ ज़ब्त कर ली गयीं, टाइप तोड़-फोड़ डाले गये, और स्वयं गोर्की को आठ वर्ष की कड़ी सज़ा देने का निर्णय हुआ यदि वह रूस में हो और यदि वह विदेश न चला गया हो। इस प्रकार यह पुस्तक अत्यन्त खंडित रूप में छप सकी, इसका पूरा प्रकाशन केवल अक्तूबर क्रांति के बाद ही हो सका।

समाजवादी यथार्थवाद

केवल सेंसर की ही इस पर कुदृष्टि नहीं थी वरन् इसकी उस
के बुर्जुआ पक्ष के आलोचकों ने भी कटु आलोचना की। वास्तव
आलोचक इस उपन्यास के क्रान्तिकारी प्रचार की शक्ति से भय
हो गये थे।

यह उपन्यास सन् १९०७ में छपा था। यह समय १९०५ की क्र
की पराजय के बाद का समय था जब प्रतिक्रियावादी शक्ति बहुत
हो गयी थी, सामाजिक जीवन और साहित्य में निराशावाद, परा
और ह्रास की भावना थी। क्रान्ति की पराजय से लोग भयभीत हो
थे। ऐसे निराशा के समय में उपन्यास का प्रकाशन महत्वपूर्ण घटना
जिसने कि लोगों में क्रान्ति की शक्ति भर दी। स्वयं गोर्की ने अ
उपन्यास का लक्ष्य बताते हुए कहा कि "हमारा ध्येय जीवन की अनिष्टक
शक्ति तथा अन्धकार का विरोध करने वाली आत्मा को सहारा दे
है, गिरने से बचाना है"। इस कार्य को गोर्की ने पूरी तरह से सम्
किया।

गोर्की की महत्ता इस बात में है कि उसने नये युग की समस्याओं
समझा और उनका पूरा-पूरा अभिव्यंजन किया। इस प्रकार उप
साहित्य में नये नायकों का समावेश किया और उनमें समाजवादी आद
को प्रदर्शित किया। समाजवाद की भावना और मेहनतकशों के सा
सहानुभूति की अभिव्यक्ति ने गोर्की तथा इस उपन्यास को समाजवाद
यथार्थवाद का अग्रदूत बना दिया। देश का उद्धार करनेवाला, जनता
सेवक, समाजवाद के लिए लड़नेवाला, साहस, सहनशीलता और बलिदा
की भावना से युक्त इस उपन्यास का नायक समाजवादी यथार्थवाद क
विशेषताओं को ही प्रकट कर रहा है। इसके साथ ही अपने क्रान्तिकारी
विकास के बीच जीवन का पूर्ण अभिव्यंजन समाजवादी यथार्थवाद की
अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है जो इस उपन्यास में पूरी-पूरी प्रतिबिम्बि
हो रहा है। इसी कारण, गोर्की, सोवियत साहित्य और उसकी देन
उपन्यास-समाजवादी यथार्थवाद-का संस्थापक कहलाता। आगे देखें

लोक-दृष्टि के कारण वह अपने समकालीनों की अपेक्षा समकालीन घटनाओं से ऊपर उठ सका और उनकी अपेक्षा अधिक व्यापकता तथा गम्भीरता से उनका सामाजिक महत्व समझ सका। जीवन के नए विचारों की साहित्य से जो नई माँगें थी उनको वह समझ सका और उनका सफल अभिव्यंजन कर सका।

अपनी सर्जना मे गोर्की के लेखन की इस दूसरी अवस्था का बड़ा महत्व है। इस युग मे उसकी महत्त्वपूर्ण कृतियाँ ('मा',' निचले तले पर' तथा अन्य) सामने आईं। युग के महत्वपूर्ण प्रश्नो को गोर्की की कृतियों मे अभिव्यक्ति मिली, और उसने रूसी समाज के विभिन्न स्तरों को प्रदर्शित किया—प्रोलितारियत्, विभिन्न वर्गों मे विभाजित बुद्धिजीवी रूसी बुर्जुआ की विभिन्न पीढ़ियाँ, रूसी गाँव, 'निचले तले पर' पहुँचे हुए 'समाज के लोग', 'आवारा' आदि।

प्रतिक्रिया के वर्षों में और प्रथम महायुद्ध के बीच गोर्की की सर्जना

सन् १९०५ की क्रान्ति की पराजय के बाद प्रतिक्रियावादी प्रबल हो गये और दमन बड़े वेग से चलने लगा। क्रातिकारियो को कठोर दड दिया गया। जेल भर गये और हजारो को फाँसी मिली। कम जमीन वाले किसानों की हालत और भी बिगड गयी और मजदूरो का काम करने का दिन दस या बारह घटे का कर दिया गया। हड़ताल मे भाग लेने वाले किसानो को 'काली फेहरिस्त' मे दर्ज कर दिया गया और उनको कही काम नही मिलता था।

बुद्धिजीवियो पर इसका यह प्रभाव पड़ा कि उनमे पराजय तथा ह्रास की प्रवृत्ति का जन्म हुआ और उनमे से बहुत से क्रान्ति से विमुख हो गये, मार्क्सवाद की आलोचना फैशन बन गयी। बहुत से लेखक क्रान्ति की आलोचना करने लगे और उसकी हँसी उड़ाने लगे। यौन सबधी आकर्षक चित्रण या शैली का चलन हुआ। दर्शन के क्षेत्र में मार्क्सवाद मे सशोधन का जोर बढ़ा तथा सभी प्रकार की धार्मिक धाराएं 'वैज्ञानिक' तर्क का बाना धारण किये हुये बहने लगी। इन सब का उद्देश्य जनता को क्रान्ति के मार्ग से हटाना था।

दमन की चरम परिणति ४ अप्रैल १९१२ के गोलीकांड में हुई जिसमें पाँच सौ से अधिक व्यक्ति मारे गये या घायल हुये और जब इसका विरोध किया गया तो गृहमंत्री मकारोव ने कहा कि "ऐसा ही हुआ और ऐसा ही होगा।"

किन्तु दमन का विरोध करनेवाले ऐसे लोग भी थे जो इस बात पर दृढ़ थे कि ऐसा न होने पायेगा। इस गोलीकांड के विरोध में पीतरबुर्ग में एक लाख व्यक्तियों से अधिक ने हड़ताल की। प्राह में (१९१२) जो अखिल रूसी पार्टी सम्मेलन हुआ उसने बोल्शेविकों और मेंशेविकों के बीच एकता पैदा की और सारे देश में बोल्शेविकों के संगठनों को एक बोल्शेविक पार्टी में दृढ़ कर दिया।

मार्क्सवाद की आलोचनाओं के उत्तर के रूप में लेनिन की 'मार्क्सवाद तथा एम्पीरियो क्रिटिसिज्म' पुस्तक प्रकाशित हुई।

साहित्य में प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध मार्क्सवादी आलोचना

साहित्य में प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध लड़ाई छिड़ गयी। साहित्य में ह्रासवादी मनोवृत्ति के विरुद्ध मार्क्सवादी आलोचकों ने जिहाद छेड़ दिया। रूस में मार्क्सवादी आलोचना की नींव प्लेखानोव द्वारा डाली गई। इसने साहित्य के विश्लेषण में मार्क्सवादी सिद्धान्तों के लागू करने का महत्वपूर्ण काम किया। प्लेखानोव की सबसे बड़ी देन इस बात में है कि उसने सामाजिक जीवन के साथ कला का जो घनिष्ठ संबंध है उसका पूरा-पूरा उद्घाटन और अभिव्यंजन कर दिया ('कला और समाजिक जीवन')। इसके बाद वरोव्स्की (१८७२-१९०३) तथा अन्य लेखक आये। अपने लेखों में ('लड़ाई के बाद रात में' तथा अन्य) वरोव्स्की ने ह्रासवादी साहित्य के विरुद्ध युद्ध किया। इसमें उसका महत्वपूर्ण योगदान है। साहित्य संबंधी प्रश्नों पर लेखों के प्रकाशन द्वारा 'ज्वेज्दा' तथा 'प्राव्दा' पत्रों ने भी इस युद्ध में महत्वपूर्ण योग दिया।

मार्क्सवादी आलोचना के विकास में लेनिन के लेखों का मौलिक स्थान है। इन लेखों के द्वारा लेनिन ने साहित्य के मार्क्सवादी विश्लेषण

का उदाहरण प्रस्तुत किया तथा सामाजिक जीवन के प्रतिबिम्ब रूप में साहित्य का जो सैद्धान्तिक महत्व है उसका निरूपण किया। साहित्य का ऐतिहासिक वातावरण से जो संबंध है, लेखक के मूल्यांकन में जन-हित की दृष्टि या दृष्टिकोण की अनिवार्य आवश्यकता आदि के प्रश्नों पर भी लेनिन ने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये और सामान्य साहित्य के वैज्ञानिक अध्ययन के सिद्धान्तों को निर्धारित किया। अपने लेख 'पार्टी संगठन तथा पार्टी साहित्य' में लेनिन ने समाजवादी साहित्य के मूलभूत सिद्धान्तों की मौलिक स्थापना की और साहित्य में प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियों के विरुद्ध युद्ध किया, यह लेख प्रतीकवादियों तथा अन्य प्रतिक्रियावादियों के विरुद्ध था।

प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध गोर्की

प्रतिक्रियावाद के इन वर्षों में गोर्की ने बोल्शेविक प्रेस का बड़ा साथ दिया और वह 'ज्वेज्दा' तथा 'प्रस्वेश्चेनिए' पत्रों में बराबर लिखता रहा। सन् १९१२ में 'ज्वेज्दा' में उसकी 'इटली की कथाएँ' प्रकाशित हुई। १९०८ में अपने लेख 'व्यक्तित्व का नाश' में उसने उन लेखकों पर आक्षेप किया जिनमें प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियाँ लक्षित हो रही थीं। इस लेख में उसने बड़े जोर के साथ देश-भक्ति का महत्व कला के मूलभूत आधार के रूप में प्रतिपादन किया और उसे क्लासिकल रूसी साहित्य की महत्वपूर्ण परम्परा बताया। प्रतिक्रियावादी लेखकों के संबंध में उसने कहा कि "उनका साहित्य देश-भक्ति की भावना से शून्य है। सामाजिक समस्याएँ इनकी चेतना को नहीं उद्बुद्ध करतीं। वह ऊँचाई से फिसल कर दैनिक जीवन की घटनाओं में फँस जाता है। वह संसार का दर्पण नहीं रह जाता वरन् शहर की धूल में पड़ा हुआ काँच का छोटा सा टुकड़ा बन जाता है। अपने इस टूटे टुकड़े से वह संसार के विशाल जीवन को नहीं प्रतिबिम्बित कर पाता, वरन् टूटी हुई आत्माओं के टुकड़ों को प्रतिबिम्बित करता है।"[1]

[1] रूस्काया सोवेत्स्काया लितेरातूरा, अ० इ० तिमोफेयेव, पृ० १०१।

वह कहता है कि "रूस में प्रत्येक लेखक एक दूसरे
अलग था फिर भी उन सबको एक लक्ष्य और प्रयत्न ने ए
था और वह था देश का भविष्य, जनता का भाग्य और सं
भूमि के स्थान को सोचने-समझने तथा अनुभव कर
प्रयत्न।"१ वह यह कहते कभी नहीं थकता कि "कला
सर्वोत्तम संतान थी और है।—देश के दुर्भाग्य के समय में
से भरी आत्मा को अवश्य ही जगाना चाहिए।"

अपनी इस समय की रचनाओं में गोर्की ने अपने इसी मू
की अभिव्यक्ति की है। १९०९ में गोर्की ने 'ग्रीष्म' क
यह क्रान्तिकारी गाँव की कहानी है। गाँव का विषय इस
प्रचलित था। बहुत से रूसी लेखकों ने गाँव की दरिद्रता, दय
का चित्र खींचा है। किंतु गोर्की की यह कहानी इनसे भिन्न
केवल वही नहीं चित्रित किया गया है जो कि गाँव में था वर
की भी कल्पना की गयी है जो कि स्वतंत्रता प्राप्ति पर वि
इनके विकास में पूँजीवाद और शासन बाधा डालते हैं।
में गोर्की ने जनता की इन छिपी हुई किन्तु वास्तविक शक्तियों
है। इसी से गाँव के बारे में लिखी हुई रचनाओं में से केवल
रचना 'ग्रीष्म' ऐसी रचना के रूप में सामने आई जिसमें ले
के पूर्व के गाँव की जीवन्त शक्ति की चर्चा करता है। कहा
इन शब्दों से होता है : "महान रूसी जनता! तुम्हें शीघ्र ही
उत्सव की बधाई।" इसकी नायिका वार्या रूसी नारी का चि
गाँव में नया जीवन बनानेवाली स्पष्ट, दृढ़, हँसमुख वार्या में
की परम्परा से प्राप्त अच्छी सभी विशेषताएँ हैं।

ग्रनुरोव

सन् १९०९-१० में गोर्की की आत्म में घनिष्ठता से
रचनाएँ निकलीं—'ओकुरोव नगर' 'मत्वेई

१ ... ..., ५० ... ... , पृ

का जीवन'। इनमें गोर्की ने रूसी जीवन का दूसरा पक्ष दिखाया जिनमे संस्कृति से दूर, पिछड़े हुए, छोटे शहरों का जीवन चित्रित किया गया है। इसमें उन लोगों का आत्म-सतुष्ट जीवन चित्रित किया गया है जो सवेदनशील व्यक्तियों के हर प्रकार की सुंदरता तथा सत्य के लिए किये गए प्रयत्न को दबा देते हैं। अकुरोव शहर का कवि सीमा देवुश्किन कहता है कि "हमारे पीछे जगल है, आगे दलदल, श्रीमन्! हम पर कृपा करो, हमारी जीने की इच्छा नही।" इस शहर के लोग तड़पते हैं, उनकी प्रतिभा और शक्ति के अभिव्यजन के लिए कोई मार्ग नही है। अधिकार, लिप्सा, स्वार्थ, प्रेम, घृणा, कठोरता की भावना से विषाक्त वातावरण के बीच गोर्की ऐसी वस्तु की खोज कर रहा है और ऐसी चीज पाता है जो कि ऐसे जीवन को बदल सकती है। उसका रूसी व्यक्ति में विश्वास है जो अपने मार्ग की सारी बाधाओं को दूर हटाने की शक्ति रखता है, और वह जीवन के उस परिवर्तन को देख रहा है जो कि समीपवर्ती क्रान्ति को अकुरोव मे भी ला रहा है। अकुरोव के नीरस जीवन का चित्र खींचते हुए गोर्की रूस के विकास का रूप भी देख रहा है और उसके प्रकाश में उन शक्तियों को दिखा रहा है जो अकुरोव मे प्रौढ़ हो रही है। इनमें सबसे प्रथम देश प्रेम है। अकुरोव मे नये जीवन का सचार होता है, क्रान्तिकारी प्रकट होते हैं और जवानों की गोष्ठियाँ बनाई जाती हैं। 'मा' उपन्यास तथा 'ग्रीष्म' कहानी के समान इसका वस्तु-विषय देश के नवजीवन का चित्रण ही है।

रूसी व्यक्तियों के संस्मरण

इन्ही वर्षों मे गोर्की उन महान रूसी व्यक्तियों का साहित्यिक चित्र प्रस्तुत करता है जिनसे कि वह अपने जीवन में मिला। इनमे करोलेको, एसेनिन, चेखव, ब्लाक, लियो तोल्स्तोय आदि लेखकों का मुख्य स्थान है। इन सस्मरणों को गोर्की ने कई वर्षों मे लिखा और इनमे गोर्की की चित्रात्मक कलापटुता प्रकट होती है। इन सस्मरणों मे गोर्की ने विशेष रूप से यह दिखाने का प्रयत्न किया कि रूसी जातीय चरित्र की विशेषताएँ किस प्रकार उसके महान प्रतिनिधियों मे प्रस्फुटित हुई, उनमे कितना

गहरा देश प्रेम था और उन्हे अपने देश तथा जाति पर कितना गर्व था।

प्रथम महायुद्ध और गोर्की

प्रथम महायुद्ध के पूर्व गोर्की रूस लौट आया। उसने 'लेतोपिस' पत्र की स्थापना की जो कि शासन-विरोधी पत्र था।

युद्ध छिडने पर प्रगतिशील पार्टी ने साम्राज्यवादी युद्ध की निंदा की और लोगो को विद्रोह करने तथा जारशाही को अपदस्थ करने को उत्तेजित किया। बोल्शेविक पार्टी ने क्रान्तिकारी अन्तर्राष्ट्रीयता का पक्ष लिया और साम्राज्यवादी युद्ध का विरोध किया।

इस समय क्रान्तिकारी छिप कर काम कर रहे थे, मजदूरों का प्रेस बंद था तथा क़ानूनी रूप से युद्ध विरोधी प्रचार करना सम्भव न था। केवल 'लेतोपिस' कानूनी था जिसने कि साम्राज्यवादी युद्ध का विरोध किया। प्रथम महायुद्ध के बीच गोर्की का प्रगतिशील रूप इसी से स्पष्ट हो जाता है। वह सदा अन्तर्राष्ट्रीयता तथा प्रजातन्त्रवाद का पक्षपाती रहा। साहित्यिक मोर्चे पर गोर्की युद्ध के वर्षों के बीच प्रगतिशील प्रोलितारियत् शक्ति का संगठनकर्ता बना रहा और उसकी आवाज़ सारे संसार के मेहनतकशों की आवाज़ बन गयी।

कलात्मक सर्जना के क्षेत्र मे उसकी रचना 'लोगों के बीच' (१९१६) प्रकाशित हुई। यह उसकी आत्मकथा की दूसरी पुस्तक है।

रूस में अक्तूबर की महान क्रांति निकट आ रही थी। गोर्की की सर्जना का नया और अन्तिम युग शुरू हुआ।

गोर्की और बीसवीं शती के आरम्भ का साहित्यिक द्वन्द्व

अक्तूबर क्रान्ति के बाद की गोर्की की सर्जना के संबंध मे कुछ कहने से पहले उस वातावरण का सिंहावलोकन अत्यावश्यक है जिसमे कि अक्तूबर क्रांति तक उसकी सर्जना विकसित हुई। इस युग के कठोर वर्ग-संघर्ष ने साहित्य के क्षेत्र मे सैद्धान्तिक संघर्ष को जन्म दिया। इस संघर्ष में गोर्की ने समाजवादी यथार्थवाद का पक्ष लिया जो अनेक विरोधी विचार-धाराओं के बीच निर्मित हुआ।

बीसवी शती के आरम्भ के बहुत से लेखकों ने गोर्की से प्रेरणा प्राप्त

की क्योंकि गोर्की की रचनाओं मे उनको युग द्वारा साहित्य के समक्ष प्रस्तावित समस्याओं का समाधान करनेवाले सर्जनात्मक सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति मिली। इसी से गोर्की उस समय के साहित्यिक जीवन का केन्द्र बन गया और उसके मित्र और शत्रु दोनों का ध्यान उसकी ओर गया और बहुत से लेखक उससे प्रभावित हुए। इसके साथ ही स्वतः जीवन ने भी ऐसी समस्याएँ लेखकों के सामने प्रस्तुत कीं जैसी कि गोर्की ने रखी थीं और जीवन ने उनको उसी निष्कर्ष पर पहुँचाया जिस पर कि गोर्की पहुँचा था।

इसके साथ ही दूसरे लेखक भी थे जिनको प्रतिक्रियावादी कहा गया और यह कहा गया कि उनकी रचनाएँ जीवन का यथातथ्य अंकन नहीं करतीं और सामाजिक जीवन पर बुरा प्रभाव डालती हैं। इन लेखकों के विरुद्ध गोर्की का साहित्यिक द्वन्द्व बराबर चलता रहा।

जिस प्रकार अन्य क्षेत्रों में उसी प्रकार साहित्य के क्षेत्र में भी अक्तूबर क्रान्ति के पूर्व तीक्ष्ण सैद्धान्तिक युद्ध या संघर्ष चलता रहा।

क्रान्ति के आन्दोलन तथा राजनीतिक चेतना की व्यापकता ने मजदूर वर्ग के नौजवानों को कलात्मक क्षेत्र में भी सर्जन-उत्पादन के लिए प्रेरित किया यद्यपि यह सर्जन परिपक्व न था। सन् अस्सी में मजदूर कवि निचाएव (१८५९-१९२५) अपनी रचनाएँ छपाने लगा। थोड़े समय बाद फे० शे० श्कूलेव (१८६८-१९३०) सामने आया। इसका गीत है, "हम लुहार हैं और हमारी आत्मा जवान है।" कई पत्र भी निकले— जैसे 'प्रस्वेश्चेनिए' (प्रकाशन) (१९११-१३), 'हमारा रास्ता' (१९-१३) जिनमें मजदूर लेखकों की रचनाएँ प्रकाशित हुईं। इन्हीं वर्षों में अ० नोविकोव—प्रिबोय, फे० ग्लदकोव, एन० ल्यश्कोव ने अपना साहित्यिक कार्य शुरू किया। १९१४ में गोर्की के सम्पादन में प्रोलिटा-रियन लेखकों का संग्रह निकला जिसकी भूमिका में उसने लिखा कि "जीवन की परिस्थितियों के अत्यन्त विषम होते हुए भी रूसी मेहनत-कश अपने बुद्धिजीवी वर्ग का स्वतः निर्माण कर रहा है, अपनी शारीरिक शक्ति को मानसिक तथा आत्मिक शक्ति में विकसित कर रहा है—

मेरा विश्वास है कि प्रोलितारियन् स्वतः अपना कलात्मक साहित्य निर्मित कर सकता है।"[१]

युवक श्रमिक लेखकों के विकास में बोल्शेविक पत्र 'ज़्वेज़्दा' तथा 'प्राव्दा' का महत्वपूर्ण योग रहा है। ४०० से अधिक लेखकों ने इसमें लिखा। दो वर्षों में (१९१२–१४) 'प्राव्दा' में हज़ार कलात्मक रचनाएँ और साहित्यिक टिप्पणियाँ छपीं।

इन युवक लेखकों ने साहित्य में नयी जीवन्त सामग्री का समावेश किया। 'प्राव्दा' में छपी कविताओं के केवल शीर्षकों से यह स्पष्ट हो जायगा कि यद्यपि यह आरम्भ ही था, फिर भी इस साहित्य ने जीवन के उस क्षेत्र को प्रकाशित किया जो कि अभी तक साहित्य में अस्पष्ट था। इनके शीर्षक थे : 'खान', 'छापाखाना', 'रात की बदली', 'खान में काम करनेवाले की मृत्यु' आदि। 'प्राव्दा' के हज़ारों पाठक थे। इससे इस पत्र में छपी कलात्मक रचनाओं का सामाजिक प्रभाव की दृष्टि से बड़ा महत्व था।

१. रूस्काया सवेत्स्काया लितेरातूरा, म० इ० [illegible], पृ० १०८

आ० एस० सिराफिमोविच

सिराफिमोविच का जीवन भी गोर्की के समान बड़ा कठिन था। उसका पिता जल्दी ही मर गया और परिवार दीन-हीन हो गया। परिवार की सहायता के लिए उसे तीसरे दर्जे से ही काम करना पडा। जिमनेज़ियम का स्कूल समाप्त करने के बाद वह पीतरबुर्ग यूनिवर्सिटी में पढ़ने आया। यहाँ उसकी लेनिन के बडे भाई अलेक्सान्दर ईलियच उल्यानोव से भेंट हुई जिसे ज़ार अलेक्सान्दर तृतीय की हत्या के प्रयत्न के संबध में फासी का दण्ड मिला। सिराफिमोविच ने क्रातिकारी घोषणा पत्र लिखा जिसमें उसने इस हत्या-प्रयत्न की व्याख्या की थी। घोषणा पत्र लिखने के कारण वह गिरफ्तार किया गया और तीन वर्ष के लिए दूर श्वेत समुद्र के तट पर मेजेन भेज दिया गया। वहाँ उसने लिखना शुरू किया और १८८८ मे उसकी पहली कहानी छपी। १९०१ में उसका पहला सग्रह निकला। उस समय के प्रसिद्ध लेखको ने इस लेखक की बडी प्रशसा की। १९०८ मे मास्को आकर वह गोर्की के सग्रह 'ज्नानिये' के प्रकाशन मे सहयोग देने लगा।

सिराफिमोविच ने अपनी रचनाओं मे उस व्यक्ति का चित्र खीचा है जो कि जीवन की कठोर परिस्थितियों के नीचे दब जाता है और उनकी बलि चढ़ जाता है। 'स्विचमैन' कहानी में नायक रेल की पटरी पर दब कर मर जाता है और उसके परिवार को मुआविज़ा के रूप मे तीन रूबेल दिये जाते हैं। 'खरगोश' कहानी मे मजदूर अपनी मरणासन्न पत्नी से मिलने के लिए बिना टिकट स्टीमर पर चढ़ जाता है। वह पकड़ लिया जाता है और अधिकारी उसे सज़ा के रूप मे नियत स्थान पर नही उतरने देते और आगे ले जाते हैं। मज़दूर पानी मे कूद पड़ता है और डूब जाता है।

सिराफिमोविच की इस प्रकार की बहुत सी कहानियाँ हैं जो किसानों

तथा मजदूरों की परिस्थिति का चित्रण करती हैं, जिनमे उनकी निर्धनता, निराशा तथा बेवसी के करुण चित्र खींचे गये हैं।

गोर्की के समान सिराफिमोविच भी इस बेचैनी और तड़पन का कारण ढूंढता है और इसका स्रोत उसे वही मिलता है जहाँ कि गोर्की को। इस सारी विषमता का मूल अधिक से अधिक धन इकट्ठा करने की इच्छा और प्रयत्न मे है जिसने लोगों मे जहर भर दिया और उनके मानवीय स्वभाव के विकास में बाधा डाली है। 'समुद्र' कहानी मे समुद्र में दो मछुआ परिवारो का संघर्ष दिया गया है। दो भाइयों ने दूसरे परिवार के जाल से मछलियाँ चुराईं। दूसरे परिवार ने उनका पीछा किया। झगड़े में नावें डूब गईं। दो (प्रत्येक परिवार में से एक-एक) उलटी हुई नाव तक तैर कर आ जाते हैं। उनमें मानवीय भावना जगती है और वे एक दूसरे की मदद करते हैं। बातचीत के बीच एक दूसरे से पूछता है कि 'भाई के साथ उसने कितने की मछलियाँ चुराईं ?' दूसरे ने जवाब दिया कि 'करीब छःह सौ की।' यह सुनकर वह उस पर झपटता है और दोनों डूब जाते है।

'लड़की' कहानी मे मा अपनी बेटी को कष्टमय जीवन से बचाने के लिए पन्द्रह हजार का अपना बीमा कराती है और मर जाती है। लड़की रुपया पाती है, शादी करती है और आराम से रहती है। लड़की के पति को यह शिकायत है कि मा ने तीस हजार का बीमा क्यों नहीं कराया ? मां के बलिदान का यह परिणाम !

'पेस्की' कहानी अपूर्व है। पनचक्की का बूढ़ा मालिक एक जवान काम करने वाली से अपने साथ शादी कर लेने को कहता है। वह शीघ्र ही मर जाएगा और पनचक्की उस औरत को मिल जायगी। वह राजी हो जाती है किन्तु बूढ़ा मरता नही। वह स्वयं बूढ़ी हो रही है। अन्त मे वह बूढ़े को जहर दे देती है। अब वह एक जवान काम करने वाले से अपने साथ रहने को कहती है और पनचक्की की वसीयत उसके नाम करने का वायदा करती है। वह आदमी साल भर उसके साथ रहता है, फिर ऊब जाता है और कुल्हाड़ी लेकर उस पर झपटता है। वह

यह कहती हुई चिल्लाती है कि उसने वसीयत फाड़ डाली है। वह कुल्हाड़ी फेंक देता है। इसके बाद वह दोनों अच्छी तरह रहने लगते हैं।

अपनी कहानियों में सिराफिमोविच उस शक्ति की चर्चा करता है जो कि लोगों को इस तड़पन से बचा सकती है और आत्मा को कलुषित करनेवाली धन-संग्रह की भावना से मुक्त करती है। यह शक्ति क्रान्ति है। १९०५ की क्रान्ति से संबंधित कहानियों में लेखक इसी ('क्रान्ति') का उल्लेख करता है ('रात के बीच बम')।

१९०५ की क्रान्ति की पराजय के बाद के वर्षों में लिखे गये 'स्तेप का शहर' उपन्यास का बहुत बड़ा सामाजिक और राजनीतिक महत्व था। इसमें लेखक ने यह कहा कि मजदूर वर्ग खत्म नहीं हो गया और उसका दूसरा अभियान दूर नहीं है।

क्रान्ति के बाद सिराफिमोविच की सर्जना का विकास हुआ। १९२४ में उसकी कहानी 'लौह धार' प्रकाशित हुई जो सोवियत साहित्य की महत्वपूर्ण या क्लासिकल रचना बन गयी।

कृषक लेखक

किसानों में उत्तेजना, जो कि बीसवीं शती के आरम्भ में सारे देश में थी, मजदूर वर्ग का क्रांतिकारी प्रभाव, इन सबने ग्रामों की राजनीतिक चेतना में योग दिया और साहित्य में कृषक स्तर के लेखकों का आविर्भाव हुआ।

गाँवों की सामाजिक विषमता, उत्पीड़न, गरीबी, असंस्कृति, नशाखोरी इन सबने किसान लेखकों पर कुछ ऐसा प्रभाव डाला कि उन्होंने सत्य पर पर्दा नहीं डाला वरन् जीवन की उस व्यथा और तड़पन का चित्रण किया जिसे किसान सह रहे हैं। इनकी सर्जना प्राकृतिक रूप में यथार्थ और क्रान्तिकारी थी—किसी गम्भीर चिन्तन का परिणाम न थी। इनके लिए यही पर्याप्त था कि वह अपने जीवन के बारे में कह सकें कि पाठक यह समझने लगें कि आगे इस तरह जीना असम्भव है—और ऐसे जीवन को खत्म करना है। कभी-कभी इनके चित्र व्यापक नहीं

पहुँचा। उसकी पहली कृति का नाम ही अत्यन्त साकेतिक है—'विना रास्ते के'। इसमें उसने सन् नब्बे के रूसी बुद्धिजीवियों के विचार संघर्ष का चित्र प्रस्तुत किया है। सन् १८९६ की पीतरबुर्ग के बुनकरों की हड़ताल ने उस पर बड़ा प्रभाव डाला और वह क्रांति की ओर उन्मुख हुआ। इस समय से वह क्रांति की ओर बढ़ते हुए बुद्धिजीवियों के विचार और उनकी हिचकिचाहट का लेखक बन गया।

क्रान्ति के बाद वेरेसायेव ने पुश्किन पर पुस्तक लिखी और वह प्राचीन कवियों का अनुवादक बना।

गोर्की और मायाकोव्स्की

प्रगीत मुक्तक में यथार्थवाद

प्रबंध-काव्य या कथा-काव्य में, गीत-मुक्तक की अपेक्षा,

प्रस्तुत करता है। इस प्रकार सामान्य परिस्थितियों के बीच सामान्य अनुभूतियों का चित्रण करते हुए प्रगीत मुक्तक जीवन का वास्तविक प्रतिबिम्ब प्रस्तुत कर सकता है। इन्ही अनुभूतियो के अनुरूप हम निश्चित ऐतिहासिक वातावरण या परिस्थिति के बीच व्यक्ति या पात्र की कल्पना करते हैं। जितनी ही गहराई और व्यापकता से इनका चित्रण होती है उतनी ही महत्वपूर्ण उसकी रचना होती है।

प्रत्येक कवि की रचना अपने युग से घनिष्ठता से सबंधित है। इसी प्रकार सोवियत संघ मे नयी ऐतिहासिक परिस्थितियो के बीच प्रगीत मुक्तक ने नया रूप प्राप्त कर लिया। उसमे ऐसी अनुभूतियों का चित्रण होता है जिसमें बड़े आवेश के साथ सोवियत नागरिक का अपने देश के साथ ऐक्य प्रस्तुत किया जाता है। इसमे, समाजवादी देश मे रहनेवाले समाजवादी व्यक्ति की अनुभूतियों का यथार्थवादी अंकन हुआ है। इसे समाजवादी मुक्तक काव्य कहा जा सकता है।

समाजवादी मुक्तक काव्य की रचना में मायाकोव्स्की अक्तूबर क्रांति के पहले से ही प्रवृत्त था।

मायाकोव्स्की पर गोर्की का प्रभाव

गद्य के क्षेत्र में गोर्की सर्जना के नये सिद्धान्त और रूप पहले ही स्थिर कर चुका था। उसने नये व्यक्तियो या पात्रों का साहित्य में समावेश किया, और क्रान्ति का रूप प्रस्तुत किया जिसकी पृष्ठभूमि में बीसवी शती के आरम्भ की सामाजिक विकास की गतिविधि स्पष्ट हो गयी। उसने पुरानी व्यवस्था की बुराइयों का चित्रण किया और क्रान्ति द्वारा उसके हटाने की अनिवार्यता बताई और देश प्रेमी, वीर, साहसी तथा बलिदानी नायक की सृष्टि की। काव्य के क्षेत्र में इस नये आदर्श की स्थापना की आवश्यकता अभी तक बनी हुई थी। काव्य के क्षेत्र में यह काम मायाकोव्स्की द्वारा हुआ।

बीसवीं शती के आरम्भ मे रूसी काव्य में प्रतीकवाद का प्राबल्य था। यह धारा यथार्थवाद की विरोधिनी थी और व्यक्तिवादिता को

बढ़ावा देती थी। संसार की वास्तविकता से हटाकर यह कवियों को स्वप्न के संसार की ओर ले जाती थी जिसका वास्तविकता से कोई संबंध न था। इस धारा के बहुत से लोगों ने गोर्की की कटु आलोचना की।

रूसी प्रतीकवादी धारा के श्रेष्ठ कवि—ब्लाक तथा ब्रूस्येव—प्राचीन व्यवस्था का निराकरण करते हुए और आनेवाली क्रांति की चर्चा करते हुए भी क्रांतिवादी आरम्भ के प्रदर्शक उन नये लोगों के विशिष्ट तथ्यों को ठीक-ठीक हृदयगम न कर सके, जिनके बिना युग का वास्तविक यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत करना असम्भव था। यह काम मायाकोवस्की ने किया। नवीन समाजवादी प्रगीति मुक्तक की सृष्टि मायाकोव्स्की द्वारा हुई, जिसने कि काव्य के क्षेत्र में सर्जना के नये सिद्धान्त स्थापित किए।

व्लदीमिर मायाकोव्स्की तीन बार (१९०८, ९, १०) जेल गया और जेल में बैठ कर उसने इस बात का अनुभव किया कि नवीन विषय-वस्तु की अभिव्यक्ति के लिए प्राचीन साहित्यिक रूपों को हटाना आवश्यक है। उसने कहा कि "आनेवाली क्रान्ति की भावना दृढ़ करूंगा।" वह इसलिए वस्तु-विषय के संबंध में, क्रांति के संबंध में विचार कर रहा है, प्रश्न प्रस्तुत कर रहा है ?

गोर्की, युवक मायकोव्स्की का प्रिय लेखक था। क्रांतिकारी आन्दोलन तथा बोल्शेविक पार्टी के संबंध से मायाकोव्स्की क्रान्ति की निकटता का अनुभव कर सका और गोर्की के विचारों तथा भावों को ग्रहण कर सका।

गोर्की का मायाकोव्स्की की ओर उन्मुख होना आकस्मिक न था। मायाकोव्स्की के साहित्यिक आरम्भ से ही वह उसकी ओर बड़ा ध्यान देता रहा। सन् १९१५ में जब मायाकोव्स्की पर बुर्जुआ आलोचना ने आक्षेप करना शुरू किया तो गोर्की मायाकोव्स्की की रक्षा के लिए आगे बढ़ा। १९१५ में मायाकोव्स्की गोर्की से मिला और उसे अपनी रचना

('पतलून मे बादल') सुनाई। गोर्की ने मायाकोव्स्की को अपने
'लेतोपिस' मे सहयोगी के रूप मे रख लिया। १९१६ मे गोर्की की सहा
से मायाकोव्स्की की कविताओ का संग्रह प्रकाशित हुआ और १९१
उसकी बड़ी कविता 'युद्ध और शांति' छपी।

गोर्की मायाकोव्स्की की ओर इसलिए आकृष्ट हुआ क्योंकि उ
पैनी दृष्टि ने मायाकोव्स्की की प्रतिभा को पहचान लिया था और
मायाकोव्स्की मे उस डिमोक्रेटिक रोमांटिक कवि का रूप मिला जि
वह प्रतीक्षा मे था। गोर्की ने कहा था कि "रूस को महान् कवि
आवश्यकता है। पुश्किन की तरह महान कवि चाहिए। डिमोक्रे
रोमांटिक कवि आवश्यक है।" इसी से अब अपनी सर्जना के पहले
मे मायाकोव्स्की फ्यूचरिस्ट[1] (भविष्यवादी) कहे जाने वाले कला
और कवियो (दुल्यक भाई, ख्लेब्निकोव आदि) की रूपवादी या
लिस्ट भावनाओ और रूपों की ओर आकृष्ट हुआ और उसका शांति

---

[1]भविष्यवाद--'फ़्यूचरिज़्म'--वह काव्य धारा थी जिसने
महायुद्ध के पूर्व कुछ वर्ष योरोप और रूस में बड़ी व्यापकता प्राप्त
फ़्यूचरिस्ट काव्य में नये सृष्टा बनना चाहते थे और सर्जना के नये
प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील थे। नाम एक होते हुए भी पाश
योरोप (विशेष रूप से इटली में व्यापक) और रूस के फ़्यूचरिज़्म में
भेद था। पश्चिम में फ़्यूचरिज़्म ने बुर्जुआ नवयुवकों की उग्र साम्राज्य
भावना को प्रकट किया। इसने युद्ध की सराहना की, मशीनवाद की घो
की, प्राचीन सांस्कृतिक विरासत के प्रति घृणा प्रकट की और क
रूपवादी सिद्धान्त को आगे बढ़ाया, इसके मूल में उग्र बुर्जुआ व्य
वादिता थी। १९०९ में पेरिस में प्रकाशित अपने मैनिफ़ेस्टो में इट
फ़्यूचरिस्टों के नेता मैरिनेती ने लिखा : "हम युद्ध का सम्मान
चाहते हैं--जो कि संसार की सफ़ाई है--और महिलाओं के प्रति
की प्रशंसा करना चाहते हैं। पुस्तकालयों को जला दो। पानी की
को सहरों से इधर मोड़ दो जिससे कि संग्रहालयों के भवन पानी

आधार कुछ धूमिल पड़ गया उस समय भी गोर्की आश्वस्त बना रहा क्योंकि जीवन के प्रति मायाकोव्स्की का जो क्रांतिकारी रुख था उससे वह भली-भाँति परिचित था। इसी से उसने लिखा कि "ठीक बात तो यह है कि कोई 'फ्यूचरिज्म' (भविष्यवाद) नहीं है। है केवल कवि, व्लादीमिर मायाकोव्स्की—बड़ा कवि।"

मायाकोव्स्की के आरम्भिक विचार

मायाकोव्स्की का साहित्यिक कार्यकलाप १९०९ में शुरू हुआ। उसका कहना है कि जेल में बैठे हुए उसने कविता की पूरी कापी लिख डाली किंतु वह कापी उससे छीन ली गयी और खो गयी।

उसकी पहली कविताएं 'फ्यूचरिस्टों के संग्रह' (सामाजिक रुचि को थप्पड़) में छपी। १९१२ से १९१७ तक, क्रांति के पहले, उसकी कई महत्त्वपूर्ण कृतियाँ सामने आईं–'पतलून में बादल' (१९१५), 'आदमी या मनुष्य' (१९१६), 'युद्ध और शान्ति' (१९१६)।

जांय, प्रसिद्ध नगरों को मिट्टी में मिला दो।" यह एक प्रकार से उभरते हुए फ़ासिज्म की ही घोषणा थी, स्वयं इसका नेता मेरिनेती प्रथम फ़ासिस्ट कार्यकर्ता बन गया था और स्तालिनग्राद घेरने वाले इतालवी सैनिकों के बीच यह १९४२ में स्वयं मौजूद था।

संस्कृति की सभी सम्प्राप्तियों का निराकरण करते हुए फ्यूचरिस्टों ने साहित्य के क्षेत्र में विचारों और वस्तु-तत्त्व को समाप्त करने की कोशिश की और इस प्रकार साहित्य को शब्दों का व्यक्तिवादी खिलवाड़ बनाना चाहा जो कि केवल उसके सृष्टा के ही समझ में आवे। उन्होंने शब्द की स्वतन्त्रता की घोषणा की और शब्दकार के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की।

[illegible] रूसी फ्यूचरिज्म ऊपरी समानताओं के होने पर भी [illegible] [illegible] से बिल्कुल भिन्न प्रकार का है। प्रथम महायुद्ध के पूर्व [illegible] [illegible] प्रतीकवाद के बाद प्रकट हुई। रूसी फ्यूचरिस्टों में भी [illegible]

अपनी आरम्भिक कविताओं में मायाकोव्स्की यद्यपि 'फ्यूचरिज्म' की ओर झुका फिर भी वह आरम्भ से ही अपनी रचना में जीवन के महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को उठाता है, और उसकी कृतियों में मानवतावादी विषय-वस्तु मनुष्य की तड़पन की गूँज-सुनाई देती है। मायाकोव्स्की जानता है कि मनुष्य की इस तड़पन का सारा अपराध इस 'पीले कीड़े' रूबेल या सिक्के पर है। मायाकोव्स्की की उत्पीड़क और उत्पीड़ित की इस भावना में गोर्की का स्वर स्पष्ट है।

गोर्की के समान ही, मायाकोव्स्की की आरम्भिक रचनाओं में, सामाजिक विषमताओं से विभाजित संसार का यथार्थवादी चित्र उसके विरुद्ध किए गए क्रांतिकारी रोमांटिक विरोध और प्रतिवाद के साथ घुल मिल जाता है। इससे गोर्की के साथ मायाकोव्स्की का आन्तरिक विकास निर्धारित होता है, इसका अर्थ मायाकोव्स्की की मौलिकता का निराकरण

के प्रति असंतोष था किन्तु उसकी ठीक-ठीक अभिव्यक्ति उनकी शक्ति के बाहर की चीज थी और वे वास्तविकता के विरुद्ध युद्ध करने में अक्षम थे। इसी से जीवन के प्रति विद्रोह उन्होंने व्यंग्य और समकालीन संस्कृति के निराकरण के रूप में प्रकट किया।

जीवन की अपूर्णता या अपर्याप्तता के विरुद्ध जो प्रतिवाद इन फ्यूचरिस्टों ने किया वह बुर्जुआ व्यक्तिवादिता के रूप में था। इसी से यद्यपि यह बाहरी रूप में बुर्जुआ स्तर के विरुद्ध आक्रमण था फिर भी मूलतः वे इसी के प्रतिनिधि बने रहे।

इन फ्यूचरिस्टों ने जो कुछ लिखा वह 'फार्मलिज्म', रूपवाद ही था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि फ्यूचरिज्म में जारशाही रूस के विरुद्ध प्रतिवाद ध्वनित हो रहा था, किन्तु यह प्रतिवाद केवल नकारात्मक था और उनके पास कोई ऐसी योजना न थी जिसे कि उस व्यवस्था का स्थानापन्न बना सकते जिसका कि वे मजाक उड़ाते थे। इस प्रकार रूसी फ्यूचरिज्म केवल बुद्धिजीवी कलाकारों के एक हिस्से का विद्रोह था जो प्रधान सामाजिक आन्दोलन की धारा से अलग था।

कदापि नही है। मायाकोव्स्की की रचनाओं में मनुष्य की तड़पन का करुण विषय विशेष रूप से विकसित हुआ और सामान्य रोमांटिक रंगों या व्याख्या के बीच क्रान्ति का विषय प्रस्तुत किया गया। किंतु उनमे क्रांति का वह ठोस रूप नहीं है जो कि गोर्की की खास विशेषता है। यह केवल व्यक्तिगत विभिन्नता है और इससे उस सामान्य निष्कर्ष में कोई अन्तर नहीं पड़ता कि उस व्यापक साहित्यिक आन्दोलन में, जिसका अगुआ गोर्की था, मायाकोव्स्की का अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

बीसवीं शताब्दी का आलोचनात्मक यथार्थवाद

बीसवीं शती के आरम्भ के साहित्यिक विकास का चित्र प्रस्तुत करने के लिए, आलोचनात्मक यथार्थवाद की परंपरा से संबद्ध लेखकों के कृतित्व का संक्षिप्त परिचय अत्यावश्यक है।

आपस में भेदों के होते हुए भी यथार्थवादी लेखक, जो गोर्की के निकट थे उन्होंने अपनी कृतियों में जीवन के मूलभूत प्रश्नों को उठाया और युग की मूलभूत विषमताओं की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया। इसी में उनके यथार्थवाद की नयी क्रान्तिकारी विशेषता थी।

बीसवीं शती ने अब स्वतः जीवन के नये क्रान्तिकारी योद्धा नायक के सृष्टि-चित्र की उपयुक्त सामग्री प्रस्तुत की। ऐसे सृष्टि-चित्र के बिना भी जीवन के आलोचनात्मक चित्रण का महत्त्व बना ही रहता किन्तु तब वह जीवन की मुख्य समस्याओं को न छू सकता और न उनको प्रस्तुत ही कर सकता। वह अप्रधान प्रश्नों तथा असंबद्ध एकांगी चित्रण से सीमित हो जाता। वह निस्सदेह सच्चा चित्रण प्रस्तुत करता किन्तु लेखक के दृष्टि-कोण की संकीर्णता या अनुदारता चित्रण में व्यापकता न आने देती। यथार्थवाद अब पूर्ण को न ग्रहण कर बीच ही में रास्ते में रुक गया था और विवरण तथा व्यक्तिगत चित्रण की कला में परिवर्तित हो गया था। इस प्रकार आलोचनात्मक यथार्थवाद व्यापकता खोकर अत्यन्त संकुचित हो गया था। यह एक प्रकार से संकुचित यथार्थवाद था जो बाहर से तो उन्नीसवीं शती के आलोचनात्मक यथार्थवाद के निकट था किन्तु वास्तव में उससे दूर हट गया था क्योंकि नयी परिस्थितियों में उसकी पुनरावृत्ति ने उसे हीन और संकुचित बना दिया।

ई० बुनिन, अ० कुप्रिन, एन० अन्द्रेयेव इस संकुचित आलोचनात्मक यथार्थवाद के प्रसिद्ध प्रतिनिधि हैं। अपनी प्रतिभा तथा भाषागत कौशल के कारण इन लेखकों का बीसवीं शती के आरम्भ के साहित्य में महत्त्वपूर्ण

स्थान था। गोर्की बूनिन की प्रतिभा पर मुग्ध था। एक समय इन लेखकों ने गोर्की के साथ सहयोग किया किन्तु उनका साहित्य में जो कार्यकलाप था उसके कारण सोवियत आलोचक उनको महत्वपूर्ण स्थान नहीं देते। सोवियत आलोचकों का कहना है कि सर्जना में सबसे प्रधान है जीवन की महत्त्वपूर्ण बात की चर्चा करना और यह चीज इन लेखकों में बहुत कम है। ये लेखक बहुत अच्छा चित्रण करते हैं किन्तु गौण बातों का। गोर्की ने अपने कार्यकलाप के आरम्भ में लिखा था कि "हमारे चारों ओर जीवन उफन रहा है। नयी चेतना जग रही है, नयी समस्याएं सामने आ रही हैं, नया व्यक्ति उठ रहा है। यह नया व्यक्ति पाठक है जो हमसे जीवन के मूलभूत प्रश्नों का उत्तर माँग रहा है। वह जानना चाहता है कि सत्य कहाँ है। न्याय कहाँ है, कहाँ दोस्तों को ढूँढना चाहिए और कौन दुश्मन है।" आलोचनात्मक यथार्थवाद के प्रतिनिधियों ने इन प्रश्नों के बारे में पाठकों से कुछ न कहा। वे क्रान्ति को न समझ सके और न उन नये लोगों को समझ सके जिनको जीवन प्रस्तुत कर रहा था। वे अपनी ही विषय-वस्तुओं में व्यस्त हैं जो कि उन्हें अच्छे लगते हैं। उनकी कृतियों में युग का अंकन नहीं मिलता। उनकी सर्जना पूर्ण विकास न प्राप्त कर सकी क्योंकि उनकी अपूर्णताएं उनके व्यक्तित्ववाद और प्रतिक्रियावादी लोक-दृष्टि से संबद्ध हैं तथा क्रान्तिकारी आंदोलन और बीसवीं शती के आधारभूत रूसी जीवन से उनके विच्छिन्न रहने के कारण हैं। गोर्की ने इन आलोचनात्मक यथार्थवादी लेखकों की कटु आलोचना की और उस आलोचना का अभिप्राय यही था कि देश के भाग्य और भविष्य से इन लेखकों की कोई दिलचस्पी नहीं है।

इ० अ० बूनिन

बूनिन (जन्म सन् १८७०) आलोचनात्मक यथार्थवाद का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधि है। अक्तूबर क्रान्ति के बाद बूनिन रूस छोड़कर विदेश चला गया। विदेश में रहते हुए उसने कुछ महत्त्वपूर्ण न लिखा और यह इस बात का संकेत है कि देश से नाता छूट जाने पर लेखक की सर्जना का किस प्रकार ह्रास होता है। उसका दृष्टिकोण उसके विचारों तथा

सामाजिक स्थिति से बहुत संकुचित हो गया था। यह जमींदारी या सामन्तवादी संस्कृति से घनिष्ट रूप से संबंधित था और इसी से उस संक्रान्ति को ठीक से न समझ सका जिसके भार से जमींदार दबे जा रहे थे।

अपनी कहानी 'अन्तोनोविय सेब' में वह जमींदारों के फ़ार्म को उस संसार के समान बनाता है जो निर्धन हो गया है, जो कट चुका है और वह अब नष्ट हो रहा है, जिसके बारे में आज से पचास वर्ष बाद केवल हमारी कहानियों से ही जाना जा सकेगा। दूसरी कहानी 'सूखी घाटी' में वह इसके बारे में बड़े आवेश के साथ कहता है—"पचास साल में जमीन के ऊपर से ऊँचे वर्ग का निशान मिट गया।"

जमींदारी या सामन्तवादी जीवन के नाश के चित्र ने बूनिन की दृष्टि से उसको ओझल कर दिया जो कि वास्तव में जन्म ले रहा था और विकसित हो रहा था। इसी से उसकी सर्जना में उदासी का रंग है और निराशा तथा अकेलेपन का भाव है। उसके प्रगीत मुक्तकों का नायक भी निराशा और ऊब से भरा हुआ है। वह लिखता है "मैं एकाकी सदा सर्वदा।" यह एकाकीपन का भाव उसके प्रगीत मुक्तकों का मुख्य भाव है।

बूनिन अपनी तड़पन और व्यथा का बड़ा स्पष्ट और ज़ोरदार चित्र खींचता है किन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि बूनिन नये जीवन की इस समृद्धि को नहीं समझ पाता जो कि उसके चारों ओर उमड़ रही है। नये संसार की बेचैनी, उसके प्रयत्न उसके विचार और उसके जोश और खुशी का अभिव्यंजन उसके प्रगीत मुक्तक का नायक न कर सका। यही उसकी सबसे बड़ी कमी है।

अ० ई० कूप्रिन

अपनी सार्वजनिक विशेषताओं में कूप्रिन (१८७०–१९३७) बूनिन के निकट है। अपनी कहानियों में कूप्रिन ने अपने चारों ओर की यथार्थता का अंकन किया। ज़ारशाही फ़ौज का जीवन (द्वन्द्व युद्ध, तल,

---

१. रूस्काया सवेत्स्कया लितेरातूरा, ल० इ० तिमोफ़ेयेव पृ० १२२।

गड्डा, मामा), मजदूरों का उत्पीड़न पूँजीवाद का शोषण (मोलच) मनुष्य की आत्मिक समृद्धि (गम्ब्रीनूस) वह इन सबको देखता है और इनका चित्रण करता है। इस दृष्टि से उसमें कुप्रिन की अपेक्षा विविधता और स्पष्टता अधिक है। फिर भी कुप्रिन में भाषा-सौष्ठव और प्रबन्ध-पटुता अधिक है। कुप्रिन की अपनी सीमा इस बात में है। यद्यपि वह नये जीवन के उभार को लक्षित करता है फिर भी जीवन की अपूर्णताओं का अंकन उस तीक्ष्णता तक नहीं पहुँच पाता कि वह अपने निराकरण की शक्ति से पाठक को किसी नये सत्य की प्राप्ति या अनुभूति की ओर प्रेरित करे जिसकी ओर लेखक उसका आह्वान कर रहा है।

एल० अन्द्रेयेव

आरम्भ में अन्द्रेयेव और गोर्की के बीच बड़ी गहरी मित्रता थी किन्तु बाद में दोनों के रास्ते अलग हो गये और वे एक दूसरे से दूर चले गये। उस मित्रता का कारण यह था कि अन्द्रेयेव की कहानियों में गोर्की के समान ही मानवतावादी रंग था। उसकी पहली ही कहानी में लोगों को उसकी प्रतिभा के दर्शन हुए। उसकी आरम्भिक कहानियाँ सामान्य, छोटे आदमियों से, उनके सुख-दुःख से सबंधित हैं। शराबी गरास्का को उत्सव में शहर का पुलिसमैन दावत पर बुलाता है और उसकी आवभगत करता है। उसमें मानवीय भावना जगती है और वह खुशी से रो पड़ता है क्योंकि उसका पूरा नाम लेकर बुलाया गया। रसोइए का लड़का (बेरगामोत और गरास्का) जो कि बराबर रसोई के धुएँ में बड़ा हुआ पहली बार बड़े मकान (दाचा) में आता है, प्रकृति का सौन्दर्य उसे बदल देता है ('मकान में 'पेत्का'। उसकी ऐसी छोटी-छोटी और हृदयस्पर्शी कहानियाँ थीं और चेखव की कहानियों की विषय-वस्तु के निकट थीं। इसी से लोग पूछा करते थे कि 'अन्द्रेयेव' उपनाम से कौन लिख रहा है—गोर्की या चेखव।

अन्द्रेयेव को जीवन की असंगतियों की गहरी अनुभूति थी और वह इस पर विजय पाने का रास्ता खोज रहा था। यही इन दोनों की मित्रता का कारण था। किन्तु जहाँ गोर्की ने अपना रास्ता सामाजिक युद्ध के बीच, क्रान्ति के बीच, मनुष्य की स्वतन्त्रता में पाया, अन्द्रेयेव दूसरी ओर

व्यक्तिवादिता की ओर चला। उसने स्वतः मनुष्य में, उसके अन्दर किसी बहुमूल्य वस्तु को पाने की कोशिश की जिससे कि उसका जीवन से मेल हो जाय और जीवन बदल जाय। इसकी असफलता अनिवार्य थी क्योंकि मनुष्य को सामाजिक अत्याचार से मुक्ति दिलाए बिना उसका आत्मिक परिवर्तन असंभव है। इसी से उसकी खोज असफल रहती है और उसे केवल गहरी निराशा ही मिलती है। वह अपनी रचनाओं में जीवन सम्बंधी प्रश्न प्रस्तुत करता है और इसी से उसकी ओर उस समय के समाज का ध्यान गया, किन्तु अपने को किसी नई यथार्थवादिता तक ऊपर न उठा सकने के कारण, उस शक्ति को न देख सकने के कारण जो कि समाज का नया निर्माण कर रही है, वह अन्य आलोचनात्मक यथार्थवादी लेखकों के समान, यथार्थवाद से दूर चला गया और प्रतीकवाद के समीप आ गया। उसकी कृतियों में मनुष्य के प्रति विश्वास नहीं है और न इस बात का विश्वास है कि उसमें नवजीवन के निर्माण की शक्ति है। उसकी कृतियाँ मनुष्य से उसकी विश्वासशक्ति का छीन कर उसे निस्सहाय, निराश और खोखला बना देती हैं। मनुष्य के लिए उद्धार का कोई रास्ता नहीं है, क्योंकि वह उसे सामाजिक जीवन से बाहर खोजता है। इस प्रकार उसने अपनी महत्वपूर्ण सर्जना में महत्वपूर्ण प्रश्न प्रस्तुत किए—किन्तु जीवन के मूलभूत विकास से अलग हटकर वह उनका समाधान न दे सका। इसी से वह क्रांति को न समझ सका और उसने क्रान्तिकारियों का मज़ाक बनाया। इसी से गोर्की और अन्द्रेयेव की मित्रता का अन्त हो गया।

निस्सन्देह अन्द्रेयेव में कल्पना थी, मौलिक प्रश्न-प्रस्तुता थी, अभिव्यञ्जन शक्ति थी किन्तु जीवन के सत्य से अलग हो जाने के कारण उसकी प्रतिभा सीमित और सङ्कुचित हो गई।

इस प्रकार आलोचनात्मक यथार्थवादियों ने, बीसवीं सदी में क्लासिकल लेखकों के समान, जीवन के मूलभूत प्रश्नों को नहीं उठाया और न समृद्ध विकसित चरित्रों की सृष्टि की, यद्यपि इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनकी रचनाओं का अपना आकर्षण है।

क्रान्ति के पूर्व अन्य लेखक जो आलोचनात्मक यथार्थवाद से सम्बन्धित

थे उनमें अ० तोल्स्तोय, एस० मेर्गेयेवत्सेंस्की, एम० प्रीशविन आदि हैं। अपने देश के साथ आगे बढ़ते हुए क्रान्ति के बाद इन लेखकों ने महत्त्वपूर्ण रचनाएं प्रस्तुत की जिनकी विषय-वस्तु देशभक्ति से ओत-प्रोत थीं।

साहित्य में ह्रास की प्रवृत्तियाँ

उन्नीसवीं शती के अन्त में पनपनेवाली सामाजिक विषमताओं की तीक्ष्णता ने जीवन में भी तीव्र सैद्धान्तिक युद्ध छेड़ दिया। एक ही प्रकार की सामाजिक प्रवृत्तियों की व्याख्या लेखकों की अपनी सामाजिक तथा सैद्धान्तिक स्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार की हुई बढ़ती हुई क्रांति ने डिमाक्रेटिक या जनवादी लेखकों को क्रान्ति की ही विषय-वस्तु से संयुक्त नये यथार्थवाद को अपनाने में सहायता की। इसके साथ ही यह भी हुआ कि कुछ लेखक, जो यथार्थवादी तो थे किन्तु जो समय की नयी माँगों को अपनी सर्जना में स्थान न दे सके, वे जीवन से दूर चले गये और गौण तथा अप्रधान पक्षों की व्यंजना में लग गये। किन्तु ऐसे लेखक भी थे जो बढ़ते नये सामाजिक संघर्ष से भयभीत हो गये। वे केवल जीवन के यथार्थ चित्रण से विरत ही न हुए वरन् उन्होंने यथार्थवाद की कटु आलोचना की और कलात्मक सर्जना के लिए दूसरे रास्तों की खोज की माँग की।

१९०५ की क्रान्ति के बाद बुर्जुआ सामन्ती रूस की कला और साहित्य में विषमता की अवस्था प्रकट हुई जो सन् १९१७ तक बनी रही। इस साहित्य ने जिसमें कि बुर्जुआ वर्ग का ऐतिहासिक अन्त झलक रहा था यथार्थवादी परंपराओं को ठुकरा दिया और उन्हें स्वीकार नहीं किया। इस नवीनधारा का नाम 'दिकादेन्तवाद', या ह्रासवाद (फ्रान्सीसी शब्द 'दिकारासंहार) या 'माडर्निज्म' (माडर्न-नवीन) नवीनतावाद पड़ा। 'दिकादेन्त' शब्द (या ह्रासवाद) अत्यन्त प्रचलित था, क्योंकि इस धारा के प्रतिनिधियों ने जिन विचारों को आगे बढ़ाया, वे सामान्य साहित्य की दृष्टि से इतने दूर या अलग थे कि वे संस्कृति के ह्रास की साक्षी रुग्ण सर्जना के परिणाम प्रतीत होते थे। बाद में, इस कारण कि यह धारा

कलात्मक सर्जना में, प्रतीकों के महत्त्व और उपयोग पर बड़ा जोर देती थी, इसे प्रतीकवाद कहा जाने लगा।

इसके सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति के मूल में बुर्जुआ सामन्तवादी ह्रासमयी विचारधारा थी। प्रतीकवाद की एक विशेषता योरोप के लेखकों और सभी प्रकार के पश्चिमी मतवादों के सामने सिर झुकाना था। इसमें पक्षपाती कला के क्षेत्र में 'कास्मोपालिटनिज़्म' के नाम पर देश-भक्ति-विरोधी और पश्चिम की गुलामी का भाव भर रहे थे। रूसी साहित्य की स्वतन्त्रतावादी परपराओं से अलग हट जाने के कारण ही प्रतीकवादियों में देशप्रेम के भाव का ह्रास हुआ।

प्रतीकवाद की मुख्य विशेषताएं थी : चरम कोटि की व्यक्तिवादिता, सामाजिक जीवन से संबंध विच्छेद, जो 'कला कला के लिए' सिद्धान्त में प्रकट हुआ, सामान्य रूप में वास्तविकता का अस्वीकार तथा यथार्थता के विरुद्ध लेखक के अपने स्वप्न या कल्पना के संसार की प्रस्थापना। ये स्वप्न ऐसे नहीं थे जो जीवन की उस नयी शक्ति को देख लेते जो कि जीवन का पुनर्निर्माण करती हैं वरन् किसी दूसरे अभौतिक संसार के विचार या स्वप्न थे जो इस संसार के दु:ख-दर्द से अनभिज्ञ थे। प्रतीकवाद के मूल में एक प्रकार का द्वैत है—दो प्रकार के संसार की कल्पना, भौतिक संसार और दैवी संसार। भौतिक संसार इस दैवी संसार का प्रवेश द्वार है। इस रहस्यवादी धार्मिक आधार ने प्रतीकवादियों के रोमांटिक रूप-रंग को निश्चित किया। यह रोमांटिसिज़्म प्रतिक्रियावादी था जिसने साहित्य को महत्वपूर्ण सामाजिक समस्याओं से दूर हटा दिया और सांकेतिक रूप में यह कहा कि महत्त्वपूर्ण बात जीवन को बदलने के लिए संघर्ष करना नहीं है, वरन् उस दैवी सुन्दर संसार की आशा लगाए बैठे रहना है जिसका स्पर्श ही बहुत है और तब तक चाहे इस पृथ्वी पर जीवन कितना ही गर्हित क्यों न रहे।

प्रतीकवादियों के दृष्टिकोण से कला का कार्य भौतिक संसार की अभिव्यक्ति के बीच आदर्शवादी दैवी संसार की झलक देखना है और इस झलक को पाठक के सामने प्रस्तुत करना है। उन्होंने प्रतीक को 'अनन्त

का द्वारोद्घाटन' और 'अशाश्वत का सामयिकता में प्रकाश' बताया, अर्थात् जीवन का ऐसा अभिव्यंजन जिसमें लेखक द्वारा प्रस्तुत भौतिक संसार का अभिव्यंजन जीवन में छिपे हुए और दैवी आरम्भ के बारे में सोचने को बाध्य करता है।

रूसी प्रतीकवाद के विकास में पश्चिमी योरोपीय प्रभाव के अतिरिक्त रूसी दार्शनिक, रहस्यवादी और कवि व्लादीमिर सलोव्योव (१८५३-१९००) का भी बहुत बड़ा हाथ था। उसकी कविताओं में संसार की दोहरी—द्वैतपूर्ण—कल्पना की विषय-वस्तु अंकित थी जिसे कि प्रतीकवादियों ने ग्रहण कर लिया। वास्तविकता की अभिव्यक्ति स्वयं अपने में प्रतीकवादियों के लिए दिलचस्प या रुचिकर न थी वरन् वह इसलिए थी कि वह इनको उसके पीछे छिपी हुई रहस्यपूर्ण झलक को देखने का अवसर देती थी, जिसे कि केवल कवि ही देख सकता था या समझ सकता था।

प्रतीकवादियों ने यथार्थवादी गोर्की-साहित्य की कटु आलोचना की। उनके पत्र 'तराज़ू' में लेनिन के लेख 'पार्टी संगठन और पार्टी साहित्य' की भी बड़ी तीव्र आलोचना हुई। इससे उनका क्रान्ति विरोधी पक्ष स्पष्ट हो गया।

बीसवीं सदी के दूसरे दशक के आरम्भ में एक और प्रतिक्रियावादी धारा भी प्रकट हुई—'आक्मेइज़्म' (गुमिल्योव अख्मातोवा आदि)। प्रतीकवादियों के समान इस धारा के कवि भी रूसी साहित्य की देश-भक्ति की परम्परा से दूर हटे हुए थे और उन्होंने क्रान्ति पर कीचड़ उछाला। कला को उन्होंने 'आनन्दपूर्ण हस्तकौशल' बताया और अपार वास्तविकता से बचने के लिए अपनी पुस्तक, [illegible], [illegible] में शरण का लेने प्रयत्न किया।

प्रतीकवाद के विरुद्ध

क्रान्तिकारी जनवादियों और विशेष कर से मार्क्सवादी लेनिनवादियों ने प्रतीकवाद के विरुद्ध बराबर संघर्ष किया। गोर्की का प्रतीकवाद से [illegible] विरुद्ध [illegible] था। [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] का [illegible] कर [illegible] में किया है—

"सन् १९०७–१९१७ तक का समय उत्तरदायित्वहीन विचारों की पूर्ण स्वेच्छाचारिता का समय था और साहित्यकारों की सर्जना की स्वतन्त्रता से परिपूर्ण था। इस स्वतन्त्रता की अभिव्यक्ति सामान्यतया सभी प्रकार के पश्चिमी प्रतिक्रियावादी बुर्जुआई विचारों के प्रचार में प्रकट हुयी। सामान्यतया १९०७–१९१७ का दशक रूसी बुद्धिजीवियों के इतिहास का अत्यन्त लज्जाजनक दशक है।"[१]

इस प्रकार बीसवीं शती की अक्तूबर-क्रान्ति के पहले तक के साहित्य पर गोर्की की छाप और छाया है। वह समाजवादी साहित्य के नवीन कलात्मक साधन—समाजवादी यथार्थवाद—का आधार निर्मित कर रहा है और वह उन सबके विरुद्ध संघर्ष कर रहा है जो इस साहित्य के विरुद्ध हैं और जीवन के सत्य को विकृत कर रहे हैं। उससे प्रेरणा पाकर बहुत से लेखक इस संघर्ष के सत्य और साधन—'क्रान्ति' के निकट आए। इस सामाजिक यथार्थवाद का जन्म और विकास, प्रतिक्रियावादी धाराओं के विरुद्ध संघर्ष, लेखकों का क्रान्तिकारी नवनिर्माण—इन सबका सोवियत साहित्य के विकास में बड़ा महत्व रहा है और इन सब में गोर्की का बड़ा योग रहा है।

इन वर्षों में साहित्य के सामने सर्वथा नयी समस्याएं थीं। नायक अब ऐसे मनुष्य को होना चाहिए जो कि युद्धशील हो, जो मनुष्य के सुख के लिए उन सबके विरुद्ध युद्ध का आह्वान कर सके जो अत्याचारी हैं, और उसी प्रकार देश प्रेम को क्रान्तिकारी देश प्रेम होना चाहिए जो प्रोलितारियत को ज़ार तथा पूंजीवाद से मुक्ति दिलानेवाले स्वाधीनता-युद्ध का रूप धारण कर सके। इसी प्रकार वह यथार्थवाद का उद्घाटन उसकी सत्यात्मकता के बीच करे, उसका दिग्दर्शन क्रान्ति के प्रकाश में हो।

इस प्रकार समाजवादी यथार्थवाद का विकास और इसका उन सबसे संघर्ष, जो कि समाजवादी आदर्श के विकास में बाधा डाल रहे हैं—यह उन्नीसवीं शती के अन्त और बीसवीं शती के आरम्भ के साहित्यिक

१–रूसकया सवेत्स्कया लितेरातूरा, एल० इ० तिमोफ़ेयेव, पृ० १२७।

जीवन का मूलभूत स्वरूप है। इसी में उस युग के साहित्यिक विकास का मूल विचार अभिव्यंजित हुआ यद्यपि वाह्य रूप में अन्य विचारधाराएं बहुत थी और उनके लेखक भी संख्या में बहुत थे।

इस प्रकार बीसवीं शती के आरम्भ में सोवियत समाजवादी साहित्य की नींव डालनेवाले लेखक सामने आते हैं। जिनका नेता और संचालक मैक्सिम गोर्की है।

गोर्की की सर्जना सोवियत साहित्य के विकास के मूलभूत प्रश्नों को समझाने की कुंजी है।

अक्तूबर क्रान्ति के बाद गोर्की की सर्जना

अक्तूबर क्रान्ति के बाद समाजवादी कला के विकास में गोर्की का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उसके अनुभव, कलात्मक संगठन शक्ति तथा उसके सर्जनात्मक कार्यकलाप ने सोवियत लेखकों को बहुत प्रभावित किया और उन्हें बड़ी प्रेरणा दी। उसकी लोकप्रियता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि १९१८ से १९५१ के बीच उसकी कृतियों के १८२५ संस्करण निकले और सोवियत् संघ (तथा विश्व को प्रायः सभी भाषाओं में) की प्रायः ७१ भाषाओं में अनुवाद हुआ तथा बहुत से शहरों, संस्थाओं आदि के नाम गोर्की के नाम पर रखे गये।

क्रान्ति के बाद गोर्की की सर्जना ने विशेष रूप प्राप्त किया। उसमें एक प्रकार का समन्वय हुआ। वह एक बार फिर अपनी मूलभूत विषय-वस्तुओं और चित्रणों की ओर जाता है जिससे कि वह उनको पूर्ण तथा समन्वित रूप में अंकित कर सके। इस प्रकार वह ऐसी कृति प्रस्तुत करता है जिसमें वह पूर्णता के साथ पूंजीवाद की विषय-वस्तु का उद्घाटन करता है (आरतामोनोवों का व्यापार या काम)। 'क्लिमसामगिन का जीवन' में रूसी बुद्धिजीवियों का भाग्य, क्रान्ति के पूर्व के चालीस वर्षों का कलात्मक इतिहास और मजदूर वर्ग के नेता का चित्र है। 'मेरे विश्वविद्यालय' या 'मुनिवर्सिटियां,' के रूप में उसने आत्मकथा की अपनी त्रयी पूर्ण की।

१९२४ में उसने लेनिन के संबंध में अपना संस्मरण प्रकाशित किया। ...िं... संस्मरणों के बीच इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। लेनिन का

अंकन गोर्की ने बड़ी सूक्ष्मता और गहराई से किया और कई वर्षों के बीच इसकी रचना की। संस्मरणात्मक साहित्य में इसका विशेष स्थान है और सोवियत साहित्य की यह एक अनुपम कृति मानी जाती है। इसमें क्रान्ति के नेता लेनिन का, व्यक्ति तथा राष्ट्रीय नायक के रूप में उसकी विशिष्टताओं का बड़ा वास्तविक तथा सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है।

आरतमोनोवों का व्यापार या काम'

१९२५ में गोर्की का नया उपन्यास 'आरतमोनोवों का व्यापार या काम' प्रकाशित हुआ। जिसमें एक व्यापारी परिवार की तीन पीढ़ियों का इतिहास प्रस्तुत किया गया और इस रूप में रूसी बुर्जुआ : पूर्ण ह्रास की संक्षिप्त कथा प्रस्तुत की गयी। गोर्की ने एक ही रिवार के सौ वर्षों की कथा लिखने की अपनी इच्छा लेनिन के तमने प्रकट की थी। इसी प्रकार तोलस्तोय से भी उसने कहा था : वह एक व्यापारी परिवार की तीन पीढ़ियों को जानता है जहाँ ह्रास : अधःपतन के नियम ने बड़ी बेदर्दी से अपना काम किया है। इन दोनों गोर्की का समर्थन किया और उससे ऐसा उपन्यास लिखने को कहा। ह उपन्यास गोर्की के इसी विचार और इच्छा का परिणाम है।

इस उपन्यास में गोर्की ने पूँजीवाद की समस्या को उसकी पूर्णता के प प्रस्तुत किया और उसकी मानवतावादी आलोचना की। पूँजीवादी तज में मानवीय व्यक्तित्व कैसे विकसित हो सकता है? यह प्रश्न गोर्की कृतियों में कई बार उठाया जा चुका है। किन्तु इस उपन्यास में वह ' प्रश्न पर विचार केवल मानवीय जीवन की एक घटना के आधार (जैसे कि 'रूपेलवगा में') नहीं करता या या एक व्यक्ति के जीवन का तेहास करते हुए (जैसे फमा गर्देयव में) नहीं करता वरन् कई पीढ़ियों विकास के बीच इसका निदर्शन करता है कि परिवार के प्रस्थापक र से लेकर पोते तक के पूँजीवादी समाज के बीच व्यक्तित्व का कैसा ास होता है। इसमें गोर्की उत्तराधिकारियों के बारे में इतना नहीं कहता कि वह तो स्पष्ट ही है वरन् यह दिखाता है कि दूसरों के उत्तराधिकार ' किस प्रकार अधःपतन या ह्रास के शिकार हो रहे हैं। किस प्रकार

१५

अपने आधीन बनाना, दूसरों को गुलाम बनाना। उसकी जो विशिष्टताएं हैं उनका उपयोग वह अपने स्वार्थ तथा जनता के उत्पीड़न के लिए करता है। वह इसलिए जनता के लिए खतरनाक बन जाता है क्योंकि उसकी योग्यता का प्रयोग जनता के विरुद्ध होता है।

धीरे-धीरे उसका धंधा बढ़ता है और वह दूसरों को नौकर रखता है किन्तु उसका जीवन के सर्जनात्मक आधार—परिश्रम से, संबंध टूट जाता है, और उसकी आत्मा इस धंधे की गुलाम बन जाती है, वह पराये परिश्रम पर जीवित रहता है और उसकी इन्सानियत नष्ट हो जाती है।

दूसरी पीढ़ी

फिर भी उसमें थोड़ी इंसानियत बची रहती है। लेकिन उसके बच्चों पर उसके धंधे या कारबार का कुप्रभाव पड़ता है और उनकी आत्मा खोखली हो जाती है। आरम्भ में इन लड़कों में थोड़ी बहुत मानवता है क्योंकि आरम्भ में उनका भी कठोर जीवन बीता और जनता से उनका संबंध बना रहा। किंतु धंधा बढ़ने के साथ-साथ ये गुण शिथिल और दुर्बल हो जाते हैं। उपन्यास के आरम्भ में ये कोमल और सरल व्यक्ति हैं किन्तु बाद में इनका चरित्र गिरने लगता है। पीतर का चरित्र धूमिल होने लगता है। उसकी पत्नी नताल्या का भी यही हाल होता है। जब वह हाथ में रुबेल लेती है तो उसका कोमल चेहरा कठोर हो जाता है और उसके ओठ भिंच जाते हैं। इसी प्रकार पीतर ऊबता है, शराब पीने लगता है और खोखला हो जाता है। यही हाल अलेक्सेई और निकीता का भी है। उनकी मानवीयता समाप्त हो जाती है और धंधे को छोड़ कर वे और कुछ नहीं सोच पाते। उपन्यास के आरम्भ में यही लोग बड़े सरल और कोमल थे। इस प्रकार अपने जीवन के अन्त तक आरतमोनोवों के परिवार की दूसरी पीढ़ी का ह्रास हो जाता है।

तीसरी पीढ़ी

तीसरी पीढ़ी का तो आरम्भ ही ह्रास के बीच होता है। पीतर और नताल्या के जीवन के आरम्भ में तो कम से कम कुछ था, किन्तु इनके बच्चे तो आरम्भ से ही खोखले हैं। येल्ना तातियाना, याकोव आदि में कुछ

नहीं हैं। अरतमोनोवों का वंश समाप्त हो गया। तीन पीढ़ियों के धंधे ने इन लोगों की शक्ति, प्रतिभा, मानवीयता को चूस लिया जो कि उनको जनता के बीच रहने से प्राप्त हुई थी। आरम्भ में वे जनता के ही व्यक्ति थे और जनता के सभी गुण उनमें थे। बाद में धनी होने पर उनका यह सम्पर्क टूट गया और धीरे-धीरे उनकी जन-विशेषताएं लुप्त हो गयीं और यह परिवार किसी के लिए आवश्यक न रह गया और नष्ट हो गया। उपन्यास इसी का प्रदर्शन है और यही इस उपन्यास का मुख्य भाव है। इसका यह भी मुख्य संदेश और भाव है कि पूंजीवाद का नाश अनिवार्य है क्योंकि यह मनुष्य को मनुष्यता से गिरा देता है।

इससे यह न समझना चाहिए कि मनुष्य का ह्रास अवश्यम्भावी और अनिवार्य है। वह अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के द्वारा दम घोंटनेवाले, वातावरण के विरुद्ध क्रान्ति कर, क्रान्ति की शक्ति द्वारा इस घेरे से निकल सकता है। अपने प्रयत्नों द्वारा इस धंधे पर विजय प्राप्त की जा सकती है किन्तु इसके लिए इससे अपने को अलग करना आवश्यक है। पीतर, नताल्या आदि दुर्बल व्यक्ति थे, इससे वे इसकी धारा में बह गये और उन्होंने अपनी मानवीयता को गँवा दिया।

किन्तु नन्हा ईल्या इस घेरे को तोड़ डालता है। जनता से जा मिलता है और स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेता है। इस प्रकार नन्हा ईल्या के रूप में गोर्की 'यह प्रदर्शित करना चाहता है कि बुर्जुआ वातावरण में पला हुआ व्यक्ति भी अपने को विकसित कर सकता है। किन्तु इसके लिए उसमें त्याग और दृढ़ इच्छा शक्ति चाहिए। उसे अपने घेरे को लांघ कर बाहर जाना पड़ेगा। पीतर का दूसरा लड़का ईल्या गोर्की के इसी विचार को प्रकट करता है कि बुर्जुआ वर्ग के श्रेष्ठ लोग जनसम्पर्कहीनता के कारण अपने वर्ग का नाश अनिवार्य समझकर इससे बाहर चले जाते हैं और पूर्ण मानव बनने का अवसर पाते हैं। ईल्या ने यह किया जो फमा गर्देयेव न कर सका और यह उसकी व्यक्तिगत विशिष्टता और दृढ़ इच्छा शक्ति का प्रमाण है क्योंकि वह परिवार, परिस्थिति, व्यक्तिगत संबंध, संस्कार इत्यादि के विरुद्ध होते हुए भी जनता से मिल जाता है।

तीखन व्यालोव

तीखन के माध्यम से गोर्की ने धंधे के प्रति जनता के संबंध को प्रकट किया है। वह किसान है और हर परिस्थिति में किसान बना रहता है और इस धंधे का कभी समर्थन नहीं करता, वह जनता की आत्मा के रूप में प्रकट होता है। वह सदा इस परिवार के साथ रहता है और इसके कार्य-कलापों का मूल्यांकन करता रहता है। वह प्रत्येक महत्त्वपूर्ण घटना के समय प्रकट हो जाता है और उपन्यास में जो भी घटनाएं घटती हैं उनकी मीमांसा करता है।

पूरा उपन्यास पूंजीवादी व्यवस्था की आलोचना है। विषय-वस्तु में इस उपन्यास से मूल रूप में भाव साम्य रखनेवाले गोर्की के दो नाटक 'ईगर बुलिचोव' तथा 'दस्तिगायेव', 'और दूसरे' हैं जिन्हें गोर्की ने १९३२–३३ में लिखा।

क्लिमसम्गिन

१९२० में गोर्की ने अपनी सबसे बड़ी कृति 'क्लिमसम्गिन का जीवन' (चालीस वर्ष) प्रकाशित करना शुरू किया। उसने इसे कथा (पोवेस्त) कहा, किन्तु इसके चार भाग हैं और गोर्की इसे पूर्ण न कर सका। इसमें बहुत से वर्गों की कथा है और समकालीन आलोचना इसको 'एपोस' कहती है और इसे महाकाव्य का गद्यात्मक साहित्यिक रूप मानती है।

गोर्की ने रूस के सामाजिक विकास के चालीस वर्षों का जीवन (१८७० के अन्त से १९१७ तक) चित्रित करना चाहा और उसको उसकी पूर्णता तथा विविधता के साथ अंकित करना चाहा। इसे रूसी जीवन की एनसाइक्लोपीडिया कहा जा सकता है। इसमें देश की महत्त्व-पूर्ण मंजिलें और घटनाएं प्रदर्शित की गयी हैं। १९०५ की क्रान्ति, प्रथम महायुद्ध, लेनिन का १९१७ में पेत्रोग्राद में आगमन, इन घटनाओं की पृष्ठभूमि में उन्नीसवीं शती के अन्त और बीसवीं शती के आरम्भ के विचारों का संघर्ष प्रदर्शित किया गया है। यह कथा 'क्रानिकिल' के रूप में है और पात्रों तथा घटनाओं को क्लिम का विराम एकता प्रदान करता है।

गोर्की एक समय अपनी इस कथा को 'खोखली आत्मा का इतिहास' कहना चाहता था और वास्तव में क्लिम का चित्रण दुर्जुआई खोखली आत्मा का इतिहास है, जिसे केवल अपने से ही प्रेम है। यह उसी ह्रास का परिणाम है कि जिसे गोर्की 'अरतमोनोवों के काम में' प्रदर्शित मे प्रदर्शित कर चुका है। भेद इतना ही है कि अरतमोनोव मिल्कियत वाले आदमी हैं और क्लिमसम्गिन बुद्धिजीवियों का प्रतिनिधि है, वकील है और शासक वर्ग की सेवा करता हुआ खोखला हो जाता है। उसका जीवन मे अपना कोई उद्देश्य नहीं है। वह क्रान्तिकारियों से संबंधित है फिर भी उनसे घृणा करता है। वह लेनिन से भी घृणा करता है। लेनिन के आगमन के साथ उसकी मृत्यु हो जाती है। लेनिन के स्वागत में उमड़ती हुई भीड़ मे वह मर जाता है। यह इस बात का प्रतीक है कि क्रान्ति ने वह सब नष्ट कर दिया जो मनुष्य को ह्रास की ओर ले जा रहा था, जो उसके रास्ते में बाधास्वरूप था और जो जर्जर प्राचीन को बनाए रखना चाहता था। क्लिम के चित्रण के मूल में वह संघर्ष है जो कि मनुष्य के विकास को रोकता है।

गोर्की केवल नकारात्मक चित्रण से ही संतुष्ट नहीं होता वरन् उस शक्ति का चित्रण भी करता है जो मनुष्य का उद्धार करने वाली है और यह है उमड़ती हुई क्रान्ति की शक्ति। इसमें उन पात्रों का भी चित्रण हुआ है, जो रूसी क्रान्ति के संचालक हैं और जो नयी शक्ति और वैशिष्ट्य के प्रतीक हैं। कुतुज़ोव ऐसा ही पात्र और प्रतीक है। उसके व्यक्तित्व का विकास जनहित के युद्ध में होता है और इसी से उसकी प्रतिभा प्रस्फुटित होती है और पूर्ण विकास प्राप्त करती है। वह क्रान्ति का अनुभवी नेता है और क्रान्ति की ओर दृढ़ विश्वास के साथ बिना किसी हिचकिचाहट के अग्रसर होता है।

निकट आती हुई क्रान्ति की भावना इस कथा का मूल आधार है जो इस पूरी रचना और उसकी सर्वथा विभिन्न घटनाओं और पात्रों को एकता प्रदान करती है।

'क्लिमसम्गिन का जीवन' यह वृहत् सामाजिक ऐतिहासिक गद्य

महाकाव्य है, 'एगोर' है जिसमें उन्नीसवीं सदी के अन्त और बीसवीं के आरम्भ के रूसी जीवन के विकास की विभिन्न मंज़िलें—विचार संघर्ष, घटनाएँ आदि—बड़े ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत की गई हैं। इसी से इस रचना का रूसी साहित्य में महत्त्व है।

पत्रकार और प्रचारक गोर्की

गोर्की के कार्यों की विविधता तथा अनेकरूपता ने उसको केवल साहित्यिक लेखक ही न बना रहने दिया। सामाजिक जीवन तथा क्रान्तिकारी क्रियाकलापों से घनिष्ठ रूप में सबद्ध रहने के कारण उसे अनेक विषयों पर क़लम चलानी पड़ी। इसी से गोर्की कलाकार होने के साथ-साथ पत्रकार और प्रचारक भी है और इस रूप में उसका महत्त्व कम नहीं है। देश के जीवन में समय-समय पर होनेवाली सामाजिक राजनीतिक घटनाओं पर उसकी लेखनी महत्त्वपूर्ण विचार प्रकट करती रही और लोगों में प्रेरणा तथा स्फूर्ति भरती रही। उसकी चार सौ से अधिक कलात्मक कृतियाँ हैं। दस हज़ार पत्र हैं और चौदह सौ के क़रीब उसके लेख हैं। पत्रकारिता का यह काम उसके साहित्यिक कार्य के साथ-साथ चलता रहा।

निज़्मी नोवोगोरद से करलेन्को के सुझाव पर वह समारा आया और वहाँ के स्थानीय पत्र में वह रेखाचित्र लिखने लगा। इसी पत्र में उसकी कलात्मक कृतियाँ भी छपीं। इन लेखों में उसने दबे-पिसे अधिकार-हीन लोगों—दफ़्तर में काम करनेवाले, दूकान पर सामान बेचनेवालों का पक्ष लिया।

१९०५–१९०६ में उसने बहुत से राजनीतिक लेख लिखे और विदेशों द्वारा ज़ार को क़र्ज़ दिए जाने की निंदा की। अमेरिका की यात्रा के बाद उसने बहुत से लेख लिखे और वहाँ के बुर्जुआ समाज के दुर्गुणों का उद्-घाटन किया। प्रतिक्रियावाद के वर्षों में उसने 'व्यक्तित्व का नाश' लेख लिखा जिसमें रूसी लेखकों को जनसेवा तथा देश-भक्ति के लिए उद्बोधित किया। अक्तूबर क्रान्ति के बाद उसकी पत्रकारिता का और भी महत्त्व बढ़ा। गहरा देश-प्रेम, समाजवाद का स्वागत, बुर्जुआ समाज की कृतियों

का उद्घाटन, शांति का समर्थन और लड़ाई छेड़नेवालों के प्रयत्नों की निंदा, नव-जीवन के निर्माताओं के परिश्रम की प्रशंसा, ये उसके लेख के मूलभूत विषय हैं।

सोवियत संघ की क्रान्ति के बाद उसने पूरे देश की यात्रा की। इस यात्रा के बाद उसने 'सोवियत संघ निर्माण की ओर' तथा 'हमारी सम्प्राप्तियाँ' पत्र निकाले जिनका उद्देश्य समाजवादी निर्माण की सफलता का चित्र प्रस्तुत करना था।

समाजवाद की प्रतिष्ठा में योग देने के साथ-साथ उसने फ़ासिज़्म पर निर्मम आक्रमण किया क्योंकि वह जानता था कि फासिज़्म की बर्बरता शताब्दियों की संस्कृति तथा मानवीय सम्प्राप्तियों को नष्ट कर देगी। जीवन भर वह फासिज़्म के विरुद्ध आन्दोलन का संचालन करता रहा।

इस प्रकार उसकी पत्रकारिता भी विविधता से विभूषित है। वह सदा सावधान रहा और हर प्रकार के सामयिक और सामाजिक प्रश्नों का उत्तर देता रहा।

गोर्की शब्द का महान् शिल्पी, जीवन का सूक्ष्म ज्ञाता, मानव में अडिग विश्वास रखनेवाला था। उसकी सर्जना ने रूसी जीवन का पूरा-पूरा अभिव्यंजन किया और नवीन आदर्श तथा नवजीवन की प्रतिष्ठा और निर्माण में पूर्ण योग दिया। गोर्की देश-भक्त था, गोर्की मानवता का योद्धा और मानवता का प्रेमी था।

२. गृह-युद्ध के समय का साहित्य तथा जन आर्थिक व्यवस्था का नव-निर्माण

[१९१८-१९२५]

अक्तूबर १९१७ से लेकर फरवरी १९१८ के बीच सोवियत शासन बड़े वेग से सारे देश मे फैल गया। फिर भी उसे शांति के साथ विकसित होने का अवसर न मिला क्योंकि जितनी ही सोवियत नव-व्यवस्था जनता के बीच व्यापक हुई उतना ही अधिक अपदस्थ शोषक वर्ग ने उसका जी जान से विरोध किया। साम्राज्यवादी राष्ट्रो की सेनाओं ने देश पर आक्रमण कर दिया और श्वेत गार्डों का विद्रोह भी शुरू हो गया। विदेशी हस्तक्षेपकर्ताओं का समर्थन पाकर प्रतिक्रियावादी क्रान्ति के विरुद्ध अपनी सेनाओं का सगठन करने लगे। गृह-युद्ध शुरू हो गया।

इस प्रकार विदेशी हस्तक्षेप और गृहयुद्ध की अत्यन्त विषम और भयानक परिस्थिति के बीच सोवियत राष्ट्र का जन्म हुआ और जन्म लेते के साथ ही उसे अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्राणों की बाज़ी लगाकर लड़ना पड़ा। परिस्थितियों के कारण शांतिपूर्ण वातावरण के बीच देश का निर्माण असभव था। फलतः राष्ट्र 'युद्धशील साम्यवाद' की नीति चलाने को बाध्य हुआ। इस समय का नारा था—'सब कुछ क्रान्ति की विजय के लिए'। सारे देश का जीवन क्रान्ति की विजय के लिए चालित युद्ध के आधीन कर दिया गया। सारा देश फौजी कैंम्प मे परिवर्तित हो गया और अनेक कठिनाइयों के बीच—भूख, ठंड, नष्ट आर्थिक जीवन और युद्ध तथा प्रतिक्रियावादियो की तोड-फोड़ की नीति के बीच—सोवियत शासन को विजय मिली। विदेशी हस्तक्षेपकर्त्ता देश के बाहर निकाल फेंक दिए गये और श्वेत गार्डों का विद्रोह कुचल दिया गया। अब समाजवादी क्रान्ति का अपना महत्त्वपूर्ण कार्य—देश के पुनरुत्थान तथा नव-निर्माण

का कार्य—शुरु हुआ। जनता समाजवादी संस्कृति के निर्माण में लगी। अतीत की सांस्कृतिक सम्प्राप्तियाँ पूरे समाज की संपत्ति बन गयी और सारी जनता को सुलभ हो गयी। ज़ारशाही से मुक्त की गई जनता को सोवियत शासन तथा कम्यूनिस्ट पार्टी समाजवादी संस्कृति तथा शांतिमय निर्माणकारी कार्य की ओर ले चली।

अक्तूबर क्रान्ति ने साहित्य के सामने नयी समस्याएँ प्रस्तुत कीं। अब यह आवश्यक था कि सोवियत लेखक जन-समूह के क्रियाकलाप को प्रतिबिम्बित करें, उसके समाजवादी निर्माण के आदर्शों को अभिव्यक्त करें और नव-जीवन निर्माण के मार्ग को अपनी भावनाओं से प्रकाशित करें।

फिर भी सोवियत साहित्य के निर्माण का काम शून्य में नहीं शुरू हुआ। इसके पहले रूसी क्लासिक साहित्य मानवतावादी साहित्य की परंपरा आरम्भ कर चुका था। इन्हीं सर्जनात्मक सिद्धान्तों के सोवियत युग ने प्रोलितारियन साहित्य का माध्यम बनाकर क्रान्तिकारी कानुन-नग से सिक्त कर दिया। सोवियत साहित्य के विकास तथा गतिविधि को सचालित तथा निश्चित करनेवाले थे—मार्क्सवाद लेनिनवाद की शिक्षा, साहित्य की पार्टीवादिता के विषय में लेनिन की शिक्षा तथा कम्यूनिस्ट पार्टी के क्रियाकलापों का अनुभव। इसी प्रकार गोर्की की रचनाओं में धीरे-धीरे 'कम्यूनिस्ट' का चित्र उभरा और मायाकोव्स्की ने अपनी प्रतिभा कम्यूनिज़म और सोवियत काव्य की सेवा में अर्पित कर दी।

गृह-युद्ध के मोर्चे पर अनेक सोवियत लेखक अपने देश की रक्षा के लिए और अपने नवीन आदर्शों की प्रतिष्ठा के लिए लड़े। गृह-युद्ध के अन्त पर इन लेखकों के अनुभव साहित्य में अभिव्यक्त हुए। इन लेखकों में मुख्य हैं—शोलोखोव, फ़ादेयेव, अन्तोकोल्स्की, गोरबातोव, कटेव, सिमोनोव कान्स्टैन्टिन तथा अन्य। । इन लेखकों की कृतियों में सोवियत कला के सर्जनात्मक सिद्धान्तों का विकास हुआ।

.. अक्तूबर क्रान्ति के बाद सोवियत साहित्य का नये साहित्य

. आरम्भ हुआ। गृह-युद्ध और समाजवादी नवनिर्माण इस

साहित्य की मुख्य विषय-वस्तु के रूप में प्रकट हुए और देश में रहनेवाली सभी जातियों की मित्रता पर आधारित देश प्रेम की भावना का नया रूप सामने आया और उसे नया महत्त्व प्राप्त हुआ।

अक्तूबर क्रान्ति ने लेखकों से सबसे पहले यह प्रश्न पूछा कि वे देश के जीवन के इस महत्त्वपूर्ण क्षण में किस ओर हैं, किसके साथ हैं? मायाकोव्स्की ने लिखा कि "क्रान्ति में हिस्सा लूँ या न लूँ मेरे लिए प्रश्न ही नहीं उठता। क्रान्ति मेरी है।' इसी प्रकार गोर्की के अपने बारे में कुछ न कहने पर भी उनका पक्ष स्पष्ट ही है। इसी प्रकार क्रान्ति के प्रति अन्य लेखकों का रुख, सिराफिमोविच, गिदकोव, द्मगिन्यान, असेयेव, ऐसेनिन थोड़े बाद में अ० तोल्स्तोय भी, स्थिर था। यह सब क्रान्ति के तरफदार थे।

किन्तु कुछ लेखक क्रान्ति से त्रस्त और भयभीत थे। अपना देश छोड़ कर विदेश चले जाने वाले प्रवासी रूसी लेखक इन्हीं में थे। इनमें से कुछ अपने जीवन के अन्त में स्वदेश लौट आए (कुप्रिन, स्कितालेत्स, अलेक्सी तोल्स्तोय। बूनिन, बल्मोन्त, अन्द्रेयेव प्रवासी लेखक ही बने रहे)। देश में रह जानेवाले लेखकों में भी बहुत ऐसे थे जो कि सहसा क्रान्ति को न समझ सकें। बाद में उनके विचारों में धीरे-धीरे परिवर्तन हुआ और फिर वह क्रान्ति को समझ सके और उसके पक्ष में हो गये। फिर भी उनकी भावना क्रान्ति के सामाजिक आधार तथा समस्याओं के सम्बन्ध में स्पष्ट न थी। ऐसे लेखकों को रूसी में 'सहचारी पत्तचिक' कहा गया।

इस प्रकार क्रान्ति के आरम्भिक वर्षों की साहित्यिक परिस्थिति विविधता और विषमता से पूर्ण थी। अपने को प्रगतिशील कहनेवाले साहित्यिक संगठन में कुछ ऐसे थे जो नवीन समाजवादी कला के रूप और संगठन को ठीक-ठीक नहीं समझ पा रहे थे। 'फ्यूचरिस्ट' (या भविष्यवादी) ऐसे ही थे। अतीत की संस्कृति के प्रति उनके विचार संहारकारी थे। इसी प्रकार 'प्रोलेत्कुल्त' (सर्वहारा संस्कृति के समर्थक) वाले अतीत की संस्कृति का निराकरण कर रहे थे। पार्टी नियमन संगठन में न बँधकर और उससे मुक्त वे अपना स्वतन्त्र अस्तित्व चाहते थे और यह चाहते थे कि शासन उनके कार्यव्यापार में हस्तक्षेप न करे। 'कुज्नित्स'

साहित्यिक सगठन के विचार भी प्रोलेत्कुल्त के निकट थे। इस प्रोलेत्कुल्त का सगठन प्रान्तो मे भी था और नवयुवकों पर उसका बड़ा व्यापक प्रभाव था। सोवियत शासन तथा कम्यूनिस्ट पार्टी ने साहित्य तथा जनता पर उसके प्रभाव को घातक माना और उससे उसका सघर्ष हुआ। लेनिन ने प्रोलेत्कुल्त पर आक्षेप किया। उसके प्रतिक्रियावादी रूप की आलोचना की और स्वतत्र नहीं, वरन् कम्यूनिस्ट पार्टीवादी साहित्य की रचना को आवश्यक और अच्छा बताया।

इस प्रकार सोवियत साहित्य का विकास आरम्भ से ही कई प्रकार की विचारधाराओं से युद्ध और विरोध के बीच हुआ। इनमें से राजनीति से तटस्थता 'बुर्जुआई व्यक्तिवादिता' तथा अतीत के सास्कृतिक उत्तराधिकार के निराकरण का सिद्धान्त सोवियत कलात्मक लक्ष्य के सर्वथा प्रतिकूल थे। सोवियत कला तथा साहित्य ने इनके उन्मूलन का पूरा-पूरा प्रयत्न किया।

गृह-युद्ध की विषमता और गभीरता के बीच स्वाभाविक ही था कि सोवियत साहित्य प्राचीन उत्पीड़क व्यवस्था का विरोध और नवीन समाजवादी व्यवस्था की स्थापना और समर्थन करता। इस विरोध और समर्थन से ही सोवियत साहित्य का मूल स्वरूप निर्धारित होना है। जीवन और साहित्य में इस नवीन व्यवस्था की स्थापना जनता के युद्ध और आत्म-बलिदान द्वारा संभव हुई। साहित्य जनता की चेतना से पूँजीवादी सस्कारों के उन्मूलन और समाजवादी भावना के बीज-वपन का सतत् प्रयत्न करता रहा। फलतः सोवियत साहित्य प्राचीन पूँजीवादी व्यवस्था की सभी प्रकार की प्रच्छन्न और प्रकट विचारधाराओं का विरोध करता रहा जो समाजवादी सस्कृति और कला के निर्माण मे बाधा डाल रहे थे। कल्पनावाद, रूपवाद (फार्मलिज़्म), फ़्यूचरिज़्म (भविष्यवाद) साहित्य प्रतीकवाद, सौन्दर्यवाद, प्रोलेत्कुल्त आदि का जो विरोध हम सोवियत साहित्य के प्रत्येक युग में देखते हैं उसके मूल में यही भावना है कि ये विचार-धाराएँ पूँजीवाद का प्रच्छन्न रूप हैं और समाजवादी विकास के लिए अत्यन्त घातक हैं। इन धाराओं का विरोध कर सोवियत साहित्य ने

समाजवादी कला और समाजवादी संस्कृति के विकास का पथ प्रशस्त किया।

इस प्रकार राजनैतिक और विचारात्मक संघर्ष के बीच सोवियत साहित्य की मुख्य विशिष्टताएँ निर्मित और दृढ हुई। यथार्थता का उसके क्रान्तिकारी गत्यात्मकता के बीच अभिव्यंजन, क्रान्ति के समर्थक सिपाही और योद्धा के रूप मे सोवियत व्यक्ति का चित्रण, क्रान्ति का मानवता के इतिहास की महत्वपूर्ण मंजिल के रूप में चित्रण, क्रान्ति-विरोधियों के विचारों और कारनामों का पर्दाफाश करना और उनको देशद्रोही, जनहित घातक बताकर उनकी आलोचना।

क्रान्ति के आरम्भिक वर्षों की कविता

कविता इस समय के मुख्य साहित्यिक रूप या प्रकार के रूप मे प्रकट हुई। फिर भी इसका रूप पूरा-पूरा सुव्यवस्थित नही था क्योंकि जो नवीनताएँ अभी-अभी जीवन मे प्रकट हुई थी और उनके संबध मे जो संस्कार बन रहे थे वे अभी तक पूरे-पूरे हृदयंगम नही किये जा सके थे, अपनाए नही जा सके थे। लेखकों ने इन भावों को मोर्चे पर या तत्संबंधी कार्यों के बीच प्राप्त किया था। अभी वह अनुभव भी प्रौढ नही हो सका था जिससे कि नवीन जनता और उसके आपस के नवीन संबधो को व्यापक, विशद रूप मे अभिव्यक्त किया जा सकता। स्वतः इन वर्षों का असामान्य रोमांटिक रूप काव्य की ओर प्रेरित कर रहा था और जीवन को कुछ-कुछ आत्मपरक भावात्मक रंगों से रंग रहा था। आन्दोलन की व्यापकता ने—जिसने कि जीवन मे गहरा परिवर्तन उपस्थित कर दिया—काव्य तथा साहित्य को रोमांटिक भावना से रंग दिया। स्वत. 'प्रोलेत्कुल्त' और 'कुज़िनत्स' के बहुत से कवि क्रान्ति का उसकी स्थूल विशेषताओं से हीन भावात्मक तथा सूक्ष्म चित्रण करते रहे थे।

इन वर्षों मे सोवियत काव्य क्षेत्र में ये कवि आए-अ० बेजिमेन्स्की, एम० गलोदनी, वे० काज़िन, वे० अलेक्सन्द्रोव्स्की तथा अन्य। इन सब मे सोवियत साहित्य के विकास की दृष्टि से तथा नवीन व्यक्ति के चित्रण की दृष्टि से मायाकोव्स्की की सर्जना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अपने नाटकों,

कविताओं तथा प्रचारपत्रों में 'क्रान्ति' इसी शक्ति और उसके सामाजिक सार तत्व को उसने अभिव्यक्ति दी। उसकी इस समय की कविताओं में उसका गहरा रोमांटिक रंग स्पष्ट है।

देम्यान बेदनी

इन वर्षों में देम्यान बेदनी का क्रियाकलाप व्यापक रूप में विकसित हुआ। उसका प्रचारात्मक महत्व है। उसकी सर्जना क्रान्तिकारी विचारों से परिपूर्ण थी। लेनिन और स्तालिन ने उसकी कविताओं को बड़ा ऊँचा स्थान प्रदान किया। लेनिन ने उसकी सर्जना के संबंध में कहा "उसकी सर्जना वस्तुतः प्रोलितारियत् की है। वह श्रमिक वर्ग के अत्यन्त निकट है जो उसे अच्छी तरह समझ लेगा।" गृह युद्ध के वर्षों में उसने कविता की तीस पुस्तकें लिखीं जिनका बड़ा व्यापक प्रचार हुआ। उसके गीतों, कथाओं, कविताओं के द्वारा जन-समाज के, विशेषतया किसानों के बीच क्रान्तिकारी विचार बड़े सजीव रूप में फैले और इसी में उसका महत्व है। १९२३ में वह लाल झंडे के आर्डर से पुरस्कृत हुआ।

देम्यान बेदनी ने अपनी सारी शक्ति सोवियत जनता के शान्तिमय निर्माणकारी परिश्रम के चित्रण में लगाई। वह छोटे से छोटे तथ्य को भी समाजवादी समाज के निर्माण की दृष्टि से आकता है और उसे महत्व देता है। इसी से वह नवीन की ओर बड़े ध्यान से उन्मुख होता है। उसकी कविता में व्यंग्य भी बहुत है।

अपनी रचनाओं में उसने सभी प्रकार की समकालीन घटनाओं पर अपनी लेखनी चलाई। साहित्यिक रूपों की विविधता, विषय-वस्तु की समृद्धि, क्रान्ति की यथार्थता का अंकन, व्यंग्य की प्रतिभा, रूसी भाषा का अच्छा ज्ञान यह सब उसकी सम्प्राप्ति के मूल में है और इन सबने उसे बड़ा लोकप्रिय बना दिया। एक समय स्तालिन ने उसकी आलोचना भी की थी क्योंकि स्तालिन के अनुसार वह रूस की अतीत की संस्कृति को ठीक तरह से न समझ सका था। द्वितीय महायुद्ध के समय भी उसकी वाणी बराबर सुनाई देती रही। उसने 'स्तेपान जवग रोदनी' प्रबन्ध काव्य भी लिखा। इसी प्रकार उसके काव्य 'मुख्य सड़क' की भी बड़ी चर्चा

रही। इसमें उस असंख्य प्रोलितारियत का वर्णन है जो 'मुख्य सड़क' पर विश्व-इतिहास के प्रांगण में अब मार्च कर रहा है जिसके साथ क्रान्ति चल रही है और जिसके पैर की धमक से क्रान्ति के शत्रु हताश हो रहे हैं।

याकोवलेविच ब्र्यूसोव

प्रतीकवादियों के समुदाय से क्रान्ति की ओर अपने मन से आनेवाले कवियों में ब्र्यूसोव और ब्लाक बड़े प्रसिद्ध हैं। ब्र्यूसोव के संबंध में गोर्की ने लिखा था कि "यह रूस में सबसे सुसंस्कृत लेखक है।" ब्र्यूसोव कवि, गद्य लेखक, अनुवादक, विद्वान अनेक रूपों में हमारे सामने आता है। वह सारे जीवन रूसी संस्कृति की सेवा में लगा रहा और सोवियत शासन ने उसका आदर सम्मान भी बहुत किया।

आरम्भ में ब्र्यूसोव के काव्य में व्यक्तिवादिता, रहस्यवाद तथा अन्य संसारों की खोज के नाम से यथार्थता से विरक्ति, बड़े जोर के साथ अभिव्यक्त हुई। इसके काव्य में प्रतीकवाद की सभी विशेषताएँ थीं किन्तु उसकी ऐतिहासिक तथा सामाजिक दृष्टि की व्यापकता ने देश की वस्तु स्थिति उसे समझा दी और वह क्रान्ति का पक्षपाती बन गया। वह उन लोगों का प्रतिनिधि था जो कि शासक वर्ग में थे किन्तु जिनमें जनता से मिल जाने की शक्ति और हिम्मत थी।

सामाजिक कार्यकलाप के साथ उसका सर्जनात्मक कार्य भी चलता रहा। उसके कई कविता संग्रह निकले। क्रान्ति के बाद उसकी सर्जना की मुख्य विषय-वस्तु स्वदेश रहीं और वह अपने देश की महानता और भव्य भविष्य के विषय में लिखता रहा। वह क्रान्ति के महत्व को ठीक तरह समझ गया था और उसका विश्वास था कि क्रान्ति वह घटना है जो देश को महानता की ओर ले जायगी। उसकी कविताओं में सोवियत देश-भक्ति की मूलभूत विशिष्टताएँ बड़ी सुन्दरता के साथ अभिव्यक्त हुई हैं। देश-भक्ति की भावना, प्राचीन संस्कृति से गहरी सहानुभूति, प्राचीन पर नवीन व्यवस्था की विजय का अडिग विश्वास ब्र्यूसोव की इस समय की कविताओं की मुख्य विशिष्टताएँ हैं। ब्र्यूसोव उच्च साहित्य

कला इंस्टिच्यूट का रेक्टर था और १९१९ से कम्यूनिस्ट पार्टी सदस्य भी।

अलेक्सान्द्र अलेक्सान्द्रोविच ब्लोक (१८८०-१९२१)

जब ब्लॉक की मृत्यु हुई तो मायाकोव्स्की ने उनके बारे में यह लि "ब्लॉक की काव्यात्मक सर्जना से पूर्ण यह युग है। ब्लॉक का समकाल काव्य पर बहुत बड़ा प्रभाव है।" क्रान्ति के पूर्व के महान् कवि के वि में कहे गये क्रान्ति से महान कवि के ये शब्द सर्वथा उचित हैं। अत्यधि काव्यात्मक संवेदना, उच्च काव्य कौशल, सत्यानुभूति, देश-भक्ति इ सब ने उसकी सर्जना को रूसी काव्य के इतिहास में अभूतपूर्व बना दि और आज भी उनके कारण उसके काव्य का महत्त्व बना हुआ है।

रूसी संस्कृति के महान् व्यक्तियों के समान ब्लॉक ने संपूर्ण हृदय क्रान्ति का स्वागत किया और उसका गायक बना। उसकी 'बारह कविता ऐसी ही है। उसने कहा कि "सारे शरीर से, पूर्ण हृदय से, सार चेतना के साथ क्रान्ति को सुनो।"

उसकी रचनाओं में 'बारह' का अत्यधिक महत्त्व है। क्रान्ति के वेग तथा उन दिनों की प्रचण्ड गति और प्राचीन के अनिवार्य नाश, भविष्य के पूर्ण विश्वास का पूरा-पूरा आभास इस कविता से मिल जाता है। बारह अध्यायों की यह कविता जीवन के विविध पक्षों के चित्रों से संयुक्त है और फिर भी इसमें उद्देश्य की एकता है। इसमें ईसा मसीह का बारह व्यक्तियों के आगे-आगे चलना क्रान्ति की पवित्रता में ब्लाक के अडिग विश्वास को प्रकट करता है। इस कविता में यथार्थवाद से विषय-वस्तु के माध्यम से कवि की क्रांति की भावना प्रकट हुई है। उसी भावना को उसने अपने लेख 'बुद्धिजीवी और क्रान्ति' में प्रकट किया है। उसने कहा कि "क्रान्ति बर्फीले तूफान की तरह है जो अपने साथ नवीन और अप्रत्याशित को लाती है वह बहुतों को धोखा देती है। वह अपने भँवर में बहुतों को पंगु बना देती है और अयोग्य को सूखे तट पर पहुँचा देती है। किन्तु उससे उसकी धारा की दिशा नहीं बदलती और न वह गंभीर घोष, जो इससे पैदा होता है। यह घोष हर हालत में सदा महान् के बारे में होता है।"

सोवियत आलोचकों ने इस कविता की आलोचना यह कह कर की कि जीवन का केवल रोमांटिक दृष्टिकोण से ग्रहण सच्चाई तथा ईमानदारी से युक्त होते हुए भी अपने में पूर्ण पर्याप्त नहीं है और ईसा के चित्र के कारण क्रान्ति के उद्देश्य को वह यथार्थता नहीं मिल पाती है जो कि जनता के सामने स्पष्ट थी। उसकी सजना क्रान्ति का यथार्थवादी अंकन नहीं कर सकी और इसलिए एकांगी है। फिर भी क्रान्तिकारी रोमांटिसिज़्म का सत्य और शक्ति ने उसे जीवन के सत्य से परिचित करा दिया और उसने इसका अंकन इतनी ईमानदारी से किया कि उसका सारे रूसी काव्य में बड़ा महत्त्व है।

एस० एसेनिन (१८९५-१९२५)

एसेनिन जटिलताओं और विषमताओं से युक्त कवि है। गोर्की ने उसके बारे में लिखा कि "सिरगेई एसेनिन आदमी नहीं वरन् प्रकृति द्वारा केवल काव्य के लिए गढ़ा गया माध्यम है—संसार के सभी प्राणियों के प्रति प्रेम के प्रदर्शन के लिए।" उसे अपने देश और अपने देश की प्रकृति से वैसा ही प्रेम था जैसे बच्चे को अपनी माँ से होता है। उसकी प्रगीतात्मक प्रतिभा की पूर्ण अभिव्यक्ति रूसी प्रकृति के चित्रण और प्रेम-गीतों की सूक्ष्मता में हुई। उसने मानवीय भावनाओं के संसार की बड़ी गहरी सरल और सूक्ष्म अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। आनन्द, उल्लास, देश के प्रति प्रेम, प्रेम और शोक, तथा देश की प्रकृति का सटीक अंकन एसेनिन की अपनी विशेषता है। फिर भी जीवन तथा परिस्थिति की विषमताओं का उसके ऊपर का प्रभाव भी पड़ा। वह पुरानी दुनिया का पूरा-पूरा परित्याग नहीं कर सका और सामाजिक जीवन के प्रति उसका रोमांटिक दृष्टिकोण बना रहा। यद्यपि वह देश के उभरते हुए नये जीवन में हिस्सा लेना चाहता है फिर भी वह जीवन को ठीक-ठीक हृदयंगम न कर सका और उसमें ह्रासकारी प्रवृत्ति का उदय हुआ। अत्यधिक रसिक जीवन और काव्य में रसिकता का मादक समर्थन इन सबने मिल-जुलकर एसेनिन के नाम को रसिकता का पर्याय बना दिया। मदिरा की अल्पना और मदिरालय के कोलाहल की विषय-वस्तु ने इसके काव्य को कुछ पंकिल कर दिया।

मास्को में वह इसी राग-रंग में डूब गया।

फिर भी रूसी प्रकृति तथा स्वच्छ और आलोकपूर्ण प्रेम के उसके उत्तम प्रगीत सदा जीवित रहेंगे। इन वर्षों में नाट्य साहित्य का भी विकास हुआ। रंगमंच पर अधिकतर (रोमांटिक तथा क्रान्तिकारी रंग लिए हुए) क्लासिकल नाट्यकृतियाँ बड़ी लोकप्रिय रहीं। किन्तु इनके साथ ही यथार्थता का अंकन करनेवाली नाट्यकृतियों का भी विकास हुआ। इन्हीं वर्षों में त्रिनेव्स्की का नाटक-रचना के क्षेत्र में प्रवेश हुआ। इन्हीं वर्षों में लूनचार्स्की, बिल्लबेलोत्सेरकोव्स्की, आर्स्की, नेवेरोव आदि के नाटक सामने आये।

गृह-युद्ध की विविधता और पारस्परिक विरोधी परिस्थिति के बीच ही सोवियत साम्य की विशेषताएँ प्रस्फुटित होने लगीं। इन्हीं वर्षों में मूलभूत विषय-वस्तु, समस्याएँ तथा चित्रण लक्षित और प्रस्तुत किये जाने लगे जिनको कि सोवियत साहित्य के आगे आनेवाले युगों में विकसित किया गया। गृह-युद्ध के वर्षों के साहित्य ही में नये नायक का जनता के उद्धारक, क्रान्ति के योद्धा का चित्र उभरने लगा था और सर्जनात्मक परिश्रम उसका विषय-वस्तु बन गया। परिश्रम के विषय-वस्तु के साथ ही शान्ति के विषय-वस्तु भी साहित्य में प्रविष्ट हुई। सोवियत शासन का आरम्भ ही 'शान्ति की घोषणा' से हुआ था। परिश्रम और शान्ति की विषय-वस्तुएँ अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण हैं और आपस में इतनी घनिष्ठता से सम्बन्धित हैं कि एक दूसरे से अलग नहीं की जा सकतीं। क्रान्ति से पहले यह विषय वस्तुएँ गोर्की, मायाकोव्स्की, सिराफिमोविच आदि की रचना में मिलती हैं और क्रान्ति के बाद जनता के स्वतन्त्र हो जाने पर इनको नया ही महत्त्व प्राप्त हुआ और यह मुक्त जनता के नवीन आदर्शों के प्रति अथक प्रयत्न का द्योतक बन गयीं।

प्राचीन और नवीन का युद्ध तथा लाल सेना की विजय—इन सबका अंकन और अभिव्यंजन गृह-युद्ध के युग के साहित्य में मिलता है। सर्वहारा की तानाशाही और सामाजिक सम्बन्धों की जटिलता से—जिनके बीच लेखकों ने रचना की—(नयी विषय-वस्तु से संयुक्त) सोवियत

य के रूप-गठन का प्रभावित होना स्वाभाविक ही था।

इसके साथ ही अब साहित्य मे समाजवाद का विचार, नये नायक वन—समाजवाद के योद्धा तथा जीवन को उसके क्रान्तिकारी विकास च प्रतिबिम्बित करने का प्रयत्न प्रबल होने लगा यद्यपि यह अकन प्रतिबिम्ब अभी अपनी आरम्भिक अवस्था ही मे था। गृह-युद्ध के वर्षों में समाजवादी यथार्थवाद के विकास की परिस्थितियाँ भी होने लगी।

सके साथ ही साहित्यिक जीवन को सगठित करने का कार्य भी चलने इस क्षेत्र मे गोर्की का काम बड़ा महत्त्वपूर्ण है। उसने लेखको को न किया और नयी प्रतिभाओं के विकास मे बड़ी सहायता दी। बहुत वयस्त-लेखको को उससे प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला है। गोर्की १८ मे अखिल विश्व-साहित्य-प्रकाशन सगठित किया जिसने कि लेखकों की सर्वोत्तम कृतियो का अनुवाद किया। इन्ही वर्षों मे र्की भी विभिन्न सास्कृतिक क्षेत्रो मे काम करता दिखाई पड़ता उसकी कृतियाँ (नाटक, लेख आदि) सामने आती है। इस गृह-युद्ध के वर्षों मे ही सोवियत साहित्य के चारो ओर ऐसी प्रतिभाएँ हो गई जिन्होंने आगे चलकर शक्तिशाली सास्कृतिक आन्दोलन बढाया जिससे कि देश का सामाजिक, साहित्यिक जीवन ा।

र्थिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण तथा पुनर्स्थापन की ओर

-युद्ध समाप्त हुआ और देश मे पुनर्निर्माण का काम शुरू हुआ। क्रान्ति के लिए' का नारा 'सब कुछ राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के नारे मे बदल गया। मोर्चे से सोवियत-लेखक लौटे और वे लड़ाई अनुभव तथा साहसपूर्ण कार्यों की कथा कहना चाहते थे। इन्ही समाजवादी व्यक्ति की नयी विशिष्टताएँ प्रस्फुटित और विकसित -युद्ध की करुणा और रोमांटिसिज्म की जगह पुनर्निर्माण के ठोस ले ली।

सबसे साहित्य में नयी प्रवृत्तियो और नये लेखको का उदय हुआ।

साहित्य के विकास का नया युग शुरू हुआ। सोवियत साहित्य समाजवा
निर्माण के प्रधान तत्त्व के रूप में प्रकट हुआ और वह देश के जीवन के न
युग का अभिव्यंजन करने लगा और स्वतः परिवर्तित होने लगा। अ
कविता के साथ गद्य के प्रकार—कहानी, कथा, उपन्यास भी प्रस्तु
किये गये। पत्र भी निकलने लगे (पुस्तक और क्रान्ति—१९२०
प्रेस और क्रान्ति १९२१) और इससे प्रकाशन-कार्य और भी बढ़ा
साहित्यिक जीवन नये रास्ते पर चलने लगा।

इन वर्षों के साहित्य में दो विषय-वस्तु प्रमुख हैं। गृह-युद्ध की विषय
वस्तु (सन् १९२० से) और विनाश के बाद देश के पुनर्निर्माण में शांति
पूर्ण परिश्रम या सर्जना की विषय-वस्तु (ग्लारकोव का उपन्यास 'सीमेंट'
तथा अन्य लेखकों की कृतियाँ)। इस नयी सजीव, अनेक रूपात्मक सामग्री
का उपयोग करते हुए सोवियत-साहित्य ने नये सोवियत-व्यक्ति के निर्माण
और उसके विकास का चित्र प्रस्तुत किया और उसके नये आदर्श तथा
प्रेम और परिश्रम के प्रति उसके नये दृष्टिकोण का अंकन किया। साथ
ही सोवियत नागरिक के गहरे देश-प्रेम का भी इस साहित्य ने नये रूप में
अभिव्यंजन किया। सन् १९३० के वर्षों के साहित्य में मायाकोव्स्की का
कृतित्व इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। उसके मुक्तक प्रगीतों में नये
नायक का स्पष्ट चित्र उतरा है और उनमें विकास के मार्ग की बाधाओं
को दृढ़ता से कुचल देने के प्रयत्न का स्पष्ट अंकन है।

कलात्मक साहित्य के क्षेत्र में पार्टी की राजनीति

नवीन राजनीतिक आर्थिक व्यवस्था की ओर संक्रमण के समय जब
कि पूँजीवादी और बुर्जुआ वर्ग की विचारधारा का पूरा-पूरा अन्त नहीं
हुआ था कम्यूनिस्ट पार्टी का बुर्जुआ विचारधारा के प्रति सतर्क रहना
स्वाभाविक ही था। यह और भी अनिवार्य था क्योंकि कम्यूनिस्ट पार्टी
नवयुवकों के ऊपर इसके प्रभाव को अत्यन्त घातक समझती थी। इसलिए
कम्यूनिस्ट पार्टी और उसके नेताओं ने प्राचीन और नवीन विचारधारा
के साहित्यिक संघर्ष में खुल कर हिस्सा लिया। चूंकि शासन का अधिकार

अब उन्हीं के हाथ में था इसलिए उन्होंने साहित्य को पूरा-पूरा पार्टीवादी बना दिया। प्रेस, प्रकाशन तथा साहित्य-संबंधी प्रश्नों पर पार्टी के ग्यारहवें, बारहवें और तेरहवें सम्मेलन में बड़ी बहस हुई और प्रतिक्रियावादी साहित्य के विरुद्ध संघर्ष तथा समाजवादी साहित्य की रचना का निश्चय हुआ। पार्टी के ग्यारहवें सम्मेलन (१९२२) के प्रस्ताव में कहा गया कि सम्मेलन प्रतिक्रियावादी साहित्य के प्रभाव को रोकना और नवयुवकों की कम्यूनिस्ट शिक्षा को आवश्यक समझता है। पार्टी के बारहवें सम्मेलन (१९२३) ने यह कहा कि सोवियत रूस में कलात्मक साहित्य की सामाजिक शक्ति इतनी बढ़ गई है कि पार्टी के लिए अब साहित्य के संचालन और निर्देशन के प्रश्न पर विचार करना ही होगा और उसे अपने हाथ में लेने का संकेत किया।

साहित्य के विकास के संबंध में कलात्मक साहित्य के क्षेत्र में पार्टी के नीति-प्रस्ताव में (१८ जून १९२५) बहुत कुछ कहा गया। उसमें यह कहा गया कि जैसे वर्गीय समाज में वर्गीय संघर्ष नहीं रुकता उसी प्रकार साहित्यिक मोर्चे पर भी यह संघर्ष बराबर चलता रहता है। वर्गीय समाज में तटस्थ कला न होती है और न हो सकती है, यद्यपि कलात्मक साहित्य का या कला का वर्गीय रूप राजनीति की अपेक्षा अत्यधिक अनेक रूपात्मक होता है। सोवियत-साहित्य के विकास के लक्ष्य को निर्धारित करते हुए प्रस्ताव में कहा गया कि उसे धीरे धीरे लेखकों को प्रोलितारियत् विचार-धारा के रास्ते पर ले जाना है और लोगों को सावधानी के साथ धीरे-धीरे कम्यूनिस्ट विचारधारा की ओर अग्रसर करना है। प्रस्ताव ने अनेक साहित्यिक विचारधाराओं के बीच स्वतन्त्र प्रतियोगिता की बात कही और यह कहा कि सोवियत-साहित्य को ऐसा कलात्मक रूप प्राप्त करना चाहिए कि वह लाखों-करोड़ों की समझ में आ सके। कम्यूनिस्ट पार्टी के इस प्रस्ताव का सोवियत-साहित्य के विकास पर बड़ा गंभीर प्रभाव पड़ा और इसने उसके संगठनात्मक रूप को निर्धारित किया।

साहित्य में वर्ग-संघर्ष

सांस्कृतिक क्रान्ति के रूप में प्रकट होनेवाले इस सोवियत-साहित्य

का आदर्शवादी विचारधारा से विरोध और संघर्ष अवश्यम्भावी था और हुआ। क्रान्ति के पहले गोर्की पर इस विचारधारा ने जो आक्षेप किया था उसकी चर्चा की जा चुकी है। क्रान्ति के बाद भी यह द्वन्द्व चलता रहा किंतु अब परिस्थिति बदल गयी थी। अब वे सोवियत-लेखकों पर सीधा आक्षेप नहीं कर सकते थे। बुर्जुआ प्रेस बंद कर दिये गये थे। अब कई साहित्यिक गोष्ठियाँ प्रकट हुईं जिसमें साहित्य संबंधी अनेक वाद प्रचारित किये गये, जिनमें कुछ सोवियत साहित्य के दृष्टिकोण के प्रतिकूल थे। इस प्रकार 'सेरापीयोनोव भाई' का ग्रूप या समुदाय १९२१ में सामने आया जिसने साहित्य और सामाजिक उत्तरदायित्व के संबंध को आवश्यक नहीं ठहराया और साहित्य को राजनीति से मुक्त कहा। यह मतवाद स्पष्ट ही लेनिन की 'साहित्य की पार्टीवादिता' के विरुद्ध था और कम्यूनिस्ट पार्टी और प्रेस दोनों में इसकी कटु आलोचना की गयी।

इसी समय अन्य साहित्यिक समुदाय और संगठन भी प्रकट हुए। इनमें से कुछ ने लेखकों को क्रान्ति के प्रति अपने संबंध को निश्चित करने में और यथार्थता के निकट आने में मदद दी। इनका संगठन कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रस्ताव के आधार पर हुआ था और इनमें बड़े-बड़े लेखक थे। 'लेफ' (कला में वाम पक्ष) समुदाय के साथ मायाकोव्स्की संबंधित था। 'लेत्स्कि' (रचनाकारों का साहित्यिक केन्द्र) के साथ ई० सेल्वीन्स्की वे० इन्बर थे। 'पेरिवाल' ग्रूप में प्रीशिवन, अरनेव इत्यादि थे किन्तु सबसे बड़ा साहित्यिक संगठन 'राप' (प्रोलितारियत् लेखकों का रूसी एसोशिएशन) था। इसके सदस्य शोलोखोव, सिराफ़िमोविच इत्यादि थे। इन संगठनों से सोवियत-लेखकों का फेडरेशन बना किन्तु वर्गीय संघर्ष की परिस्थितियों में यह संगठन विचारात्मक संघर्ष के अखाड़े बन गये। 'पेरिवाल' ग्रूप ने यह कहा कि सामान्यतया श्रमिक-वर्ग के हितों की रक्षा करने वाला प्रोलितारित् साहित्य नहीं हो सकता और यह शिक्षा दी कि लेखक को राजनीति से अलग रहना चाहिए। 'पेरिवाल' ग्रूप ने कलाकार की समाज से स्वतन्त्रता की माँग की, कला में चैतन्यज्ञान का निराकरण किया और सर्जना के क्षेत्र में प्रातिभज्ञान (इन्ट्यूशन)

तथा अबौद्धिकता (इर्रेशनलिज्म) की दुहाई दी। 'लेफ' समुदाय के लोगों ने 'तथ्य का साहित्य' का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि लेखक को झूठ या मन-गढ़न्त से बचना चाहिए और जीवन में विद्यमान तथ्यों का उपयोग करना चाहिए। जिस लेखक की रचना में मिथ्यात्व का समावेश रहता है उसकी सर्जना का सामाजिक महत्त्व शिथिल पड़ जाता है। 'कला कला के लिए' प्रतिक्रियावादी सिद्धान्त भी प्रस्तुत किया गया जिसके द्वारा कृति के रूप पर जोर दिया गया और उसके वस्तु-तत्व (विचार, समाज आदि) की उपेक्षा की गयी। संक्षेप में इन सब सिद्धान्तों का विरोध या संघर्ष सोवियत की पार्टीवादिता से था, सोवियत-साहित्य के इस मूल दृष्टिकोण या सिद्धान्त से था कि वर्ग-युद्ध समाज में तटस्थ या वर्गशून्य साहित्य न होता है और न हो सकता है तथा लेखक की सर्जना जनहित के लिए होनी चाहिए और जो कुछ वह जनता को देता है उसकी पूरी-पूरी सामाजिक तथा राजनीतिक जिम्मेदारी उस लेखक पर है।

किन्तु अब शासन और अधिकार कम्यूनिस्ट पार्टी के हाथ में था और उसने अपने दृष्टिकोण के अनुरूप साहित्य का संचालन नये मार्ग पर किया। इस विचारात्मक संघर्ष से सोवियत-साहित्य और पुष्ट होकर निकला। उसने सोवियत-लेखकों की सर्जनात्मक प्रतिभा के आधार-रूप समाजवादी यथार्थवाद की शिक्षा या सिद्धान्त को विकसित किया और जनता को समाजवाद और साम्यवाद की भावना से सिक्त करने का अपना लक्ष्य स्थिर किया। उसने स्व-आलोचना को भी बढ़ावा दिया जिससे लोगों की गलतियों को प्रदर्शित कर उनकी प्रतिभा के विकास में सहायता दी।

इस प्रकार कम्यूनिस्ट पार्टी ने सोवियत-साहित्य के आरम्भ से ही उसका संचालन किया जिससे कि एक ओर उसका संगठनात्मक रूप स्थिर हुआ और दूसरी ओर उसे निश्चित विचारात्मक दिशा मिली। गृह-युद्ध के युग से आरम्भ कर पार्टी-नेतृत्व सोवियत-साहित्य के प्रत्येक युग में विकास के लिए आवश्यक सैद्धान्तिक तथा संगठनात्मक मार्ग प्रदर्शित करता रहा।

गृह-युद्ध का चित्रण

गृह-युद्ध सारे देश में फैल गया और जनता की शक्ति
बलिदान ने बड़े परिश्रम से विजय प्राप्त की। इससे स्प
कि गृह-युद्ध का विषय-वस्तु साहित्य में व्यापकता प्राप्त
हमें सोवियत साहित्य के प्रत्येक युग में गृह-युद्ध को अ
कृतियाँ मिलती हैं। कविता और गद्य-साहित्य के सभी
चर्चा लेखकों ने की है। काव्य : मायाकोव्स्की, वेदनी
गद्य . सिराफिमोविच, इवानोव, फोर्मानोव, नाटक
युद्ध के चित्रण की अनेकरूपता के बीच कुछ एकता
पहले जनता के सामूहिक चेतन आंदोलन या प्रगति के
के बीच निर्मित होनेवाले जननायक की समस्या है
तथा गृह-युद्ध का संचालन और नेतृत्व करनेवाली
वस्तुत यह समस्याएँ सब एक दूसरे में घुली मिली
किसी एक ओर विशेष झुकाव इनमें से किसी को वि

अ० एस० सिराफिमोविच की सर्जना

अक्तूबर क्रान्ति के आरम्भ से ही सिराफि
(इज्वेस्तिया) के काम में लगा रहा। मोर्चे प
रूप में (प्राव्दा) वह काम करता रहा और उ
रहा। लेनिन ने उसके कार्य की बड़ी प्रशंसा की।
लेनिन के पुरस्कार से विभूषित हुआ (सन् १९
में श्रमिक लाल झंडे के पुरस्कार से। सोवियत
कई कृतियाँ ('जवान फौज' १९४३, 'दो मौत'
लेनिन के यहाँ 'मेहमान' १९४६) आदि प्र

लौहधार (१९२४)

किंतु क्रान्ति के बाद की उसकी सबसे
है जो सोवियत-साहित्य की क्लासिक बन
प्रदर्शन किया गया है और यह दिख

पार्टी के नेतृत्व में क्रान्ति जन-आन्दोलन बन गयी और किस प्रकार जनता की शक्ति ने अपने मार्ग की सभी बाधाओं को कुचल दिया और सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की। संक्षेप में यही इसकी कथा-वस्तु है ।

जन-समूह को यह शक्ति सहसा नहीं प्राप्त हो जाती । लेखक प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार अनवरत युद्ध के बीच उसका संगठनात्मक रूप शुरू होता है और यह भीड़ जनशक्ति बन जाती है और इसका नेता वही है जो जनता से आया है और उसके रास्ते पर चलता है।

यह जनसमूह ही इसका नेता है। उसके व्यक्तित्व का विशद चित्रण नहीं मिलता। कज़ूख का चित्रण वास्तव में बहुत ही संक्षिप्त हुआ है। इसी प्रकार अपने सामान्य अर्थ में इसका कोई कथानक नहीं है। नायक स्वतः जनसमूह है और उसकी गतिविधि पर कथानक या वस्तु-विधान निर्मित होता है फिर भी लेखक सारे उपन्यास में घटनाओं या परिस्थितियों को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि उनसे पात्रों का स्पष्ट चित्र सामने आ जाता है। अलेक्सेई और आनना के बीच का दृश्य ऐसा ही है।

ऐसी ही इसकी भाषा है। इसमें पात्रों की व्यक्तिगत भाषा नहीं है जिससे कि उनके स्वभाव का आभास मिल सके। इसमें जनसमूह की ही भाषा मिलती है, उसी का सम्वेत गान है और उसी की भाषा के अनेक स्वर मिलते हैं और उसी की प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति मिलती है। लेखक की भाषा बड़े यथार्थवादी ढंग से जीवन की घटनाओं का चित्रण करती है और उसमें रोमांटिक वाणी का रंग भी मिल जाता है। वाणी की संक्षिप्तता की कमी वर्ण्य-वस्तु के प्रति रोमांटिक संबंध की शक्ति से पूरी हो जाती है। उपन्यास यथार्थ सामग्री पर आधारित है। सन् १९१८ में तमान की फौज (जो श्वेत गार्ड और विद्रोही कज़ाक कुलकों से घिरी हुई थी) के आक्रमण की घटना—फिर भी उसमें व्यापक सामग्री का उपयोग हुआ है जिससे क्रान्तिकारी युद्ध की व्यापकता का आभास मिलता है। यह 'लौहधार' समाजवादी यथार्थवाद पर आधारित सर्जना की अभिव्यक्ति का उदाहरण है। इसमें जीवन का चित्रण उसके क्रान्ति-

कारी विकास के बीच हुआ है और कम्यूनिस्ट नायक का—ठोस नायक का—चित्र प्रस्तुत किया गया है।

फुरमानोव का चपायेव (१९२३)

दे० फुरमानोव (१८९१–१९२६) की रचना 'चपायेव' सिराफिमोविच की रचना की अपेक्षा गृह-युद्ध के अन्य प्रश्नों से संबंधित है। इस रचना का लक्ष्य जन-नायक का चित्र प्रस्तुत करना है जो कि क्रान्ति के वर्षों में समाजवाद के योद्धा और प्रस्थापक के रूप में हमारे सामने आया।

उपन्यास 'लौहधार' की अपेक्षा यह बड़ा भी है और सच्ची यथार्थ सामग्री पर आधारित है। फुरमानोव लालसेना के (पलकोवनिक) कमांडर फ्रुंजे के अत्यन्त निकट था। १९१९ में उसे कलचाक के विरुद्ध युद्ध में मोर्चे पर भेजा गया जहाँ वह डिवीजन का 'कमिसार' (कमिश्नर) बनाया गया, इसका कमांडर 'चपायेव' था। फुरमानोव ने इसमें चपायेव के जीवन और मृत्यु की कथा प्रस्तुत की है। वह स्वयं क्लीचकोव के नाम से इसमें भाग लेता है।

चपायेव के रूप में फुरमानोव ने जन-नायक की बहुत सी विशिष्टताओं का सजीव अंकन प्रस्तुत किया है और यह प्रदर्शित किया है कि क्रान्ति ने किस प्रकार इसको सुदृढ़ बनाया। लेखक ने चपायेव का वैसा ही चित्र अंकित किया है जैसा कि वह जीवन में था। इस चित्र का महत्व केवल इस बात में नहीं है कि यह जन-नायक का चित्र है वरन् इसमें नयी परिस्थितियों के बीच इस नायक का विकास क्रम भी प्रदर्शित है चूंकि वह देश की सेवा में लगा हुआ है इसलिए उसकी विशिष्टताओं का महत्व और भी बढ़ जाता है। उसकी विशिष्टताएं—दृढ़ता, सहनशीलता, साहस आदि—युद्ध के बीच और भी विकसित होती है और वह और भी ऊंचा उठता है।

चपायेव क्रान्ति के पहले ही से सच्चा सिपाही था किन्तु जार की ... में ऐसे आदमी का कोई मूल्य न था जो प्रभुवर्ग का न हो (लौह-... में कजूख के साथ भी यही हुआ) और उस समय उसके सामने कोई

ऊंचा लक्ष्य भी न था। अक्तूबर-क्रान्ति ने यह सब बदल दिया और लोगों के समक्ष, उच्च लक्ष्य और आदर्श प्रस्तुत किया, देश तथा जनता का आनंद—इस लक्ष्य ने अपनी उत्कृष्ट विशिष्टताओं को विकसित करने का पूरा-पूरा अवसर दिया। चपायेव का भी विकास हुआ। चपायेव के रूप में हमारे सामने धीरे-धीरे एक प्रतिभाशाली, कुशल सेना-संचालक का उदय होता है। युद्ध में वह शांत और अडिग रहता है और सिपाहियों को जोश से भर देता है। उसमें अद्भुत वाक्शक्ति है। सिपाही उसकी बात सुनकर मुग्ध हो जाते हैं। नाचने और गाने की भी उसमें अच्छी प्रतिभा है। इन सब मानवीय गुणों के आधार पर उसका सैनिक प्रभाव आधारित है। इसके साथ ही उसका अंकन उसकी सारी दुर्बलताओं और अपूर्णताओं के साथ किया गया है। उपन्यासकार ने इन पर पर्दा नहीं डाला है वरन् यह दिखाया है कि चपायेव किस प्रकार क्लीचकोव के प्रभाव में इनको धीरे-धीरे दूर करता है।

सन् १९२० के आरम्भ के साहित्य में प्राप्त कम्यूनिस्टों के उत्तम चित्रों में से क्लीचकोव का चित्र एक है। इसमें क्रान्ति के बीच पार्टी के नेतृत्व और शैक्षिक महत्त्व को प्रदर्शित किया गया है। क्लीचकोव के प्रभाव में चपायेव का विकास इसी महत्त्व का प्रतीक है। सारा उपन्यास पार्टी के संचालन से प्रथित है और यह नेतृत्व ऐसी सुविधाएं प्रस्तुत करता है जिसमें चपायेव के समान देशभक्त निर्मित होते हैं और अपनी मानवीय शक्ति को विकसित करते हैं।

चपायेव का यह चित्र लोकप्रिय जन-नेता का चित्र बन गया। इसने द्वितीय महायुद्ध में लोगों को देश-रक्षा के लिए सब कुछ करने को तय्यार, तत्पर बना दिया और उनमें अपूर्व आत्मिक शक्ति भर दी। इसी में इस रचना का कलात्मक महत्त्व है।

चपायेव के निकट और समान ही फुरमानोव की दूसरी कृति 'विद्रोह मितेज' (१९२५) है। इसमें यह बताया गया है कि मध्य एशिया के एक शहर में कम्यूनिस्टों का एक छोटा सा समुदाय किस प्रकार व्हेत गार्ड द्वारा भड़काए हुए बड़े सैनिक विद्रोह को रोकता है। इस विद्रोह के

दमन में स्वत. फुरमानोव ने हिस्सा लिया था। पार्टी द्वारा शिक्षित यह समुदाय शांत और दृढ़ है और प्रतिक्षण जीवन की बलि देने को तैयार है। कम्यूनिस्ट भड़काये दल से उन्हीं की सामान्य भाषा में बातचीत करते हैं और उनको समझा लेते हैं। विद्रोह शांत हो जाता है और शत्रुओं की चाल व्यर्थ हो जाती है।

यद्यपि यह कथा यथार्थ घटना पर आधारित है फिर भी इसका रूप सर्वथा कलात्मक है और उसके माध्यम से फुरमानोव ने कम्यूनिस्टों का चरित्र अंकित किया है। यह चरित्र विशेष रूप से उस समय उभरता है जब कि लेखक को विद्रोहियों की सभा में भाषण देना है जहाँ कि उसकी मृत्यु निश्चित है। वह सोचता है कि "यदि अन्त निश्चित है तो ऐसी मृत्यु चुनो जिससे बढ़कर दूसरी न हो। ऐसे मरो कि तुम्हारी मृत्यु से भी लाभ हो। कुत्ते की तरह कुंकुआते हुए, काँपते हुए मरना अच्छा नहीं। अच्छी तरह मरो।" इसमें ऐसे कम्यूनिस्ट का चित्र है जो अन्तिम क्षण तक जनता की सेवा करता है। यहाँ तक कि मौत को भी अपने लक्ष्य की सेवा करने को विवश करता है। इसमें फुरमानोव की सर्जना की पार्टीवादिता भी प्रकट होती है।

फुरमानोव की शीघ्र मृत्यु ने उसकी सर्जना को पूरा-पूरा विकसित होने का अवसर न दिया। सोवियत-साहित्य के बीच उसका अपना विशिष्ट स्थान है और चपायेव का चित्र सोवियत-साहित्य के विशिष्ट चित्रों में से एक है।

श्वेत गार्डों से साइबेरिया के छापामारों के युद्ध की विषय-वस्तु इवानोव की कहानी 'ब्रोने पोएस्त १४–६९' (ब्रोने रेलगाड़ी १४-६९) के मूल में है। यह कहानी इवानोव की 'छापामार' कहानियों में संगृहीत है। इसमें छापामारों को जनशक्ति से समन्वित और शक्तिशाली चित्रित किया गया है जो कि जनता के देश प्रेम, साहस, और अथक परिश्रम का प्रतिनिधित्व करते हैं।

लिब्रेदीन्स्की की कहानी 'सप्ताह' में उन प्रथम कम्यूनिस्टों का चित्र है जो सोवियत-शासन के पक्ष में उस समय लड़ रहे थे जब कि वर्तमान

क्षेत्रों में क्रान्ति विरोधी 'श्वेत पक्ष' का आधिपत्य था। इस कहानी में उस समय का पूरा चित्र है। यह कहानी उस समय अत्यन्त लोकप्रिय हुई।

ल्यूबोव यरोवाया क० त्रिन्योव

गृह-युद्ध के चित्रण से सबंधित कृतियों में त्रिन्योव का 'ल्यूकोव यरोवाया' और अ० फदेयेव का 'नाश' महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। दोनों कृतियों में दो मार्गों का प्रदर्शन किया गया है। एक मार्ग जनता की ओर जाता है और क्रान्ति का अनुसरण करता है जिसमे व्यक्ति को अपने चरित्र की साहस-पूर्ण विशिष्टताओं को विकसित करने का अवसर प्राप्त होता है (लेविनसन, मरोज़का, वकुलातोव, ल्यूबोव यरोवाया) और दूसरा रास्ता व्यक्तिगत सकीर्ण स्वार्थ की ओर जनता से दूर बेइज्जती और नाश की ओर ले जाता है (मिखाइल यरवोया मेचिक)।

यह नाटक तो सोवियत-गद्यकार और नाटककार (१८७८–१९४५) त्रिन्योवकी सर्वोत्तम कृति है। उसकी पहली कहानी १८९८ में छपी। उसकी सर्जनात्मक प्रतिभा के विकास में गोर्की का बड़ा हाथ है। क्रान्ति के पूर्व उसने कई महत्त्वपूर्ण कृतियाँ प्रस्तुत कीं, किन्तु क्रान्ति के बाद उसकी सर्जना सामाजिक तत्व से सयुक्त हुई और उसने उसे गृह-युद्ध के नायक की नयी विशेषताएं अकित करके का अवसर प्रदान किया। अक्तूबर क्रांति के बाद उसने कई नाटक 'पत्नी, अनुभव, नेवा के तट पर', आदि लिखे। क्रान्ति के युग में उग्रता के साथ उभरनेवाले सामाजिक सघर्ष, तथा इनमे विकसित होने वाली चारित्रिक शक्ति और गभीरता की चेतना ने उसे नाटक लिखने की प्रेरणा दी।

किन्तु उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण कृति नाटक 'ल्यूबोव यरोवाया' है। सन् १९२६ में यह सब से पहले माली थियेटर के रगमंच पर प्रस्तुत किया गया और उस समय से अभी तक बड़ा लोकप्रिय है। इस नाटक में देश में व्याप्त वर्ग-संघर्ष की तीक्ष्णता प्रस्तुत की गयी है। ऐसी तीक्ष्णता जो परिवार को नष्ट कर देती है और प्रियजन एक दूसरे के विरोधी बन जाते हैं। इसके साथ ही इसमें यह सकेत भी है कि क्रान्ति के पक्ष में ही

और जनता के साथ ही व्यक्तित्व का विकास होता है और जनता के विपक्ष में होने से उसका ह्रास होता है।

नाटक पति-पत्नी के जीवन और क्रांति से संबंधित है। क्रान्ति के पूर्व दोनों का जीवन बड़ा प्रेमपूर्ण था किन्तु क्रान्ति में अलग-अलग रास्ता अपनाने के कारण वे अलग हो जाते हैं और उनके बीच विचारों की बहुत बड़ी खाई आ जाती है।

पति क्रान्तिकारियों का विरोधी बनता है और पत्नी ल्यूबोव यरोवाया क्रान्ति का पक्ष ग्रहण करती है। पत्नी के हृदय में पति के लिए प्रेम है किन्तु कर्तव्य की भावना उससे भी अधिक दृढ़ है। अन्त में वह सदा के लिए पति से अलग हो जाती है। अन्त में परिस्थिति ऐसी आती है जिसमें उसे अपने पूर्व पति के विरुद्ध खुले रूप में लड़ना है और उसे पकड़कर न्याय के सुपुर्द करना है। इस प्रकार गृह-युद्ध के विराट् नाटक के बीच दो हृदयों का व्यक्तिगत संघर्ष और नाटक भी चल रहा है जिसमें पत्नी प्रेम को दबाकर कर्तव्य का, अपने देश का और जनता का साथ देती है। दो वर्ष तक वह पति को मृत समझती रही। किन्तु जब दोनों की भेंट होती है और उसे पता चलता है कि वह श्वेतगार्डों के साथ है तो वह बेहोश हो जाती है। अभी उसमें पति के प्रति प्रेम है और वह उसे बचाना चाहती है किन्तु जब वह जान जाती है कि पति सर्वथा सोवियत-शासन के विरुद्ध है तो वह उसे न्याय के हाथ में सौंप देती है—ऐसे समय सौंप देती है जब कि उसे बचाया जा सकता था।

यह नाटक यह प्रदर्शित करता है कि महान लक्ष्य की प्राप्ति में, देश की स्वाधीनता के लिए युद्ध में, तथा जनता का साथ देने ही में पूर्ण [illegible]वीय चरित्र का विकास होता है।

[illegible]टक सोवियत नाट्य-साहित्य की महान् सफलता है। विचारों की गम्भी[illegible] और चरित्र की स्पष्टता की दृष्टि से यह सोवियत नाट्य-साहित्य की [illegible]न्त सफल कृति मानी जाती है। इसकी महत्ता इस बात में भी है कि उ[illegible] गृह-युद्ध में भाग लेनेवाली रूसी नारी का चित्र प्रस्तुत

या गया है। इसमे अपने युग के सभी जटिल सामाजिक संबंधों तथा
क्तिगत सबधों के साथ गृह युद्ध का आरम्भिक युग चित्रित किया गया
और देश-विरोधी श्वेतगार्डों की व्यग्य पूर्ण आलोचना की गयी है।

गृहयुद्ध के युग मे गांवो मे जो तीक्ष्ण वर्ग-सघर्ष चला उसने बहुत से
वियत-लेखकों का ध्यान आकृष्ट किया। इनमे नेवेरोव (बत्तख हस)
फूलिना (विरीनेया), लिओनोव (वरत्सुकी) और शोलोखोव
य है। इनकी कृतियों के मूल मे किसान और कुलकों का सघर्ष है।

इसका सबसे अच्छा अभिव्यजन नेवेरोव के अपूर्ण उपन्यास 'बत्तख-
मे हुआ है। इसका मूल विचार यह है कि किसानों के बीच 'हस' हैं
नये जीवन की ओर उडना चाहते है किन्तु उनके बीच बत्तखें भी हैं जो
न की ओर खीचती है और जो हस की स्वाधीन उड़ान को नही सम-
या नही समझ पाती। उपन्यास मे किसान और कुलकों की शक्ति
ो सामाजिक शक्तियों के रूप मे एक दूसरे के विरोध मे प्रस्तुत किया
है।

नेवेरोव की कहानी 'ताशकद रोटी वाला शहर' भी बड़ी लोकप्रिय
इसमे एक लड़के का चित्रण है जो अनेक कठिनाइयो पर विजय
कर परिवार को खिलाने के लिए रोटी ले जाता है।

सेइफूलिना ने अपनी कृतियों मे किसानों मे जागरण लाने वाली
किसानों की चेतना और रहन-सहन में शताब्दियो से पैठी हुई
न व्यवस्था और अन्धविश्वास को तोड़नेवाली क्रान्ति की क्रान्तिकारी
का चित्रण किया है। 'विरीनेया' मे किसान और विरीनेया का
त्व के दमन के खिलाफ विरोध प्रदर्शित किया गया है। बाद मे
ा ने इसे नाटक के रूप मे भी प्रस्तुत किया।

ग्राम जीवन पर इस क्रान्ति का जो गंभीर प्रभाव पड़ा है उसका अंकन
नोव के उपन्यास 'बरसुकी' में हुआ है। इसमे पुरानी दुनियां का
के कुलकों और कुलज्येष्ठ (पेट्रियार्कल) व्यवस्था का—नाश और
तथा सगठित क्रान्ति की विजय का आरम्भ प्रदर्शित किया गया है।
स का मूलभूत सघर्ष दो भाइयों की मुठभेड़ में प्रदर्शित किया गया

है। एक भाई सिम्योन क्रान्ति विरोधियों के पक्ष में है और दूस
पाकेल बोल्शेविकों के साथ है।

इन्हीं वर्षों में लोगों का ध्यान शोलोखोव के कहानी-संग्र
की कहानियाँ' की ओर गया जिसमें डान-क्षेत्र के गाँवों के जी
क्रान्ति का प्रवेश चित्रित किया गया है। इनमें उस समय का संघ
उस क्षेत्र के रहन-सहन तथा स्थानीय रंग का बड़ा सजीव चित्रण
है। इनमें कुलकों का पाशविक रूप और उसके विरोध में किस
बीच बढ़ती हुई प्रगतिशील शक्ति, दोनों का उद्घाटन हुआ है।

इन लेखकों के साथ-साथ जमोइस्की करवाएवा गरसूनोव
अन्य लेखकों ने भी अक्तूबर-क्रान्ति, गृह-युद्ध और शांतिमय निर्मा
प्रथम वर्षों के युग के देहातों के विषम वर्ग-संघर्ष का चित्रण किया है

पुनर्निर्माण का युग

सन् बीस के वर्षों के उत्तरार्द्ध में जब कम्युनिस्ट पार्टी ने दे
सामाजिक औद्योगीकरण का आरम्भ किया तो साहित्य के सामने
समस्याएँ आईं। देश के पुनर्निर्माण का युग शुरू हुआ। श्रमिक व
लाखों और करोड़ों लोगों के उत्साहपूर्ण परिश्रम ने सारे देश के पुनर्नि
में अपूर्व प्रगति पैदा कर दी। देश समाजवाद की प्रतिष्ठा की ओर ब
देश के औद्योगीकरण के लिए नये लोगों की उद्योग के नये निर्माताओं
विशेषज्ञों की टोलियाँ, तय्यार करने की अनिवार्य आवश्यकता थी। स्ता
ने कहा कि "अब हमें बोल्शेविकों की आवश्यकता है—धातु, क
ईंधन, अर्थ-व्यवस्था के विशेषज्ञों की आवश्यकता है। अब हमें बोल्शेवि
में से हजारों तथा लाखों नये विशेषज्ञों के समुदायों की आवश्यकता है
इसके बिना अपने देश के शीघ्र समाजवादी निर्माण की बात ही व्यर्थ है-
कोई भी स्कूल और विशेषज्ञता अपने देश का औद्योगीकरण जैसा विश
स्तर बिना बोल्शेविक आदर्शियों के, बिना नये आदर्शियों के, बिना न
विशेषज्ञों के समुदायों के पूरा नहीं किया जा सकता।"[1] स्टालिन

[1] [illegible], [illegible], पृ० १८६

इन विचारों को ध्यान में रखने पर देश के औद्योगीकरण के लिए नये विशेषज्ञों के समुदायों के निर्माण का लक्ष्य ग्लादकोव के उपन्यास 'सीमेंट' का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है जो कि सन् बीस के वर्षों के साहित्य की प्रथम रचना है। इसमें कलात्मक रूप में औद्योगीकरण के मोर्चे पर बोल्शेविकों के कार्य का आरम्भ प्रदर्शित किया गया है।

पुनर्निर्माण की कथावस्तु फे० ग्लादकोव का 'सीमेंट' (१९२५)

ग्लादकोव का उपन्यास 'सीमेंट' पुनर्निर्माण के युग के आरम्भ में प्रकाशित हुआ। ग्लादकोव का साहित्यिक कार्यकलाप अक्तूबर क्रान्ति के पहले ही शुरू हो गया था। सन् १८८३ में एक निर्धन कृषक परिवार में उसका जन्म हुआ था। ९ वर्ष की अवस्था से ही उसे मछली पकड़ने, टाइपोग्राफी आदि में काम करना पड़ा था। उसने बड़ी मुश्किल से स्कूल समाप्त किया और इसके पहले ही उसने अपनी पहली कहानी ('प्रकाश की ओर') छपाई। इसके बाद से वह नियमित रूप से लिखने लगा। १९०१ में उसका गोर्की से परिचय हुआ जिसने उसे एकदम बदल दिया। क्रान्ति में योग, शिक्षण, निर्वासन, साइबेरिया का जीवन, इन सबने उसे विभिन्न व्यक्तियों का अद्भुत निरीक्षण और विशाल अनुभव दिया। अक्तूबर क्रान्ति के बाद उसने गृह-युद्ध में भाग लिया और गृहयुद्ध के बाद वह साहित्यिक कार्य में लग गया।

'सीमेंट' ने उसे सोवियत लेखकों की प्रथम श्रेणी में प्रतिष्ठित कर दिया। इस उपन्यास की ओर बहुतों का ध्यान गया। ग्लादकोव ने देश के जीवन की नयी विशेषताओं का और निर्माता—बोल्शेविकों का चित्र अंकित किया। इसके संबंध में गोर्की की टिप्पणी बड़ी महत्त्वपूर्ण है—"इसमें पहली बार क्रान्ति के बीच, समकालीनता की सबसे महत्त्वपूर्ण विषय-वस्तु परिश्रम, दृढ़ता और स्पष्टता के साथ अंकित किया गया है।"

इसका कथानक साधारण है। गृह-युद्ध के बाद कारखाने में बढ़ई ग्लेब चुमालोव वापस लौटता है। कारखाने की बड़ी गिरी दशा है। मशीनें खराब हो गयी हैं और मजदूर अपने कारखाने का काम अच्छी तरह न कर

अपने व्यक्तिगत काम में लगे हुए हैं। ग्लेब बड़े जोश के साथ उन र
विरोध करता है जो कारखाने की उन्नति में बाधक हैं। पुनर्निर्माण
अनवरत परिश्रमशील कार्य उपन्यास की घटनाओं का मूल आधार
कारखाने का पुनर्निर्माण जिसमें कि वह देश के समाजवादी जीवन में
दे सके, यह लोगों का पुनर्निर्माण भी है। ग्लेब धीरे-धीरे श्रमिक वर्ग
संगठनकर्ता और नेता बन जाता है। आरम्भ में कारखाने का इंजीनि
उससे सतर्क और सावधान रहता है किन्तु बाद में अपने कारखाने
पुनर्निर्माण में लगे मजदूरों के परिश्रम और जोश को देखकर उ
हृदय में भी उच्च मानवीय भावनाओं का उदय होता है और वह उ
कार्य में उनका पूर्ण सहयोगी बन जाता है।

परिश्रम ही इस उपन्यास की विषय-वस्तु है। इस परिश्रम के वि
में उपन्यास के नायक का यह कहना है कि "स्वच्छन्द और प्रिय परिश्र
ही जीवन का आधार होगा। स्वतन्त्र व्यक्ति का निर्माणकारी परिश्र
उसे सर्वशक्तिसंपन्न बना देता है, उसका परिश्रम प्रकृति पर विज
दिलाता है, जीवन को संगठित करता है और संसार को सजाता है।" इस
विचार का उपन्यास में विकास हुआ है। उसकी पत्नी दाशा का चि
सोवियत साहित्य के उन चित्रों में से है जिनमें नयी प्रकार की स्त्री
दिखाई गई है जो आदमी के साथ समानाधिकार के साथ, नये जीवन के
निर्माण में कार्यशील है।

ग्लादकोव का योगदान इस बात में है कि उसने सोवियत साहित्य
में पहले पहल व्यापक प्रबन्धात्मक उपन्यास के रूप में अक्तूबर क्रान्ति की
परिस्थिति के बीच श्रमिक-वर्ग के निर्माणकारी परिश्रम का चित्रण
किया है।

'सीमेंट' के बाद बहुत सी कृतियाँ सामने आई जिनमें इसी विषय-वस्तु
का विकास किया गया और जिनमें समाजवादी व्यक्ति की नयी विशेषताएं
दिखाने का प्रयत्न किया गया जो पुनर्निर्माण या नवनिर्माण में लगा है।
ग्लेब तथा दाशा के चित्र बाद में सोवियत साहित्य में प्राप्त समाजवाद
के निर्माताओं के चित्रों के आरम्भिक रूप हैं यद्यपि इस विषय-वस्तु का

आरंभ गोर्की से हो जाता है। बाद के संस्करणों में उपन्यासकार ने इसकी भाषा में बड़ा सुधार किया।

'सीमेंट' के बाद श्रमिक-वर्ग और पुनर्निर्माण के इस युग की जनता के निर्माणकारी कार्य से संबंधित और बहुत सी कृतियाँ भी सामने आईं। इसके साथ ही अलेक्सेई तोल्स्तोय, शगिन्यान, शिशकोव, स्लाव्स्की, ज़िगो के लेखों ने तथा बख्मेतिएव की कहानियों ने ('एक रात') और ल्याश्को की कथा (भट्ठी) ने पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। ये कृतियाँ बड़ी लोकप्रिय हुईं।

गद्य-क्षेत्र की अन्य विधाओं के समान इस युग का रंगमंच भी सैद्धान्तिक संघर्ष से ओतप्रोत है। कम्यूनिस्ट पार्टी ने नये सोवियत रंगमंच के लिए बड़ा प्रयत्न किया और इस बात का भी प्रयत्न किया कि रंगमंच जनता के निकट आ जाय और रंगमंच के अभिनेता और कार्यकर्ता रूसी रंगमंच और नाट्य कला की प्रगतिशील परंपराओं को अपना लें। *अतीत की रंगमंचीय संस्कृति की प्रगतिशील परंपराओं को विकसित करते हुए* और नयी सोवियत-कला का प्रदर्शन,समर्थन करते हुए सोवियत-रंगमंच-पार्टी की प्रेरणा पाकर फार्मलिज़्म, राजनीति से तटस्थता आदि के विरुद्ध आन्दोलन करता रहा। सोवियत-नाटककारों ने एक ओर तो अतीत में रूसी जनता द्वारा स्वाधीनता के लिए किए गये युद्धों का चित्र प्रस्तुत किया और दूसरी ओर गृहयुद्ध तथा सोवियत युग की यथार्थताओं का अंकन किया। त्रेन्योव के नाटक 'पुगाचोव-श्चिना' में किसान विद्रोह के नेता पुगाचोव का चित्र अंकित किया गया है। इसी प्रकार बिल्ल-बेलोत्सेरकोव्स्की के नाटक 'तूफ़ान' में एक छोटे से शहर में बोल्शेविकों का क्रान्ति-विरोधियों से युद्ध चित्रित किया गया है। इसी युग में रमाशोव का व्यंग्य नाटक 'हवाई मुलिदा' प्रकाशित हुआ जिसमें व्यापारी-वर्ग और अधिकारी-वर्ग का मज़ाक उड़ाया गया है। इसमें उन लोगों की स्वार्थी प्रवृत्ति का बड़ा सजीव अंकन हुआ है।

काव्य के क्षेत्र में इस युग में मायाकोव्स्की तथा देम्यान बेदनी के साथ बेज़िमेन्स्की, झारोव, असेयेव तथा उत्किन जैसे महान कवियों

अपने व्यक्तिगत काम में लगे हुए हैं। ग्लेब बड़े जोश के साथ उन सबका विरोध करता है जो कारखाने की उन्नति में बाधक हैं। पुनर्निर्माण का अनवरत परिश्रमशील कार्य उपन्यास की घटनाओं का मूल आधार है। कारखाने का पुनर्निर्माण जिससे कि वह देश के समाजवादी जीवन में योग दे सके, यह लोगों का पुनर्निर्माण भी है। ग्लेब धीरे-धीरे श्रमिक वर्ग का संगठनकर्ता और नेता बन जाता है। आरम्भ में कारखाने का इंजीनियर उससे सतर्क और सावधान रहता है किन्तु बाद में अपने कारखाने के पुनर्निर्माण में लगे मजदूरों के परिश्रम और जोश को देखकर उनके हृदय में भी उच्च मानवीय भावनाओं का उदय होता है और वह उनके कार्य में उनका पूर्ण सहयोगी बन जाता है।

परिश्रम ही इस उपन्यास की विषय-वस्तु है। इस परिश्रम के विषय में उपन्यास के नायक का यह कहना है कि "स्वच्छन्द और प्रिय परिश्रम ही जीवन का आधार होगा। स्वतन्त्र व्यक्ति का निर्माणकारी परिश्रम उसे सर्वशक्तिसंपन्न बना देता है, उसका परिश्रम प्रकृति पर विजय दिलाता है, जीवन को संगठित करता है और संसार को सजाता है।" इसी विचार का उपन्यास में विकास हुआ है। उसकी पत्नी दाशा का चित्र सोवियत साहित्य के उन चित्रों में से है जिनमें नयी प्रकार की स्त्री दिखाई गई है जो आदमी के साथ समानाधिकार के साथ, नये जीवन के निर्माण में कार्यशील है।

ग्लादकोव का योगदान इस बात में है कि उसने सोवियत साहित्य में पहले पहल व्यापक प्रबन्धात्मक उपन्यास के रूप में अक्तूबर क्रान्ति की परिस्थिति के बीच श्रमिक-वर्ग के निर्माणकारी परिश्रम का चित्रण किया है।

'सीमेंट' के बाद बहुत सी कृतियाँ सामने आईं जिनमें इसी विषय-वस्तु का विकास किया गया और जिनमे समाजवादी व्यक्ति की नयी विशेषताएं [illegible] का प्रयत्न किया गया जो पुनर्निर्माण या नवनिर्माण में लगा है। [illegible] दाशा के चित्र बाद में सोवियत साहित्य में प्राप्त समाजवादी [illegible]ों के चित्रों के आरम्भिक रूप हैं यद्यपि इस विषय-वस्तु का

आरम्भ गोर्की से हो जाता है। बाद के संस्करणों में उपन्यासकार ने इसकी भाषा में बड़ा सुधार किया।

'सीमेंट' के बाद श्रमिक-वर्ग और पुनर्निर्माण के इस युग की जनता के निर्माणकारी कार्य से संबंधित और बहुत सी कृतियाँ भी सामने आईं। इसके साथ ही अलेक्सेई तोल्स्तोय, शगिन्यान, शिश्कोव, स्ताव्स्की, ज़िगो के लेखों ने तथा वरमेंतिएव की कहानियों ने ('एक रात') और ल्याश्को की कथा (भट्ठी) ने पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। ये कृतियाँ बड़ी लोकप्रिय हुईं।

गद्य-क्षेत्र की अन्य विधाओं के समान इस युग का रंगमंच भी सैद्धान्तिक संघर्ष से ओतप्रोत है। कम्यूनिस्ट पार्टी ने नये सोवियत रंगमंच के लिए बड़ा प्रयत्न किया और इस बात का भी प्रयत्न किया कि रंगमंच जनता के निकट आ जाय और रंगमंच के अभिनेता और कार्यकर्ता रूसी रंगमंच और नाट्य कला की प्रगतिशील परंपराओं को अपना लें। अतीत की रंगमंचीय संस्कृति की प्रगतिशील परंपराओं को विकसित करते हुए और नयी सोवियत-कला का प्रदर्शन, समर्थन करते हुए सोवियत-रंगमंच-पार्टी की प्रेरणा पाकर फार्मलिज़्म, राजनीति से तटस्थता आदि के विरुद्ध आन्दोलन करता रहा। सोवियत-नाटककारों ने एक ओर तो अतीत में रूसी जनता द्वारा स्वाधीनता के लिए किए गये युद्धों का चित्र प्रस्तुत किया और दूसरी ओर गृहयुद्ध तथा सोवियत युग की यथार्थताओं का अंकन किया। त्रिन्योव के नाटक पुगाचोव-श्चिना में किसान विद्रोह के नेता पुगाचोव का चित्र अंकित किया गया है। इसी प्रकार बिल-बेलोत्सेरकोव्स्की के नाटक 'तूफान' में एक छोटे से शहर में बोल्शेविकों का क्रान्ति-विरोधियों से युद्ध चित्रित किया गया है। इसी युग में रमाशोव का प्रथम नाटक 'हवाई गुब्बारा' प्रकाशित हुआ जिसमें व्यापारी-वर्ग और अधिकारी-वर्ग का मज़ाक उड़ाया गया है। इसमें उन लोगों की लालची प्रवृत्ति का बड़ा सजीव अंकन हुआ है।

काव्य के क्षेत्र में इस युग में मायाकोव्स्की तथा देम्यान बेदनी के साथ बेज़िमेन्स्की, आसेव, स्वेत्लोव तथा उत्किन जैसे प्रधान क—

के नाम भी सुनाई देते हैं। लीसनोव का नाम भी इस समय बड़ा लोकप्रि
हुआ। इन 'कमसोमोल' कवियों की प्रतिभा के साथ-साथ सोवियत
काव्य यथार्थता की ओर भी उन्मुख हुआ। यद्यपि अभी इन जवा
कवियों की प्रतिभा प्रौढ़ नहीं हुई थी फिर भी उनमें क्रान्ति का पूरा वे
और साम्यवाद की विजय का अडिग विश्वास था।

बेज़िमेन्स्की के काव्य-संग्रह 'जीवन कैसे महक रहा है' में कवि यथार्थ जीवन की ओर उन्मुख है और देश के नवीन रूप-रंग का चित्रण कर रहा है। यथार्थ जीवन की छोटी-छोटी बातों में और प्रतिदिन के निर्माणकार्य में कवि को विश्व-क्रान्ति के महान् विचारों की झलक दिखाई पड़ती है। इसी प्रकार 'कमसोमोल' काव्य में प्रोलितारियत् साहित्य के राजनीतिक सिद्धान्तों की झलक है। यह काव्य उत्साही 'कमसोमोल' समुदाय या समूह का चित्रण करता है, जो लक्ष्य की एकता से संगठित है और जो साम्यवाद की विजय के लिए हर प्रकार की कठिनाई झेलने को तय्यार है।

बेज़िमेन्स्की, गलोदनी, स्वेतलोव, देम्यान बेदनी के गीत सोवियत-जनता के जीवन में पैठ गये और उनसे सामूहिक जन-गीतों के विकास का आरम्भ हुआ। ये गीत गृह-युद्ध के ज़माने में बड़े लोकप्रिय हुए। इन गीतों के नायक देश के रक्षक सैनिक, वीर, गोरिल्ला-सैनिक हैं।

और जो १९१८ में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की गोली का शिकार बना। क्रान्ति द्वारा गांवों के रूप-रंग में जो परिवर्तन हो गया है और उनका निर्माणकारी कार्य चल रहा है उनकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति ईसा-की के काव्य में हुई है। अपनी सगीतात्मकता, सक्षिप्तता और मकता में ये रचनाएं गीतों के अधिक निकट है जिनका ईसाकोव्स्की चलकर कुशल आचार्य और रचनाकार बन गया। इन रचनाओं ल भाव समाजवादी युग में गांव और शहरों के बीच की शताब्दियों तिष्ठित खाई को नष्ट करना है। कवि गांवों के जीवन में नवीन– ी, बिजली, ट्रावटर आदि के प्रवेश से प्रसन्न है। ईसाकोव्स्की जनता क में मिलने वाले सामूहिक परिश्रम का गुणगान कर रहा है जो कि के शब्दों में पृथ्वी पर चमत्कार की सृष्टि करता है।

सक्षेप में इस युग के समाजवादी काव्य की विशेषताएं है—परिश्रम काव्यात्मक अभिव्यक्ति, कला का जीवन के निकट आना, प्रगीतों यक का गंभीर अंकन, जो सोवियत-सैनिक और श्रमिक की सामान्य षताओं से समन्वित है, तथा रोमांटिक ढंग से युक्त यथार्थवादी तथ्य की ओर प्रवृत्ति।

सोवियत-साहित्य के इतिहास में गृह-युद्ध और जातीय आर्थिक था के पुनर्निर्माण के वर्ष बड़े महत्त्वपूर्ण और सर्जना से परिपूर्ण माने जाते हैं। इन्हीं वर्षों में जनात्मक साहित्यिक आन्दोलन को कता प्राप्त होती जाती है। १९१७–१८ में फुरमानोव और बेज़िमें- साहित्य में आये १९२० में तीखनोव तथा कवेरिन, १९२१ में सेइ- ना जारोव, ग्लोदनी, १९२२ में लिओनोव, १९२३ में शोलोखोव, व, १९२४ में पउस्तोवस्की और १९२५ में किरसानोव साहित्य में ।

इन्हीं वर्षों में गोर्की को क्रान्ति के बाद की प्रतिभा प्रौढ़ होती है और की रचनाएं मौलिक विचार, चित्र तथा विषय-वस्तु प्रस्तुत करती हैं। इन्हीं वर्षों में मायाकोव्स्की की महत्त्वपूर्ण रचनाएं सामने आती इनमें सोवियत देश-भक्ति की भावना और नये समाजवादी व्यक्ति चित्र पूर्ण अभिव्यंजन प्राप्त करता है। इन्हीं वर्षों में गृह-युद्ध के

अनुभव भी साहित्यिक कृतियों में अभिव्यक्ति पाते हैं और उस समाजवादी सोवियत-देशभक्ति का भी चित्र अंकित होता है जिसने युद्ध समाप्त कर नष्टप्राय देश के पुनर्निर्माण की व्यवस्था शुरू की।

इन्हीं वर्षों में ऐसी कृतियाँ भी प्रस्तुत हुईं जिनको सोवियत-साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। देश के नये समाजवादी जीवन के अनुभवों में सिक्त समाजवादी यथार्थवाद भी साहित्यिक क्षेत्र में कलात्मक माध्यम के रूप में विकसित हुआ।

३. व्लदीमिर व्लदीमिरोविच मायाकोव्स्की

[१८९३-१९३०]

मायाकोव्स्की सोवियत-युग का महान् कवि है और अपने काव्य में मानवतावादी परंपरा अपनाने के कारण पुश्किन, लेर्मन्तोव, नेक्रासोव जैसे बड़े कवियों की श्रेणी में गिना जाता है। इसके साथ ही वह सोवियत-युग का कवि है और उसकी रचना सोवियत-व्यक्ति की अच्छी-अच्छी विशिष्टताओं (साहस, स्वदेश-प्रेम, सामूहिकता की भावना, परिश्रम के प्रति उत्साह) का अभिव्यंजन करती है। इसी से उसकी लोकप्रियता बड़ी व्यापक है। उसकी सर्वतोमुखी प्रतिभा ने प्रगीत, मुक्तक, प्रबन्ध-काव्य नाटक, व्यंग्य आदि सभी की रचना की।

मायाकोव्स्की को उत्तेजक या प्रचारक कवि कहा जाता है और वह इसलिए कि उसने प्रगीत, मुक्तकों के साथ क्रान्तिकारी, राजनीतिक, सांस्कृतिक जीवन से संबंधित रचनाएं प्रस्तुत कीं जिन्होंने जनता का उद्बोधन किया और जो जनता के बीच बड़ी प्रचलित हुईं। उसकी कुछ पंक्तियां कहावतों जैसे लोकगीतों के रूप में क्रांति के समय बहुत सुनाई पड़ती थीं। उसके बहुत से प्रगीत-मुक्तक ऐसे हैं जिनकी विषय-वस्तु राजनीतिक है तथा जिनकी अनुभूतियां पाठकों में सामाजिक भावना जगाती हैं।

मानवतावाद, स्वदेश-प्रेम, समाजवादिता, क्रान्तिवादिता के भाव तथा अभिव्यंजना में नवीन उपादानों की खोज, प्रचारात्मकता, प्रगीतात्मकता आदि ने मायाकोव्स्की को सोवियत-साहित्य में अनुपम स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया।

जीवन

मायाकोव्स्की का जन्म १८९३ में जॉर्जिया के एक गाँव (बगदादी)

में हुआ था। उसका पिता जंगल में नौकर था। सन् १९०५ से ही स्कूल में पढ़ते हुए मायाकोव्स्की राजनीतिक कारवाइयों में, प्रदर्शन, सभा आदि में भाग लेने लगा था।

१९०६ में उसके पिता की अचानक मृत्यु हो गई और परिवार को मास्को आना पड़ा। परिवार को अपनी आवश्यकता-पूर्ति के लिए कमरे किराए पर उठाने पड़े और लोगों का खाना बनाना पड़ा। क्रांतिकारी विद्यार्थियों ने कमरे ले लिये और यहीं वे अपना काम करने लगे। बालक मायाकोव्स्की इस प्रकार क्रान्तिकारी-साहित्य और कार्यकलाप से परिचित हुआ। इस बीच उसने दर्शन और कला का पर्याप्त अध्ययन किया। अध्ययन की पुस्तकों में मार्क्स के 'कैपितल' की भूमिका ने उसे बहुत प्रभावित किया।

१५ वर्ष की उम्र में मायाकोव्स्की रूसी सोशल डिमोक्रेटिक पार्टी में दाखिल हुआ। इस समय वह कला-स्कूल में पढ़ता भी था। इन्हीं वर्षों में वह तीन बार गिरफ़्तार किया गया किन्तु उम्र कम होने के कारण उसे छोड़ दिया गया। फिर भी कई महीने (सात महीने) उसे जेल में रहना पड़ा और उसने इस समय का आत्म-शिक्षण के लिए पूर्ण सदुपयोग किया।

जेल से छूटने पर उसने कला-स्कूल में पढ़ना शुरू किया। यहाँ उसका बुरलूक से परिचय हुआ जो कि एक कला के प्रसिद्ध स्कूल—फ़्यूचरिज़्म-'भविष्यवाद' का प्रतिनिधि था। इस प्रकार वह फ़्यूचरिज़्म के प्रभाव में आया।

१९१२ में एक संग्रह 'सामाजिक रुचि को गोलमाली' निकला जिसमें फ़्यूचरिस्टों का सामूहिक मैनिफ़ेस्टो प्रकाशित हुआ था और जिसमें मायाकोव्स्की का भी हस्ताक्षर था। इसमें मायाकोव्स्की की दो कविताएं थीं—'रात' और 'सुबह'। इसी वर्ष उसकी कविताओं का पहला संग्रह 'मैं' निकला।

१९१४ में वह क्रान्ति के पूर्व की अपनी उत्तम कविता 'पतलून में बादल' की रचना में लगा। फ़्यूचरिस्टों के साथ पब्लिक में कविता पढ़ते

के कारण उसे स्कूल से निकाल दिया गया। १९१५ में पहली बार उसका गोर्की से परिचय हुआ। उसने अपनी कविता 'पतलून में बादल' का कुछ अंश उसे सुनाया। गोर्की ने उसे अपनी पुस्तक 'बचपन' भेंट की।

१९१५ से वह अपनी रचनाएं 'नये व्यग्य' पत्र में छपाने लगा। बाद में व्यग्य-कविताओं से युक्त उसके व्यग्य-चित्र बहुत लोकप्रिय हुए।

१९१६ में मायाकोव्स्की अपने दो प्रबन्ध काव्य 'युद्ध और शांति' तथा 'मनुष्य' की रचना में लगा। १९१७ में उसने अपनी कविता 'मनुष्य' समाप्त की। फरवरी की बुर्जुआ-डिमोक्रेटिक क्रान्ति को उसने 'श्रमिक आप्लावन या मजदूर की बाढ़ का प्रथम दिन' कहा। मायाकोव्स्की यह दिन क्रान्ति के नगर पेत्रोग्राद की सड़कों पर बिताता है।

जब 'अवरोरा' जहाज़ की तोपों के साथ क्रान्ति के नये युग की गूँज सुनाई पड़ी, उस समय मायाकोव्स्की क्रान्ति के केन्द्र स्मोल्नी में ही था। इस प्रकार क्राति के वातावरण के बीच मायाकोव्स्की की सर्जना का विकास शुरू हुआ।

मायाकोव्स्की की सर्जना का आरम्भ 'फ्यूचरिस्टों' के बीच होता है। उसने पब्लिक में उनकी ओर से रचनाएं पढ़ी और उनके मैनिफेस्टो पर हस्ताक्षर किया। सर्जना के आरम्भिक वर्षों में उसके ऊपर फ्यूचरिस्टों का प्रभाव था। उसने लिखा कि "विचार शब्द को जन्म नहीं देता वरन् शब्द विचार को जन्म देता है—विचार या कथानक नाम की कोई चीज नहीं है।"

किन्तु आगे चलकर क्रान्तिकारी आन्दोलन के अनुभव, मार्क्सवादी विचारों से परिचय तथा गोर्की के प्रभाव ने उसको धीरे धीरे फ्यूचरिस्टों से अलग कर दिया और उसके दृष्टिकोण को बदल दिया। कला को सामाजिक अभिव्यजन के रूप में ग्रहण करने के कारण मायाकोव्स्की ने काव्य से सामाजिक जीवन के युद्ध में योग देने की माग की। मायाकोव्स्की ने लिखा कि "आज की कविता युद्ध की कविता है।" उसने यह भी कहा कि "नयी कविता नयी मांगें पेश कर रही है। उसके लिए अभिव्यंजन के नये

साधन चाहिए, नये शब्द चाहिए ।" उसने लिखा कि "नये काव्य को पुराने ढंग से नहीं लिखा जा सकता ।"

'पतलून में बादल'

इस प्रकार मायाकोव्स्की, फ्यूचरिज्म को छोड़कर साहित्य-क्षेत्र में क्रान्तिकारी कवि और नवीनता के उद्भावक के रूप में प्रकट हुआ। किन्तु उसका नाम उस समय से महत्त्वपूर्ण कवि के रूप में फैला जब उसकी कविता 'पतलून में बादल' (१९१५) प्रकाशित हुई। इस कविता के चार अध्याय हैं। इसकी रचना के साथ कवि की सामाजिक हलचल पानेवाली क्रान्ति की भावना और चेतना सम्बंधित है। वह स्वयं लिखता है, 'बादल' लिख रहा हूँ, निकटस्थ क्रांति की चेतना दृढ़ हुई। इसके साथ ही कवि में अपनी कलात्मक तथा विचारात्मक प्रौढ़ता की भावना भी दृढ़ हुई। वह लिखता है कि "प्रौढ़ता का अनुभव कर रहा हूँ। विषय-वस्तु पर अधिकार प्राप्त कर सकता हूँ। उसे फलान्वित करूँगा। विषय-वस्तु का प्रश्न प्रस्तुत कर रहा हूँ—क्रांति के बारे में, 'पतलून में बादल' के बारे में सोच रहा हूँ।"

जब सेंसर ने इसके पहले के शीर्षक (तीस नेता) को व्यंग्यात्मक कहकर उसकी अनुमति नहीं दी तो आमुख में कही गयी तुलना का उसने प्रयोग किया। 'यदि चाहते हैं तो विनम्र रहूँगा। आदमी न सही 'पतलून में बादल'। उसने इस कविता के बारे में भूमिका में कहा कि—"पतलून में बादल' को मैं आज की कला की आलोचना समझता हूँ। तुम्हारे प्रेम का पतन हो, तुम्हारी कला का पतन हो, तुम्हारे धर्म का पतन हो, तुम्हारे समाज का पतन हो।"

इन शब्दों में इस कविता के मूल भाव अभिव्यजित हो गये हैं। कवि कृत्रिम प्रेम की भर्त्सना करता है। मानवीय अनुभूतियाँ, सत्यानुभूति झूठे सामाजिक संबंधों के कारण ठुकरा दी जाती है। इससे इन संबंधों का नाश हो और उस समाज या संगठन या स्तर का नाश हो जो मानवीय अनुभूतियों की सत्यता में बाधा पहुँचाता है। इसी तरह उस झूठे प्रेम का नाश हो जो उस समाज में सामान्य रूप से फैला है। इस कविता में व्यक्ति-

गत पीड़ा व्यापक सार्वजनिक रूप धारण कर लेती है। कवि की व्यक्तिगत ट्रेजेडी उसके साथ ही हजारों दूसरे बेज़बान लोगों की भी ट्रेजेडी है जिनकी वाणी कवि मायाकोव्स्की बनना चाहता है। वह समकालीन जनता की व्यथा, इच्छा और आन्दोलन को प्रकट करना चाहता है।

मायाकोव्स्की ने जिस प्रकार झूठे प्रेम पर प्रहार किया उसी प्रकार झूठे धर्म पर भी। उसने सामाजिक असामंजस्य को समझा और उसका अनुभव किया। व्यक्ति तथा कवि दोनों रूपों में मायाकोव्स्की ने यह निश्चित कर लिया कि अब आगे इसी तरह जीना नहीं हो सकता और यह कि पुरानी दुनियाँ आखिरी साँस ले रही है। कवि अपने को अपनी आती हुई क्रान्ति का एक हिस्सा समझता है। अपने को वह क्रान्ति का अग्रदूत समझता है। वह क्रान्ति की सेवा में लगा है। क्रान्ति के लिए वह सब कुछ करने को तैयार है। "तुमको (क्रान्ति) मैं अपना हृदय निकाल कर दे दूंगा। खून में रंगे हुए हृदय को तुम्हें झंडे की तरह दे दूंगा।"

इस कविता में मायाकोव्स्की की मौलिकता प्रकट होती है, यद्यपि काव्य-युक्तियाँ काव्य-विषय से संबंधित हैं। पूरी कविता एक आदमी के स्वगत कथन के रूप में है जो सब चीज़ों के बारे में कहना चाहता है और विशेष रूप से यह कहना चाहता है कि जीवन में आमूल परिवर्तन आवश्यक है। नायक का क्रान्तिकारी मनोभाव पूरे काव्य को एकता प्रदान करता है और इस प्रकार एक विषय से दूसरा विषयान्तरण इसी भाव से प्रेरित प्रतीत होता है। उसकी काव्य-युक्तियाँ भी कवि के क्रान्तिकारी अनुभव और संस्कारों से गुम्फित हैं।

इस कविता की भाषा भी मौलिक है। कवि ने एक ओर तो इस प्रगीत-काव्य में ऐसे शब्दों का समावेश किया जो इस प्रकार के काव्य के लिए 'निम्न' समझे जाते थे और दूसरी ओर नये शब्द भी गढ़े। किन्तु ये नये शब्द मायाकोव्स्की ने रूसी भाषा की प्रकृति और व्याकरण के सर्वथा अनुकूल गढ़े हैं, उसकी प्रकृति के विरुद्ध नहीं। यह नये शब्द एक ही भाव के सूक्ष्म अन्तर और रंगों को प्रकट करते हैं। इसी प्रकार कविता की ऊँचाल और भावावेग से उसका पद विधान भी अत्यधिक प्रभावित है।

मायाकोव्स्की का क्रान्ति के पूर्व का व्यंग्य

मायाकोव्स्की में व्यंग्य की प्रतिभा थी। प्रथम महायुद्ध के समय की परिस्थितियों ने इसे और भी उद्दुद्ध किया, जब उसने देखा कि बुर्जुआ और सौदागर देश बेच देने को तय्यार हैं और जनता का खून बह रहा है। इसीलिए उसकी सामाजिक अनुभूति व्यंग्यात्मक पर्दाफ़ाश करनेवाली रचनाओं में प्रकट हुई। हॉरेटिक काव्य लिखने की उसकी इच्छा व्यंग्य-रचना के रूप में प्रकट हुई। उसकी क्रोध और व्यंग्य से भरी मज़ाक उड़ानेवाली रचनाएं 'नए व्यंग्य' पत्र में प्रकाशित हुईं। 'रिश्वत का गीत' 'न्याय का गीत' रचनाओं में कवि ने ज़ारशाही के शासन और कार्यकर्ताओं पर कटाक्ष किया जो गबन किया करते थे और दफ़्तरी कागज़ों में डूबे रहते थे। उन पर मार्मिक व्यंग्यपूर्ण कटाक्ष किए। उसने मोटे पूंजीपतियों पर (खाने का गीत) भी कटु व्यंग किया। पूंजीपति का पेट पनामा में है। यदि मनुष्य का पेट पनामा में बदल जाता है तो वह अपेंडिसाइटिस और हैज़े से पीड़ित होने के अतिरिक्त और क्या है? अपने व्यंग्य में मायाकोव्स्की अत्युक्ति का ऐसा प्रयोग करता है कि वस्तु का व्यंग्यपूर्ण विकृत चित्र प्रस्तुत हो जाता है। फिर भी उसका यथार्थवादी आधार बना रहता है और यथार्थ तथा अतिशयोक्ति एक में मिल जाते हैं और बड़े तीक्ष्ण बन जाते हैं। यह विकृत अंकन यथार्थ में विद्यमान सामाजिक बुराई का उद्घाटन करता है। अतिशयोक्ति के कारण ये अंकन कभी-कभी केवल हास्यप्रद ही नहीं रहते वरन् भयप्रद भी बन जाते हैं।

सन् १९१५-१६ की मायाकोव्स्की की व्यंग्यात्मक कविताएं केवल क्रान्ति के पूर्व की यथार्थ स्थिति का मज़ाक ही नहीं हैं वरन् पूंजीवादी स्तर की मानवता-विरोधी स्थिति का पर्दाफ़ाश भी करती हैं।

युद्ध और शान्ति, मनुष्य

इन व्यंग्यपूर्ण कविताओं के साथ-साथ मायाकोव्स्की ने तीन कविताएं लिखीं। 'फ़्लेइता—पज़्वोचिक' (१९१५), 'युद्ध और शांति' (१९१६) और 'मनुष्य' (१९१७)। इनके मूल में भी वही समस्या है जो व्यंग्य के मूल

में है—पूंजीवाद के मानवता-विरोधी अस्तित्व की समस्या। किन्तु इसका उद्घाटन सर्वथा दूसरी प्रकार हुआ है। उसकी पहली कविता में कवि से उसकी प्रेयसी को वह व्यक्ति छीन लेता है जिसके पास बहुत पैसा है अर्थात् धन प्रेम को खरीद लेता है। 'युद्ध और शान्ति' में कवि साम्राज्यवादी (प्रथम) महायुद्ध का विरोध करता है जिसे कि प्रभु-वर्ग ने अपने स्वार्थ के लिए छेड़ा है। इसके केन्द्र में 'मनुष्य' है जिसकी अभिव्यक्ति प्रगीतात्मकता के माध्यम से कवि के उत्तम पुरुष 'मैं' में हुई है। यह मनुष्य मायाकोव्स्की की कविता का नायक है। उसका भाग्य उसका सुख धन की शक्ति के विरुद्ध प्रस्तुत किया गया है। पूंजीवाद के विरुद्ध मानवता की यह प्रतिस्थापना बड़ी शक्ति (और गहराई) के साथ मायाकोव्स्की की क्रान्ति के पूर्व की सर्जना में और उसकी कविता 'मनुष्य' में अभिव्यक्त हुई है। बाइबिल के समान इसके अध्यायों का नामकरण किया गया था। बाइबिल की इस युक्ति का मजाक बनाया गया है। मायाकोव्स्की का जन्म, मायाकोव्स्की का जीवन, फिर भी सब मजाक नहीं है और मायाकोव्स्की इस कविता के द्वारा यह कहना चाहता है कि मनुष्य इस पृथ्वी पर सबसे बढ़कर है। उस मनुष्य का एक प्रतिद्वन्द्वी है जिसे कवि ने 'राजा' कहा है। यह सबका मालिक है और यह पूंजीवाद का प्रतीक है। मनुष्य उससे इस बात में बढ़कर है कि उसके पास हृदय है। यह मनुष्य की सबसे मूल्यवान वस्तु है। यह हृदय मानवता के सुख के लिए अपनी बलि देने को तैयार है। इसी से मायाकोव्स्की इसे मनुष्य की अमूल्य वस्तु मानता है।

स्वतन्त्र मनुष्य की यह मानवतावादी भावना मायाकोव्स्की के मन में आने वाली समाजवादी क्रान्ति से बंधी हुई है। क्रान्ति से पहले तक स्वतन्त्र मनुष्य का यह चित्र मायाकोव्स्की के लिए केवल भविष्य की कल्पना है। असली मानवता की उपलब्धि उसे अक्तूबर की रूसी समाजवादी क्रान्ति में हुई।

१९१७-१८ के वर्षों में मायाकोव्स्की

१९१७ की क्रान्ति के बाद से मायाकोव्स्की का कार्यकलाप और

जोरों से चला। वह कला-क्षेत्र के कार्यकर्ताओं की सभाओं में भाषण देता है। 'आसिस' (समाजवादी कला असोसिएशन), 'इमो' (जवानों की कला) जैसे प्रकाशनों का संगठन वामपक्षीय लेखकों की कृतियों को छपाने के लिए करता है और मजदूरों, सिपाहियों और नौ-सैनिकों के सामने कविताएं पढ़ता है। इसके अतिरिक्त वह तीन फ़िल्मों में सिनेमा-अभिनेता के रूपमें काम करता है जिसकी सिनारियो (फ़िल्म-कथा) उसने प्रस्तुत की थी।

अक्तूबर-क्रान्ति के वार्षिकोत्सव के पूर्व उसने अपना नाटक मिस्तेरिया बूफ तय्यार कर लिया जो वार्षिकोत्सव के दिन बड़ी सफलता के साथ खेला गया। यह 'अपने युग का महाकाव्यात्मक तथा व्यंग्यात्मक चित्रण है।' लूनाचार्स्की ने कहा कि "इस कृति की विषय-वस्तु समकालीनता की सारी व्यापकता और विराटता के साथ दी गयी है।" क्रान्ति के चित्रण में मायाकोव्स्की बड़े साहस, वीरता और 'मिस्तेरिया' के साथ उपहास (बूफ) का समिश्रण कर देता है। क्रांति के पराजित शत्रुओं की हँसी होती है। नरक तथा स्वर्ग के चित्रण में भी तीव्र उपहास है।

१७ दिसम्बर १९१८ में मायाकोव्स्की को नौ-सैनिकों के सामने कविता पढ़ने को आमंत्रित किया गया। इसकी तय्यारी करते हुए उसने 'बांए से मार्च' (फौजी कूच) लिखा।

क्रांति के विषय में कविता

क्रांति के बाद मायाकोव्स्की ने बहुत सी कविताएं लिखीं जिनमें से कई बहुत प्रसिद्ध हुई और विदेशी भाषाओं में अनूदित की गई। यह क्रांति के विषय में या क्रान्ति में कला के स्थान के विषय में है। क्रांति की भावना ने उसकी प्रतिभा को और भी उद्बुद्ध किया और नये युग तथा मानवता के विराट ऐतिहासिक मोड़ की अनुभूति ने उसकी कविता में बड़ी शक्ति दी। वह क्रान्तिकारी जनता का कवि बनना भी चाहता था। क्रान्ति के बाद उसकी कविता का स्वर बदल जाता है और उसमें स्वतन्त्र मनुष्य

उन्मुक्त प्रतिभा के अपार हर्ष, शक्ति और उत्साह के स्वर में सुनाई पड़ते हैं।

कला और क्रांति

क्रान्ति ने उसमें ज़िम्मेदारी की भावना-देश तथा जनता के प्रति उत्तर दायित्व-को और भी दृढ़ किया। उसका विश्वास है कि क्रान्ति के युग में कला जनता के लिए और भी आवश्यक है क्योंकि जनता को प्रभावित करती हुई वह बहुत बड़ी शक्ति बन सकती है। इसी से वह चाहता है कि कला महलों, संग्रहालयों से निकल कर सड़क पर आ जाय, जनता के पास पहुँच जाय और इतिहास की महान् घटना क्रान्ति के उत्सव के हर्ष को प्रकट करे। मायाकोव्स्की की 'कला की सेना को हुक्म' नामक कविता, हर्ष, उत्साह, क्रान्तिकारी आग और जवानी के जोश से भरी हुई है। कवि नये जीवन कार्य की ओर सबको प्रेरित कर रहा है। सबका आह्वान कर रहा है। वास्तव में कवि अपने को ही संबोधित कर रहा था।

रोस्ता और मायाकोव्स्की

१९१९ में मायाकोव्स्की ने 'रोस्ता' (रूसी तार एजेंट) कला-विभाग का संगठन किया जिसमें 'रोस्ता की व्यंग्य की खिड़कियाँ' या 'रोस्ता की खिड़कियाँ' निकालनी शुरू कीं। यह विशेष प्रकार के पोस्टर थे जिन पर सामयिक विविध विषयों या घटनाओं पर हाथ से रंगीन चित्र बने रहते थे और प्रायः उनके नीचे कविताएं भी लिखी रहती थीं जो दूकानों में लटका दी जाती थीं। मायाकोव्स्की का कला-स्कूल का ज्ञान यहाँ काम आया। इस प्रकार उसने सभी कलाओं को जनता की चेतना उद्बुद्ध करने में और जनहित में लगाया। उसकी व्यंग्यात्मक कविताओं ने कशाघात का काम किया। १६०० पोस्टरों में से नव-दशमांश मायाकोव्स्की की पंक्तियों (गद्य तथा पद्य) पर आधारित हैं और एक तिहाई स्वयं कवि के द्वारा चित्रित हैं। 'रोस्ता' का काम गृह-युद्ध के कठिन समय में शुरू हुआ। यह क्रांतिकारी युद्ध के तीन वर्षों के चित्र हैं। गृह-युद्ध से लेकर अनेक प्रकार की घटनाओं का व्यंग्यपूर्ण अंकन इनकी विषय-वस्तु है। अपनी इन कविताओं

जोरों से चला। वह कला-क्षेत्र के कार्यकर्ताओं की सभाओं में भाषण देता है। 'आसिस' (समाजवादी कला अमोसिएशन), 'इमो' (जवानों की कला) जैसे प्रकाशनों का सगठन वामपक्षीय लेखकों की कृतियों को छपाने के लिए करता है और मजदूरों, सिपाहियों और नौ-सैनिकों के सामने कविताएं पढ़ता है। इसके अतिरिक्त वह तीन फ़िल्मों में सिनेमा-अभिनेता के रूपमें काम करता है जिसकी सिनारियां (फ़िल्म-कथा) उसने प्रस्तुत की थी।

अक्तूबर-क्रान्ति के वार्षिकोत्सव के पूर्व उसने अपना नाटक मिस्तेरिया बूफ तय्यार कर लिया जो वार्षिकोत्सव के दिन बड़ी सफलता के साथ खेला गया। यह 'अपने युग का महाकाव्यात्मक तथा व्यंग्यात्मक चित्रण है।' लूनाचार्स्की ने कहा कि "इस कृति की विषय-वस्तु समकालीनता की सारी व्यापकता और विराटता के साथ दी गयी है।" क्रान्ति के चित्रण में मायाकोव्स्की बड़े साहस, वीरता और 'मिस्तेरिया' के साथ उपहास (बूफ) का समिश्रण कर देता है। क्रांति के पराजित शत्रुओ की हँसी होती है। नरक तथा स्वर्ग के चित्रण मे भी तीव्र उपहास है।

१७ दिसम्बर १९१८ में मायाकोव्स्की को नौ-सैनिकों के सामने कविता पढ़ने को आमंत्रित किया गया। इसकी तय्यारी करते हुए उसने 'बाँए से मार्च' (फौजी कूच) लिखा।

क्रांति के विषय में कविता

क्रांति के बाद मायाकोव्स्की ने बहुत सी कविताएं लिखी जिनमे से कई बहुत प्रसिद्ध हुईं और विदेशी भाषाओं में अनूदित की गईं। यह क्रांति के विषय मे या क्रान्ति में कला के स्थान के विषय मे है। क्रांति की भावना ने उसकी प्रतिभा को और भी उद्‌बुद्ध किया और नये युग तथा मानवता के विराट ऐतिहासिक मोड़ की अनुभूति ने उसकी कविता में बड़ी शक्ति दी। वह क्रान्तिकारी जनता का कवि बनना भी चाहता था। क्रान्ति के बाद उसकी कविता का स्वर बदल जाता है और उसमें स्वतन्त्र मनुष्य

। प्रतिमा के अपार हर्ष, शक्ति और उत्साह के स्वर मे सुनाई
।

और क्रांति

न्ति ने उसमे ज़िम्मेदारी की भावना-देश तथा जनता के प्रति उत्तर
को और भी दृढ़ किया। उसका विश्वास है कि क्रान्ति के युग में कला
के लिए और भी आवश्यक है क्योंकि जनता को प्रभावित करती
बहुत बडी शक्ति बन सकती है। इसी से वह चाहता है कि कला
ग्रहालयों से निकल कर सड़क पर आ जाय, जनता के पास पहुँच
: इतिहास की महान् घटना क्रान्ति के उत्सव के हर्ष को प्रकट करे।
स्की की 'कला की सेना को हुक्म' नामक कविता, हर्ष, उत्साह,
री आग और जवानी के जोश से भरी हुई है। कवि नये जीवन
ओर सबको प्रेरित कर रहा है। सबका आह्वान कर रहा है।
कवि अपने को ही संबोधित कर रहा था।

र मायाकोव्स्की

९ में मायाकोव्स्की ने 'रोस्ता' (रूसी तार एजेंट) कला-विभाग
किया जिसमे 'रोस्ता की व्यंग्य की खिड़कियाँ' या 'रोस्ता की
निरालनी शुरू की। यह विशेष प्रकार के पोस्टर थे जिन पर
विविध विषयों या घटनाओं पर हाथ से रंगीन चित्र बने रहते थे
उनके नीचे कविताएं भी लिखी रहती थी जो दूकानो मे लटका
ो। मायाकोव्स्की का कला-स्कूल का ज्ञान यहाँ काम आया।
उसने सभी कलाओं को जनता की चेतना उद्बुद्ध करने मे और
लगाया। उसकी व्यंग्यात्मक कविताओं ने कशाघात का काम
ि०० पोस्टरों मे से नव-दशमांश मायाकोव्स्की की पंक्तियों
पद) पर आधारित हैं और एक तिहाई स्वयं कवि के द्वारा
'रोस्ता' का काम गृह-युद्ध के कठिन समय मे शुरू हुआ। यह
युद्ध के तीन वर्षों के चित्र हैं। गृह-युद्ध से लेकर अनेक प्रकार
का व्यंग्यपूर्ण अंकन इनकी विषय-वस्तु है। अपनी इन कविताओं

के नारे को मायाकोव्स्की ने प्रस्तुत हास्य कहा—राग जिसने सैनिकों में उत्साह भरा और शत्रुओं के हृदयों में भय। इस प्रकार उसने कविता और कला दोनों के द्वारा प्रचार का कार्य किया, जनता की सेवा की।

कविता '१५ करोड़'

रोस्ता में काम करते हुए भी मायाकोव्स्की ने १९१९–२० के बीच 'मिस्तेरिया बूफ़' का संशोधन किया और बड़ी कविता '१५०,०००,०००' लिखी।

इस कविता की विषय-वस्तु इवान का विल्सन से युद्ध है। इवान क्रांतिकारी रूस है और विल्सन पूँजीवाद का रूप है। इन दोनों प्रतीकों के माध्यम से मायाकोव्स्की ने पूरे ऐतिहासिक युग का वस्तु-तथ्य, दुनिया का समाजवाद और पूँजीवाद के खेमों में विभाजन प्रस्तुत कर दिया है। ये दोनों दो विचारों के संघर्ष के प्रतिनिधि हैं। मायाकोव्स्की ने इस कविता को 'बिलीना' (लोक-प्रबन्ध-काव्य) भी कहा है। लोक काव्य के समान इसमें भी शत्रु का व्यंग्यपूर्ण अतिरंजित चित्र प्रस्तुत किया गया है, जिससे उसे पढ़ते समय लोक-प्रबन्ध-काव्यों का ध्यान आ जाता है।

नया स्वर

यह काव्य मायाकोव्स्की की बदली हुई मनोवृत्ति को भी प्रदर्शित करता है जो कि क्रान्ति के बाद की अन्य कृतियों में भी मिलती है। क्रान्ति के पूर्व की रचनाओं में मायाकोव्स्की में गहरी करुणा मिलती है जिसके मूल में मानवतावादी पूँजीवाद की मानवता विरोधी स्तर की विषमता है, किन्तु क्रान्ति के बाद की रचनाओं में हर्ष और दृढ़ विश्वास का स्वर है। इस नयी प्रगीतात्मक मनोदृष्टि ने उसके काव्य को संपन्न बनाया और उसे नया स्वर, नया लहजा दिया। हर्ष का यह नया स्वर '१५०,०००,०००' 'मिस्तेरिया बूफ़' तथा 'रोस्ता की खिड़कियों में' मिलता है। विशेष रूप से 'व्लदीमिर मायाकोव्स्की के साथ गर्मी में असाधारण घटना' कविता में यह उत्साह व्यंग्य के बीच छिपा मिलता है। इस कविता में सूर्य कवि के यहाँ मेहमान बन कर आता है और दोनों में बड़ी बातें होती हैं। दोनों

मे मतैक्य भी है, कवि और सूर्य दोनों का काम एक है और बड़ा महत्त्व-पूर्ण है। कवि जीवन में वही करता है जो सूर्य करता है—सब जीवधारियों के विकास में मदद करना और जीवन में से अन्धकार को दूर करना। कविताओं का वैसा ही प्रभाव पड़ना चाहिए जैसा सूर्य की किरणों का। कवि अपने लक्ष्य से उसी प्रकार नहीं विरत हो सकता जैसे कि सूर्य अपने मार्ग से। इसलिए मायाकोव्स्की के लिए काव्य और कला दोनों प्रकाश के प्रतीक हैं।

कवि इसी के साथ अपनी ज़िम्मेदारी को भी नहीं भूलता और वह सब काम करता है, जो जरूरी हैं। 'जब सोवियत व्यापार संस्था' के पोस्टरों के लिए उसने हल्की व्यंग मिश्रित कविताएं लिखनी शुरू कीं तो उसकी आलोचना हुई कि मायाकोव्स्की जैसा बड़ा कवि ऐसी हलकी चीज़ें लिखे। मायाकोव्स्की ने जवाब दिया कि 'मैं इसके बारे में लिखना चाहता हूँ क्योंकि यह जरूरी है।' यह मायाकोव्स्की की विशेषता है। जो कुछ सोवियत शासन के लिए आवश्यक था वही मायाकोव्स्की की व्यक्तिगत इच्छा बन गयी। देश के व्यापक हित में ही उसने अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को मिला दिया। फिर भी यह कहना पड़ेगा कि प्रचार पोस्टरों की मायाकोव्स्की की रचना न गंभीरता में और न महत्त्व में 'रोस्ता' को पाती है। समाचार-पत्रों तथा व्यंग्यपत्रों में छपी हुई उसकी कविताएं 'रोस्ता' का ही विकसित क्रम हैं। उसके इस समय के कार्य की दूसरी दिशा प्रगीतात्मक (प्रबन्ध) काव्य की है।

आगे चलकर सांस्कृतिक और सामाजिक समस्याएं भी मायाकोव्स्की के व्यंग्य की वस्तु विषय बन गयीं। सोवियत व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की नकारात्मक प्रवृत्तियाँ, श्रमिक वर्ग पर—बुर्जुआ प्रभाव के विरुद्ध युद्ध, ब्यूरोक्राटिज्म की आलोचना आदि ने सोवियत व्यंग्य रचना की मांग की जो कि स्वआलोचना का साधन बन गई। मायाकोव्स्की ने इसे अपना लक्ष्य बनाया। १९२२ में मायाकोव्स्की ने बराबर सभा और बहस करनेवालों पर व्यंग्यपूर्ण कविता 'सभावाज़' लिखी जिसका अनुमोदन लेनिन ने भी किया। 'मायाकोव्स्की' का व्यंग्य बिलकुल ठीक था।

'इज़वेस्तिया' का इस कविता के बाद उसकी कविताएं 'मास्को मज़दूर', और 'घड़ियाल' में छपी जिनमें बहुत सी व्यंग्यपूर्ण थीं जो राजनीतिक नेताओं और पूंजीवादी शासन तथा ब्यूरोक्राटिज्म पर थी।

कविता व्लदीमिर ईलियच लेनिन

लेनिन के जीवनकाल ही में सन् १९२३ में मायाकोव्स्की ने अपने प्रिय नेता लेनिन के विषय में लिखने की सोची थी। किन्तु यह कार्य लेनिन की मृत्यु के बाद ही सम्पन्न हो सका। सन् १९२४ में यह कविता पूर्ण हुई। १९२५ में यह कविता प्रकाशित हुई। इसे कवि ने रूसी कम्यूनिस्ट पार्टी को समर्पित किया। मायाकोव्स्की की यह कविता कई जगह बड़ी सफलता के साथ पढ़ी गयी। लेनिन की छठी वार्षिकी पर कवि ने 'व्लदीमिर ईलियच लेनिन' कविता का तीसरा भाग बल्शोय थियेटर में पढ़ा। पार्टी ने उसका स्वागत किया और स्तालिन ने उसकी प्रशंसा की। वर्तमान समय में इस कविता की ख्याति सोवियत संघ के बाहर भी बहुत है और संसार की कई भाषाओं में इसका अनुवाद भी हो गया है।

'व्लदीमिर ईलियच लेनिन' कविता मायाकोव्स्की के नायक-अंकन का विकसित रूप प्रस्तुत करती है। इस कविता में मायाकोव्स्की का मानवतावादी आदर्श कवि के अपने प्रगीतात्मक उद्‌गारों के माध्यम से नहीं अभिव्यक्त हुआ है (जैसे कि 'पतलून में बादल' में) और न जनता के प्रतीकात्मक रूप के माध्यम से (जैसा कि १५० ०००,००० कविता में) वरन् यथार्थ व्यक्ति लेनिन के माध्यम से।

मायाकोव्स्की के लिए लेनिन सच्ची मानवता का साकार रूप है। वह सबसे बड़ा 'मानवीय मानव' है। वह भविष्य का, कम्यूनिज्म का, मनुष्य है। उसकी आंखों ने वह सब देख लिया जो कि समय के गर्भ में छिपा था जिस पर समय का पर्दा पड़ा था। लेनिन, व्यक्ति और युग के प्रतीक के रूप में नेता लेनिन, इन दोनों को मायाकोव्स्की की प्रतिभा ने यथार्थ सजीव चित्र में गुंफित कर दिया। इस चित्र की प्रत्येक रेखा यथार्थ पर आधारित है और इसकी कलात्मकता इस बात में है कि नायक

की बाहरी रूपरेखा के साथ उसके चरित्र का (अनुभूति और विचार धारा) भी पूरा पूरा अभिव्यंजन हुआ है।

इस कविता की प्रबन्ध रचना में प्रबन्ध काव्यात्मक या ऐतिहासिक और प्रगीतात्मक या वैयक्तिक दोनों तत्वों का बड़ी कलात्मकता के साथ समाहार हुआ है। लेनिन के कार्यकलाप के विश्व ऐतिहासिक महत्त्व को प्रकट करने के लिए कवि को इस कविता में पूँजीवाद के इतिहास के और दो तीन सौ वर्ष के क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रमुख तत्वों का समावेश करना पड़ा तथा उसके जीवन की घटनाओं, कम्युनिस्ट पार्टी की मुख्य मंज़िलों, १९०५ के क्रान्ति आदि का भी उपयोग करना पड़ा। मायाकोव्स्की इस कठिन कवि कर्म में सफल हुआ और ऐतिहासिक (या घटनात्मक) तथा प्रगीतात्मक (या अनुभूतिपरक) के सम्यक् समिश्रण से व्यक्ति और नेता (या इतिहास निर्माता) लेनिन का एक पूर्ण समन्वित चित्र प्रस्तुत कर सका।

इस कविता में मायाकोव्स्की ने पूँजीवाद की उन तीनों मुख्य विषमताओं का उद्घाटन किया है और जो कि साम्राज्यवादिता के युग में पूर्ण उत्कर्ष पर होती हैं और जिनसे छुटकारा सिर्फ प्रोलितारियत् क्रान्ति के द्वारा ही मिल सकता है। ये विषमताएं हैं-परिश्रम और पूंजी की विषमता, साम्राज्यवादी देशों में आपस में, दूसरे देश पर अधिकार पाने की विषमता, तथा अल्पसख्यक प्रभुवर्ग और बहुसख्यक उपनिवेशों की जनता के बीच की विषमता। इनमें से प्रत्येक का स्वतन्त्र रूप से वर्णन हुआ है। किन्तु फिर भी जनता की अपने नेता उद्धारक के स्वप्न पर विश्वास की भावना इनमें एकान्विति प्रस्तुत करती है और इनको एक में बाँध देती है।

मायाकोव्स्की पूँजीवाद के पूरे विकास और उसकी भयकरता का चित्र प्रस्तुत करता है और कहता है कि इससे बचकर या कतराकर निकल जाना असंभव है। सिर्फ एक ही रास्ता है और वह है इसका उन्मूलन।

इसके आगे कवि पूँजीवाद के भीतर ही से पैदा होनेवाली और विकसित होनेवाली शक्ति की चर्चा करता है जिसने पूँजीवाद का नाश निश्चित कर दिया। जिसने नये प्रकार के नेता, समाजवादी क्रान्ति के

'इज्वेस्तिया' की इस कविता के बाद उसकी कविताएं 'मास्को मजदूर', और 'मङ्गियाल' में छपी जिनमें बहुत सी व्यंग्यपूर्ण थी जो राजनीतिक नेताओं और पूँजीवादी शासन तथा ब्यूरोक्राटिज्म पर थीं।

कविता व्लादीमिर ईलियच लेनिन

लेनिन के जीवनकाल ही में सन् १९२३ में मायाकोव्स्की ने अपने प्रिय नेता लेनिन के विषय में लिखने की सोची थी। किन्तु यह कार्य लेनिन की मृत्यु के बाद ही सम्पन्न हो सका। सन् १९२४ में यह कविता पूर्ण हुई। १९२५ में यह कविता प्रकाशित हुई। इसे कवि ने रूसी कम्यूनिस्ट पार्टी को समर्पित किया। मायाकोव्स्की की यह कविता कई जगह बड़ी सफलता के साथ पढ़ी गयी। लेनिन की छठी वार्षिकी पर कवि ने 'व्लादीमिर ईलियच लेनिन' कविता का तीसरा भाग बल्शोय थियेटर में पढ़ा। पार्टी ने उसका स्वागत किया और स्तालिन ने उसकी प्रशंसा की। वर्तमान समय में इस कविता की ख्याति सोवियत संघ के बाहर भी बहुत है और संसार की कई भाषाओं में इसका अनुवाद भी हो गया है।

'व्लादीमिर ईलियच लेनिन' कविता मायाकोव्स्की के नायक-अंकन का विकसित रूप प्रस्तुत करती है। इस कविता में मायाकोव्स्की का मानवतावादी आदर्श कवि के अपने प्रगीतात्मक उद्गारों के माध्यम से नहीं अभिव्यक्त हुआ है (जैसे कि 'पतलून में बादल' में) और न जनता के प्रतीकात्मक रूप के माध्यम से (जैसा कि १५० ०००,००० कविता में) वरन् यथार्थ व्यक्ति लेनिन के माध्यम से।

मायाकोव्स्की के लिए लेनिन सच्ची मानवता का साकार रूप है। वह सबसे बड़ा 'सर्वाधिक मानव' है। वह भविष्य का, कम्यूनिज्म का, मनुष्य है। उसकी आँखों ने वह सब देख लिया था कि समय के गर्भ में छिपा था जिस पर समय का पर्दा पड़ा था। लेनिन, व्यक्ति और युग के प्रतीक के रूप में देखे गये लेनिन, इन दोनों को मायाकोव्स्की की प्रतिभा ने इतना सजीव चित्र में मूर्तिमान कर दिया। इस चित्र की प्रत्येक रेखा यथार्थ पर आधारित है और इसकी कलात्मकता इस बात में है कि इतने

की बाहरी रूपरेखा के साथ उसके चरित्र का (अनुभूति और विचार धारा) भी पूरा पूरा अभिव्यंजन हुआ है।

इस कविता की प्रबन्ध रचना में प्रबन्ध काव्यात्मक या ऐतिहासिक और प्रगीतात्मक या वैयक्तिक दोनों तत्वों का बड़ी कलात्मकता के साथ समाहार हुआ है। लेनिन के कार्यकलाप के विश्व ऐतिहासिक महत्त्व को प्रकट करने के लिए कवि को इस कविता मे पूँजीवाद के इतिहास के और दो तीन सौ वर्ष के क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रमुख तत्वों का समावेश करना पड़ा तथा उसके जीवन की घटनाओ, कम्यूनिस्ट पार्टी की मुख्य मंजिलों, १९०५ के क्रान्ति आदि का भी उपयोग करना पड़ा। मायाकोव्स्की इस कठिन कवि कर्म में सफल हुआ और ऐतिहासिक (या घटनात्मक) तथा प्रगीतात्मक (या अनुभूतिपरक) के सम्यक् सम्मिश्रण से व्यक्ति और नेता (या इतिहास निर्माता) लेनिन का एक पूर्ण समन्वित चित्र प्रस्तुत कर सका।

इस कविता में मायाकोव्स्की ने पूँजीवाद की उन तीनों मुख्य विषमताओं का उद्घाटन किया है और जो कि साम्राज्यवादिता के युग में पूर्ण उत्कर्ष पर होती हैं और जिनसे छुटकारा सिर्फ प्रोलितारियत् क्रान्ति के द्वारा ही मिल सकता है। ये विषमताएं हैं-परिश्रम और पूँजी की विषमता, साम्राज्यवादी देशों मे आपस में, दूसरे देश पर अधिकार पाने की विषमता, तथा अल्पसंख्यक प्रभुवर्ग और बहुसंख्यक उपनिवेशों की जनता के बीच की विषमता। इनमें से प्रत्येक का स्वतन्त्र रूप से वर्णन हुआ है। किन्तु फिर भी जनता की अपने नेता-उद्धारक के स्वप्न पर विश्वास की भावना इनमे एकान्विति प्रस्तुत करती है और इनको एक में बाँध देती है।

मायाकोव्स्की पूँजीवाद के पूरे विकास और उसकी भयकरता का चित्र प्रस्तुत करता है और कहता है कि इससे बचकर या कतराकर निकल जाना असंभव है। सिर्फ एक ही रास्ता है और वह है इसका उन्मूलन।

इसके आगे कवि पूँजीवाद के भीतर ही से पैदा होनेवाली और विकसित होनेवाली शक्ति की चर्चा करता है जिसने पूँजीवाद का नाश निश्चित कर दिया। जिसने नये प्रकार के नेता, समाजवादी क्रान्ति के

'इज्वेस्तिया' की इस कविता के बाद उसकी कविताएं 'मास्को मजदूर', और 'घड़ियाल' में छपीं जिनमें बहुत सी व्यंग्यपूर्ण थीं जो राजनीतिक नेताओं और पूंजीवादी शासन तथा ब्यूरोक्राटिज्म पर थीं।

कविता व्लदीमिर ईलियच लेनिन

लेनिन के जीवनकाल ही में सन् १९२३ में मायाकोव्स्की ने अपने प्रिय नेता लेनिन के विषय में लिखने की सोची थी। किन्तु यह कार्य लेनिन की मृत्यु के बाद ही सम्पन्न हो सका। सन् १९२४ में यह कविता पूर्ण हुई। १९२५ में यह कविता प्रकाशित हुई। इसे कवि ने रूसी कम्यूनिस्ट पार्टी को समर्पित किया। मायाकोव्स्की की यह कविता कई जगह बड़ी सफलता के साथ पढ़ी गयी। लेनिन की छठी वार्षिकी पर कवि ने 'व्लदीमिर ईलियच लेनिन' कविता का तीसरा भाग बल्शोय थियेटर में पढ़ा। पार्टी ने उसका स्वागत किया और स्तालिन ने उसकी प्रशंसा की। वर्तमान समय में इस कविता की ख्याति सोवियत संघ के बाहर भी बहुत है और संसार की कई भाषाओं में इसका अनुवाद भी हो गया है।

'व्लदीमिर ईलियच लेनिन' कविता मायाकोव्स्की के नायक-अंकन का विकसित रूप प्रस्तुत करती है। इस कविता में मायाकोव्स्की का मानवतावादी आदर्श कवि के अपने प्रगीतात्मक उद्गारों के माध्यम से नहीं अभिव्यक्त हुआ है (जैसे कि 'पतलून में बादल' में) और न जनता के प्रतीकात्मक रूप के माध्यम से (जैसा कि १५०,०००,००० कविता में) वरन् यथार्थ व्यक्ति लेनिन के माध्यम से।

मायाकोव्स्की के लिए लेनिन सच्ची मानवता का साकार रूप है। वह सबसे बड़ा 'मानवीय मानव' है। वह भविष्य का, कम्यूनिज्म का, मनुष्य है। उसकी आँखों ने वह सब देख लिया जो कि समय के गर्भ में छिपा था जिस पर समय का पर्दा पड़ा था। लेनिन, व्यक्ति और युग के प्रतीक के रूप में नेता लेनिन, इन दोनों को मायाकोव्स्की की प्रतिभा ने यथार्थ सजीव चित्र में गुंफित कर दिया। इस चित्र की प्रत्येक रेखा यथार्थ पर आधारित है और इसकी कलात्मकता इस बात में है कि नायक

लेनिन की मृत्यु पर रूसी जनता ने उसे जो शांत और मूक विदा दी उससे प्रभावित होकर मायाकोव्स्की ने अपने इस काव्य में पूछा कि "वह कौन है, उसने क्या किया, वह कहाँ से आया था जिसको जनता जाड़े की इस ठिठुरन के बीच खड़ी सम्मान और विदाई दे रही है?" इन प्रश्नों का उत्तर प्रथम दो अध्यायों में दिया गया। घटना और कथा की दृष्टि से रचना पूरी हो जाती है, किन्तु फिर भी कविता पूरी नहीं हुई। अभी भावात्मकता और प्रगीतात्मकता की माँग बाक़ी है। इसकी पूर्ति के लिए तीसरे अध्याय की रचना प्रगीतात्मक स्तर पर हुई है जिसमें कवि का भावावेश पूरे काव्य का उत्कर्ष बिन्दु बन जाता है। काव्य की समाप्ति लेनिन के व्यक्तित्व और उसके विचारों की महत्ता तथा शक्ति की प्रगीतात्मक अभिव्यक्ति और अभिनंदन के साथ होती है।

इस कविता की भाषा में, जीवन की भाषा और साहित्यिक भाषा में कोई भेद नहीं है बल्कि दोनों एक दूसरे में घुलमिल गई हैं। मायाकोव्स्की इस प्रकार की दीवार या कोई कृत्रिम भेद नहीं पसंद करता। नये शब्द गढ़ने के लिए मायाकोव्स्की प्रसिद्ध है किन्तु यह शब्द रूसी भाषा की प्रकृति और व्याकरण के अनुकूल ही बनाये गये हैं। इसमें राजनीतिक क्षेत्र और सभा, सोसायटी के तथा अखबारी शब्द बहुत अधिक हैं।

मायाकोव्स्की की कविता 'ब्लदीमिर ईलियच लेनिन' पाठकों में देश-भक्ति की भावना भर रही है और देश-सेवा की प्रेरणा देती है।

पश्चिम के विषय में मायाकोव्स्की के विचार

मायाकोव्स्की की कृतियों के बीच 'विदेशी विषय-वस्तुओं' पर लिखी गई कविताओं का विशिष्ट स्थान है। इनमें विषय-वस्तु की विविधता और अनेकरूपता है। १९२२–१९२९ के बीच मायाकोव्स्की ने नौ बार विदेशों की यात्रा की। उसने फ्रांस, अमेरिका, मैक्सिको, स्पेन, जर्मनी आदि कई देशों की यात्रा की और इस प्रकार पश्चिमी जीवन और समाज

से परिचित हुआ। विदेश पर्यवेक्षण की उसकी अनुभूतियां 'ईफ़ेल टावर से बात', 'पेरिस', 'अमेरिका से संबंधित रचनाएं', 'सोवियत पासपोर्ट के विषय में कविता' जैसी प्रसिद्ध कृतियों में अभिव्यक्त हुईं।

मायाकोव्स्की ने अपने इस पर्यटन, पर्यवेक्षण में जो अच्छी चीजें देखीं उनकी तारीफ़ भी की और जो बातें उसे अच्छी नहीं प्रतीत हुईं उनकी आलोचना भी की। 'ईफ़ेल टावर' और 'न्यूयार्क का ब्रुकलिन पुल' जैसी कविताएं इस बात का प्रमाण हैं। मायाकोव्स्की अमेरिकन उद्योग कौशल तथा फ्रेन्च संस्कृति को महत्वपूर्ण स्थान देता है और उसका ऊंचा मूल्यांकन करता है। फिर भी वह पूंजीवादी पश्चिम की समकालीन संस्कृति की आलोचना करता है। अमेरिका से सम्बन्धित कविताएं और लेख अपनी विचारात्मक गहराई और कलात्मक पूर्णता से बड़े महत्वपूर्ण हैं। अमेरिका का प्रगतिशील उद्योग-कौशल 'डालर के देश' के छिपे हुए या प्रतिक्रियावादी सामाजिक सम्बन्धों को मायाकोव्स्की की नजरों से न छिपा सका। सोवियत नागरिक और निवासी की दृष्टि से पश्चिम के पूंजीवादी जीवन को देखकर उसके हृदय में अपने देश के प्रति उच्चता, सम्मान और प्रेम की भावना और भी दृढ़ हुई और वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि नैतिक और सामाजिक दृष्टि से अमेरिका आदि बहुत पीछे हैं। अमेरिका के मूल निवासियों का नाश, नीग्रो लोगों पर अत्याचार, सामाजिक विषमता तथा पूंजीवादी स्तर की लूट-खसूट, रंगीनी और हुड़-दंग सबका अंकन मायाकोव्स्की की पर्यटन सम्बन्धी कविताओं और लेखों (अमेरिका का उद्घाटन) में बड़े विस्तार के साथ हुआ है और पश्चिम के जीवन की सही तस्वीर [illegible] अभिव्यक्त हुई है।

अमेरिका से लौटते हुए जहाज पर कवि ने अपनी सर्वोत्तम कृतियों में से एक कविता 'घर की ओर' पर काम शुरू किया। इसमें सोवियत जनता के साथ कवि के घनिष्ट संबंध और उसकी जिम्मेदारी की भावना की अभिव्यक्ति हुई है। यह कविता कवि की सर्जना के नये (और अंतिम) युग की ओर संकेत करती है जब कि सोवियत समाज में कवि तथा कला के स्थान तथा महत्त्व के संबंध में उसके विचार परिपक्व और प्रकट हुए।

मायाकोव्स्की की सर्जना का अन्तिम युग

गृह-युद्ध के बाद राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के पुनर्निर्माण का जो महान् कार्य शुरू हुआ था वह १९२६ तक बहुत कुछ पूरा हो गया। देश के औद्योगीकरण की बहुत सी कठिनाइयाँ अब दूर हो गयी थीं। नयी फैक्टिरियों, सवखोज कलखोज आदि का नवीन व्यापक निर्माण विकसित हुआ। सोवियत शासन के इतिहास की इस नयी मंजिल ने मायाकोव्स्की के सामने नए विषय-वस्तु, नये लक्ष्य और नयी संभावनाएं प्रस्तुत की। फलतः कवि के कार्यकलाप की व्यापकता तथा विविधता और भी बढ़ी। मायाकोव्स्की पोस्टरों के लिए सिद्धान्त वाक्य भी लिखता है और 'अच्छा है' कविता भी लिखता है। सभी उम्र के बच्चों के लिए छोटी-छोटी किताबें भी तैयार करता है और 'पूरी आवाज में' कविता का भी प्रणयन करता है। अमेरिका के बारे में लेख भी प्रकाशित करता है, अखबार में काम करता है और अपने दो नाटकों 'खटमल' और 'स्नानघर' के प्रदर्शन में भाग भी लेता है। १९२९-३० के बीच उसने बहुत कुछ लिखा और उसकी प्रतिभा प्रौढ़ हुई।

व्यंग्य के क्षेत्र में प्रतिभाशाली के उत्कृष्टतम उदाहरण उसके व्यंग्य नाटक 'खटमल' और 'स्नानघर' हैं। खटमल की आधारभूत समस्या स्वयं कवि के शब्दों में 'आज की बुर्जुआशाही का पर्दाफाश करना है।' मायाकोव्स्की केवल बुर्जुआई जीवन पद्धति पर हमला ही नहीं वरन् श्रमिक वर्ग पर उसका जो हानिकारक प्रभाव पड़ता है उसका चित्रण भी करता है। मायर प्रिसीपकिन के शब्दों और कामों में जो अन्तर है कवि उसका दिग्दर्शन

कर उन पर व्यंग्य करता है और यह बताता है कि रूस में बुर्जुआ
का नाश अनिवार्य है।

'स्नानघर' का मुख्य राजनीतिक विचार 'ब्यूरोक्रेटिज्म' से युद्ध
समाजवादी विचारधारा का समर्थन है। इसका नायक भी ब्यूरोक्रे
जो समय घड़ी की मशीन बनानेवाले कम्सोमोल नवयुवकों के काम
अड़चनें डालता है। अन्त में यह स्पष्ट हो जाता है कि नायक जैसे व्य
कम्यूनिज्म के लिए बेकार हैं, इनकी कोई ज़रूरत नहीं है।

काव्य के विषय में फिनिस्पेक्टर से बातचीत

अपनी सर्जना के इस युग में काव्य के सारतत्व और समाज
समाज में लेखक के कार्य और परिस्थिति के विषय में मायाकोव
पुर्नविचार करता है। कवि के कार्य के विषय में मायाकोव्स्की लिख
कि "प्रधान कार्य काव्य में काव्यत्व लाना है। यही मुख्य कार्य है और ले
को इसी के लिए आंदोलन करना अनिवार्य है" 'सर्गेइ ऐसेनिन', 'प्रो
रियन कवियों को संदेश' आदि रचनाएं विशेष रूप से कला के
में हैं। इनसे कवि के कला संबंधी दृष्टिकोण का पता चलता है।

असली कवि अस्पष्टता की चिनगारियों के बीच से अपेक्षाकृत अधी ज्योतिपूर्ण ज्ञान प्रकट करता है। उसका शब्द मानवीय शक्ति का संचालक है। कथ्य का लक्ष्य उनको उठाना है, ले चलना है, आकृष्ट करना है जिनकी आँखें कमजोर हो गयी हैं।

मायाकोव्स्की की सोवियत युग की कविता यहीं कर रही है और विशेष रूप से उसकी उत्कृष्ट कविता 'अच्छा है!'

'अच्छा है' कविता

लगी हुई किताबों के ढेर में मेरा नाम कवियों की श्रेणी में है। मैं समझता हूं कि मेरा परिश्रम अपनी इस रिपब्लिक के परिश्रम में मिल रहा है, लय हो रहा है।"

इस कविता में अक्तूबर क्रान्ति, उसके कारण उसकी आधारभूत शक्ति और उसके बीच संघर्ष करनेवालों—श्रमिक वर्ग, किसान, सिपाही, क्रान्ति विरोधी श्वेत-गार्ड आदि को चित्रित किया गया है।

मायाकोव्स्की सोवियत रिपब्लिक को परिश्रम और युद्ध के बीच जन्मी हुई कहता है। इस प्रकार परिश्रम की विषय-वस्तु अक्तूबर क्रान्ति की विषय-वस्तु को, देश की विषय-वस्तु के साथ जोड़ देता है, स्वेच्छा से परिश्रम, विशेष रूप से शनिवार को अतिरिक्त परिश्रम यह समाज क्रान्ति की ही उपलब्धि है यह स्वेच्छा से एकत्रित हुए लोगों का स्वच्छन्द परिश्रम है और उसके साथ ही यह युद्ध-नष्ट देश के पुनर्निर्माण की व्यवस्था और कार्य का समारम्भ है।

'हम काम करेंगे
जिससे कि जीवन
दिनों के पहियों को स्वर्णिम गति देता हुआ,
लोहे की पटरियों पर हमारे डिब्बों में
स्तेप के ऊपर, हमारे ठिठुरे नगरों में
दौड़ सके।'

इस प्रकार मायाकोव्स्की के लिए क्रान्ति केवल नष्ट भ्रष्ट करनेवाली आँधी ही नहीं है वरन् सर्जनात्मक शक्ति है, जिसके कंधों पर श्रमिक वर्ग है जिसका संचालन पार्टी कर रही है और जिसका संचालन पूर्ण रूप से लेनिन ने किया। काव्य में इन सबका परिश्रम, इन सबकी कठिनाई और इन सबका चित्र चित्रित की गयी है और यह दिखाया गया है कि सोवियत व्यक्ति का भाग्य सोवियत भूमि या देश के भाग्य से भिन्न या अलग नहीं है। उसको यही होना था कि उसकी मातृभूमि का होगा।

मायाकोव्स्की ने लिखा कि 'अच्छा है' कविता को मैं उस समय का

लक्षित होती हैं। क्रान्ति के पूर्व मायाकोव्स्की ने कहा था कि स्वतन्त्र व्यक्ति आयेगा। उस समय यह विश्वास मात्र ही था और काव्य में इस विश्वास के साथ, पूंजीवादी समाज में मनुष्य के उत्पीड़न और मनुष्य के ह्रास का ही चित्र प्रस्तुत किया गया था। क्रान्ति के आरम्भिक वर्षों में व्यक्ति को विषय-वस्तु जनता की विषय-वस्तु में (इवान का चित्रण) मिल गई। व्लदीमिर लेनिन का चित्र प्रथम सोवियत व्यक्ति के रूप में सामने आता है जो अत्यन्त ठोस, यथार्थ और विशिष्टता से संपन्न है। 'साथी नेते को— जहाज़ और व्यक्ति को' कविता में सोवियत व्यक्तित्व और भी विकसित होता है। यह कविता उस सोवियत नायक का चित्र है जो अपने कार्य के कारण जनता की स्मृति में अमिट है।

इसी प्रकार मायाकोव्स्की ने सर्वप्रथम प्रगीतों में सोवियत व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत किया। यह चित्र सोवियत पासपोर्ट के विषय में 'कविता', 'हम', 'इवान कज़िरयोव की कहानी, आदि में अच्छी तरह उभरा है। इस प्रकार पंचवर्षीय योजना के युग में व्यक्ति की विषय-वस्तु मायाकोव्स्की के काव्य में स्वदेश के विषय-वस्तु से गुंफित हो जाती है।

जीवन के अन्तिम वर्ष

मायाकोव्स्की अपने पाठकों से बराबर मिलना चाहता था और उनसे घनिष्ठ संबंध रखना चाहता था। इस लक्ष्य से उसने कई स्थानों की यात्रा की। वह चाहता था कि अधिक से अधिक लोग उसकी रचनाओं को समझ सकें। इस उद्देश्य से वह जगह जगह सभाओं में अपनी रचनाएं सुनाता था। उनकी व्याख्या करता था और उन पर बहस करता था। लोगों को अपने कार्य से परिचित कराने के लिए उसने 'मायाकोव्स्की के कार्य के बीस वर्ष' प्रदर्शनी भी आयोजित की। इसी प्रदर्शनी में उसने अपनी हस्तलिखित रचना 'पूरी आवाज़ के साथ' पढ़ी जो उसकी मृत्यु के बाद छपी थी। अनवरत परिश्रम ने उसके अपने स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाला और वह शिथिल हो गया।

उसके जीवन के अन्तिम वर्ष बड़ी विषमता के बीच बीते। एक ओर तो मायाकोव्स्की बड़ा लोकप्रिय था और दूसरी ओर उसके विरोधी उसकी सभी प्रकार की कटु आलोचना कर रहे थे कि उसकी कविता सामान्य जन समाज की समझ के बाहर है। उन्होंने उसकी प्रतिभा की हँसी उड़ाई और प्रदर्शनी का 'बायकाट' किया।

व्यक्तिगत जीवन की करुण, कठोर एवं दारुण परिस्थितियाँ, गले की बीमारी, जिससे कि वह अब जन समूह के सामने कविता पाठ नहीं कर सकता था—इन सबने उसकी मानसिक समस्थिति को नष्ट कर दिया। ऐसे ही एक क्षण में उसने (१४ अप्रैल १९३०) को आत्महत्या कर ली।

'पूरी आवाज़ के साथ'

मायाकोव्स्की की मृत्यु के बाद 'अक्तूबर' पत्र का अंक निकला जिसमें मायाकोव्स्की की अंतिम कविता 'पूरी आवाज़ के साथ' (प्रथम काव्यात्मक भाषण) प्रकाशित हुई। यह रचना पूरी न हो सकी, अधूरी ही रह गई। पूरी कविता का विषय प्रथम पंचवर्षीय योजना होता। इस कविता के दूसरे भाग के विषय में यह अनुमान लगाया जाता है कि वह प्रेयसी के लिये लिखे गए पत्रात्मक पद्य के रूप में होता। यह कविता मायाकोव्स्की की उत्तम रचनाओं में मानी जाती है।

मायाकोव्स्की ने इस काव्य-रचना का लक्ष्य बताते हुए कहा कि "आम: इधर जो लोग मेरे साहित्यिक अखबारी कार्य से असंतुष्ट हैं, वे यह कहते हैं कि मैं कविता लिखना भूल गया और इसके लिए आनेवाली पीढ़ी मेरी कटु आलोचना करेगी। मैं स्वयं आनेवाली पीढ़ी से बात करना चाहता हूँ और इसकी प्रतीक्षा नहीं करना चाहता कि उनको भविष्य में आलोचक मेरे बारे में बताएँ। इसलिए मैं स्वयं अपनी कविता में जिसका नाम 'पूरी आवाज़ के साथ' है आनेवाली पीढ़ियों के साथ सीधी बात करना चाहता हूँ।" इसलिए, यदि इसमें आनेवाली पीढ़ियों के साथ सीधी संभाषणपूर्ण और कभी-कभी तीखी बात करना है।

लक्षित होती हैं। क्रान्ति के पूर्व मायाकोव्स्की ने कहा था कि स्वतन्त्र व्यक्ति आयेगा। उस समय यह विश्वास मात्र ही था और काव्य में इस विश्वास के साथ, पूंजीवादी समाज में मनुष्य के उत्पीड़न और मनुष्य के ह्रास का ही चित्र प्रस्तुत किया गया था। क्रान्ति के आरम्भिक वर्षों में व्यक्ति की विषय-वस्तु जनता की विषय-वस्तु से (इवान का चित्रण) मिल गई। व्लादीमिर लेनिन का चित्र प्रथम सोवियत व्यक्ति के रूप में सामने आता है जो अत्यन्त ठोस, यथार्थ और विशिष्टता से संपन्न है। 'साथी नेत्ते को— जहाज और व्यक्ति को' कविता में सोवियत व्यक्तित्व और भी विकसित होता है। यह कविता उस सोवियत नायक का चित्र है जो अपने कार्य के कारण जनता की स्मृति में अमिट है।

इसी प्रकार मायाकोव्स्की ने सर्वप्रथम प्रगीतों में सोवियत व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत किया। यह चित्र सोवियत पासपोर्ट के विषय में 'कविता', 'हम', 'इवान कजिरयोव की कहानी', आदि में अच्छी तरह उभरा है। इस प्रकार पंचवर्षीय योजना के युग में व्यक्ति की विषय-वस्तु मायाकोव्स्की के काव्य में स्वदेश के विषय-वस्तु से गुंफित हो जाती है।

जीवन के अन्तिम वर्ष

मायाकोव्स्की अपने पाठकों से बराबर मिलना चाहता था और उनसे घनिष्ठ संबंध रखना चाहता था। इस लक्ष्य से उसने कई स्थानों की यात्रा की। वह चाहता था कि अधिक से अधिक लोग उसकी रचनाओं को समझ सकें। इस उद्देश्य से वह जगह जगह सभाओं में अपनी रचनाएं सुनाता था। उनकी व्याख्या करता था और उन पर बहस करता था। लोगों को अपने कार्य से परिचित कराने के लिए उसने 'मायाकोव्स्की के कार्य के बीस वर्ष' प्रदर्शनी भी आयोजित की। इसी प्रदर्शनी में उसने अपनी अन्तिम रचना 'पूरी आवाज के साथ' पढ़ी जो उसकी मृत्यु के बाद छपी थी। [illegible] परिस्थिति ने उसके आगे [illegible] का [illegible] प्रकार [illegible] और वह निराश हो गया।

उसके जीवन के अन्तिम वर्ष बड़ी विषमता के बीच बीते। एक ओ
तो मायाकोव्स्की बड़ा लोकप्रिय था और दूसरी ओर उसके विरोध
उसकी सभी प्रकार की कटु आलोचना कर रहे थे कि उसकी कवित
सामान्य जन समाज की समझ के बाहर है। उन्होंने उसकी प्रतिभा क
हँसी उड़ाई और प्रदर्शनी का 'बायकाट' किया।

व्यक्तिगत जीवन की करुण, कठोर एवं दारुण परिस्थितिय
गले की बीमारी, जिससे कि वह अब जन समूह के सामने कविता पा
नहीं कर सकता था—इन सबने उसकी मानसिक समस्थिति को नष्ट क
दिया। ऐसे ही एक क्षण में उसने (१४ अप्रैल १९३०) को आत्महत्य
कर ली।

'पूरी आवाज़ के साथ'

मायाकोव्स्की की मृत्यु के बाद 'अक्तूबर' पत्र का अंक निकला जिस
मायाकोव्स्की की अंतिम कविता 'पूरी आवाज़ के साथ' (प्रथम काव्य
स्मक भाषण) प्रकाशित हुई। यह रचना पूरी न हो सकी, अधूरी ही र
गई। पूरी कविता का विषय प्रथम पंचवर्षीय योजना होता। इ
कविता के दूसरे भाषण के विषय में यह अनुमान लगाया जाता है कि
वह प्रेयसी के लिये लिखे गए पद्यात्मक पत्र के रूप में होता। य
कविता मायाकोव्स्की की उत्तम रचनाओं में मानी जाती है।

मायाकोव्स्की ने इस काव्य-रचना का स्तर बताते हुए क
कि "प्रायः इधर जो लोग मेरे साहित्यिक अखबारी कार्य से असन्तु
हैं, वे यह कहते हैं कि मैं कविता लिखना भूल गया और इसके लि
आनेवाली पीढ़ी मेरी कटु आलोचना करेगी। मैं स्वयं आनेवाली पीढ़
से बात करना चाहता हूँ और इसकी प्रतीक्षा नहीं करना चाहता कि
उसको भविष्य में आलोचक मेरे बारे में बतायें। इसलिए मैं स्वयं अन्त
कविता में जिसका नाम 'पूरी आवाज़ के साथ' है आनेवाली पीढ़ियों
साथ सीधी बात करना चाहता हूँ।" इसलिए कवि इसमें आनेवाल
पीढ़ियों के साथ सीधी महत्वपूर्ण और [illegible] सीधी बात करता है

यह कविता सोवियत पाठकों की, विशेषतया नवयुवकों की अत्यन्त लोकप्रिय रचनाओं में से एक है और संसार की कई भाषाओं में अनूदित हो चुकी है। इस कविता में कवि भविष्य को सम्बोधित करता है और स्वयं अपने कार्यों का मूल्यांकन करता है। कम्यूनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में जनता द्वारा आरम्भ किये गये विराट् कार्य की अभिव्यक्ति की योजना के साथ साथ इस कविता में मायाकोव्स्की काव्य क्षेत्र में किये गये अपने व्यक्तिगत कार्यों का भी आकलन करता है और भविष्य की पीढ़ियों तथा पाठकों की ओर उन्मुख होता है जिनके लिए आज के समकालीन नए जीवन का निर्माण कर रहे हैं।

इस कविता में वह भविष्य के पाठकों को बतलाता है कि वह कौन है और अपने लिए कहता है कि—

"मैं क्रान्ति द्वारा नियुक्त भिश्ती हूँ"

भिश्ती का चित्र स्पष्ट कर देता है कि उसने अपने ऊपर कठिन किन्तु महत्त्वपूर्ण काम—जीवन को स्वच्छ करने का, गदगी को दूर करने का काम-लिया है। इस काम में अपना सारा जीवन लगाकर वह भविष्य की पीढ़ी की ओर उन्मुख होता है और कहता है कि—

> तुम जो स्वस्थ और फुर्तीले हो
> तुम्हारे लिए
> कवि
> क्षयी के थूक को
> पोस्टरों की खुरदरी ज़बान से चाटता था।'

मायाकोव्स्की के लिए परिश्रम ही सर्जना है और सर्जना परिश्रम है। 'पूरी आवाज के साथ' कविता सोवियत व्यक्ति और कवि के साहस और शक्ति की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है।

मायाकोव्स्की की सर्जना का सोवियत काव्य के लिए निश्चयात्मक तथा सैद्धान्तिक महत्त्व है। उसकी सर्जना का महत्त्व केवल इस बात में ही नहीं है कि उसने नये-नये प्रयोग कर रूसी कविता की अभिव्यंजकता

को व्यापक और समृद्ध बनाया वरन् काव्य तथा कवि के प्रति उसक
भावना में है जिसको कि उसने अपनी रचनाओं द्वारा पुष्ट किया
जो कि उसके बाद आने वाले सोवियत कवियों की रचनाओं में भी
न किसी रूप में चरितार्थ हो रही है।

इस भावना की सबसे बड़ी विशेषता मायाकोव्स्की की निजी
सामाजिक ध्येय तथा श्रम के ऐक्य की अनुभूति है। मायाकोवस्
सोवियत देश प्रेम में, उसके मानवतावाद की समाजवादी विशि
तथा सर्जना की उच्च विचारात्मकता में यही भावना लक्षित हो रह
उसकी कविता में नये सोवियत व्यक्ति का चित्र उभर रहा है जो
प्रेमी और परिश्रमी है, आशावादी है, और शत्रु से समझौता करने
तय्यार नहीं है।

मायाकोव्स्की की सर्जना जनता के प्रति सदा अपने उत्तरद
का अनुभव करती रही है और नवीनता को अपनाकर उसकी काव
अभिव्यक्ति के लिए सदा प्रयत्नशील रही है। पाठकों को प्रभ
करनेवाले काव्यात्मक शब्द की अभिव्यंजकता बढ़ाने में उसकी
सदैव सतर्क रही है। देश के भाग्य के साथ ऐक्य, नव समाज के
की खोज, आशा, निर्माणकारी परिश्रम का गुणगान, क्रान्ति के
से घृणा—यह मायाकोव्स्की के काव्य की मुख्य विशेषताएं है।

जदानोव ने कहा था कि साहित्य का काम केवल जनता की माँ
पूरा करना ही नहीं है वरन् उसे अभिरुचि को ऊपर उठाना चाहिए
नये विचारों से समृद्ध बनाना चाहिए। जनता को आगे ले
चाहिए। मायाकोव्स्की की सर्जना का यही प्रगतिशील रूप रहा
उसने बराबर यही कहा कि कवि को 'कल' के प्रकाश में 'आज
देखना चाहिए। उसे 'कल' की ओर, आगे की ओर बढ़ना चाहिए

मायाकोव्स्की का महत्व इस बात में है कि उसने 'सौन्दर्य'
'काव्य' के नवीन सोवियत मानदण्ड स्थिर किए, नवीन समाजवादी
सुरुचि को पुष्ट किया। उसने कला के क्षेत्र में पार्टीवादिता को प्रति

किया। इसलिए सोवियत काव्य क्षेत्र में उसका बड़ा महत्व है। मायाकोव्स्की सोवियत युग का महान कवि है।

सोवियत काव्य क्षेत्र के समान विदेशों के प्रगतिशील काव्य क्षेत्र पर भी उसका बड़ा प्रभाव पड़ा है। उसकी कविताएं योरोप तथा पूर्व की तीस भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। क्रान्ति का गायक मायाकोव्स्की उन सभी देशों में बड़ा प्रिय रहा है जहाँ कि युवक वर्ग पराधीनता, उत्पीड़न आदि के विरुद्ध युद्ध करता रहा है। युवक वर्ग मायाकोव्स्की की सर्जना और काव्य में नये व्यक्ति का, प्रगतिशील व्यक्ति का, समाजवाद के व्यक्ति का चित्र देखता है।

४. द्वितीय महायुद्ध के पूर्व की पंचवर्षीय योजनाओं के आधार पर राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के विकास के युग का साहित्य

[१९२९-३९]

अप्रैल १९२९ में कम्युनिस्ट पार्टी कान्फ्रेंस ने प्रथम पंच वर्षीय योजना को स्वीकार किया। देश में समाजवादी निर्माण का काम शुरू हुआ। औद्योगीकरण जोरों से चला और कृषि व्यवस्था की सामूहीकरण योजना कार्यान्वित हुई, और समाजवादी संस्कृति की चेतना विकसित हुई। गृह-युद्ध तथा साम्राज्यवादी युद्ध में नष्ट राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था का पुनर्निर्माण कर सोवियत देश समाजवादी औद्योगीकरण के रास्ते पर चला। नयी तकनीकी प्रक्रिया के आधार पर भारी उद्योगों का निर्माण कर औद्योगिक क्षेत्र में देश के पिछड़ेपन को जल्दी से जल्दी दूर करना अनिवार्य थी।

१९३१ में स्तालिन ने कहा था कि 'हम प्रगतिशील देशों से पचास से सौ साल तक पीछे हैं। यह फासला हमें दस साल में तय करना होगा।' इससे देश की पिछड़ी हुई स्थिति का पता चलता है।

१९३४ में सत्रहवीं पार्टी कांग्रेस में स्तालिन ने जो कहा उससे पता चलता है कि देश कितनी तीव्रता से उन्नति की ओर बढ़ रहा है। उसने कहा कि 'सोवियत संघ में इस बीच मौलिक परिवर्तन हो गया। उसने अपने कन्धे दुर्दिन काले को उतार फेंका। कृषि प्रधान देश से वह औद्योगिक देश बन गया। छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखरी कृषि से वह बड़े-बड़े मशीन फार्मिंग कृषि क्षेत्र में बदल गया।'

इस प्रकार पंचवर्षीय योजनाओं ने देश और देश निवासियों दोनों में आमूल परिवर्तन कर दिया। सारे देश में नये निर्माण शुरू हो गए। यूक्रेन में क्रमातोर्स्की और गोरलोव्की के कारखाने, उराल में मग्नीतोगोर्स्की

का धातु का कारखाना, माउदौरित्सा में कुजनेत्स्की के कारखाने बने। इसके साथ ही भारी मशीन बनाने के कारखाने, मोटर के कारखाने, ट्रैक्टर गैस का बिजली घर आदि तय्यार हुए। इन उद्योगों से देश का रूप-रंग ही बदलने लगा। परिस्थिति और मनोवृत्ति दोनों के परिवर्तन ने साहित्य के सामने नये प्रश्न, नयी समस्याएं प्रस्तुत कीं। साहित्य को नया वस्तु-तत्व प्रदान किया और नयी गतिविधि दी। प्रश्न और समस्याएं समाजवादी चरित्र के निर्माण से सम्बन्धित थीं, वस्तु-तत्व परिश्रम और शांति का था, तथा नयी गतिविधि मनुष्य में नयी समाजवादी चेतना दृढ़ करने की दिशा में थी। यदि मनुष्य नये जीवन के लिये लड़ता है तो नया जीवन मनुष्य के लिए लड़ता है, उसे शिक्षा देता है और उसमें नए व्यक्तित्व का विकास करता है। सन् तीस के वर्षों के सोवियत साहित्य की बहुत सी *कृतियों का यही मूल भाव है जिससे पता चलता है कि सोवियत जनता में समाजवादी चेतना का विकास किस प्रकार हो रहा था।*

समाजवादी जीवन पद्धति की विजय ने लेखकों में सैद्धान्तिक ऐक्य दृढ़ किया उनके समाजवादी मतवाद को उग्र बनाया और लेखकों के सामने नयी समस्याएँ प्रस्तुत कीं।

साहित्यिक कलात्मक संगठनों का पुनर्निर्माण

२३ अप्रैल १९३२ में केंद्रीय कमेटी ने 'साहित्यिक कलात्मक संगठनों के पुनर्निर्माण' का निश्चय किया। इस संबंध में कहा गया कि कुछ वर्ष पहले जब कि प्रोलितारियत लेखकों की श्रेणी दुर्बल थी और साहित्य पर अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ रहे थे, पार्टी ने कला और साहित्य के क्षेत्र में प्रोलितारियत संगठनों के निर्माण और उनको दृढ़ करने में बड़ी मदद की। *किन्तु अब सम्प्रति प्रोलितारियत कलात्मक संगठन संकीर्ण होते जा रहे हैं और गंभीर कलात्मक सर्जना की व्यापकता को रोकते हैं।* केन्द्रीयकमेटी ने इसलिए प्रोलितारियत लेखकों के संगठन को समाप्त करने का निश्चय किया और सोवियत योजना या सोवियत शासन के प्लेटफार्म का समर्थन करने वाले और समाजवादी निर्माण में भाग लेने वाले सभी लेखकों को

सोवियत लेखकों के एक संघ में मिलाने का निश्चय किया और उसमें (संघ में) कम्यूनिस्ट सेक्शन का संगठन किया।

फलतः 'राप' संगठन (प्रोलितारियत लेखकों का रूसी अर्गानिज़ेशन) समाप्त हो गया। यह संगठन लेनिन की साहित्य में पार्टीवादिता की नीति का विरोध करता था। इसी प्रकार 'प्रोलेतकुल्त' की विचारधारा भी साहित्य के सर्वाङ्गीण विकास के अनुकूल न थी क्योंकि वह क्लासिकल संस्कृति के उत्तराधिकार को अस्वीकार करता था और वह प्रतिक्रियावादियों की उक्ति द्वारा प्रोलितारियत संस्कृति का निर्माण आवश्यक और अनिवार्य बताता था। इन साहित्यिक संगठनों का दृष्टिकोण संकीर्ण हो गया था इसलिये लोगों को साहित्यिक मार्ग पर परिवर्तन की आवश्यकता का अनुभव हुआ।

यह ऐतिहासिक निश्चय सोवियत साहित्य के विकास का महत्त्वपूर्ण चरण सिद्ध हुआ। सन् १९३२ में सोवियत लेखक संघ की संगठन कमेटी बनाई गयी जिसके शीर्ष पर मैक्सिम गोर्की था। इसे सोवियत लेखकों के अखिल संघीय (अखिल रूसी) सम्मेलन बुलाने का भार सौंपा गया। इसकी कार्यकारिणी में फदेयेव, सीमनोव, लिओनोव आदि थे। बड़ी तैयारी के बाद मास्को में १९३४ में सोवियत लेखकों का प्रथम अखिल (रूसी) संघीय अधिवेशन बड़ी धूमधाम से हुआ। यह अधिवेशन देश के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटना है। इसमें बहुत से लोगों के भाषण हुए जिसमें साहित्य की समस्यायें, सोवियत साहित्य के रूप और विशिष्टता तथा लेखकों के योगदान के विषय में बहुत कुछ कहा गया। वास्तव में सोवियत लेखकों के स्वतंत्रतापूर्ण विकास में इस अधिवेशन का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

इस युग में फदेयेव (नाश), शोलोखोव (शान्त दोन), अस्त्रोव्स्की (लोहा कैसे फौलाद किया गया), अ० टाल्सटाय (पीड़ा के बीच यात्रा) लिओनोव (स्कुतारेव्स्की), एहरेनबुर्ग, इल्फ़ोव, पेत्रोव, कवेरिन, कातायेव आदि की रचना का विकास हुआ और उनकी कृतियाँ लोकप्रिय हुईं।

इसी युग में मायाकोव्स्की की कविता 'अच्छा है' छपी और गोर्की की कृति 'क्लिम समगिन का जीवन' के दो भाग प्रकाशित हुए। इन लेखकों के अतिरिक्त इसी युग में पनफयोरेव, करावायेवा, गरबातोव, स्ताव्स्की, अफीनोगेनेव जैसे नये लेखक भी साहित्य के क्षेत्र में आए।

श्रमिक वर्ग तथा उसके निर्माणकारी परिश्रम की विषय-वस्तु इन लेखकों की कृतियों में पल्लवित हुई। अपना पुराना बाना फेंककर शताब्दियों की जर्जर रूढ़ियों और अंधविश्वास को छोड़कर आगे बढ़ते हुए गाँवों के कलखोजीय जीवन का चित्रण कई लेखकों की कृतियों में हुआ। पनफयोरेव का उपन्यास 'ब्रूस्की' तथा ईसाकोव्स्की की कविता में इसी परिवर्तन का चित्रण है।

बुद्धिजीवियों के मानसिक उद्वेलन तथा विकास का प्रश्न इस समय का महत्त्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्न था। इस समस्या का अंकन फदेयेव के 'नाश', लवरेन्येव के 'टूटना', फ़ेदिन के 'स्मूरोव परवाया' में हुआ। बुद्धिजीवियों की अनिश्चयात्मकता और फिर क्रान्ति के पक्ष में हो जाना अलेक्सेई तोल्स्तोय की कृति 'सन् अठारह'. में चित्रित है। इस समय ऐसी कृतियाँ भी प्रस्तुत की गईं जिनमें क्रान्ति के प्रति कला का संबंध व्यक्त किया गया। इनमें से कुछ पर बुर्जुआ विचारधारा का प्रभाव है। पेस्तरनाक की 'सर्जना की स्वाधीनता' और सेल्वीन्स्की की 'कवि के अधिकारों की घोषणा' ऐसी ही कृतियाँ हैं। समय के प्रवाह में यह कृतियाँ अधिक न ठहर सकीं।

ब्यूरोक्राटिज्म तथा दफ्तरी कारवाइयों पर व्यंग्य, उन अफसरों तथा कर्मचारियों पर आक्षेप जो पूँजीवादी तौर-तरीका अख्तियार कर समाजवादी प्रगति को रोकते हैं इन सबका व्यंग्यात्मक चित्रण माया-कोव्स्की के व्यंग्य-प्रधान नाटकों 'खटमल' तथा 'स्नान घर' में तथा बेजी-मेन्स्की के नाटक 'गोली' तथा 'हमारे जीवन का दिन' काव्य में हुआ है।

महाकाव्यात्मक उपन्यासों की रचना इस युग की साहित्यिक विशे-षताओं में से एक है। गोर्की का 'क्लिम समगिन का जीवन', शोलोखोव

का' सात डाल', पनफ्योरोव का 'ब्रुस्की' फदेयेव का 'उदेगे से आखिरी' इसी का संकेत दे रहे हैं। नाट्य क्षेत्र में यथार्थवादी नाटक को प्रौढ़ता प्राप्त हुई और क्लासिकल नाटकों के साथ-साथ सोवियत नाटकों का रंगमंच पर प्रदर्शन शुरू हुआ। धीरे धीरे सोवियत रंगमंच दृढ़ हो गया। साहित्य के बीच सैनिक के चित्र के साथ-साथ मजदूर नायक का अंकन और चित्र भी प्रतिष्ठित हुआ और सोवियत साहित्य वर्ग संघर्ष, निर्माणकारी परिश्रम और समाजवादी यथार्थवाद से परिपूर्ण हो गया।

औद्योगीकरण और सामूहीकरण की विषय-वस्तु

समाजवादी निर्माण का वेग, विशाल औद्योगीकरण, कृषि का सामूहीकरण तथा मशीनीकरण, गांवों का कलखोजों में परिवर्तन त्वरा जिसमें कि देश का रूप-रंग ही बिलकुल बदलता जा रहा था—इन सबने लेखकों के सामने नयी और कठिन समस्याएं प्रस्तुत कीं। इन लेखकों के लिए नयी परिस्थिति की नयी प्रगति-सामग्री का सम्यक् ग्रहण अत्यावश्यक था। किन्तु जीवन ऐसी शीघ्र गति से बदल रहा था कि कलाकार उतनी जल्दी उसकी शीघ्र परिवर्तनशील विशिष्टताओं का कलात्मक रूप नहीं दे पा रहा था। जब कि परिस्थिति या जीवन को कलाकार कलात्मक परिधान पहिनाए वह परिस्थिति ही बदल जाती थी।

ऐसी परिस्थिति में साहित्यिक प्रकार के रूप में कलात्मक निबन्धों का आविर्भाव अनायास या आकस्मिक घटना नहीं है। सन् तीस के वर्षों के आरम्भ में कलात्मक निबन्ध अत्यधिक व्यापक साहित्यिक प्रकार के रूप में रूस में बहुत प्रचलित हुए। सन् तीस में गोर्की ने निबन्ध लिखनेवालों के लिए एक विशेष पत्र 'हमारी सम्प्राप्तियां' की स्थापना की।

निबन्ध की कला, लेखक की इस योग्यता पर आधारित है कि वह जीवन में जो सर्वसामान्य और सर्वव्यापक है उसको पहचान सके और जीवन्त तथ्यों को कलात्मक रूप का महत्व देते हुए उनको अभिव्यक्त कर सके। 'पहाड़ ऊंचा था' ऐसी ही निबन्ध की पुस्तक है जो गोर्की के सम्पादन में निकली। उसमें 'विसोकोगोरस्की' फ़ैक्टरी के खान में काम करने वाले सौ मजदूरों के अपने विषय में संस्मरण और कहानियां हैं। यह

इसी युग में मायाकोव्स्की की कविता 'अच्छा है' छपी और गोर्की की कृति 'क्लिम समगिन का जीवन' के दो भाग प्रकाशित हुए। इन लेखकों के अतिरिक्त इसी युग में पनफ्योरोव, करावायेवा, गरवातोव, स्तावस्की, अफीनोगेनोव जैसे नये लेखक भी साहित्य के क्षेत्र में आए।

श्रमिक वर्ग तथा उसके निर्माणकारी परिश्रम की विषय-वस्तु इन लेखकों की कृतियों में पल्लवित हुई। अपना पुराना बाना फेंककर शताब्दियों की जर्जर रूढ़ियों और अंधविश्वास को छोड़कर आगे बढ़ते हुए गाँवों के कलखोजीय जीवन का चित्रण कई लेखकों की कृतियों में हुआ। पनफ्योरोव का उपन्यास 'ब्रूस्की' तथा ईसाकोव्स्की की कविता में इसी परिवर्तन का चित्रण है।

बुद्धिजीवियों के मानसिक उद्वेलन तथा विकास का प्रश्न इस समय का महत्त्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्न था। इस समस्या का अंकन फदेयेव के 'नाश', लवरेन्येव के 'टूटना', त्रिन्येव के 'ल्यूबोव यरवाया' में हुआ। बुद्धिजीवियों की अनिश्चयात्मकता और फिर क्रान्ति के पक्ष में हो जाना अलेक्सेंड तोल्स्तोय की कृति 'सन् अठारह'. में चित्रित है। इस समय ऐसी कृतियाँ भी प्रस्तुत की गई जिनमें क्रान्ति के प्रति कला का संबंध व्यक्त किया गया। इनमें से कुछ पर बुर्जुआ विचारधारा का प्रभाव है। पेस्तरनाककी 'सर्जना की स्वाधीनता' और सेल्वीन्स्की की 'कवि के अधिकारों की घोषणा' ऐसी ही कृतियाँ हैं। समय के प्रवाह में यह कृतियाँ अधिक न ठहर सकीं।

ब्यूरोक्राटिज्म तथा दफ्तरी कारवाइयों पर व्यंग्य, उन अफसरों तथा कर्मचारियों पर आक्षेप जो पूँजीवादी तौर-तरीका अख्तियार कर समाजवादी प्रगति को रोकते हैं इन सबका व्यंग्यात्मक चित्रण मायाकोव्स्की के व्यंग्य-प्रधान नाटकों 'खटमल' तथा 'स्नान घर' में तथा बेजीमेन्स्कीके नाटक 'गोली' तथा 'हमारे जीवन का दिन' काव्य में हुआ है।

महाकाव्यात्मक उपन्यासों की रचना इस युग की साहित्यिक विशेषताओं में से एक है। गोर्की का 'क्लिम समगिन का जीवन', शोलोखोव

ता' शांत डान', पनफ्योरेव का 'ब्रुस्की' फदेयेव का 'उदेगे से आखिरी' री का संकेत दे रहे हैं। नाट्य क्षेत्र में यथार्थवादी नाटक को प्रौढ़ता प्राप्त हुई और क्लासिकल नाटकों के साथ-साथ सोवियत नाटकों का रंगमंच पर प्रदर्शन शुरू हुआ। धीरे धीरे सोवियत रंगमंच दृढ़ हो गया। साहित्य के बीच सैनिक के चित्र के साथ-साथ मजदूर नायक का अंकन और चित्र भी प्रतिष्ठित हुआ और सोवियत साहित्य वर्ग संघर्ष, निर्माणकारी परिश्रम और समाजवादी यथार्थवाद से परिपूर्ण हो गया।

औद्योगीकरण और सामूहीकरण की विषय-वस्तु

समाजवादी निर्माण का वेग, विशाल औद्योगीकरण, कृषि का सामूहीकरण तथा मशीनीकरण, गांवों का कलखोजों में परिवर्तन त्वरा जिसमें कि देश का रूप-रंग ही बिल्कुल बदलता जा रहा था—इन सबने लेखकों के सामने नयी और कठिन समस्याएं प्रस्तुत कीं। इन लेखकों के लिए नयी परिस्थिति की नयी प्रगति-सामग्री का सम्यक् ग्रहण अत्यावश्यक था। किन्तु जीवन ऐसी शीघ्र गति से बदल रहा था कि कलाकार उतनी जल्दी उसकी शीघ्र परिवर्तनशील विशिष्टताओं को कलात्मक रूप नहीं दे पा रहा था। जब कि परिस्थिति या जीवन को कलाकार कलात्मक परिधान पहिनाए वह परिस्थिति ही बदल जाती थी।

ऐसी परिस्थिति में साहित्यिक प्रकार के रूप में कलात्मक निबन्धों का आविर्भाव अनायास या आकस्मिक घटना नहीं है। सन् तीस के वर्षों के आरम्भ में कलात्मक निबन्ध अत्यधिक व्यापक साहित्यिक प्रकार के रूप में रूस में बहुत प्रचलित हुए। सन् तीस में गोर्की ने निबन्ध लिखनेवालों के लिए एक विशेष पत्र 'हमारी सम्प्राप्तियां' की स्थापना की।

निबन्ध की कला, लेखक की इस योग्यता पर आधारित है कि वह जीवन में जो सर्वसामान्य और सर्वव्यापक है उसको पहचान सके और वैयक्तिक तथ्यों को कलात्मक रूप या महत्त्व देते हुए उनकी अभिव्यक्ति कर सके। 'पहाड़ ऊँचा था' ऐसी ही निबन्ध की पुस्तक है जो गोर्की के सम्पादन में निकली। उसमें 'विशोकोगोरस्की' प्लांट के गांव में काम करने वाले सौ मजदूरों के अपने विषय में संस्मरण और कहानियां हैं। यह कथनी

घटनायें है किन्तु इनके बीच से इस कारखाने का आरम्भ से लेकर क्रान्ति तक का इतिहास सामने आ जाता है। 'स्तालिनग्राद ट्राक्टर के लोग' भी इसी प्रकार के निबन्धों की पुस्तक है। इसमे इस कारखाने के बनानेवाले बत्तीस व्यक्तियो की आत्मकथा है। इन आत्मकथाओं का केवल यथार्थ तथ्य की दृष्टि से ही नही वरन् कलात्मक दृष्टि से भी महत्व है।

गांवों का पुनर्निर्माण बड़ी स्पष्टता के साथ स्ताव्स्की के लेखों में दिखाया गया है। उसकी पुस्तक 'दौड़' गांवों के सामूहीकरण के आंदोलन को प्रस्तुत करती है और यह दिखाती है कि 'कुलकों' (जमीदारों) के विरोध को नष्ट कर सोवियत गांव किस प्रकार 'कलखोज' मे परिणत हुए। यह पुस्तक भी सच्ची घटनाओं पर आधारित है।

इसी प्रकार ज़ीगी के लेख, 'श्रमिकों के विचार' 'चिन्ता और कार्य' और 'नये श्रमिक' तथा शगिन्यान के 'आरमीनिया में भ्रमण' का बड़ा महत्व रहा। सन् तीस में निबन्ध लेखकों के रूप में अफनोव, गलोर-मिर्कनोव, गालिन, गरवानोव तथा अन्य लेखक इस क्षेत्र मे आये। तीखनोव की निबंध पुस्तक 'खानायदोश' बड़ी लोकप्रिय हुई। इसमे तुर्कमीनिया के नव जीवन का बड़ा सजीव चित्रण हुआ है।

निबन्ध महत्वपूर्ण होते हुए भी साहित्य द्वारा प्रस्तुत सभी प्रश्नों का अपने मे समावेश न कर सके। इसी से निबन्धों के साथ साथ कहानी, उपन्यास जैसे विस्तृत साहित्यिक प्रकार भी सामने आए जिनमे उद्योगों

का 'आगे की ओर' (१९३२) ऐसी ही कृतियाँ हैं। जो सोवियत देश में होनेवाले विशाल समाजवादी निर्माण का वर्णन करती हैं तथा जो साहस तथा समाजवादी आत्मबलिदान से युक्त परिश्रम के वेग से परिपूर्ण हैं और जो त्वरा की अनुभूति, से इस भाव से कि, सौ साल के समय को उन्हें दस साल में तय करना है सिक्त हैं।

लिओनोव का 'सोत' (नदी) देश के जीवन की नयी मंजिल—समाजवादी पुनर्निर्माण के युग का चित्रण करनेवाले महत्त्वपूर्ण उपन्यासों में से एक है। लिओनोव ने यह उपन्यास उस स्थल की यात्रा के बाद लिखा जहाँ कि औद्योगिक कारखाने का निर्माण हो रहा था। सोत नदी का यह क्षेत्र पिछड़ा हुआ प्रदेश था और वहाँ के धर्माधिकारी नवीन जीवन के विरोधी और शत्रु थे। इस प्रदेश में धीरे-धीरे विरोध के बीच समाजवादी निर्माण शुरू होता है और जनता की चेतना में परिवर्तन होता है। प्राचीन और नवीन के संघर्ष में रूढ़िग्रस्त जीवन पर नवीन समाजवादी संस्कृति की विजय होती है।

शागिन्यान के उपन्यास 'हाइड्रो सेन्ट्रल' में देश की आर्थिक व्यवस्था के समाजवादी निर्माण की विशाल योजनाओं का अभिव्यंजन हुआ है। इसमें यह बताया गया है कि यह समाजवादी योजना केवल सामान ही नहीं तय्यार करती वरन् सामान के साथ-साथ यह नया समाज भी तय्यार कर रही है जो कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। देश के जीवन का आमूल परिवर्तन और उसका समाजवादी औद्योगीकरण उपन्यास में बड़ी सजीवता के साथ अभिव्यंजित हुआ है।

'आगे बढ़ो' उपन्यास की विषय-वस्तु समाजवादी निर्माण से सम्बन्धित है। इसकी अलग-अलग घटनाओं में पंचवर्षीय योजना के साहसपूर्ण दिन तथा समाजवादी आर्थिक व्यवस्था को शीघ्रातिशीघ्र कायम करने में लगी हुई जनता के अपार परिश्रम का बड़ा सजीव अभिव्यंजन हुआ है।

ग्लादकोव का उपन्यास 'एनर्जी' समाजवाद के निर्माण की नयी परिस्थिति और इस बीच पुष्ट हुई नयी जनता से सम्बन्धित है। इसकी पृष्ठभूमि में 'नीपर बाँध' के निर्माण से सम्बन्धित सामग्री है। इसके केन्द्र में परिश्रम और उसके

प्रति नये समाजवादी संबंधों की समस्या है। उपन्यास में जनता की शक्ति *के अपव्यय को रोकने की समस्या,* पार्टी द्वारा जन शक्ति के संचालन की समस्या, और नैतिकता तथा परिवार से संबंधित अनेक प्रश्नों को प्रस्तुत किया गया है।

पनफ्योरोव का उपन्यास 'ब्रूस्की' क्रान्ति के बाद के ग्रामीण जीवन से संबंधित है और अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह बताता है कि गाँव का पुनर्निर्माण कैसे हो रहा है। कैसे वर्ग संघर्ष के बीच नये प्रकार के लोग जन्म ले रहे हैं और गाँवों के जीवन के नए रूप का किस प्रकार संगठन किया जा रहा है। गाँवों के जीवन से संबंधित दूसरी अत्यन्त लोकप्रिय कृति अन्ना करावायेवा का उपन्यास 'जंगल का कारखाना' है। इसमें गाँव की नयी प्रगतिशील और क्रान्तिकारी शक्ति का 'कुलकों' के साथ संघर्ष दिखाया गया है। लेखिका ने यह दिखाया है कि प्रगतिशील विचारों के प्रभाव से गाँवों में किस प्रकार नये समाजवादी संबंधों का जन्म हो रहा है। सामूहिक परिश्रम विकसित हो रहा है और किसानों की समाजवादी चेतना दृढ़ हो रही है।

शोलोखोव का उपन्यास 'अनजोती भूमि' इस क्षेत्र में सबसे अच्छा उपन्यास है। *कलखोजी स्तर की विजय* त्वारदोव्स्की की कविता 'देश मरावियां' में प्रदर्शित की गयी है।

क्रान्तिकारियों के कार्य कलापों की ओर आकृष्ट हुआ। इस क्षेत्र में चपीगिन का उपन्यास 'राजिन स्तेपान' पहला सोवियत उपन्यास है जिसमें किसान विद्रोह का कलात्मक रूप प्रस्तुत किया गया है। इसमें स्तेपान राजिन का विद्रोह रूसी समाज के 'उच्च' और 'निम्न' के युद्ध के रूप में अंकित किया गया है।

रूसी बुद्धिजीवियों का रूसी क्रान्ति और रूसी संस्कृति के विकास में जो योगदान है उसका चित्रण ओल्गा फोर्श के उपन्यास 'समकालीन' और 'पत्थरों का पहनावा' तथा तिन्यानोव के उपन्यास 'क्यूख्ल्या' में हुआ है।

नाटक

इस युग की नाट्य कृतियाँ बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें त्रिन्योव के नाटक 'ल्यूबोव यरवाया' का अपना स्थान है। इनमें क्रान्ति के प्रति लेखक और नागरिक का संबंध स्पष्ट रूप में स्थापित किया गया है और बोल्शेविज्म तथा अक्तूबर क्रान्ति का समर्थन किया गया है।

लवरेन्योव का नाटक 'टूटना' भी सोवियत नाट्य साहित्य की महान् उपलब्धि मानी जाती है। इसके मूल में ऐतिहासिक घटनाएं हैं, क्रूजर 'अवरोरा' की घटनाएं, जो पेत्रोग्राद के युद्ध और अक्तूबर क्रान्ति से संबंधित हैं। नाटक के नायक गदून के चित्रण द्वारा बाल्शेविक नेतृत्व का रूप प्रस्तुत किया गया है। जहाज का कप्तान बेर्सेनेव क्रान्ति के पक्ष में हो जाता है।

इवानोव की कथा पर आधारित नाटक 'बख्तरबन्द १४-६९' बख्तर से मढ़ी रेलगाड़ी १४-६९, विशेष रूप में सफल हुआ इसकी मूल विषय-वस्तु श्रमिकों का भ्रातृत्व है।

गृह-युद्ध से संबंधित नाटकों में बुल्गाकोव का नाटक 'तुर्बीनों के दिन' का विशेष स्थान है। इसी प्रकार सोवियत जीवन की यथार्थताओं से संबंधित नाटकों में रमायोव के नाटक 'जिवोरीन्स्क का अन्त' तथा 'अभिनय पुरुष' और काइकोव का नाटक 'हैंडेल वाला आदमी' विशेष रूप में उल्लेखनीय हैं। 'जिवोरीन्स्क का अन्त' में नाटककार ने प्राचीन रूसी प्रान्त के अन्तिम दिनों का और कम्युनिस्ट युवकों द्वारा नवीन समाज

प्रति नये समाजवादी संबंधों की समस्या है। उपन्यास में जनता की शक्ति के अपव्यय को रोकने की समस्या, पार्टी द्वारा जन शक्ति के संचालन की समस्या, और नैतिकता तथा परिवार से संबंधित अनेक प्रश्नों को प्रस्तुत किया गया है।

पनफ्योरोव का उपन्यास 'ब्रुस्की' क्रान्ति के बाद के ग्रामीण जीवन से संबंधित है और अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह बताता है कि गाँव का पुनर्निर्माण कैसे हो रहा है। कैसे वर्ग संघर्ष के बीच नये प्रकार के लोग जन्म ले रहे हैं और गांवों के जीवन के नए रूप का किस प्रकार संगठन किया जा रहा है। गांवों के जीवन से संबंधित दूसरी अत्यन्त लोकप्रिय कृति अन्ना करावायेवा का उपन्यास 'जंगल का कारखाना' है। इसमें गाँव की नयी प्रगतिशील और क्रान्तिकारी शक्ति का 'कुलकों' के साथ संघर्ष दिखाया गया है। लेखिका ने यह दिखाया है कि प्रगतिशील विचारों के प्रभाव से गांवों में किस प्रकार नये समाजवादी संबंधों का जन्म हो रहा है, सामूहिक परिश्रम विकसित हो रहा है और किसानों की समाजवादी चेतना दृढ़ हो रही है।

शोलोखोव का उपन्यास 'अनजोती भूमि' इस क्षेत्र में सबसे श्रेष्ठ उपन्यास है। कलखोजी स्तर की विजय त्वरदोव्स्की की

गृहयुद्ध की एक सामान्य प्रकार की घटना का चित्रण हुआ है। नौ सैनिकों की एक अराजकतावादी टुकड़ी कम्यूनिस्टों के प्रभाव से लाल सेना का नियमित, सुसंगठित और अनुशासित अंग बन जाती है जो क्रीमिया में श्वेत गार्डों के विरुद्ध लड़ती है। इसकी नायिका कमिसार का चित्र अत्यन्त प्रभावोत्पादक है। नाटक के अन्त में वह शत्रु द्वारा मार डाली जाती है फिर भी वह झुकती नहीं और अन्तिम क्षण तक वह पार्टी और मातृभूमि के बारे में सोचती रहती है। उसका निर्भय अंत क्रान्ति, सोवियत जनता, और कम्यूनिस्ट पार्टी की अनिवार्य विजय में सबका विश्वास दृढ़ कर देता है। इसी से 'ट्रेजेडी' होते हुए भी यह आशावादी है।

काव्य

समाजवादी परिस्थिति का सोवियत काव्य पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस युग में देम्यान बेदनी का अपना काव्य-सर्जन चलता रहा। देश के औद्योगीकरण के साथ उसके काव्य में सर्जनात्मक परिश्रम की विजय वस्तु और निर्माणकारी मोर्चे पर जनता के साहस और उत्साह का अंकन प्रस्तुत हुआ। प्रतिदिन के काम को अच्छी तरह पूर्ण करने वाले सामान्य सोवियत व्यक्ति को उसने नायक के रूप में प्रस्तुत किया।

सोवियत शासन के इन आरम्भिक वर्षों में पुराने कवियों के साथ कवियों की नयी पीढ़ी भी सामने आई। बेज़िमेन्स्की ने अपने काव्य में सोवियत नवयुवकों का भावलोक प्रस्तुत किया और उसके काव्य में उसकी व्यंग्य की प्रतिभा लक्षित हुई और उसका पार्टी प्रेम भी। उसने कहा कि "सबसे पहले मैं पार्टी का सदस्य हूँ और बाद में कवि।" 'हमारे जीवन के दिन' में कई व्यंग्य चित्र हैं। उसका एक नाटक 'गोली' था

मैत्री आदि का व्यापक चित्रण स्वेतलोव, सयानोव, गलोदनी आदि की कृतियों में मिलता है। स्वेतलोव की कविता 'ग्रनाद' (अनार) में इसका अंकन हुआ है, जिसमें लाल सेना के सैनिक के लिए अपने देश का स्वातन्त्र्य युद्ध सारे संसार की जनता के स्वातन्त्र्य युद्ध से संबंधित है। गृहयुद्ध से संबंधित उनकी कुछ कविताएं बाद में लोकगीत के रूप में लोकप्रिय हो गईं। इन्हीं वर्षों में आलीमोव का 'छापामार' बड़ा व्यापक हुआ।

इसी युग में तीखनोव की काव्य प्रतिभा उनके काव्य 'नायक की खोज' के रूप में अपना विकास मार्ग ढूंढ रही है।

एडुअर्ड बग्रीत्स्की के काव्य 'अपानस के विषय में विचार' में यूक्रेनीय रंग है। इसमें अपानस का चित्रण है जो क्रान्ति से विमुख होता है और बाद में शत्रु पक्ष में चला जाता है। इसमें उसके जीवन की ट्रेजेडी दिखाई गयी है। कवि ने वैयक्तिक स्वामित्व की भावना की आलोचना भी की है। इसाकोव्स्की का इस समय का काव्य भी महत्त्वपूर्ण है। नये गांवों के जीवन की नई विशेषताओं का उसमें बड़ा अच्छा चित्रण हुआ है। उसका काव्य 'फून में बिजली का तार' सोवियत काव्य के विकास का महत्त्वपूर्ण रूप माना जाता है।

इसकी कविताओं में नगर तथा गांवों को प्रतिस्पर्धी के रूप में न चित्रित कर किसानों तथा मजदूरों की, नगर तथा गांवों की एकता का समर्थन किया गया है। इस समय की उसकी अन्य कविताओं में प्राचीन गांवों के आनन्द रहित जीवन के साथ नवीन गांवों के उत्साहपूर्ण, जाग्रत जीवन की तुलना मिलती है। आगे चलकर कलखोजी गांवों की विषय-वस्तु का उसके काव्य में और भी विकास हुआ। उसने कलखोजी जीवन के बड़े सजीव चित्र प्रस्तुत किये। ओसेयेव ने राजनीतिक प्रगीतों में अब स्वतन्त्र हुई स्त्रियों के सुख सौभाग्य तथा सोवियत नवयुवकों के उत्साहपूर्ण स्वतन्त्र जीवन का अंकन हुआ है।

समाजवादी निर्माण की विषय-वस्तुओं से संबंधित सन् तीस के आरम्भिक वर्षों की कृतियों के बीच बेजिमेन्स्की के काव्य 'करुण रात्रि'

का उल्लेख आवश्यक है। इसमें प्राचीन व्यवस्था का अनिवार्य नाश दिखाते हुए कवि ने 'नेपर गैस' (जल बिजली घर) के निर्माण को नयी समाजवादी व्यवस्था की नई शक्ति के प्रतीक के रूप में चित्रित किया है जो प्रकृति पर अधिकार प्राप्त करती हुई व्यक्ति को साहस तथा बलिदानपूर्ण कार्यों की प्रेरणा देती है।

नये साहसी और आत्मबलिदानी नायक का चित्र दिमेन्तोव की कविताओं (पद्य कथाएँ) में उभरा है। इसमें कवि ने सामान्य सोवियत व्यक्तियों की उच्च नैतिक विशिष्टताओं को प्रदर्शित किया है और परिश्रम के प्रति उस नये संबंध को दिखाया है जो समाजवाद के लिए किये गये सामूहिक संघर्ष के बीच उत्पन्न और 'दृढ़ होता' है 'नया तरीका', 'इंजीनियर' 'कानून'।

इन्हीं वर्षों में सीमनोव, अलीगेर, दलमातोव्स्की आदि का काव्य-प्रणयन आरम्भ होता है। इन्हीं वर्षों में सुरकोव के प्रथम काव्य संग्रह गुनगुन (हम उग्र) प्रस्तुत हुए और उसमें गीतकार के लक्षण विकसित हुए।

सोवियत संघ के अन्य प्रजातन्त्रों में समाजवादी जीवन का जो नव-निर्माण हो रहा था उसकी अभिव्यक्ति भी इस समय के काव्य में मिल रही है। तीखनोव के काव्य में 'युर्गी' (करखेतों के विषय में कविता) इसकी अच्छी अभिव्यक्ति हुई है। नव जीवन के निर्माताओं की दिन-प्रति-दिन की कार्य तत्परता और उत्साह का वर्णन कवि का मुख्य लक्ष्य है।

तुर्कमीनिया के प्रजातन्त्र के जीवन का चित्रण लुगोव्स्कोय की कविताओं में हुआ है। बोल्शेविकों को रेगिस्तान और बसन्त की विषय-वस्तु समाजवादी शिक्षा और प्राचीन रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष है।

अपने युग की आत्मा को सुरक्षित किये हुये, परिश्रम के भावावेश से परिपूर्ण ये कृतियाँ देश के पुनर्निर्माण के प्रति उस नवीन मानवीय संबंध को प्रदर्शित करती हैं जो कि इन वर्षों में प्रस्तुत हुआ। इस प्रकार परिश्रम-शील जनता की सर्जना का वर्णन करनेवाली इन कृतियों में सोवियत साहित्य की देशभक्ति की भावधारा तथा दिशा का अभिव्यंजन हुआ।

ये कृतियाँ यह भी प्रदर्शित करती हैं कि जिस प्रकार पंचवर्षीय योज
की सफलता के साथ देश बढ़ा उसी प्रकार अपने देश के साथ बढ़ने
नये व्यक्ति की नयी विशिष्टताएं भी विकसित हुईं। सोवियत ले
मानवीय चरित्र की इन नवीन ऊर्ध्वमुखी प्रगतिशील विशिष्टताओं
जिन्हें कि समाजवादी यथार्थता ने निर्मित किया, के अंकन की ओर वि
रूप से आकृष्ट हुए। जनता के चरित्र विकास का यह क्रमिक रूप,
के बीच उसके चरित्र का परिवर्तन, क्रान्तिकारी युद्ध में उसका योग
इन सबकी बड़ी सुन्दर अभिव्यक्ति अस्त्रोव्स्की के उपन्यास 'लोहा
तय्यार किया गया' और मकरेंको की कविता 'शिक्षात्मक कवि
में हुई।

इस प्रकार इस युग का काव्य जीवन की यथार्थताओं के अधिका
निकट आता गया और उसने जीवन के प्रशिक्षण में सक्रिय भाग लि
समाजवादी आदर्श का समर्थन और बुर्जुआ व्यक्तिगत भावनाओं के वि
संघर्ष-इस समय के काव्य की मुख्य विशेषताएं हैं। इस समय की महत्त्
कृतियों के नायक मजदूर, कलखोजी, किसान, इंजीनियर तथा मा
श्रमिक हैं जो समाजवादी समाज के आत्म बलिदानी निर्माता हैं
जो जीवन और परिश्रम के क्षेत्र में नये सामाजिक सम्बन्धों को दृढ़
रहे हैं।

अ० मकरेंको की शिक्षात्मक कविता

व्यक्ति की समाजवादी शिक्षा (जो कि मनुष्य को परिश्रम की
स्वेच्छा से प्रेरित करती है) की समस्या मकरेंको की कविता 'शिक्षा
कविता' में बड़ी गंभीरता के साथ प्रस्तुत की गयी है। सोवियत सा
की अन्य कृतियों के समान यह भी यथार्थ पर आश्रित है। इस कवि
मूल में मकरेंको का वह अनुभव है जो कि उसे अनाश्रित बालकों के स
और संचालन में प्राप्त हुआ था। कठिन परिस्थितियों के बीच
मकरेंको असामाजिक बुरी आदत सीखे हुए इन बच्चों का स्वस्थ स
बना सका जो आगे चल कर अच्छे डाक्टर, इंजीनियर, सैनिक आदि
मकरेंको ने न केवल अपने आश्रित इन बच्चों को शिक्षा दी

इस तथ्य को कलात्मक परिधान भी दिया जिसका परिणाम यह कविता है। वह प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार जीवन की परिस्थितियों द्वारा भग्न इन लोगों की आत्माएं फिर से सुधरती हैं और परिश्रम तथा मनुष्य का मनुष्य में विश्वास किस प्रकार उनको समाज का सुसम्मानित सदस्य बना देता है। वह घटना अत्यन्त महत्वपूर्ण है जिसमें संगठन के एक सदस्य (भूतपूर्व चोर) को डाकखाने से रुपया लाने को भेजा जाता है। उसके प्रति विश्वास के इस प्रदर्शन ने उसमें आमूल परिवर्तन उपस्थित कर दिया, उसमें मनुष्यता को जन्म दिया और उसमें उस शक्ति को उद्बुद्ध किया जिससे कि वह दूसरों के विश्वास के योग्य बना रह सके। अब वह भी अपने को इज्जतदार आदमी समझने लगा। समाजवादी शिक्षा ने इस प्रकार व्यक्ति के सामने नया व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उसकी उदात्त भावनाओं को प्रबुद्ध किया और उसके आत्मिक सौन्दर्य को उच्च स्तर पर प्रतिष्ठित किया।

मकरेंको का योगदान इस बात में है कि वह इस छोटे से उदाहरण में सोवियत व्यक्ति की नयी विशिष्टताओं को और जीवन की उन शक्तियों को, जिन्होंने इन विशिष्टताओं को पुष्ट किया—देख सका, समझ सका और प्रभावपूर्ण ढंग से प्रदर्शित कर सका।

यदि व्यक्ति में व्यक्तिगत या निजी हित वृहत् स्थान ले लेता है औ सामाजिक हित का स्थान अत्यल्प होता है तो व्यक्तिगत जीवन का ना उसके लिए सर्वनाश हो जाता है। तब उसके सामने प्रश्न उठता है कि किसलिए जिया जाय ?"

अस्त्रोव्स्की के सामने यह प्रश्न कभी नहीं उठा, क्योंकि उसे जीवन मे युद्ध करने की शक्ति व्यक्तिगत या निजी लाभ की भावना से नहीं मिल वरन् उसे यह शक्ति उसकी पार्टीवादिता और देश तथा जनता की अन्तिम साँस तक सेवा करते रहने की प्रबल इच्छा देती रही।

अपनी पार्टी, जनता तथा देश की सेवा करने की दृढ़ इच्छा ने ही उसमें लेखक बनने की भावना जगाई। हर प्रकार से पगु हो जाने पर भी जब न वह देख सकता था और न लिखे को दोहरा सकता था—वह लेखक बना और बोल-बोल कर दूसरों को अपने भाव, विचार तथा अनुभूतियाँ लिखाता रहा जिससे कि सोवियत जनता उनसे लाभ उठा सके।

उसकी इस दृढ़ता का परिणाम है उसकी कृति 'कैसे लोहा तय्यार किया गया।' इसका प्रकाशन अस्त्रोव्स्की की विजय थी। उसके लिए जीवन के द्वार फिर से खुल गये। उसने लिखा "जीवन के द्वार मेरे सामने पूरे खुल गये। (जीवन) युद्ध में पूरा-पूरा भाग लेने का मेरा स्वप्न पूर्ण हो गया। अब काम की ओर, विकास की ओर, संप्राप्ति की ओर।"[१]

लेखक के रूप में समाजवाद का समर्थन करते हुए वह लेखक की जिम्मेदारी अच्छी तरह समझता था। उसने कहा कि "लेखक होने का मतलब "सब से पहले समाजवाद का निर्माण होना। वह (लेखक) योद्धा है, शिक्षक है, न्यायालय है।" वह कहता है कि "श्रमिक वर्ग का, पार्टी का वफ़ादार पुत्र बनने से बड़ा कोई आनन्द नहीं है।" पार्टी के महत्त्व को वह खुले रूप में स्वीकार करता है। "मैं वर्षा की छोटी बूँद हूँ जिसमें पार्टी का सूर्य प्रतिबिम्बित हो रहा है।" वह पहचानता है कि उसकी रचना पढ़ते समय पाठक महान् पार्टी के प्रति वफ़ादारी की भावना से अभिभूत हो जाय।

१. इस्तया सावेत्सक्या लितेरातुरा, ख० ३० तिमोफ़ेयेव, पृ० २७०।

'लोहा कैसे तय्यार किया गया'

उसे अपने इस पहले ही उपन्यास में बड़ी सफलता मिली क्योंकि इसकी सर्जना के मूल में उच्च आदर्श था। इसमें अस्त्रोव्स्की ने यथार्थ घटनाओं की सामग्री के आधार पर नवीन व्यक्ति की समस्या, उसकी सहनशीलता की शक्ति के बीच प्रस्तुत की और उसका अपना जीवन स्वयं वह मूलस्रोत बन गया जिसकी यथार्थ घटनाओं का चयन कर उसके उपन्यास की रचना हुई। उसका जीवन स्वतः आदर्शों से इतना अनुप्राणित और सचालित था और आन्तरिक सौन्दर्य से इतना प्रदीप्त था कि वह स्वयं इस युग की कलात्मक कृति बन गया।

यह उपन्यास मूल रूप में उनके जीवन की ही कथा है और इसका नायक पावेल कर्चागिन अस्त्रोव्स्की की ही प्रतिमूर्ति है। दोनों का भाग्य बहुत कुछ एक सा है। जनता के साथ ऐक्य, लेखक और उपन्यास के नायक दोनों के विकास और सौन्दर्य के मूल में है। दोनों में दृष्टि और ध्येय की बड़ी व्यापकता है और दोनों में चरित्र की दृढ़ता है। पावेल कहता है कि "मनुष्य के लिए सबसे प्यारी चीज जिन्दगी है। यह मनुष्य को एक ही बार दी जाती है। इसलिए इस तरह जीना चाहिए कि बाद में यह पछतावा न हो कि इतने वर्ष उद्देश्यहीन बीत गये और मरते हुए कह सके कि सारा जीवन और सारी शक्ति ससार के सबसे सुन्दर—मानवता की मुक्ति के युद्ध—के प्रति अर्पित कर दी गयी।"

पावेल अपना जीवन इसी प्रकार बिताता है। वह गृह युद्ध के वर्षों में लाल सेना की प्रथम पंक्तियों में है और समाजवाद निर्माण के वर्षों में श्रमिकों की अगली पंक्ति में। जब वह सब प्रकार से रोगी और अंधा होकर गतिहीन होकर बिस्तर पर पड़ जाता है तो वह सोचता है कि क्या आत्मघात कर लूँ। तब उसका विवेक कहता है कि "क्या तूने जीवन पर विजय पाने की चेष्टा की? क्या तूने सब कर लिया कि अब इसे (जीवन) फेंक दे? रिवाल्वर छिपा और अब इसकी चर्चा किसी से न करना। उस समय जीने की शक्ति रख जब जीवन असह्य हो जाए। जीवन को हितकारी बना।"

चरित्र की यह दृढ़ता, जिसकी शिक्षा उसे अपनी पार्टी से मिली उसे अपनी दुर्बलता पर विजय पाने की शक्ति देती है और वह उद्देश्य व्यापक लक्ष्य प्रदान करती है, जिससे उसका जीवन उपयोगी बन जाता है जब वह सब प्रकार से पंगु और बेबस हो जाता है तो वह उस साधन का उपयोग करता है जो अभी तक बचा है और यह शब्द है। वह शब्द का प्रयोग करता है और लेखक बन जाता है। उसकी कृति से पाठकों को यह शिक्षा मिलती है कि कभी आत्मसमर्पण न करना चाहिए। कभी हिम्मत न हारनी चाहिए और अपने में सदा शक्ति खोजनी चाहिए जिससे कि युद्ध में खड़ा रहा जा सके।

इस उपन्यास में नकारात्मक नायक का नहीं वरन् गुण संपन्न दृढ़ नायक का चित्र अंकित किया गया है। इसके केन्द्र में कम्यूनिस्ट नायक है जो अपने चरित्र की विशेषताओं में पूर्णतया अनेक रूपात्मक है। अस्त्रोव्स्की का उद्देश्य ऐसे ही युवक नायक का चित्र प्रस्तुत करना था जिससे देश के जवान प्रेरणा पा सकें और युद्ध तथा शांति दोनों के मोर्चों पर डट कर काम कर सकें और आगे बढ़ सकें।

'तूफ़ानों से जन्मे'

यही लक्ष्य उसने अपने दूसरे अपूर्ण उपन्यास 'तूफ़ानों से जन्मे' के लिए रखा था। 'यह कृति सोवियत युवक वर्ग को लक्षित करके लिखी गयी है। 'जवानों में यह चेतना भरनी चाहिए कि एक योद्धा बेबसी की परिस्थिति में भी साहस द्वारा शत्रुओं को अपार हानि पहुँचा सकता है। अन्तिम संभावना तक लड़ते रहने के लिए साहस और दृढ़ता की शिक्षा देनी चाहिए। ऐसे साहस का उद्रेक, जो तर्क के विरुद्ध है, कभी कभी आवश्यक है।" यह प्रमाणित करता है कि बेबसी की परिस्थिति नहीं होती है, साहसपूर्ण प्रतिरोध सब कुछ नष्ट कर देता है, इसी से अस्त्रोव्स्की और उसके उपन्यास का नायक सभी प्रकार की कठिनाइयों पर विजय पा सके। जीने का आनन्द उनको कष्ट के बीच भी इसलिए मिल सका क्योंकि उनके सामने देश सेवा का उदार लक्ष्य था जो कि उन्हें बराबर प्रेरणा देता रहा।

आदमी की कथा' का नायक मेरिसियेव आदि को पावेल कर्चागिन द्वा
प्रभावित या दीक्षित कहा जा सकता है ।

सोवियत व्यक्ति की आत्मिक शक्ति का प्रदर्शन करने के साथ-सा
अस्त्रोव्स्की ने सोवियत जनता की शांति की आकांक्षा को भी व्यक्त कि
है जिससे कि वह कम्यूनिज्म का निर्माण कर सके। "हम शांति चाहते हैं
हम कम्यूनिज्म का भवन बना रहे हैं।"

६. मि० अ० शोलोखोव

[१९०५-]

मिखाईल अलेक्सान्द्रोविच शोलोखोव का जन्म १९०५ में डान क्षेत्र में हुआ था। १९२३ से ही उसकी कृतियों का प्रकाशन शुरू हो गया था। १९२४ में उसकी पहली पुस्तक 'डान की कहानियाँ' प्रकाशित हुई।

यद्यपि उसकी उम्र अभी बहुत न थी फिर भी उसे जीवन का अनुभव बहुत था। वह डान के क्षेत्र में बहुत घूमा और वहीं काम किया। १९२२ तक वह डान के क्षेत्र में अधिकार कर लेनेवाले समुदायों के पीछे दौड़ता रहा और वे इसका पीछा करते रहे। इस प्रकार उसे विभिन्न परिस्थितियों में रहना पड़ा।

१९२३ में वह मास्को आया और उसने कई काम किये, जिनमें बोझा ढोने का और ईंटें जोड़ने का काम भी था। बाद में वह कम्सोमोल पत्र 'यूनोशेस्काया प्राव्दा' में सहयोगी हो गया।

साहित्यिक जीवन के आरम्भ में शोलोखोव को सेराफिमोविच से बड़ा समर्थन प्राप्त हुआ। उसने शोलोखोव की प्रथम पुस्तक की जो भूमिका लिखी थी उसमें शोलोखोव के उज्ज्वल भविष्य की बात कही थी और कहा था कि उसका विकास बहुत बड़े लेखक के रूप में होगा।

शोलोखोव की सर्जना का विकास बड़ी तेज़ी के साथ हुआ। 'डान की कहानियों' के तीन वर्ष बाद ही उसके उपन्यास 'धीरे डान' का प्रथम भाग जनता के सामने आया जिसने उसे सोवियत लेखकों की प्रथम श्रेणी में प्रतिष्ठित कर दिया। १९२९ में इस उपन्यास का दूसरा भाग १९३३ में तीसरा और १९४० में चौथा भाग प्रकाशित हुआ। १९३१ में 'कुँआरी धरती जोती गयी' उपन्यास का पहला भाग प्रकाशित हुआ। इस

कृतियों की लोकप्रियता का अन्दाज इसी से लगाया जा सकता है कि 'शांत डान' १४९ बार और 'कुँआरी धरती जोती गयी' उपन्यास १२० बार प्रकाशित हुआ। सोवियत संघ की जनता की पचास भाषाओं में तथा अनेक विदेशी भाषाओं में इनका अनुवाद हो चुका है।

'शांत डान' पर शोलोखोव को स्तालिन पुरस्कार मिल चुका है। १९३२ से वह कम्यूनिस्ट पार्टी का सदस्य है। १९३९ में वह विज्ञान अकादमी का सदस्य चुना गया। वह उच्च सोवियत का डिप्टी चुना गया। इससे उसकी लोकप्रियता और उसे जो सम्मान मिला है उसका आभास मिल जाता है। द्वितीय महायुद्ध में वह सोवियत सेना में फासिस्टों के विरुद्ध लड़ चुका है। युद्ध समाप्त हो जाने पर अब वह शांति आन्दोलन का बहुत बड़ा समर्थक है।

इनके अतिरिक्त उसकी और भी कृतियाँ हैं। शोलोखोव का जीवन और उसकी सर्जना उन्हीं आदर्शों की ओर उन्मुख है जिनके लिए सारी सोवियत जनता प्रयत्नशील है—कम्यूनिज्म के निर्माण के लिए और सारे संसार में शांति के लिए। उसकी सर्जना की सफलता तथा उसकी जनात्मकता के विचारात्मक कलात्मक महत्त्व के मूल में यही विचार है।

सर्जनात्मक कार्यकलाप का आरम्भ

शोलोखोव की आरम्भिक कहानियों की कथावस्तु गृह-युद्ध से संबंधित है जिसने लोगों को दो विरोधी दलों में बाँट दिया। इस कठोर युद्ध के बीच शोलोखोव बड़ा हो गया और उसने देखा जो कि मनुष्य में अच्छा है और उसे भी जो कि इन अत्याचारों को दमन में बदलती है। कथावस्तु के अनुसार 'भाग्यवान मनुष्य' कहानियों में यह प्रदर्शित किया गया है कि किस प्रकार कठोर तथा रक्तपातपूर्ण युद्ध के बीच नये जीवन का जन्म हुआ है। उनकी कहानियाँ मनुष्य के प्रति विश्वास से पूर्ण हैं और वह बताती हैं कि किस प्रकार [illegible] में मनुष्य की उदात्त भावनाएँ प्रकट होती हैं। जैसे वह अपने देश [illegible] के लिए सब कुछ [illegible] कर देते

के लिए तय्यार होता है और दूसरे की रक्षा के लिए अपना जीवन दे देता है। कम्युनिस्ट बयागिन ठंढ से ठिठुरे एक लड़के को उठा लेता है और अपने घोड़े पर ले चलता है। श्वेत गार्ड उसका पीछा कर रहे हैं। बचत का और कोई उपाय न देखकर वह घोड़ा उसे दे देता है और स्वयं रुक कर मृत्यु की प्रतीक्षा करता है। इस प्रकार आत्म-बलि देकर उसने बच्चे की जान बचा ली।

इन आरम्भिक कहानियों ने उसके अभ्यास को बढ़ाया। उसकी प्रतिभा को पुष्ट किया और उसे मनुष्य के गहरे तथा अनेक रूपात्मक अंकन, प्रकृति के सूक्ष्म तथा पारदर्शी चित्रण और सजीव संवाद लेखन की योग्यता दी। यह सब परिपक्व रूप में उसकी महत्त्वपूर्ण कृति 'शान्त डान' में प्रकट हुई। डान की कहानियों के कथानक की बहुत सी परिस्थितियाँ, पात्रों की विशेषताएं, अलग-अलग घटनाएं अपना रूप बदल कर इस उपन्यास में आ गई हैं।

'शांत डान'

यथार्थता का अनेक रूपात्मक अंकन और उसमें प्रस्तुत समस्या की गंभीरता के कारण 'शांत डान' का सोवियत साहित्य में अत्यन्त उच्च स्थान युक्तियुक्त ही है।

यह उपन्यास के जटिल प्रकार, जिसे महाकाव्यात्मक उपन्यास कहा जा सकता है—को प्रकट करता है जिसे रूसी में 'रोमान एपो-पेया' कहते हैं। गोगल के अनुसार 'एपोपेया' ऐसे व्यक्ति को नायक चुनता है जो अधिकांश जनता, घटनाओं तथा प्रवृत्तियों से सबंधित तथा संयुक्त रहता है। सब कुछ इस नायक के चारों ओर प्रकाशित होता रहता है। 'शांत डान' इसी प्रकार का महाकाव्यात्मक उपन्यास है।

उपन्यास के कथानक के केन्द्र में ग्रिगोरी मेलेखोव के जीवन का आद्यन्त इतिहास है जो डान क्षेत्र के गृह युद्ध की पीठिका में प्रदर्शित किया गया है। इसके साथ ही क्रान्ति के पूर्व और बाद का कज़ाक

जीवन पूर्णता के साथ चित्रित किया गया है। शोलोखोव ने कज्जाकों के रहन-सहन की विशेषता, उनके बीच के वर्गभेद और उन कठिन कठोर रास्तों को प्रदर्शित किया है जिनसे ये 'कुलकों' (जमींदारों) के विरोध को कुचल कर शान्ति की ओर पहुँचे। आक्रमण का वर्णन, श्वेत गार्ड सेना का चित्रण कज्जाक जीवन की तस्वीर यह सब पाठक के सामने विराट जन आन्दोलन (जो सारी बाधाओं को नष्ट करता हुआ आगे बढ़ता है) का व्यापक चित्र प्रस्तुत कर देते हैं।

इस विराट व्यापक भूमिका में लेखक उपन्यास की मूलभूत समस्या नायक के भाग्य को प्रस्तुत करता है। उपन्यास के केन्द्र में उपन्यास का नायक ग्रिगोरी मेलेखोव है, उसका दुर्भाग्य और करुण अन्त बड़ा शिक्षाप्रद है। उसके माध्यम से शोलोखोव यह प्रदर्शित करना चाहता है, कि व्यक्ति गुण सम्पन्न होने पर भी यदि जनता] का साथ छोड़ देता है उससे अलग हो जाता है और युद्ध तथा शांति में जनता के साथ नहीं काम करता तो यह गुण उसकी रक्षा नहीं कर सकते और उसका नाश निश्चित है। उसका विकास नहीं हो सकता। अपने देश की जनता से उसके अलगाव ने ग्रिगोरी को नष्ट कर दिया यद्यपि उसमे बहुत से गुण थे और यद्यपि वह अन्त तक पाठक की सहानुभूति प्राप्त करता रहता है। वह कभी एक ओर जाता है और कभी दूसरी ओर। वह समझता है कि वह गलत रास्ते पर है किन्तु उसमें वापस लौटने की शक्ति नहीं है। दड के भय से वह शत्रु सेना के गिरोह मे जाकर इधर-उधर घूमता है। अन्त में शस्त्र फेंककर देश की ओर लौटता है। यह नये जीवन की ओर लौटना नहीं है, वरन् उसकी बेबसी है। उसने सबसे बड़ा अपराध किया है। उसके हाथ जनता के खून से रंगे हुए है। इस अपराध के लिए उसे दंड भुगतना ही पड़ेगा। अब उसकी किसी को जरूरत नहीं है और जीवन मे उसका कोई स्थान नहीं। ठीक-ठीक निर्णय न कर सकने के कारण और जनता के साथ न हो सकने के कारण उसका ऐसा अन्त हुआ। जब कि स्वतन्त्रता का जन-आन्दोलन चलता है उस समय जो जनता की सेवा नहीं करता, जनता का साथ नहीं

यह एक प्रकार से जनता के शत्रु की सहायता करता है। यही ग्रिगोरी
ाय हुआ और इसी से उसका ऐसा करुण एवं प्रतिष्ठाहीन अन्त हुआ।
ोखोव इस नायक के माध्यम से शिक्षा देना है कि व्यक्ति का विकास
ा से अलग होकर नहीं वरन् जनता के साथ ही होता है और हो
ा है। उसका भाग्य जनता तथा देश के भाग्य के साथ सबद्ध होना
ए। इसी में उसकी मान-मर्यादा है। यह गंभीर प्रश्न कि 'यदि मैं
अपने लिए हूँ तो फिर मैं किसलिए हूँ (बेकार हूँ) क्रान्ति की
 पृष्ठभूमि में शोलोखोव द्वारा प्रस्तुत किया गया है। 'शान्त डान'
ास मानो गोर्की के इसी प्रश्न का उत्तर है।

ग्रिगोरी के अतिरिक्त इस उपन्यास में कज्जाकों के विभिन्न सामा-
स्तरों का भी चित्रण किया गया है और बहुत सी यथार्थ ऐति-
 सामग्री का उपन्यास में समावेश हुआ है। साथ ही उन पात्रों का
ण हुआ है जो ग्रिगोरी से भिन्न हैं और जो प्रगतिशील वर्ग की
वश्यकताओं को समझ सके। वे क्रान्ति के विचार तथा क्रान्ति
ा को प्रकट करते हैं। इन पात्रों के माध्यम से युग का वस्तु-तत्त्व
अथवा सामाजिक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। 'कुँआरी धरती
र्ती' में इवान अलेक्सेइविच, कारग्यारोव, स्तोकमान, बुनचुक,
ागुरको, मिरवाइल कोशेवोय ऐसे ही पात्र हैं। इनका चित्रण
ता से हुआ है।

ान्त डान' डान क्षेत्र में गृह युद्ध के उतार-चढ़ाव का पूरा-पूरा
स्तुत करता है।

स की भाषा

ों की भाषा व्यक्तिगत वैशिष्ट्य से युक्त है। अपने अपने विकास के
 सबकी भाषा अलग है। स्वयं शोलोखोव जब अपनी ओर से
रता है तो वह बहुत से स्थानीय कज्जाकी शब्दों और मुहावरों
ा करता है। उपन्यास की भाषा पाठकों के लिए कहीं कहीं दुर्बोध
 है यद्यपि उससे कज्जाकी जीवन के रंग को प्रकट करने में सहायता मिली

भूमि जोतता है फिर भी अन्यस्त किसानों से अधिक जोतता है। "चाहे खेत पर मर जाऊँ फिर भी (पूरी) भूमि जोत डालूँगा", वह कहता है।

यह शक्ति केवल उसकी अपनी नहीं, यह शक्ति उसमें देशप्रेम तथा पार्टी शिक्षा से दृढ़ हुई है। यह शक्ति पार्टी और जनता की शक्ति है। वह देश के साथ अपने को अभिन्न समझता है। उससे अपने को अलग नहीं करता। वह समाज के काम को अपना ही काम समझता है और उसके हित में ही अपना लाभ देखता है और उसके लिए अपनी बलि तक देने को तय्यार है। यह दृढ़ता उसके चरित्र की विशेषता है! इसी से जब शत्रुओं के प्रचार से भड़काए हुए लोग उससे बखार की चाभी माँगते हैं तो वह चाभी देने से साफ़ इन्कार कर देता है। लोग उसकी हत्या कर देते हैं। वह मर जाता है किन्तु अपने कर्तव्य का पालन करता है।

कम्यूनिस्टों का चित्र

दवीदोव के अतिरिक्त शोलोखोव ने कम्यूनिस्टों के गाँवों के सामूहीकरण के आरम्भ के युग के गावों के कम्यूनिस्टों का भी अनेकरूपात्मक चित्र प्रस्तुत किया है और उनको दैनिक जीवन तथा राजनीतिक कार्यकलाप के तनाव के बीच प्रदर्शित किया है। शोलोखोव ने उनकी गलतियाँ भी दिखाई हैं और क्रान्ति के प्रति उनकी जो लगन है और उनके चरित्र की जो शक्ति है उसे भी प्रदर्शित किया है। इनको दवीदोव के उदाहरण से प्रेरणा और शक्ति मिलती है और यह अपने को ठीक भी कर लेते हैं। नगूल्नोव तथा रज़म्योतनोव ऐसे ही कम्यूनिस्ट हैं।

चन्द्रासमाइदाश्नीकोव भी उपन्यास के मुख्य पात्रों में से है। इसके माध्यम से शोलोखोव ने यह प्रदर्शित किया है कि मध्यम वर्ग के खुद काश्तकारों ने किस प्रकार धीरे-धीरे कलखोज को स्वीकार कर लिया और वे किस प्रकार कलखोज में दाखिल हो गये। खुदकाश्तकारों का कलखोज में प्रवेश उस युग की बड़ी महत्वपूर्ण राजनीतिक समस्या थी जिसकी चर्चा लेनिन तथा स्तालिन ने भी की थी। जब माइदार्शकोव

यह समझ लेता कि उसका हित कलखोज में सम्मिलित हो जाने में है तो वह इसमें दाखिल हो जाता है। उसका यह मार्ग सरल न था। मिल्कियत की भावना उसे रह-रह कर कोंचती है। धीरे-धीरे वह इस पर विजय पाता है। शोलोखोव ने इस मनोवैज्ञानिक द्वन्द्व को बड़ी सूक्ष्मता से दिखाया है। इसके साथ ही उसे सामाजिक हित का भी बड़ा ध्यान है। धीरे-धीरे उसमें जीवन के प्रति समाजवादी सबध दृढ़ हो रहे हैं। माइदान्निकोव के चरित्र का इस उपन्यास में महत्त्व इस बात में है कि उसके माध्यम से खुदकाश्तकारों के कलखोज में प्रविष्ट होने का व्यापार प्रदर्शित किया गया है जिसने कलखोजीय आन्दोलनकी विजय और सफलता निश्चित कर दी।

शत्रुओं का चित्रण

समाजवादी यथार्थवाद की विशेषता यह है कि वह केवल 'जीवन में नवीन का समर्थन' ही नहीं करता, गुण सपन्न ठोस नायकों का सृजन ही नहीं करता, वरन् उन सबसे युद्ध भी करता है जो नये के विकास में बाधा डालते हैं; उसकी प्रगति को रोकते हैं। इस उपन्यास में भी इसी प्रकार गांवों का समाजवादी पुनर्निर्माण दिखाते हुए तथा जीवन में नये की प्राचीन पर अवश्यम्भावी विजय प्रदर्शित करते हुए शोलो-खोव ने उसके शत्रुओं (कुलक तथा व्हेतगार्ड) का भी अनेकरूपात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है। यह शत्रु कई प्रकार के हैं जो सोवियत शासन का खुले तथा छिपे कई रूप में विरोध करते हैं। तीतवरदीन खुले रूप में दवीदोव पर आक्रमण करता है। लुप्तिशेव का नवीन के प्रति विरोध धार्मिक ढोंग में छिपा हुआ है। सबसे खतरनाक दुश्मन अस्त्रोवनोव है जो कलखोज के भीतर है और भीतर ही भीतर उसे नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर रहा है। उसके माध्यम से शोलोखोव ने छिपे हुए और इसी से और भी खतरनाक क्रान्ति के शत्रु को प्रद-शित किया है। इन्हीं के बीच सोवियत शासन के शत्रुओं का समर्थन प्राप्त होते है। त्सिदेम्कोव के रूप में उनका चित्रण हुआ है जो विदेशियों के हाथ बिके हुए देशद्रोही हैं और जो सोवियत शासन के

विरुद्ध सब कुछ करने को तैयार हैं। इसमें शत्रुओं का ऐसा ठीक-ठीक वर्णन हुआ है कि जब सनु सीम के वर्षों में कलखोजों में इस उपन्यास का सामूहिक पठन आरम्भ हुआ तो उसने वहाँ के शत्रुओं के उद्घाटन में बड़ी सहायता की।

शत्रुओं की शक्ति को दिखला कर शोलोखोव ने नवीन के विरुद्ध उनके पराजय की अनिवार्यता भी दिखाई है। गाँवों के समाजवादी जीवन की ओर से जाने वाली पार्टी की नीति से कलखोज के विकास को रोकने वाले सभी शत्रुओं का नाश निश्चित है। उपन्यास का मुख्य भाव यही है कि नवीन की अपराजेय शक्ति सभी विरोधों पर विजय पाती है।

कलात्मक विशेषताएँ

शोलोखोव की अन्य कृतियों के समान इस उपन्यास का भी कलात्मक स्तर बड़ा ऊँचा है। इसके विचारों का महत्त्व अभिव्यंजन के उन अनेक रूपात्मक उपादानों की समृद्धि से और भी बढ़ जाता है जिनका कि इसमें उपयोग हुआ है। पात्रों का सजीव चित्रण अत्यन्त कुशल संवादों के द्वारा हुआ है। हर एक पात्र का अपने बोलने का ढंग है जिससे उसके व्यक्तित्व का पता लगता है। इसके साथ ही शोलोखोव अपने पात्रों को उनके क्रिया-कलापों के बीच भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में रखता है जिससे उनके चरित्र की अनेक विशिष्टताएं उभरती हैं और जिससे प्रत्येक पात्र स्वतन्त्र व्यक्तित्व के साथ सामने आता है।

इस उपन्यास की विषय-वस्तु भी अपने ढंग की है। अधिकतर उपन्यासों के वस्तु-तत्त्व का गठन नायक के व्यक्तिगत जीवन की घटनाओं के आधार पर गठित होता है किन्तु शोलोखोव इससे अलग कलखोज के संगठन के इतिहास पर या सामाजिक जीवन की घटनाओं पर कथानक का निर्माण करता है। इसमें मुख्य भाव यह है कि व्यक्ति के चरित्र की मुख्य विशिष्टताएं सबसे पहले समाजवाद के निर्माण के प्रति उसके संबंध से उद्घाटित होती हैं। समाजवादी संबंध में वह जितना पूर्ण है उतना ही उसका व्यक्तित्व स्पष्टता से प्रस्फुटित होता है और

के ग्रिगोरी की तरह उसके व्यक्तित्व का महत्त्व घट जाता है और उसके अच्छे गुण नष्ट हो जाते हैं। वर्ग संघर्ष के बीच, सैद्धान्तिक युद्ध में, परिश्रम के व्यापार के बीच व्यक्ति की चेतना दृढ़ होती है और उस का चरित्र मजबूत होता है। 'कुंआरी धरती जोती गयी' में व्यक्ति का विकास समाजवाद की ओर जाने में प्रदर्शित किया गया है जिस पर चलकर वह अपने व्यक्तित्व को अधिक से अधिक समृद्ध बनाता है। सामाजिक जीवन की घटनाओं पर अपने को केन्द्रित करता हुआ भी शोलोखोव इनको उन स्वाभाविक व्यक्तिगत जीवन की परिस्थितियों से अलग नहीं करता जो कि इनको घेरे हुए हैं। वह महान् और लघु, महत्त्वपूर्ण तथा हास्यप्रद मानवीय जीवन तथा प्रकृति के जीवन को एक में गूंथ देता है।

शोलोखोव ने प्रकृति के अनेक चित्रों का अपने उपन्यास में समावेश किया है। प्रकृति के सूक्ष्म पर्यवेक्षण पर आधारित प्रकृति के ये चित्र ग्रामीण जीवन को काव्यात्मक परिधान देते हैं और यह बताते हैं कि मनुष्य का जीवन कितना पूर्ण और व्यापक हो जाता है जब वह अत्याचार और निर्धनता से सर्वथा मुक्त हो जाता है। उस समय वह अपने चारों ओर के प्राकृतिक वातावरण के सौन्दर्य को ठीक तरह देखता है और उसका अनुभव करता है।

'शांत डान' की तरह इस उपन्यास की भाषा भी अत्यन्त समृद्ध, अनेकरूपात्मक, अभिव्यंजक तथा कहीं कहीं प्रान्तीय प्रयोगों के कारण दुर्गम है। 'कुंआरी धरती जोती गयी' सोवियत साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियों में से एक है।

युद्ध के वर्षों में शोलोखोव का कार्यकलाप

द्वितीय महायुद्ध में शोलोखोव ने युद्ध-सवाददाता बनकर युद्ध में भाग लिया। सोवियत सेना के महत्त्वपूर्ण कार्यों का अंकन शोलोखोव ने अपनी पुस्तक 'वे मातृभूमि के लिए लड़े' में किया है।

शत्रु के प्रति अत्यधिक घृणा जगाई।

युद्ध के बाद शोलोखोव ने शांति आन्दोलन में योग देने लगा। इस सबंध में उसने लेख भी लिखे और भाषण भी दिये।

उच्च सोवियत मे शोलोखोव के चुनाव का प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए अ०ते० कलिनिन ने कहा था कि 'शोलोखोव पूरा-पूरा जनता का लेखक है। वह जनता के बीच से आया और हमारे (जनता के) साथ उसका घनिष्ट संबंध बना हुआ है। उसकी रचनाएं न केवल हमारे देश में ही अत्यन्त लोकप्रिय हैं वरन् सारे संसार के श्रमिकों के बीच उसकी अत्यधिक लोकप्रियता है।' कालिनिन का यह कथन बिल्कुल ठीक है। उच्च सोवियत में शोलोखोव का कई बार चुना जाना इस बात का प्रमाण है कि वह कितना लोकप्रिय है और सोवियत जनता उसकी सर्जना का कितना आदर करती है।

७. अलेक्सेइ निकोलाएविच तोलस्तोय

[१८८३–१९४५]

अलेक्सेइ तोलस्तोय का जन्म अभिजात कुल में हुआ था और वह उच्च वर्ग के वातावरण में बड़ा हुआ। प्रतीकवादियों से उसका घनिष्ट संबंध आरंभ में था जिसके प्रभाव ने उसे क्रान्तिकारी विचारों से दूर रखा किन्तु रूसी साहित्य के अन्य लेखकों के समान वह क्रान्ति के पक्ष में आ गया, उसके साथ अपने जीवन को मिला दिया और सोवियत देश के आदर्शों का अभिव्यंजक तथा सोवियत जनता का शिक्षक बन गया।

क्रान्ति के पूर्व तोलस्तोय केवल साहित्यकार था किन्तु सोवियत युग में वह महत्वपूर्ण सामाजिक कार्यकर्ता बन गया जिसकी बातें लोगों ने ध्यान से सुनी। वह विज्ञान अकादमी का सदस्य चुना गया और सोवियत संघ के आर्डर से विभूषित हुआ। १९३७ में वह उच्च सोवियत का सदस्य चुना गया। जर्मन फासिस्ट बर्बरता की जाँच के सरकारी कमीशन के सदस्य के रूप में भी उसने युद्ध के वर्षों में काम किया।

क्रान्ति के पूर्व की सर्जना

१९०७ में उसने अपनी पहली कविता की पुस्तक प्रस्तुत की। लोक कथा की पुस्तक (मरीची-लाल पक्षी) की कथाएँ, कविता की पुस्तक 'नीली नदियों के पीछे', अठारहवीं शताब्दी के रूसी युग की कहानियाँ— इन सबके द्वारा उसका साहित्यिक कार्यकलाप आरम्भ हुआ। साहित्यिक क्षेत्र में उसे यश उन कहानियों से प्राप्त हुआ जो बाद में 'वोल्गा के पार' में एकत्रित कर दी गयी। इन कहानियों तथा अन्य कृतियों में वह आलोचनात्मक यथार्थवाद का प्रतिनिधि है और अपनी सर्जना में बुनिन

के निकट है। किन्तु जहाँ बूनिन इस मरणशील सामन्ती व्यवस्था के साथ अपने को मिला देता है और उसके अन्त से व्यथित होता है और सामन्ती अतीत में डूबकर दुखी रहता है वहाँ तोलस्तोय इस व्यवस्था का अनिवार्य ऐतिहासिक अन्त देखता है, समझता है और जीवन के लिए उसकी अयोग्यता को प्रदर्शित करता है। इस विषय-वस्तु से संबंधित उसकी कृतियाँ गोगल के व्यंग्य का स्मरण दिलाती हैं। उसकी आत्मकथात्मक कहानी 'निकीता का बचपन (१९१८)' उसकी श्रेष्ठ कृतियों में से है जिसमें बच्चे के मनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण तथा रूसी जीवन की मुख्य विशेषताएं देता हुआ वह अपने बचपन के संस्मरण प्रस्तुत करता है।

क्रान्ति के बाद

तोलस्तोय सहसा सोवियत लेखकों की श्रेणी में दाखिल नहीं हुआ। पांच वर्ष (१९१८–२३) उसने विदेश में विताये। इन वर्षों में उसे मातृभूमि के साथ अपने घनिष्ट संबंध का भान और भी अधिक हुआ। वह स्वय कहता है कि 'मै बहुत धीरे-धीरे प्रौढ़ हुआ। समकालीनता में बहुत धीरे-धीरे प्रविष्ट हुआ। किन्तु इसमें आकर फिर मैंने उसे सारी चेतना के साथ अपना लिया।'

सन् बीस के वर्षों में उसने जो कृतियाँ प्रस्तुत की उसमें उन *विदेश* में रहनेवाले या प्रवासी रूसियों पर व्यंग्य है जो अपने देश के प्रति बदल गये हैं।

उसकी *प्रतिभा का चरमोत्कर्ष उन व्यापक* ऐतिहासिक कथात्मक रूपों में मिलता है जिनमें युग विशेष के मूलभूत प्रश्नों को प्रस्तुत किया गया है। 'पीतर प्रथम', 'पीड़ा के बीच', 'यात्रा', 'रोटी' उपन्यास तथा 'इवान भयंकर' से संबंधित नाटकीय कृतियाँ ऐसी ही रचनाएं हैं।

पीतर प्रथम उपन्यास

तालस्तोय इतिहास की ओर इसलिए उन्मुख होता है कि वह उसकी सहायता से अपने चारों ओर के जीवन को जाने तथा अतीत के

मर्श। ऐतिहासिक विषय-वस्तु के कलात्मक उद्घाटन की मुख्य विशेषताएं हैं अतीत के चित्रण में जीवन-सत्य तथा वर्तमान के हित मे उसकी व्याख्या। ऐतिहासिक कथाओं मे तोलस्तोय ने इनका ध्यान रखा है।

'पीतर प्रथम' का पहला भाग १९२९ में प्रकाशित हुआ। दूसरा भाग १९३४ मे और तीसरा भाग अधूरा रह गया।

इस उपन्यास का महत्व उस उच्च देशभक्ति के उत्कर्ष के प्रदर्शन में है जिसके साथ रूसी इतिहास के ये पन्ने खुलते हैं। उपन्यास उस जातीय चरित्र को प्रस्तुत करता है जिसकी पूर्ण मूर्तिमत्ता पीतर के रूप में हुई है और उस शक्ति को प्रदर्शित करता है जिससे रूसी जनता ने अपने राष्ट्र का निर्माण किया। पीतर का युग आमूल सांस्कृतिक परिवर्तन का युग है जब कि नयी जनता के बीच से नये लोग आते हैं जो थोड़े ही समय मे रूस को नये सांस्कृतिक पथ पर आरूढ़ कर उसे योरोपीय राष्ट्रों की प्रथम श्रेणी मे प्रतिष्ठित करते हैं। इन सबो मे पीतर सबसे आगे है जो दूसरो की अपेक्षा अधिक दूर तक देख और समझ सकता है तथा अपने नए विचारों को कार्यान्वित करने की दृढ इच्छा शक्ति रखता है। यह उपन्यास पीतर के जीवन का इतिहास प्रस्तुत करता और चूंकि पीतर के जीवन को रूस के जीवन से अलग नही किया जा सकता है इसलिए उपन्यास अठारहवीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश के रूस का कलात्मक इतिहास बन जाता है।

पीतर का चित्र

पीतर के चित्रण का कलात्मक महत्त्व केवल इस बात मे नही है कि उसमें इस महत्त्वपूर्ण रूसी व्यक्ति की असली विशिष्टताएँ प्रदर्शित की गई हैं, वरन् इसमे जातीय रूसी चरित्र को सामान्य विशिष्टताओं के रूप मे चित्रण किया गया है। इसी से पीतर का जीवन उसके युग के जीवन का भी चित्र बन जाता है।

पीतर मे जातीय गर्व अपनी पूर्णता पर है जो उसे रूसी

इसके साथ ही 'बयारो' का वह समुदाय भी चित्रित हुआ है जो पीतर के सुधारों के साथ था। नयी संस्कृति के विदेशी शिक्षा प्राप्त इंजीनियर निर्माता आदि भी चित्रित किये गये हैं जो जनता के आदमी हैं जो पीतर के साथ हैं और जो पीतर के प्रति लोक-समर्थन या जन-समर्थन का रूप प्रस्तुत करते हैं। ये लोग पीतर के साथ ही बढ़ते हैं और विकसित होते हैं। इनकी जो अच्छी-अच्छी विशेषताएं थीं, पीतर ने उनका आह्वान किया और उनको बढ़ने का मौका दिया। इसके साथ ही वे विदेशी भी चित्रित किये गये हैं जिन्होंने पीतर के युग में रूसी जीवन में भाग लिया। उपन्यास में उन पात्रों का भी समुदाय है जिनके माध्यम से जनता के निम्नतम स्तर के लोगों का भाग्य प्रदर्शित किया गया है जो युद्ध की कठिनाइयों को भोग रहे हैं, जो युद्ध में मर गये या कठिन परिश्रम का कारागार-दंड पाकर नष्ट हो गये।

उपन्यास में वर्णित घटनाओं की अनेक रूपता गरीब की झोपड़ी से लेकर बादशाह के महल तक के जीवन का चित्रण, पात्रों की पंक्ति यह सब उस विराट ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का सृजन करते हैं जिसमें उपन्यास का 'मुख्य कार्य' पीतर का जीवन विकसित हुआ जो अनेक ऐतिहासिक जटिलताओं से संयुक्त है और जातीय देश भक्ति के वेग से परिपूर्ण है।

उपन्यास की भाषा

उपन्यास के प्रत्येक पात्र की अपनी भाषा है जिससे उसके चरित्र की विशेषता प्रकट होती है। उपन्यास की यह यथातथ्य तथा अभिव्यंजनपूर्ण भाषा पाठक के सामने पूरे पीतर युग का चित्र प्रस्तुत कर देती है जिससे उसकी विशेषता तथा महानता का पूरा-पूरा आभास मिल जाता है।

इस उपन्यास में समाजवाद का आदर्श नहीं है फिर भी इसमें समाजवादी यथार्थवाद की विशेषताओं का समावेश हुआ है। लेखक युग के चित्रण में जीवन को उसके विकास-व्यापार के बीच चित्रित करता है और जनता को इतिहास स्रष्टा के रूप में प्रदर्शित करता है।

रूसी जनता के इतिहास के महत्त्वपूर्ण क्षणों का, युद्ध में प्राप्त उसके यश का तथा जातीय स्वतन्त्रता के लिए उसके युद्ध का जो चित्रण उपन्यास

में हुआ है उसका सोवियत जनता में देशभक्ति का भाव भरने की दृष्टि से बड़ा महत्त्व है।

पीतर-युग की रूसी जनता के साहसपूर्ण कार्यों को सोवियत सैनिकों के सामने उदाहरण रूप प्रस्तुत कर उनमें युद्ध के भाव को और उद्दीप्त करने के लिए, युद्ध समाचार-पत्र 'लाल. तारा' ने द्वितीय महायुद्ध के दिनों में, इस उपन्यास के अन्तिम अध्यायों के अंश छापे थे। इससे इस उपन्यास का महत्त्व स्वतः स्पष्ट है।

पीतर प्रथम समाजवादी यथार्थवाद की दृष्टि से सुदूर अतीत की कलात्मक व्याख्या का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है।

'इवान भयंकर के विषय में नाटक'

द्वितीय महायुद्ध के बीच तालस्तोय रूसी अतीत के एक और अत्यन्त दिलचस्प व्यक्ति 'इवान भयंकर' की ओर उन्मुख हुआ। दो भाग में संबद्ध नाटक इसी से संबंधित हैं—'चीन और चोलिन' तथा 'कठिन वर्ष'।

सोवियत लेखकों की ऐतिहासिक कलात्मक कृतियों की मुख्य विशेषता यह है कि उनमें प्रायः रूसी इतिहास के उन मूल्यांकनों पर पुनर्विचार किया गया है जिसे कि प्राचीन इतिहास विज्ञान ने दिया था और उसे न स्वीकार कर अपनी दृष्टि से उनकी व्याख्या की गयी है और उन्हें नये रूप में प्रस्तुत किया गया है।

तोलस्तोय के नाटक, इवान को नये रूप में प्रस्तुत करते हैं जो कि परंपरा से बिल्कुल भिन्न हैं। उसके ये नाटक सोवियत नाट्य साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियों में गिने जाते हैं।

'रोटी'

सुदूर अतीत के चित्रण के साथ-साथ उसने ऐसी कृतियाँ भी प्रस्तुत की हैं जो अतीत से बहुत दूर नहीं जाती हैं और जिन्हें 'समकालीन ऐतिहासिक उपन्यास' कहा जा सकता है—जो गृह युद्ध के वर्षों से संबंधित हैं। 'रोटी' तथा 'पीड़ा के बीच यात्रा' ऐसी ही कृतियाँ हैं। 'रोटी' में १९१८

सरीत्सिन (स्तालिन ग्राद) की साहसपूर्ण रक्षा की कथा कही गयी है।
तोलस्तोय ने लिखा कि उसकी इस कथा मे "उसके बारे मे कहा गया
जो ससार मे सबसे मुख्य है—हमारी क्रान्ति के दर्शन के विषय मे,
क्रान्ति के महान् व्यक्तियों के विषय मे, विजय दिलाने वाले युद्ध के सगठन
विषय मे, अपनी क्रान्ति के आशावाद के विषय मे और इस विषय मे
कहा गया है कि युद्ध की आग के बीच किस प्रकार सोवियत व्यक्ति का
चरित्र निर्मित हुआ ।"

इस सबके चित्रण के लिए वह गृह-युद्ध की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण
घटना सरीत्सिन (अब स्टालिनग्राद) नगर के लिए युद्ध की ओर उन्मुख
हुआ। इस नगर की रक्षा का कार्यभार स्तालिन पर डाला गया और इस
अवधि मे युद्ध का सचालन (१९१८ मे) स्वय स्तालिन ने किया। सरी-
त्सिन की सफल रक्षा ने विरोधियों की पराजय और गृहयुद्ध का अत
निश्चित कर दिया।

'रोटी' का महत्त्व सबसे पहले इस बात मे है कि इसमे लेनिन
तथा स्तालिन के कलात्मक रूपों के सर्जन की समस्या प्रस्तुत की गयी।
इसमे लेखक को बड़ी सफलता भी मिली। उसने लेनिन तथा स्तालिन
का बड़ा ही जोरदार चित्र प्रस्तुत किया और उनको दैनिक जीवन
तथा क्रान्तिकारी कार्यकलाप के बीच दिखाया । पाठकों के सामने स्ता-
लिन की संगठनकारी प्रतिभा, पैनी दृष्टि, दृढ़ता, साहस, क्रान्तिकारी
जनता के साथ उसके घनिष्ट सबंध का बड़ा ही स्पष्ट और ठोस चित्र
आता है। तोलस्तोय ने इस जटिल तथा तीक्ष्ण वातावरण का भी चित्रण
किया है जिसने पार्टी के नेताओ से अमानुषीय शक्ति, दृढ़ता तथा साहस
की माँग की। विशेषतया लाल सेना के सगठन के सबध मे वोरोशिलोव
का रूप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है ।

ऐतिहासिक व्यक्तियों के चित्रण के साथ-साथ इसमे बोल्शेविक का
चित्र भी प्रस्तुत किया गया है जो अत्यन्त सयमित, विचारशील तथा
साहसी है और जो असाध्य प्रतीत होने वाले काम को भी पूरा करने की
शक्ति रखता है। इवानगरा का चित्र ऐसा ही है। उसके साथ कथा का

में हुआ है उनका सोवियत जनता में देशभक्ति का भाव भरने की दृष्टि से बड़ा महत्त्व है।

पीतर-युग की रूसी जनता के साहसपूर्ण कार्यों को सोवियत सैनिकों के सामने उदाहरण रूप प्रस्तुत कर उनमें युद्ध के भाव को और उद्दीप्त करने के लिए, युद्ध समाचार-पत्र 'लाल तारा' ने द्वितीय महायुद्ध के दिनों में, इस उपन्यास के अन्तिम अध्यायों के अंश छापे थे। इससे इस उपन्यास का महत्त्व स्वतः स्पष्ट है।

पीतर प्रथम समाजवादी यथार्थवाद की दृष्टि से सुदूर अतीत की कलात्मक व्याख्या का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है।

'इवान भयंकर के विषय में नाटक'

द्वितीय महायुद्ध के बीच तालस्तोय रूसी अतीत के एक और अत्यन्त दिलचस्प व्यक्ति 'इवान भयंकर' की ओर उन्मुख हुआ। दो आपस में संबद्ध नाटक इसी से संबधित हैं—'चीन और चीलिन' तथा 'कठिन वर्ष'।

सोवियत लेखकों की ऐतिहासिक कलात्मक कृतियों की मुख्य विशेषता यह है कि उनमें प्राय. रूसी इतिहास के उन मूल्यांकनों पर पुनर्विचार किया गया है जिसे कि प्राचीन इतिहास विज्ञान ने दिया था और उसे न स्वीकार कर अपनी दृष्टि से उनकी व्याख्या की गयी है और उन्हें नये रूप में प्रस्तुत किया गया है।

तोलस्तोय के नाटक, इवान को नये रूप में प्रस्तुत करते हैं जो कि परंपरा से बिलकुल भिन्न हैं। उसके ये नाटक सोवियत नाट्य साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियों में गिने जाते है।

'रोटी'

सुदूर अतीत के चित्रण के साथ-साथ उसने ऐसी कृतियाँ भी प्रस्तुत की हैं जो अतीत में बहुत दूर नहीं जाती हैं और जिन्हें 'समकालीन ऐतिहासिक उपन्यास' कहा जा सकता है—जो गृह युद्ध के वर्षों से संबंधित हैं। 'रोटी' तथा 'पीड़ा के बीच यात्रा' ऐसी ही कृतियाँ हैं। 'रोटी' में १९१८

मे सरीत्सिन (स्तालिन ग्राद) की साहसपूर्ण रक्षा की कथा कही गयी है।

तोलस्तोय ने लिखा कि उसकी इस कथा में "उसके बारे मे कहा गया है जो ससार मे सबसे मुख्य है—हमारी क्रान्ति के दर्शन के विषय मे, क्रान्ति के महान् व्यक्तियों के विषय मे, विजय दिलाने वाले युद्ध के संगठन के विषय में, अपनी क्रान्ति के आशावाद के विषय मे और इस विषय में कहा गया है कि युद्ध की आग के बीच किस प्रकार सोवियत व्यक्ति का चरित्र निर्मित हुआ।"

इस सबके चित्रण के लिए वह गृह युद्ध की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना सरीत्सिन (अब स्टालिनग्राद) नगर के लिए युद्ध की ओर उन्मुख हुआ। इस नगर की रक्षा का कार्यभार स्तालिन पर डाला गया और इस सबंध मे युद्ध का सचालन (१९१८ मे) स्वय स्तालिन ने किया। सरीत्सिन की सफल रक्षा ने विरोधियों की पराजय और गृहयुद्ध का अत निश्चित कर दिया।

'रोटी' का महत्त्व सबसे पहले इस बात मे है कि इसमे लेनिन तथा स्तालिन के कलात्मक रूपो के सर्जन की समस्या प्रस्तुत की गयी। इसमें लेखक को बडी सफलता भी मिली। उसने लेनिन तथा स्तालिन का बडा ही जोरदार चित्र प्रस्तुत किया और उनको दैनिक जीवन तथा क्रान्तिकारी कार्यकलाप के बीच दिखाया। पाठकों के सामने स्तालिन की सगठनकारी प्रतिभा, पैनी दृष्टि, दृढ़ता, साहस, क्रान्तिकारी जनता के साथ उसके घनिष्ट सबंध का बडा ही स्पष्ट और ठोस चित्र आता है। तोलस्तोय ने इस जटिल तथा तीक्ष्ण वातावरण का भी चित्रण किया है जिसने पार्टी के नेताओ से अमानुषीय शक्ति, दृढ़ता तथा साहस की माँग की। विशेषतया लाल सेना के सगठन के संबंध मे वोरोशिलोव का रूप अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

ऐतिहासिक व्यक्तियों के चित्रण के साथ-साथ इसमे बोल्शेविक का चित्र भी प्रस्तुत किया गया है जो अत्यन्त संयमित, विचारशील तथा साहसी है और जो असाध्य प्रतीत होने वाले काम को भी पूरा करने की शक्ति रखता है। इवानगरा का चित्र ऐसा ही है। उसके साथ कथा का

वस्तु-तत्व प्रत्यक्ष रूप से सबंधित है। यह क्रान्तिकारी सेना का साधारण व्यक्ति है। उसकी विजय इसलिए होती है कि उसकी सेना उसके सदृश लोगों से ही निर्मित है जो बड़े साहसी हैं। अग्रीपीना के रूप में लेखक ने नारी-स्वतन्त्रता को प्रदर्शित किया है जो कि क्रान्ति के बाद रूसी नारियों को सुलभ हो गयी। इसके साथ ही इस उपन्यास में क्रान्ति के शत्रुओं, षड्यन्त्रकारियों तथा देशद्रोहियों का भी चित्र प्रस्तुत किया गया है। निश्चित ऐतिहासिक घटना पर केन्द्रित होने के कारण तथा वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्तियों के चित्रण के कारण इसकी प्रबन्ध शैली भी बहुत प्रभावित हुई।

प्रबन्ध कल्पना की दृष्टि से इसे ऐतिहासिक क्रानिकल (वर्षानुगत घटना का क्रमिक वर्णन) कहा जा सकता है। इवानगारा तथा अग्रीपीना की कथा गौण है, प्रधान है सरीत्सिन की रक्षा। स्तालिन की विजय के तार के साथ उपन्यास समाप्त हो जाता है। इसलिए इसे किसी न किसी प्रकार के ऐतिहासिक उपन्यास की कोटि में रखा जायगा। ऐतिहासिक मसविदों तथा अन्य सबंधित सामग्री के अत्यधिक समावेश के कारण इसकी कथा बहुत गठी तथा सुगबद्ध नहीं है।

उपन्यास की भाषा में ऐतिहासिक सामग्री की जटिलता की झलक है। कहीं-कहीं पर ऐतिहासिक मसविदों, छपे हुए भाषणों तथा सरकारी कागजों के अंश पात्रों की बातचीत में उद्धृत कर दिये गये हैं। उपन्यास में कल्पना तथा इतिहास दोनों का मेल है।

पीड़ा के बीच यात्रा

तोल्स्तोय ने 'पीड़ा के बीच यात्रा' लिखने में बीस वर्ष लगाए। यह त्रयी है। इसका पहला भाग 'बहनें' १९२१ में लिखा गया, दूसरा भाग '१८', १९२६ में और तीसरा भाग 'धुंधला सवेरा' १९४१ में लिखा [illegible] ी का शीर्षक 'प्राचीन धार्मिक भाव' 'ईसा मसीह की माँ की शोध' यात्रा से लिया गया है। वस्तुतः इस त्रयी का विषय [illegible] बुद्धिजीवियों की, क्रान्ति के युग में जनता की ओर

क्रान्ति के पूर्व के रूसी जीवन की व्यापक पृष्ठभूमि में दो बहिनों-कात्या तथा दाश्या—और उनके नजदीक वाले लोगों का जीवन चित्रित किया गया है। इन बहिनों को प्रथम महायुद्ध, अक्तूबर क्रान्ति, देनीकिन से युद्ध आदि इन सबके बीच से गुजरना पड़ता है और इसके बाद ही वे अपने निकट वालों से मास्को में एक सभा में मिल पाती है। उपन्यास कात्या के प्रति कहे गये इन शब्दों के साथ समाप्त होता है "तुम समझती हो हमारे इस वेग या शक्ति का, बहाये गये खून का, सारी छिपी हुई और मौन पीड़ा का क्या मतलब है? हम संसार की भलाई के लिए पुनर्निर्माण करेंगे। इस सभामंडप के सब लोग इसके लिए अपना जीवन अर्पित करने को तय्यार है। यह कल्पना नहीं है, यह लोग तुम्हें घाव के निशान तथा गोली के नीले निशान दिखा देंगे और यह अपने देश मे, यह रूस है।"

'त्रयी' गृह युद्ध की महत्वपूर्ण घटनाओं को लेकर जनता द्वारा रास्ते की खोज गलतियाँ तथा गल्तियों पर उसकी विजय तथा उसके स्वदेश सेवा के अथक परिश्रम और प्रयत्न को पूर्णतया तथा व्यापकता के साथ प्रदर्शित करती है।

यह 'त्रयी' सोवियत साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियों में मानी जाती है। १९४३ मे इस कृति पर अलेक्सेइ तोलस्तोय को स्तालिन पुरस्कार प्राप्त हुआ। तोलस्तोय ने यह रुपया वापस करते हुए स्तालिन से यह प्रार्थना की कि इस रकम से लाल सेना के लिए टैंक बनवा दिया जाय।

द्वितीय महायुद्ध के वर्षों में तोलस्तोय का कार्यकलाप

द्वितीय महायुद्ध के दिनों मे अलेक्सेइ तोलस्तोय देशभक्त, प्रचारक-लेखक के रूप में हमारे सामने आता है और फ़ासिस्टों के विरुद्ध मातृभूमि की रक्षा करने वालों के लिए देशवासियों का आह्वान करता है। 'मातृ-भूमि' में उसके देशभक्ति से पूर्ण प्रचारात्मक लेख संगृहीत हैं। यह संग्रह कलात्मक, प्रचारात्मक लेखन का सुंदर उदाहरण है। युद्ध के दिनों मे उसने बड़ी शक्ति तथा त्वरा से काम किया। प्रचार लेख लिखने के साथ-साथ उसने द्वितीय महायुद्ध से संबंधित कहानियाँ 'इवान सुदरयोव की कहा-नियाँ' भी लिखीं।

८. युद्ध से पूर्व के वर्षों का साहित्य

[१९३७–१९४१]

१९३६ मे सोवियत द्वारा सोवियत संघ का संविधान स्वीकृत हुआ जो कि इस देश के जीवन के लिए बड़ी महत्त्वपूर्ण घटना थी। औद्योगिक तथा कृषि व्यवस्था की अत्यधिक उन्नति ने देश के विकास की नयी परिस्थितियों को प्रस्तुत किया। समाजवादी परिश्रम का नया रूप परिश्रमशील तथा प्रगतिशील श्रमिक या 'स्तकानोगेव' आन्दोलन सारे देश मे फैल गया। सोवियत संघ की सभी जातियों के बीच मित्रता और भी दृढ़ हुई। प्रत्येक जाति के सांस्कृतिक जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को तथा उसके महान पुरुषों की जयन्तियों को उत्सव के रूप मे सारे संघ मे मनाया जाने लगा। देश समाजवादी समाज के निर्माण और साम्यवाद की ओर क्रमिक सचरण मे प्रवृत्त हुआ। समाजवादी व्यवस्था राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों मे प्रतिष्ठित हो गयी।

अब ऐसी पीढ़ी सामने आई जो कि सोवियत शासन के बीच ही जन्मी तथा बड़ी हुई थी, जिसका क्रान्ति के पूर्व की यथार्थता से कोई भी साक्षात् परिचय न था। क्रान्ति के पूर्व की घटनाओं को उसने केवल पुस्तकों से ही जाना था। ऐसी पीढ़ी की जीवन-भावना, लोक दृष्टि तथा आदर्श सर्वथा नये थे। इस नयी पीढ़ी के साथ ही नये साहित्यिक नाम भी आए जिनकी सर्जना सोवियत युग के नवयुवक तथा नवयुवकों के यथार्थ किन्तु महत्त्वपूर्ण चित्र प्रस्तुत कर रही थी।

इन लेखकों की सर्जना ने समाजवादी दुनियाँ का बड़ा आकर्षक और आशापूर्ण चित्र प्रस्तुत किया और साथ ही उत्साहपूर्ण परिश्रम और संघर्ष से ओतप्रोत सोवियत समाज के जीवन का उद्घाटन किया। फलतः निर्माणकारी सर्जनात्मक परिश्रम, इस समय के साहित्य का मुख्य वस्तु-

विषय बन गया। क्रोमोव स्लदकोव, मलीश्किन लिओनोव आदि की कृतियों में उत्पादन के क्षेत्र में नवीनता का सचार करने वालो का तथा देशनिर्माण और देश की प्रगति की ओर प्रयत्नों का जो चित्रण हुआ है उसमे परिश्रम की भावना का सर्जना के प्रेरक रूप मे, जीवनके शृगार रूप मे और व्यक्ति को मानसिक विकास देने वाले के रूप मे हुई है। इसके साथ ही इन लेखकों की कृतियों में यह दिखाया गया है कि सोवियत् व्यक्ति न केवल वर्तमान का वरन् भविष्य का भी निर्माता है और अब उसके सामने विकास की असीम संभावनाएँ हैं। इस युग की श्रेष्ठ कृतियों में व्यक्तित्व का उद्घाटन व्यक्ति के आन्तरिक ससार की संपूर्ण समृद्धि के बीच हुआ है। व्यक्ति की शक्ति, समृद्धि और आनन्द का स्रोत,'कलेक्टिव' या समूह के साथ रहने में और जनता के साथ उसके अविच्छिन्न सबध मे है।

मलीश्किन के (अपूर्ण) उपन्यास 'दूर पिछली जगह के लोग' में यह दिखाया गया है कि गांव और सुदूर के पिछड़े शहरों के लोग बड़े-बड़े निर्माण कार्यों पर किस प्रकार काम करते हैं और इस काम के बीच इनके व्यक्तित्व का किस प्रकार विकास हो रहा है। धीरे-धीरे इन लोगों की भावना बदलती है और वे सार्वजनिक काम को अपना निजी काम समझ कर उसे उत्साह से करते हैं। मलीश्किन ने इस प्रकार व्यक्तित्व-निर्माण पर उद्देश्य की एकता के सूत्र में गूंथने वाली समाजवादी शिक्षा का व्यापक प्रभाव प्रदर्शित किया है।

अपनी कहानी 'टैंकर' तथा 'देरबेंत' मे क्रोमोव ने नवयुवक स्तवरोपोलियों के चित्र अंकित किए हैं। इन कहानियों में यह दिखाया गया है कि मैकेनिक वासोव के प्रभाव से 'टैंकर' देरबेंत का आधिपत्य या अधिनयन किस प्रकार विकसित होता है। क्रोमोव के नायक अन्य सोवियत लेखकों के नायकों के समान चरित्र की वह विशेषताएँ प्रदर्शित करते हैं जिनमें जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण लक्षित होता है तथा जिनमे सोवियत युग मे परिपुष्ट नये साहित्यिक तथा कलात्मक आदर्श प्रतिबिम्बित होते हैं। क्रोमोव की सर्जना की जो नवीनता है, वह उसके जीवन के साथ घनिष्ठ संबंध तथा समाजवादी निर्माण मे उनके योगदान का परिणाम है।

स कृति में नये लोगों, समाजवादी परिश्रम के नये तरीक़ों तथा नयी भावनाओं का उद्घाटन हुआ है ।

साम्यवाद के युग में सोवियत समाज का जीवन तथा साम्यवाद की ओर उसका सचारण लिओनोव के उपन्यास 'समुद्र पर रास्ता' में प्रतिबिम्बित हुआ है। इस उपन्यास में नये व्यक्ति के जीवन की ओर मानवता संचरण मानों खुले समुद्र पर विस्तृत समुद्री रास्ते पर उसका संचरण है। मानवता का अग्रभाग इसी समुद्री रास्ते पर आगे बढ़ रहा है और यह अग्रभाग रूसी जनता है। यही उपन्यास का मुख्य भाव है। नये जीवन, नये व्यक्ति और नयी नैतिकता का प्रदर्शन और समर्थन करने के साथ-साथ लिओनोव बुर्जुआ और प्राचीन व्यवस्था की आलोचना भी करता है और यह दिखाता है कि अब इस व्यवस्था का कोई भविष्य नहीं है और व्यापक समुद्री रास्ता उसकी पहुँच के बाहर है।

गाँवों में नये जीवन की स्थापना का विषय-वस्तु स्मिर्नोव के उपन्यास 'लड़के' में तरासोव की कहानियों तथा कथाओं में, अवेचकिन की कहानियों में और कोलमोव तथा पानोव की कृतियों में पल्लवित हुआ है। द्वितीय महायुद्ध के पूर्व के कलखोजी जीवन का बड़ा यथार्थ चित्रण अवेचकिन की कहानियों में मिलता है।

गाँव कलखोजी नये कारखाने, नवनिर्माण आदि से सबंधित इन कृतियों में समाजवादी व्यवस्था और परिस्थिति के बीच नायकों के क्रमिक विकास और उनके व्यक्तित्व की क्रमिक प्रौढ़ता का आकर्षक चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस युग की सामान्य साहित्यिक प्रगति के बीच इन कृतियों का महत्त्व इस बात में है कि इनके द्वारा गाँव कलखोजी जीवन आदि के चित्रण का नया बीजवपन हुआ जो कि आगे चलकर युद्धोत्तर काल में पुष्पित तथा पुष्पित, पल्लवित, और विकसित हुआ।

इस युग में भी अक्तूबर क्रान्ति और गृहयुद्ध से संबंधित कई कृतियाँ प्रस्तुत की गयी। फदेयेव के उपन्यास 'उदेगे से आखिरी' की चर्चा की जा चुकी है। अस्त्रोवस्की का (अपूर्ण) उपन्यास 'तूफानों से जन्मे' भी गृह- की घटनाओं से संबंधित है। कतायेव की कथा 'अकेले नाव चला रहा

ओदेसा के १९०५ की क्रान्ति के युद्धों का वर्णन, यद्यपि यह बच्चों के लिए लिखी गई थी फिर भी यह बच्चों और सभी के बीच बड़ी लोकप्रिय है। ग्रोसमान की कृति 'स्तेपान कलचूगिन' में क्रान्ति के पूर्व के श्रमिक वर्ग का चित्रण किया गया है। इसी प्रकार इस युग मे लिखित क्रान्ति तथा गृहयुद्ध से संबंधित और भी कई कृतियाँ हैं। फिर भी कुछ आलोचकों का यह मत है कि इनमें रूसी श्रमिक वर्ग के आन्दोलन का इतिहास और बोल्शेविक पार्टी के संघर्ष और युद्ध का इतिहास व्यापक कलात्मक रूप न प्राप्त कर सका।

नाटक

इस युग में नाटकों का भी महत्त्वपूर्ण विकास हुआ, नाटकों की विषय-वस्तुओं मे व्यापकता आई, जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण हुआ और सोवियत व्यक्ति का यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत किया गया। महत्त्वपूर्ण समकालीन समस्याओं का अंकन, देश मे समाजवाद का निर्माण तथा नये व्यक्ति का विकास इन नाटकों में विशेष रूप से प्रदर्शित किया गया है। इसके साथ ही नाटकों के क्षेत्र मे जो बुर्जुआ प्रभाव पड़ रहा था, संघर्ष-हीनता का जो सिद्धान्त प्रवेश कर रहा था और 'फार्मलिज्म' और सौन्दर्यवादिता को जो व्यापकता प्राप्त हो रही थी उनको और उनका अंकन करनेवाले नाटकों की सोवियत प्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी ने कड़ी निन्दा की।

विक्टर गूसेव का नाटक 'कीर्ति' इस युग की विशिष्ट कृति है। यह पद्यात्मक नाटक है। इसमें प्रधान पात्र है, मर्तीन्कोव और मायक। मर्तीन्कोव साहसपूर्ण कार्यों की ओर देशभक्ति और बलिदान की भावना से प्रवृत्त होता है और इन्हीं कार्यों की ओर मायक व्यक्तिगत सम्मान तथा कीर्ति की लालसा से। नाटककार मायक की व्यक्तिवादिता की आलोचना करता है और जनता द्वारा सौंपे गये प्रत्येक कार्य करनेवाले मर्तीन्कोव का समर्थन करता है।

अफीनोगेनेव का नाटक 'माशेंका' उठती हुई युवक पीढ़ी से संबंधित है और समाजवादी जीवन की भावना से परिपूर्ण है।

लिओनोव का नाटक 'प्लोव्चांस्की के बगीचे' बहुत कुछ प्रतीकात्मक है। इसमें फला-फूला हुआ बगीचा न केवल बूढ़े मकायेव के जीवन का ही प्रतीक है वरन् यह अपने देश में समाजवाद के निर्माण में रत सोवियत जनता के सुख और प्रकाशपूर्ण जीवन का चित्र भी है। पूरा परिवार इस उद्यान की रक्षा को अपना कर्तव्य मानता है; मानो सारी जनता देश की रक्षा में रत है।

लिओनोव के दूसरे नाटक 'सामान्य व्यक्ति' में नये जीवन की भावना और पुराने की तीव्र आलोचना है। इसमें सामान्य सोवियत व्यक्ति का काव्यपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया गया है और यह बताया गया है कि जनता से अलग होने और असामान्य बनने की भावना यह संकीर्ण बुर्जुआई भावना है और यह सौन्दर्य नहीं वरन् कुरूपता है। जो सामान्य है वही सनातन है। यही भावना इस नाटक के मूल में है।

कोन के नाटक 'गहरी खोज' की विषय-वस्तु देशभक्ति की भावना से परिपूर्ण परिश्रम है। इसी भावना से इस नाटक का कथानक, संघर्ष, पात्रों का चित्रण अनुप्राणित है। रूसी और अजरबाइजानी तेल के खोजियों का एक छोटा सा समुदाय जलते हुए रेगिस्तान में तेल की खोज में लगा है। अनेक विरोधों के बीच कठोर परिश्रम के द्वारा इनको अपने कार्य में विजय मिलती है। तेल की कठिन खोज को देश-भक्तिपूर्ण कार्य के रूप में चित्रित किया गया है। परिश्रम की समस्या के माध्यम से सोवियत व्यक्ति के आन्तरिक विकास की समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है और सुलझाया गया है।

इस नाटक में मीमरोव, में तेगेदलुकोनिन के रूप में सामान्य सोवियत व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत किया है। लुकोनिन के सामान्य किन्तु साहसी चित्र में पाठकों को वही सद्गुण देखने को मिलते हैं जो कि उनमें हैं।

तिन्दोव के नाटक 'अन्ना लुबीनिना' में उन नये मानवीय सबधों की गहराई में पैठने की कोशिश की गयी है जो कि इस देश में समाजवाद की प्रतिष्ठा के बाद यहाँ के समाज में व्याप्त हो गये हैं। इसमें नैतिक मनो-

वैज्ञानिक समस्याओं पर और विशेष रूप से परिवार तथा प्रेम की समस्या पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

अरबूज़ोव के नाटक 'तान्या' में तान्यारिबीनिना के अन्तर्परिवर्तन तथा समाजवादी व्यक्ति की प्रतिष्ठा और विकास को चित्रित किया गया है। इस नाटक में सोवियत व्यक्ति के जीवन, रहन-सहन तथा विचार में समाजवादिता का समर्थन किया गया है। आरम्भ में तान्या अपने निजी सुख में सीमित और लोगों से अलग थी। बाद में आमूल अन्त-परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी समझ में आता है कि असली सुख निजी को सामाजिक में मिला देने में है और जनता के लिए उपयोगी तथा उनके प्रेम और आदर का पात्र बनने में है।

१९३७ में कई महत्वपूर्ण नाटक पगोदिन का 'बंदूक से सुसज्जित व्यक्ति', 'कर्निचूक का 'सत्य', त्रिग्योव का 'नेवा के तट पर' प्रस्तुत किये गए जिनमें अक्तूबर की समाजवादी क्रान्ति की घटनाओं के आधार पर कम्यूनिस्ट पार्टी और सोवियत शासन के संस्थापक लेनिन का चित्र प्रस्तुत किया गया था।

पगोदिन के नाटक 'बंदूक से सुसज्जित व्यक्ति' में लेनिन को सामाजिक पृष्ठभूमि और क्रान्ति की घटनाओं के बीच जनता के साथ अभिन्न रूप में प्रदर्शित किया गया है। नाटक का मुख्य भाव श्रमिक और कृषक वर्ग के साथ अभिन्नता और पार्टी तथा श्रमिक वर्ग की एकता, लेनिन और स्तालिन के पारस्परिक संबंधों के द्वारा प्रस्तुत और स्पष्ट किया गया है।

इस युग के अन्त में आने वाले द्वितीय युद्ध की भावना का आभास मिलने लगा था। द्वितीय युद्ध के आरम्भ के कुछ ही पहले सीमनोव द्वारा लिखित नाटक 'हमारे शहर का आदमी' में इसकी अभिव्यक्ति हुई है। इस नाटक का उद्देश्य युवक वर्ग में देशरक्षा तथा कमसोमोल की साहसपूर्ण परंपरा का भाव भरना है और आनेवाली परीक्षा के लिए उनको तैयार करना है। सिर्गेइ लुकोनिन के रूप में सोवियत युवक वर्ग की नयी पीढ़ी का चित्र प्रस्तुत किया गया है जो कि देश के लिए उसी प्रकार तय्यार है जिस प्रकार कि उसके लिए पिता और बड़े भाई अपने समय में तत्पर थे।

सीमनोव ने यह प्रदर्शित किया है कि कठोर परिश्रम और संघर्ष के बीच नायक का चरित्र किस प्रकार बनता है और दृढ़ होता है।

द्वितीय युद्ध के आरम्भ के कुछ समय पहले कतिपय सैनिक—ऐतिहासिक नाटक सल्व्यैव का 'फील्ड मार्शल कुतुजोव वाख्तेरोव' और रजूमोवस्की का 'जेनेरल सुवोरोव' आदि प्रस्तुत किए गये।

इस युग का नाट्य साहित्य बड़ा सपन्न है। फिर भी इस समय रूसी नाट्य साहित्य को ऐसी सफलताएँ न मिलीं जैसी कि उक्राइनीय या बेलोरूसी नाट्य साहित्य को।

प्रगीत काव्य

साहित्य के अन्य क्षेत्रों के समान इस युग के काव्यक्षेत्र में भी समाजवादी समाज पर आधारित सोवियत जनता की सैनिक सर्जनात्मक एकता का भाव मुखरित हो रहा है। प्रगीतात्मक रचनाओं मे समाजवादी निर्माण की प्रेरणाएँ और भी शक्ति के साथ अभिव्यजित हो रही हैं।

प्रगीतात्मक रचनाओं के विकास के साथ गीतात्मक सर्जना का विकास भी संबद्ध है। इस युग मे सोवियत गीतों का अच्छा विकास हुआ और कई कवि ईसाकोव्स्की, सुरकोव, लेबेदेव, कुमाच, प्रकोफियेव, गूसेव, सेल्विस्की आदि इस क्षेत्र में बड़े प्रसिद्ध हुए।

स्वत: जीवन के बीच परिपुष्ट सोवियत व्यक्ति के स्वभाव का वैशिष्ट्य 'ताइगा' (साइबीरिया के घने जगल) में निर्माण, 'मेत्रो' (भूगर्भ रेलवे स्टेशन) निर्माण का कार्य, सुदूर पूर्व में 'कलखोज' आदि जीवन द्वारा साहित्य में प्रस्तुत नयी-नयी विषय-वस्तु समाविष्ट हो रही है।

प्रगीतों के साथ-साथ प्रबन्धात्मक काव्य का भी विकास हुआ। इस काव्यरूप की ओर ईसाकोव्स्की, वेरा इनबर, असेयेव, सीमनोव आदि ने ध्यान दिया। इस क्षेत्र में त्वरदोव्स्की का काव्य 'मुराविया देश' बड़ा प्रसिद्ध हुआ।

इस युग के अन्त मे जब कि क्षितिज पर युद्ध के बादल इकट्ठे होने लगे, देश रक्षा के प्रति सन्नद्धता तथा तत्परता और शत्रु के प्रति घृणा का

भाव काव्य क्षेत्र में व्यापकता के साथ मुखरित हुआ। तीखनोव, बेजिमेंस्की, सुरकोव, त्वरदोव्स्की तथा अन्य कवियों की रचनाओं ने सोवियत जनता में साम्राज्यवादियों की ओर से छोड़े जाने वाले युद्ध की संभावनाओं को सदा ध्यान में रखने को कहा और नवयुवकों में देश-रक्षा के लिए सब-कुछ न्योछावर करने की तत्परता भरी।

ईसाकोव्स्की की प्रगीतात्मक रचनाएँ देशभक्ति का सर्वोत्तम उदाहरण हैं। मुख्यरूप से सोवियत गाँवों का चित्रण करते हुए ईसाकोव्स्की ने अपने गीतों और कविताओं में सामान्य सोवियत जनता के भावों और विचारों का बड़ा आकर्षक चित्र प्रस्तुत किया—'चार इच्छाएँ', 'पृथ्वी', 'शत्रु', 'पतझड़' आदि। इस समय उसने लोकगीतों और उनकी कला का गहरा अध्ययन किया और गीतों की रचना में प्रवृत्त हुआ। गीतों के क्षेत्र में वह अप्रतिम है और उनके गीतों की लोकप्रियता बड़ी व्यापक है। लोकगीतों के परंपरा-प्राप्त वस्तु-तत्व (विदा, विरह, प्रतीक्षा, मिलन आदि) को अपनाकर उसने उसमें नवीन उद्‌भावना की और उनको नवीन रूप में प्रस्तुत किया।

ईसाकोव्स्की के प्रगीतों के निकट ही त्वरदोव्स्की की कविताएँ 'मार्ग पहाड़ के पीछे' हैं। इनमें सामान्य सोवियत श्रमिक के प्रति गंभीर प्रेम, रूसी प्रकृति तथा किसानों के परिश्रम का बड़ा काव्यात्मक वर्णन हुआ है। इसकी रचना में सामान्य श्रमिक और उसके जीवन का व्यापक काव्यात्मक चित्र, प्रस्तुत किया गया है। कलखोज़ी जीवन का गहराई के साथ वर्णन करते हुए कवि ने यह प्रदर्शित किया है कि देश का समाजवादी विकास सोवियत व्यक्ति के जीवन को कैसा समृद्ध बना रहा है (कृषि फार्म, नई झील, उड़ान, भेंट, बस्ती)।

त्वरदोव्स्की की कविता 'लोहार का परिवार' में उस व्यक्ति की भावनाओं का बड़ा सुन्दर अभिव्यंजन हुआ है, जिसके लिए इस देश के सभी रास्ते उन्मुक्त हैं। अपना घर छोड़ता हुआ वह अपने पूर्वजों के स्थान की एक मुट्ठी मिट्टी साथ नहीं ले जाता क्योंकि सारा देश उसका अपना है, सारी भूमि उसकी मातृभूमि है।

यह भावना कि सारी भूमि अब समस्त जनता की है और उसके स्वतन्त्र तथा आनन्दपूर्ण जीवन के लिए उन्मुक्त है, सन् तीस के अन्त तथा सन् चालीस के वर्षों के आरम्भ के साहित्य में पूरी तरह व्याप्त है। फिर भी यह भावना विशेष रूप से गीतों में अभिव्यक्त हुई है। ये गीत बड़े व्यापक हैं और साहस, जीवन के आनन्द, आशावादिता तथा देशभक्ति से परिपूर्ण हैं।

सुरकोव की काव्य-रचना का मुख्य भाव है समाजवादी क्रान्ति और समाजवादी देश की रक्षा। उसके काव्य का प्रगीतात्मक नायक वह सैनिक है जो क्रान्ति की विजय के लिए लड़ा है और जो अब देश में नये जीवन की प्रतिष्ठा कर रहा है। वह उसकी रक्षा के लिए हर समय तैयार है। सुरकोव के काव्य में योद्धा, देशभक्त का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

गीतकार के रूप में वसीली लेबेदेव कुमाच भी बहुत प्रसिद्ध है। उसके गीतों में देशभक्ति, उत्साह, आनन्द और जीवन की पूर्णता तथा अनेक रूपात्मकता छलकती है (देश का गीत, गीतों की पुस्तक)। इस युग में अन्य कवियों के भी कतिपय गीत बड़े प्रसिद्ध हुए। सीमनोव के गीतों में उन लोगों के साहसपूर्ण कार्यों का निर्माता, उड़ाकू मैकेनिक आदि का वर्णन हुआ है जो धैर्य और साहस के साथ चुपचाप अपना काम करते रहते हैं। दल-मातोवस्की के काव्य का मुख्य विषय है जवान 'कमसोमोल' का कठिन उत्साहपूर्ण परिश्रम। उसके काव्य के नायक पंचवर्षीय योजनाओं को कार्यान्वित करने वाले कमसोमोल के जवान सदस्य हैं।

आते हुए युद्ध की आशंका और चिंता का भाव इस युग के अन्त के काव्य में मुखरित होने लगा था। इससे देशरक्षा की विषय-वस्तु कई कवियों के काव्य में विशेषतया तीखनोव के काव्य में बड़े शक्तिशाली रूप में अभिव्यंजित हुई। तीखनोव के काव्य-संग्रह 'दूसरी छाया' में कवि की पश्चिम के पूँजीवादी देशों की अपनी यात्रा की अनुभूतियाँ और विचार प्रकट हुए। साथ ही इसमें आनेवाले युद्ध की आशंका और अपनी जनता की विजय का दृढ़ विश्वास भी प्रकट हुआ। पूरे काव्य में मजदूर वर्ग की अन्तर्राष्ट्रीय एकता और दृढ़ता का भाव सूत्र भी व्याप्त है।

इस युग का प्रगीतात्मक काव्य बड़ा समृद्ध है। इसमे समाजवादी युग के व्यक्ति के मानस का बड़ा गम्भीर उद्घाटन हुआ और इसने इस व्यक्ति को अपने समाजवादी देश की रक्षा के लिए सदा तत्पर रहने की शिक्षा दी।

प्रबन्ध काव्य

प्रगीतात्मक काव्य के साथ-साथ इस युग मे प्रबन्ध काव्य का भी विकास हुआ। इस क्षेत्र की इन वर्षों की सबसे महत्वपूर्ण रचना त्वरदोव्स्की का प्रबन्ध काव्य 'देश मुरावियां' है। 'देश मुरावियां' (अच्छी धरतीवाला देश) किसानों मे नयी समाजवादी चेतना की प्रतिष्ठा और उनके अन्दर से निजी मिल्कियत या अधिकार-भावना को निकाल फेंकने की कथा है। काव्य के न्द्र मे सामान्य किसान निकीता मरगुनोक है जो सोवियत शासन मे गरीबी से मुक्त हुआ है और जो अब परिश्रम द्वारा अपने को ऊपर उठाना चाहता है। वह अपनी छोटी सी टुकड़ी का स्वतन्त्र मालिक बनकर रहना चाहता है और सम्मिलित कलखोजी जीवन मे डरता है क्योंकि उसे यह भय है कि जो कुछ उसके पास है वह भी खो जायगा।

यह काव्य मरगुनोक के आन्तरिक विकास को कथा है और यह विकास मरगुनोक द्वारा परीदेश मुरावियां की खोज की यात्रा के रूप में दिखाया गया है। धीरे-धीरे वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि केवल निजी सुख, व्यक्तिगत सुख के आधार पर अब आगे जीना असभव है। उसे अब व्यापक सम्मिलित सामाजिक सामूहिक जीवन चाहिए। इस प्रकार 'देश-मुरावियां (अच्छा धरतीवाला काल्पनिक देश) केवल किसानों का पूर्ण परिवर्तन ही नही प्रदर्शित करता वरन् देशव्यापी समाजवादी शिक्षा का रूप भी प्रस्तुत करता है। यह काव्य जनता के विकास की एक महत्वपूर्ण मंज़िल का जीवन प्रदर्शित करता है।

सीमनोव का काव्य विजयी के जीवन से सबंधित है। इसमें कम्यूनिस्ट लेखक का चित्र प्रस्तुत किया गया है जिसका जीवन जनता और पार्टी को समर्पित था और जिसमें अपार साहस और मानवीयता थी। इस काव्य के अन्त मे छिड़ने वाले युद्ध के खतरे की सूचना है जिसके लिए सोवियत

जनता को तैयार रहना परमावश्यक है। ऐतिहासिक विषय-वस्तु को लेकर सीमनोव ने 'वर्फीली हत्या' और 'सुवोरोव' में इस के संमानित सेनापति का चित्र प्रस्तुत किया है जिसका रूसी जनता की शक्ति और विजय मे अडिग विश्वास था।

वेरा इन्बर की 'सफरी डायरी' में जार्जिया की संस्कृति का चित्र प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही इसमें सोवियत व्यक्ति का भी चित्र है जो अपने समाजवादी देश के प्रति वफादार है और दूसरी जातियों की सस्कृति का भी आदर करता है। असेयेव का 'व्लोदीमिर मायाकोव्स्की' मायाकोव्स्की के जीवन से सबधित काव्य है। इसमें मायाकोव्स्की के बहुमुखी जीवन का अत्यन्त सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है।

इस युग के काव्य मे व्यंग्य-काव्य का अच्छा विकास न हो सका। साहित्य के कतिपय अन्य अगों के समान काव्यक्षेत्र मे भी 'फार्मलिज़्म' तथा अन्य बुर्जुआ सिद्धान्तों का विरोध हुआ। 'प्राव्दा' के विचारों तथा गोर्की के लेखो ने एक ओर इनका विरोध किया और दूसरी ओर, क्लासिकल साहित्य की समृद्ध विरासत को अपनाने की सलाह दी। सोवियत काव्य के विचारात्मक, कलात्मक स्तर को ऊँचा उठाने मे इनका बड़ा महत्त्व है।

इस युग मे इन नवयुवक लेखको के साथ-साथ साहित्यकारों की पुरानी पीढ़ी भी साहित्य सर्जन मे लगी हुई है। इन्हीं वर्षों में अलेक्सी तोलस्तोय की 'पीड़ा के बीच यात्रा' तथा शोलोखोव की 'शांत डान' जैसी सोवियत साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ पूरी हुईं।

ऐतिहासिक उपन्यास का विकास

सोवियत साहित्य जिस प्रकार वर्तमान के अंकन में लीन है उसी प्रकार वह अतीत के महत्त्व को भी समझता है। इसी से सोवियत लेखक देश के अतीत जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षणों तथा व्यक्तियों का बराबर अंकन करते रहते हैं और उनका अपनी दृष्टि से मूल्यांकन करते हैं। साथ ही वे

यह भी प्रदर्शित करते हैं कि रूसी व्यक्ति का जातीय चरित्र ऐतिहासिक विकास के बीच किस प्रकार गठित हुआ।

सोवियत साहित्य मे ऐतिहासिक उपन्यासो का विशिष्ट स्थान है। यथार्थवादी लेखक की तुलना मे ऐतिहासिक उपन्यासकार के सामने दूसरी समस्याएं होती हैं। उसका उस अतीत युग से काम रहता है जो समय तथा उसके आदर्श दोनों की दृष्टि से उससे दूर रहता है। एक ओर तो उसे उस युग की विशिष्टताओं का सच्चा-सच्चा अकन करना रहता है और दूसरी ओर उसे उस युग की ऐसी विशिष्टताओं को ग्रहण करना होता है जो आज के पाठक की भावनाओ को विकसित करने मे उसकी सहायता कर सकें। उसे अतीत को समकालीनता के आदर्शो से सबधित करना होता है। सोवियत ऐतिहासिक उपन्यासकार ऐसा ही कर रहे हैं। वे देश के जीवन के उन क्षणों का चित्रण करते है जिनका आज के युग के आदर्श के लिए तथा समकालीन पाठक की देशभक्ति की भावना के विकास के लिए भी महत्व है।

ये ऐतिहासिक कृतियाँ देश के उन महान् व्यक्तियों से संबधित हैं जो कि स्वतन्त्रता के सेनानी रहे हैं। स्तालिन ने अपनी बातचीत के सिलसिले मे कहा था कि "हम बोल्शेविकों को यलोत्निकोव राज़िन, पुगाचोव जैसे ऐतिहासिक व्यक्तियो मे बडी दिलचस्पी रही है। इन लोगो के कार्यकलाप मे हमे पीडित वर्ग के आरम्भिक उद्वेग्न की झलक मिलती है। किसान विद्रोहों के आरम्भिक प्रयत्नों के इतिहास का अध्ययन हम लोगो के लिए बडा रुचिकर रहा है।" सोवियत साहित्य की कई कृतियाँ बलोत्निकोव, पुगाचोव (युद्ध के बीच शिशकोव का उपन्यास एमेलियान पुगाचोव) तथा राज़िन (चपीगिन का 'स्तेपान राज़िन') से संबधित है। रूसी संस्कृति का महान् प्रतिनिधि लोमेनोसोव बहुत से लेखकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता है।

गृह-युद्ध की विषय-वस्तु ने बहुत से लेखको को आकृष्ट किया। गृह-युद्ध के बाद देश की जो उन्नति हुई उसमे स्वतन्त्रता के इस युद्ध तथा इसमें भाग लेने वालों की देशभक्ति तथा बलिदान का महत्व स्पष्ट है।

९. युद्धकालीन साहित्य

[१९४१-४५]

द्वितीय महायुद्ध सोवियत देश के जीवन मे महत्त्वपूर्ण मोड साबित हुआ। शांति का युग समाप्त हो गया और जर्मन फासिस्ट आक्रमणकारियों से देश को मुक्त करने का युग शुरू हुआ। सारी सोवियत जनता देश की रक्षा के लिए तैयार हुई।

स्तालिन ने सन् ४६ मे कहा कि "युद्ध केवल अभिशाप ही न था। वह इसके साथ शिक्षा का बहुत बडा स्कूल तथा जनता की सारी शक्तियो की कसौटी था।" युद्ध सचमुच मे सोवियत शासन तथा संस्कृति मे पली हुई जनता की परीक्षा थी और जनता उस परीक्षा मे सफल हुई।

फासिस्टो के ऊपर सोवियत विजय ने यह प्रमाणित कर दिया कि समाजवादी संस्कृति के बीच विकसित सोवियत जनता की परिश्रम तथा संगठन की शक्ति कितनी विकसित और बढ़ी-चढ़ी थी और उसका देश-प्रेम कितना ऊँचा था जिसने सारी जनता को एक सूत्र में बांधकर उसे देश के स्वातन्त्र्य के लिए सब कुछ न्योछावर करने की शक्ति दी। युद्ध रूसियों की नैतिक शक्ति की कसौटी बन गया जिसमे वे खरे उतरे।

साहित्य ने रूसी जनता की उन्ही विशिष्टताओं का चित्रण किया जिन्होंने उसे इस महायुद्ध में विजयी बनाया। सोवियत लेखकों ने युद्ध के नायकों के चित्रों मे रूसी जनता की इन्ही विशिष्टताओं—तीक्ष्ण बुद्धि, चरित्र की दृढ़ता, अपूर्व सहनशीलता आदि का अंकन किया। युद्ध उन सर्जनात्मक साहित्यिक सिद्धान्तों की भी परीक्षा थी जिनकी अभिव्यक्ति अभी तक सोवियत लेखकों की श्रेष्ठ कृतियों मे हुई थी। युद्ध-क्षेत्र मे वे ही विशिष्टताएं सामने आईं जिनका अंकन सोवियत लेखक अपने नायकों के चित्रों मे कर रहे थे तथा जिनकी प्रेरणा और शिक्षा वे अपने पाठकों में भर रहे थे। सोवियत सैनिकों के साहसपूर्ण कार्यों मे लोगों को उनके

लोकप्रिय नायको चपाएव, कर्चागन तथा अन्य की ही झलक मिली क्योंकि वे (नायक) स्वयं सोवियत लेखकों की कोरी कल्पना न थे, वरन् स्वतः जीवन से चुने गये थे। इस प्रकार चूँकि सोवियत साहित्य जीवन से अविच्छिन्न रूप से सबधित था, इसी से वह उन प्रश्नों का बड़ी व्यापकता तथा विस्तार के साथ उत्तर दे सका जिनको कि जीवन ने युद्ध के वर्षों में प्रस्तुत किया।

युद्ध ने लेखकों के सामने कई सर्जनात्मक समस्याएँ प्रस्तुत कीं। लेखकों के लिए यह आवश्यक था कि वह काव्यात्मक ढग से सोवियत जनता की भावनाओं को उभार सकें और उसमें देशप्रेम के उत्कर्ष को, विजय के लिए हर प्रकार की तत्परता और सन्नद्धता को तथा अपनी विजय में उसके अडिग विश्वास को अभिव्यंजित कर सकें। उनके लिए यह भी आवश्यक था कि वे अपनी कृतियों मे उन सभी घटनाओं का चयन कर सकें जो कि युद्ध क्षेत्र मे हो रही थीं और वे सोवियत जनता के साहसपूर्ण कार्यों की कथा कह सकें। अन्त में उनके लिए यह भी अत्यावश्यक था कि वे सारे ससार के सामने फ़ासिज्म की वर्बरता का पूरा-पूरा चित्र प्रस्तुत कर सकें और 'घृणा का विज्ञान' रच सकें जिससे सोवियत जनता तथा संसार जान जाय कि फासिज्म का असली रूप कितना नृशंस तथा 'बर्बरता से पूर्ण है। स्वतः हजार से अधिक लेखक (सोवियत लेखक संघ के एक तिहाई से अधिक) सेना मे भर्ती हुए और बहुत से (हैदर क्रीमोव, पेत्रोव, स्ताव्स्की) वापस न लौटे और युद्ध-भूमि में सदा के लिये सो गए।

गृह-युद्ध के वर्षों के समान, युद्ध के इन वर्षों मे भी साहित्य के वे रूप या प्रकार सामने आए जिनमे घटनाओं की प्रतिक्रिया जल्दी से जल्दी अभिव्यक्त की जा सकती थी—प्रगीत मुक्तक, कविताओं के साथ पोस्टर, छोटी कहानियाँ, प्रचारात्मक लेख, घटनाश्रित लेख आदि। मायाकोव्स्की की '[illegible] खिड़की' की परंपरा फिर से जीवित हुई। मास्को तथा अन्य [illegible] '[illegible]' के पोस्टर छपने लगे। युद्ध के मोर्चे पर होने [illegible] जल्दी से जल्दी रास्ते में लिखे गए प्रचारात्मक [illegible] से भेजे जाते थे और तत्क्षण पत्रों मे छपते थे जिनमे वीरों [illegible] था और सोवियत सेना के साहसपूर्ण कार्यों की चर्चा

रहती थी। अलेक्सेइ तोलस्तोय ने युद्ध के वर्षों के साहित्य को 'जनता के वीर आत्मा की आवाज' ठीक ही कहा है। इस समय प्रचारात्मक लेख बहु ही लोक व्यापक हुए। प्रचारात्मक लेखों के क्षेत्र में अलेक्सेइ तोलस्तोय लिओनोव, शोलोखोव, सीमनोव, फदेयेव, तीखनोव, ग्लदकोव, ग्रोसम गरबातोव, स्वस्ताव्स्की जैसे प्रसिद्ध लेखकों ने काम किया१। इ लेखों में सबसे पहले सोवियत देशभक्तों के साहसपूर्ण कार्यों का अभि व्यंजन हुआ तथा फ़ासिस्ट बर्बरों के विरुद्ध युद्ध में सोवियत जनत की जो हानि हुई, जो दुख उसे उठाना पड़ा और जो बलिदान उसने दि उनका वर्णन हुआ है।

युद्ध के वर्षों में सोवियत लेखकों ने कलापूर्ण प्रगीत मुक्तक गद्य नाट आदि की सृष्टि की। इनमें से कई कृतियाँ स्तालिन पुरस्कार पुरस्कृत हुईं।

प्रगीत मुक्तक के क्षेत्र में तीखनोव, सीमोनोव, त्वरदोव्स्की, सुरक ईसाकोव्स्की तथा अन्य सोवियत कवि अपनी कृतियों में सोवियत व्यक्ति की आंतरिक अनुभूतियों की बड़ी व्यापक और गहरी अभिव्यक्ति प्रस्तु कर रहे है। इन वर्षों की प्रधान विषय-वस्तु है देश के प्रति प्रेम। सुरक को समर्पित अपनी कविता में सीमिनोव ने लिखा: 'गोलियाँ मुझे अ तक माफ़ करती जाती हैं, बचाती जाती हैं, फिर भी मैं जानता हूँ जीवन समाप्त हो गया है। फिर भी मुझे रूसी भूमि का घमंड है जहाँ मैं पैदा हुआ, इसका गर्व है कि इसके लिए लड़ना मेरी विरासत है

बहुत से कवि लेनिन की ओर सकेत करते हुए जनता का आह्वा करते हैं और यह कहते हैं कि "इस महायुद्ध में हम अक्तूबर क्रान्ति परंपराओं तथा संप्राप्तियों की ही रक्षा करते हैं। सोवियत जनता इस यु मे लेनिन के झंडे को ऊंचा फहरा रही है।" इसके साथ ही (स्तालिन संबंधित तथा अन्य बहुत सी) रचनाओं मे कम्यूनिस्ट पार्टी तथा जनता

१—ओचेर्क इस्तोरिई : रूस्कोय सवेत्स्कोया लितेरातूरी, भ दूसरा, पृ० १३४-१३५।

लोकप्रिय नायकों च गाएव, मर्त्सोनव तथा अन्य की ही झलक मिली क्योंकि वे (नायक) स्वयं सोवियत लेखकों की कोरी कल्पना न थे, वरन् स्वतः जीवन से चुने गये थे। इस प्रकार चूँकि सोवियत साहित्य जीवन से *अविच्छिन्न रूप से संबंधित था*, इसी से वह उन प्रश्नों का बड़ी व्यापकता तथा विस्तार के साथ उत्तर दे सका जिनको कि जीवन ने युद्ध के वर्षों में प्रस्तुत किया।

युद्ध ने लेखकों के सामने कई गर्जनात्मक समस्याएँ प्रस्तुत कीं। लेखकों के लिए यह आवश्यक था कि वह काव्यात्मक ढंग से सोवियत जनता की भावनाओं को उभार सकें और उसमें देशप्रेम के उत्कर्ष को, विजय के लिए हर प्रकार की तत्परता और सन्नद्धता को तथा अपनी विजय *में उसके अडिग विश्वास को अभिव्यंजित कर सकें*। उनके लिए यह भी आवश्यक था कि वे अपनी कृतियों में उन सभी घटनाओं का चयन कर सकें जो कि युद्ध क्षेत्र में हो रही थीं और वे सोवियत जनता के साहसपूर्ण कार्यों की कथा कह सकें। अन्त में उनके लिए यह भी अत्यावश्यक था कि वे *सारे संसार के सामने फ़ासिज़्म की बर्बरता का पूरा-पूरा* चित्र प्रस्तुत कर सकें और 'घृणा का विज्ञान' रच सकें जिससे सोवियत जनता तथा संसार जान जाय कि फासिज़्म का असली रूप कितना नृशंस तथा बर्बरता से पूर्ण है। स्वतः हजार से अधिक लेखक (सोवियत लेखक संघ के एक *तिहाई से अधिक*) सेना में भर्ती हुए और बहुत से (हैदर, ग्रीपोव, पेगोव, स्ताव्स्की) वापस न लौटे और युद्ध-भूमि में सदा के लिये सो गए।

गृह-युद्ध के वर्षों के समान, युद्ध के इन वर्षों में भी साहित्य के वे रूप या प्रकार सामने आए जिनमें घटनाओं की प्रतिक्रिया जल्दी से जल्दी *अभिव्यक्त की जा सकती थी*—प्रगीत मुक्तक, कविताओं के साथ पोस्टर, छोटी कहानियाँ, प्रचारात्मक लेख, घटनाश्रित लेख आदि। मायाकोव्स्की की *'दोस्ता की खिड़की' की परंपरा फिर से जीवित हुई। मास्को तथा अन्य* शहरों में *'तास की खिड़की'* के पोस्टर छपने लगे। *युद्ध* के मोर्चे पर होने वाली घटनाओं से संबंधित जल्दी से जल्दी रास्ते में लिखे गए प्रचारात्मक लेख हवाई जहाज से भेजे जाते थे और तत्क्षण पत्रों में छपते थे जिनमें वीरों का आह्वान रहता था और सोवियत सेना के साहसपूर्ण कार्यों की चर्चा

रहती थी। अलेक्सेइ तोलस्तोय ने युद्ध के वर्षों के साहित्य को 'जनता की वीर आत्मा की आवाज' ठीक ही कहा है। इस समय प्रचारात्मक लेख बहुत ही लोक व्यापक हुए। प्रचारात्मक लेखों के क्षेत्र में अलेक्सेइ तोलस्तोय, लिओनोव, शोलोखोव, सीमनोव, फदेयेव, तीखनोव, एलदकोव, ग्रोसमन गरवातोव, स्वस्ताव्स्की जैसे प्रसिद्ध लेखकों ने काम किया१। इन लेखों में सबसे पहले सोवियत देशभक्तों के साहसपूर्ण कार्यों का अभिव्यजन हुआ तथा फ़ासिस्ट बर्बरों के विरुद्ध युद्ध में सोवियत जनता की जो हानि हुई, जो दुख उसे उठाना पड़ा और जो बलिदान उसने दिए उनका वर्णन हुआ है।

युद्ध के वर्षों में सोवियत लेखकों ने कलापूर्ण प्रगीत मुक्तक गद्य नाटक आदि की सृष्टि की। इनमें से कई कृतियाँ स्तालिन पुरस्कार से पुरस्कृत हुईं।

प्रगीत मुक्तक के क्षेत्र में तीखनोव, सीमोनोव, त्वरदोव्स्की, सुरकोव ईसाकोव्स्की तथा अन्य सोवियत कवि अपनी कृतियों में सोवियत व्यक्ति की आंतरिक अनुभूतियों की बड़ी व्यापक और गहरी अभिव्यक्ति प्रस्तुत कर रहे हैं। इन वर्षों की प्रधान विषय-वस्तु है देश के प्रति प्रेम। सुरकोव को समर्पित अपनी कविता में सीमिनोव ने लिखा : 'गोलियाँ मुझे अभी तक माफ करती जाती है, बचाती जाती हैं, फिर भी मैं जानता हूँ कि जीवन समाप्त हो गया है। फिर भी मुझे रूसी भूमि का घमंड है, जहाँ मैं पैदा हुआ, इसका गर्व है कि इसके लिए लड़ना मेरी विरासत है।'

बहुत से कवि लेनिन की ओर संकेत करते हुए जनता का आह्वान करते हैं और यह कहते हैं कि "इस महायुद्ध में हम अक्तूबर क्रान्ति की परंपराओं तथा सम्प्राप्तियों की ही रक्षा करते हैं। सोवियत जनता इस युद्ध में लेनिन के झंडे को ऊंचा फहरा रही है।" इसके साथ ही (स्तालिन से संबंधित तथा अन्य बहुत सी) रचनाओं में कम्यूनिस्ट पार्टी तथा जनता के

१—ओचेर्क इस्तोरिई : रुस्कोय सवेत्स्कोया लितेरातूरी, भाग दूसरा, पृ० १३४-१३५।

ऐक्य का भाव प्रकट किया गया है। सोवियत संघ में रहनेवाली अनेक जातियों के ऐक्य तथा भ्रातृत्व भाव की अभिव्यंजना भी युद्धकालीन काव्य में बहुत हुई है। 'सोवियत संघ का गीत' अनेक जातियों को एक में गूँथने वाले इसी समाजवादी राष्ट्र को समर्पित है। युद्धकालीन सोवियत काव्य का औचित्य और उसकी कलात्मक शक्ति इस बात में निर्धारित है कि लेखकों और उनके नायकों का स्वार्थ, उनके विचार और अनुभूतियाँ तथा स्वतः उनका भाग्य एक दूसरे से अविभक्त था। १

युद्ध के वर्षों में व्यंग्यात्मक कविताओं के अनेक प्रकार बहुत प्रचलित हुए। व्यंग्यात्मक कविताओं और चस्तूक्तियों में फासिस्टों के प्रति जनता का क्रोध तथा जनता की घृणा अभिव्यक्त हुई। व्यंग्यात्मक कविताएँ, वास्न्या, फेल्तन, व्यंग्यचित्र, पैम्फ्लेट, एपिग्राम आदि का प्रयोग बेदेनी, मर्शाक, मिग्राइलोव, लेबदेव, कमाच, वगीलयेव आदि ने किया।

शत्रु के प्रति घृणा का भाव भी सोवियत लेखकों की रचनाओं में बड़े जोरदार शब्दों में व्यक्त हुआ है। सुरकोव ने अपनी एक कविता का शीर्षक 'मैं घृणा का गीत गाता' रखा। जनता के 'साथ युद्ध की कठिनाइयों को झेलता हुआ तथा देश की रक्षा करता हुआ साहस से पूर्ण सैनिक ही उसकी कविताओं का नायक है।

सीमोनोव ने यह बड़ी अच्छी तरह प्रदर्शित किया है कि अपने निकटस्थों या संबंधियों का भाव किस प्रकार सैनिक को उत्साह से भर देता है और कठिन परिस्थितियों के बीच उसे यह विचार-शक्ति देता है कि घर पर लोग उसकी विजयी के रूप में प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसी भाव को पल्लवित करती हुई उसकी कविता 'मेरी प्रतीक्षा करो' सैनिकों के बीच बड़ी लोकप्रिय हुई और सैनिकों के अनेक पत्रों में उसके उद्धरण दिये गये। इसमें कवि ने प्रेयसी के प्रति प्रेम के भाव को युद्ध में विजय के विश्वास के साथ गुंथा दिया।

सिमोनोव ने उस व्यक्ति की अनुभूतियों की तीव्रता का बड़ा सुंदर

१—ओचेर्क इस्तोरिई रुस्कोय सवेत्स्कोया लितेरातूरी, भाग दूसरा पृ० १४८।

अभिव्यंजन किया है जो उस सबकी रक्षा के लिए, जो कि उसे परम प्रिय है, अपना जीवन होम कर देता है और अपने मित्रों से उस आत्मिक या नैतिक सहायता की आशा करता है जो कि उसमें दृढ़ता और साहस भर दे। वह शब्दों तथा लय की पुनरावृत्ति द्वारा ऐसी सजीव वाणी की सर्जना करता है जिसमें अनुभूतियों का अभिव्यंजन तथा कलात्मक विश्वसनीयता, दोनों हैं।

सोवियत व्यक्ति के आंतरिक भावों तथा अनुभूतियों के अभिव्यंजन की क्षमता ईसाकोव्स्की के प्रगीत मुक्तकों की बहुत बड़ी विशेषता है। इन गीतों में वीर सैनिक तथा पार्टिजन का चित्र प्रस्तुत किया गया है और इसके साथ ही देशनाश पर जनता के शोक तथा फासिस्टों के प्रति क्रोध का भाव प्रकट हुआ है। ईसाकोव्स्की के गीतों के मुख्य भाव में खिलती हुई जवानी, निर्मल प्रेम, प्रेमी या प्रेमिका के प्रति विश्वास और देश-प्रेम है।

प्रबन्ध काव्य

जीवन के साथ घनिष्ट संबंध ने सोवियत कवियों को प्रगीत मुक्तकों के साथ-साथ ऐसे प्रबन्ध या आख्यान काव्यों के प्रणयन का भी अवसर दिया जिनमें बड़ी व्यापकता के साथ युद्ध की घटनाओं तथा लोगों के चरित्र की अभिव्यक्ति हुई। युद्ध के वर्षों में काव्य के इस प्रकार की ओर लोगों का ध्यान स्वभावतया गया जिसमें युद्ध में भाग लेनेवालों के बलिदानी रूप तथा आत्मिक उत्कर्ष का और सोवियत जनता की सर्वसामान्य भावनाओं का वर्णन किया गया था। १९४१ के अन्त में तीखनोव का (आख्यान) काव्य 'हमारे साथ कीरोव' प्रकाशित हुआ (स्तालिन पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत)। यह कविता लेनिनग्राद के घेरे के विषय में है। 'सड़कों पर प्रतिरोध है और फाटक पर सादगी सूरी है। स्नेह निरंतोविच कीरोव रात में इस शहर में घूमता है। मानो बोल्शेविकों की न झुकनेवाली लौह इच्छा हमारी जनता की आराधना दुगना स्टील का पाकर लगा रही है।' साहस तथा विजय के विश्वास से पूर्ण तीखनोव का यह काव्य युद्धकालीन महत्वपूर्ण साहि-त्यिक कृतियों में से एक है।

शत्रु द्वारा घिरे हुए लेनिनग्राद के (तथा मास्को के) वीरतापूर्ण यु
ने बहुत-सी साहित्यिक कृतियों को जन्म दिया। तीखनोव ने रात्रि
लेनिनग्राद का रोमांटिक चित्र प्रस्तुत किया जो कि हर प्रकार की कठि
नाइयों को झेलने को तैयार है। दूसरे काव्य यथार्थवादी स्तर पर
और उन महान् कठिनाइयों का चित्रण करते हैं जिनको कि इस शहर ने
झेला फिर भी आत्मसमर्पण नहीं किया। (ब्लकाद) वेरा 'फरवरी की डायरी'
में ओ० बेरगोल्ल्स गर्व के साथ उन अनुभूतियों के बारे में कहता है जो
लेनिनग्राद के रक्षकों के हृदय में सर्वोपरि थीं जिनसे प्रेरित वे भाव, घोर
मृत्यु, कीचड़ के बीच स्वत्वों की रक्षा कर रहे थे जिससे कि प्रपौत्र उनसे
ईर्ष्या करें।' 'पुलोकोव्स्की मेरीडियन' में वेरा इन्बर लेनिनग्राद का वर्णन
उसके अत्यन्त कठिन दिनों तथा विजय के दिनों के बीच करती है और
कविता अन्तर की रचना से परिपूर्ण है। इसमें अभिव्यजित क्रोध का
भाव आक्रमणकारी के प्रति सारी जनता के क्रोध के भाव का अभि-
व्यजक है।

अलीगेर की कविता, जोया कस्मादेम्यान्स्काया के साहसपूर्ण कार्यों से
संबंधित है, सोवियत जनता की इस नायिका का बड़ा ही मनोवेगात्मक चित्र
प्रस्तुत किया गया है। कविता की रचना, काव्य की नायिका से कवि की
बातचीत के रूप में हुई है। इसमें कवयित्री ने इस जन नायिका के
व्यक्तित्व के सौन्दर्य, उसकी नम्रता और उसकी अनुभूतियों का अभिव्यंजन
किया है।

पावेल अन्तकोल्स्की ने अपनी कविता 'बेटा' मोर्चे पर मरे अपने
पुत्र की स्मृति में लिखी है। इसमें युद्ध के अत्यन्त करुण पक्ष—नवयुवक
सिपाहियों की मृत्यु और पिता के शोक का चित्रण हुआ है।

ट्रेजेडी या करुणा की भावना, मानव जीवन की आशाहीन, अपराजेय
विषमता से सबद्ध है जिससे मुक्ति पाने का कोई रास्ता नहीं है।
प्राचीन ट्रेजेडी भाग्य के विरुद्ध नायक का युद्ध और उसका नाश चित्रित
करती थी, नायक का ऐसा भाग्य जो पहले से ही निश्चित है, जो
अपरिवर्तनीय है और जिसमें कोई हेरफेर नहीं हो सकता। अपने भाग्य के

विरुद्ध उस युद्ध में नायक का नाश होता है। नायक की निराशा-आशा में ही अन्त में ट्रेजेडी का करुण भाव निहित है।

यह ट्रेजेडी तभी तक अनिवार्य तथा अत्यन्त करुण प्रतीत होती है जब तक कि हम इसे अलग-अलग व्यक्तिगत जीवन के घेरे में या व्यक्तिगत स्तर पर देखते हैं। हमें यह जानना चाहिए कि व्यक्ति में ही सब कुछ नहीं समाप्त हो जाता। व्यक्ति ही सब कुछ नहीं है। उसके पीछे उसका देश है, उसकी जनता है। यदि हम इस व्यापक लोकदृष्टि या सामाजिक दृष्टि को बनाए रहें तो देखेंगे कि व्यक्ति का अन्त कितना ही करुण क्यों न हो फिर भी सब कुछ समाप्त नहीं हो जाता। यदि मनुष्य यह समझता है कि वह किसी व्यापक लक्ष्य के लिए अपनी जान दे रहा है, वह मर कर अपने प्रियजनों को बचा रहा है तो उसके बलिदान के इस आनन्द में मृत्यु पर उसकी विजय है। इस व्यापक लक्ष्य के कारण ही उसका व्यक्तिगत अन्त सर्वनाश या सर्वान्त नहीं है। इसी से उसके व्यक्तिगत अन्त के करुण अन्धकार से आशा की किरण फूटती है और ट्रेजेडी पूर्ण ट्रेजेडी नहीं रह जाती।

युद्ध के पूर्व से ही सोवियत साहित्य में प्रचलित 'आशापूर्ण' ट्रेजेडी' शब्दावली का यही अर्थ है। ट्रेजेडी केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही ट्रेजेडी रहती है। मनुष्य अपराजेय बाधाओं से युद्ध में नष्ट हो जाता है। किन्तु यदि मरता हुआ वह यह जानता है कि वह लक्ष्य या कार्य, जिसे पूरा करने के लिए वह जी-जान सब कुछ अर्पित कर रहा है सफल होगा, और वह अपनी मृत्यु द्वारा उन सबको नाश से बचा रहा है जो कि उसे अत्यन्त प्रिय हैं, तो यह निराशा की गहन तमिस्रा से मुक्त पूर्ण ट्रेजेडी नहीं है—ऐसे व्यक्ति के अंत पर पूर्ण निराशा या नाउम्मेदी की चेतना कभी नहीं छाती और न उसका अन्त ऐसे शोक को जन्म देता है कि [illegible] हो सके। अन्तकोल्स्की के अपने काव्य में [illegible] है उसका उपशमन इसी प्रकार होता [illegible] अपनी कविता समाप्त [illegible]

[illegible] मनाने

शत्रु द्वारा घिरे हुए लेनिनग्राद के (तथा मास्को के) वीरतापूर्ण
ने बहुत-सी साहित्यिक कृतियों को जन्म दिया। तीखनोव ने रों
लेनिनग्राद का रोमांटिक चित्र प्रस्तुत किया जो कि हर प्रकार की
लड़ाइयों को झेलने को तैयार है। दूसरे काव्य यथार्थवादी स्वर
और उन महान् कठिनाइयों का चित्रण करते हैं जिनको कि इस श
झेला फिर भी आत्मसमर्पण नहीं किया। ([illegible]) वेरा 'फरवरी की' डा
में ओ० बेरगोल्त्स गर्व के साथ उन अनुभूतियों के बारे में कहता है
लेनिनग्राद के रक्षकों के हृदय में सर्वोपरि थीं जिनसे प्रेरित वे भाव,
मृत्यु, कीचड़ के बीच रास्तों की रक्षा कर रहे थे जिनसे कि शरीर
ईर्ष्या करें।' 'पुल्कोवोस्की मेरीडियन' में वेरा इन्बर लेनिनग्राद का ग
उसके अत्यन्त कठिन दिनों तथा विजय के दिनों के बीच करती है
कविता अन्तर की रचना से परिपूर्ण है। इसमें अभिव्यक्ति को
मात्र आक्रमणकारी के प्रति सारी जनता के क्रोध के भाव का अ

साथ समकालीन नायक का चित्र प्रस्तुत किया है और त्योंकिन जैसे सामान्य सैनिक के रूप में सारी जनता के युद्ध को प्रस्तुत किया है।

कवि ने सोवियत सेना की पृष्ठ-भूमि में अपने नायक का चित्र प्रस्तुत किया है। कवि अपनी सामग्री—फौज का रहन-सहन, उसके मनोविज्ञान उसकी भाषा से बहुत अच्छी तरह परिचित है। भाषा हल्के व्यंग्य से उत्तम है। युद्ध के दिनों में यह कविता बड़ी लोकप्रिय हुई। नायक के चित्र की महत्ता के कारण युद्ध के अनेक पक्षों के चित्रण के कारण और प्रगीतात्मक तथा संवेदनशील भावों की गहराई के कारण, युद्धकालीन काव्यों के बीच त्वरदोव्स्की का यह काव्य सर्वोच्च स्थान प्राप्त करता है। युद्ध के वर्षों में इससे लोगों को बड़ी प्रेरणा मिली और आज भी इसका विचारात्मक तथा कलात्मक महत्त्व है।

गद्य

युद्ध के वर्षों में सोवियत गद्यकारों ने कई दिशाओं में काम किया। इनमें युद्ध की घटनाओं का चित्रण करने वाले लेख बहुत व्यापक हुए। इन लेखों में ऐतिहासिक महत्त्व की बहुत अधिक सामग्री इन लेखकों द्वारा एकत्रित हुई। इनमें युद्ध के वे सभी युग, सभी परिस्थितियाँ, चित्रित हुई जिनके बीच से यह युद्ध चला। इनमें भविष्य की पीढ़ियों को प्रेरणा देनेवाली सोवियत नायकों की देशोद्धार की अभूतपूर्व साहस तथा बलिदान की गाथा सुरक्षित है। देश प्रेम को उद्बोधित करनेवाले तथा शत्रु के प्रति घृणा भड़कानेवाले इन कलात्मक प्रचारात्मक लेखों ने देश की जनता को युद्ध के लिए सन्नद्ध कर बहुत बड़ा काम किया। अलेक्सेन्द्र तॉलस्तॉय की लेखों की पुस्तक 'स्वदेश', ऐरनबुर्ग की पुस्तक 'युद्ध' तथा अन्य कृतियों का सैनिकों तथा नागरिकों सभी पर बड़ा प्रभाव पड़ा। युद्धकालीन इन प्रचारात्मक लेखकों का बड़ा सामाजिक, शिक्षात्मक महत्त्व था। आगे चल कर यह लेख इन लेखकों के सर्जनात्मक मार्ग के महत्त्वपूर्ण, चरण बन गये और इनके आधार पर लेखकों ने सीमनोव, गरबातोव, फ्लेवोव, इस युद्ध के सबंध में बड़ी महाकाव्यात्मक कृतियाँ प्रस्तुत कीं।

युद्ध की गतिविधि के साथ लोगों का अनुभव तथा पर्यवेक्षण भी बढ़ा

का जीवन और युद्ध चित्रित किया गया है जहाँ पर फासिस्टों का अधिकार था। यह पुस्तक यह प्रदर्शित करती है कि किस प्रकार रूसी जनता, माताएँ और यहाँ तक कि बच्चे फासिज्म के अत्याचार के बीच देश की स्वतन्त्रता के सेनानी बन गये। इसका शीर्षक स्वयं जनता की आने वाली विजय का प्रतीक है। सोवियत जनता की अपराजेयता और शत्रु द्वारा अधिकृत क्षेत्र मे उनके दुख सहन तथा युद्ध की विषय-वस्तु का उद्घाटन गारबातोव की कृति 'अजित' मे हुआ है। इसका मुख्य भाव यह है कि जो शत्रु को आत्म-समर्पण नहीं करते, जिनकी आत्मा 'अजित' है, विजय उन्ही की है।

'रात और दिन' मे युद्ध के बीच स्तालिनग्राद के दिनों और रातों का वातावरण प्रस्तुत किया गया है जब कि केवल सड़क के लिए ही नहीं वरन् प्रत्येक मंजिल और मंजिल की प्रत्येक सीढ़ी के लिए लड़ाई हो रही थी। 'रात और दिन' मे सीमोनोव ने स्तालिनग्राद के युद्ध मे सोवियत सैनिकों के साहस और दृढ़ता का चित्र प्रस्तुत किया है। युद्ध के सामान्य सैनिक के रूप मे कथा के केन्द्र म कप्तान सबूरोव है जो बटालियन का कमांडर है। उसके युद्ध के कार्य-कलाप द्वारा पाठकों के सामने स्तालिनग्राद का चित्र प्रस्तुत होता है। कथा मे वर्णित घटनाएँ सबूरोव के सैनिकों द्वारा अधिकृत एक टूटे-फूटे मकान के चारो ओर केंद्रित है जिसकी सोवियत सैनिक रक्षा कर रहे हैं और जिसे जर्मन सैनिक अपने अधिकार मे चाहते हैं। जर्मन फ़ासिस्टों से इस मकान की रक्षा उन कार्य-कलापों का आधार है जो कि इस कथा मे विकसित होते है। इसकी मकान की रक्षा मे सबूरोव और सोवियत सैनिक अपूर्व दृढ़ता, साहस तथा आन्तरिक शक्ति प्रदर्शित करते है। डिवीज़न कमांडर प्रोत्सेंको, कप्तान सबूरोव, उसकी प्रियतमा, उसके युद्ध के साथी, यह सभी लोग ऐसे हैं जिनका सारा आचरण, कार्य-कलाप इस तथ्य और लक्ष्य से प्रेरित है कि उन्होंने अपने को पूर्णतया स्वदेश रक्षा के लिए समर्पित कर दिया है और प्रत्येक क्षण अपना जीवन होम करने को तय्यार हैं। जब भी एक क्षण का विश्राम सम्भव प्रतीत होता है उस समय कप्तान सबूरोव आक्रमण का प्रस्ताव रखता है और अपनी

बटालियन के साथ जर्मनों पर आक्रमण कर देता है। इसमें सोवियत जनता की अपराजेयता और असीम देश प्रेम का निदर्शन है जो कि उसे व्यक्तिगत स्वार्थों और सभी प्रकार की कठिनाइयों पर विजय पाने की शक्ति देता है।

सीमनोव की इस कथा का महत्त्व इस बात में है कि उसने युद्ध के समय तथा असीम कठिनाइयों का पूर्ण चित्र प्रस्तुत किया और उन सोवियत देशभक्तों को चित्रित किया जिन्होंने इन बाधाओं के होते हुए भी स्तालिनग्राद की रक्षा की और विजय प्राप्त की। अत्यन्त कठिन परिस्थितियों के बीच प्रदर्शित सोवियत देशप्रेम के स्वरूप और स्वभाव का गंभीर उद्‌घाटन सीमनोव की इस कथा का विशेष गुण है।

लिओनोव की कृति 'वेलीकोशूम्स्क पर अधिकार' की घटनाएँ नीपर नदी के पश्चिम सोवियत सेना के आक्रमणों से संबधित हैं। कथा के नायक टैंक वाले हैं। उनके माध्यम से सोवियत सेना की उच्च कर्त्तव्य भावना और साहस का चित्रण किया गया है जो उसकी अपराजेयता का मूल स्रोत है। इसके साथ ही नायक इस भावना से ओत-प्रोत है कि वे युद्ध द्वारा संसार का भविष्य निर्मित कर रहे हैं और उनकी दृढ़ता तथा उनके साहस पर जनता तथा मानवता का उद्धार निर्भर है।

शोलोखोव की कृति 'वे मातृभूमि के लिए लड़े' में दान के स्तेपों में युद्ध का वर्णन है। इसके नायकों के साहसपूर्ण कार्यों का उदघाटन सोवियत व्यक्ति की मूलभूत देश प्रेम की चेतना की अभिव्यंजना के रूप में हुआ है। शोलोखोव के नायक शांति प्रेमी, परिश्रमी व्यक्ति के रूप में चित्रित हुए हैं जो कि शांतिमय समय को फिर से वापस लाने के लिए युद्ध कर रहे हैं। शत्रु के प्रति उनके हृदय में घृणा है क्योंकि उसने इनके शांतिमय निर्माण का काम रोक दिया। देश के प्रति अगाध प्रेम, साहस, एक दूसरे के प्रति उत्तरदायित्व की भावना—यह इन नायकों की विशेषताएँ हैं।

यहाँ यह कहना आवश्यक है कि यद्यपि १९४१—४५ के साहित्य में युद्ध के बीच जनता के साहसपूर्ण कार्यों का वर्णन हुआ है फिर भी मोर्चे के पीछे जनता के युद्ध का जारी रखने का जो कार्य और प्रयत्न है उसका

चित्रण बड़ा दुर्बल है। वेलोवलाम्स्कोयेशोसे (वलोवलाम्स्कोये सड़क) शागिन्यान का 'रक्षा में उराल,' पनफ्योरोव का 'शान्ति के लिए युद्ध', पेरवेन्त्सेव की 'परीक्षा', करवाएवा की 'अग्नि', ग्लदकोव की 'प्रतिज्ञा' आदि कृतियाँ इसी विषय-वस्तु को लेकर लिखी गई हैं फिर भी आलोचकों के विचार से इन कृतियों को ऐसा कलात्मक रूप नहीं प्राप्त हो सका है जैसा कि होना चाहिए। युद्ध के अंतिम वर्षों की कृति 'मोर्चे से सलाम' में सैनिकों की भावनाओं का चित्रण हुआ है जो शत्रु पर विजय प्राप्त कर भविष्य के शांतिमय निर्माणकारी कार्यों के विषय में सोचने लगे हैं जिससे कि सोवियत जनता का जीवन युद्ध के पूर्व की अपेक्षा और भी अच्छा हो जाय। फिर भी शांतिमय निर्माणकारी परिश्रम की विषय-वस्तु युद्धोत्तर काल में पूर्णतया अंकित हो सकी।

नाटक

युद्ध के वर्षों में नाटकों का बड़ा विकास हुआ। सोवियत देश-भक्तों के आचरण और अनुभूतियों की महत्ता को प्रदर्शित करने के लिए सोवियत लेखक युद्ध के दिनों में साहित्य के इस रूप की ओर उन्मुख हुए।

रूसी जनता

युद्ध के दिनों में जनता को उद्बुद्ध तथा सन्नद्ध करने में तथा उसमें स्फूर्ति भरने में सोवियत रंगमंच का बड़ा महत्त्वपूर्ण योग है। युद्ध के वर्षों में कलाकारों के बहुत से मंडल (३६८५) युद्ध के मोर्चे पर गये और वहाँ कलात्मक प्रदर्शन प्रस्तुत किये।

युद्धकालीन नाटकों के सामान्य भाव का द्योतक के० त्रिन्योव का वह लेख है जिसे उसने फासिस्टों के आक्रमण के चार दिन बाद 'प्राव्दा' के लिए लिखा था। इसमें उसने कहा कि "आज के सोवियत साहित्य का लक्ष्य है अपनी सारी प्रतिभा और प्रेरणा का इस बात के लिए प्रयोग कि जनता की अनभूतियाँ, उसके क्रोध, देश के प्रति उसके उद्दीप्त प्रेम तथा साहस की व्यंजना हो सके और न केवल इनका अभिव्यंजन हो वरन् युद्ध में उसे विजय की प्रेरणा तथा भावना से भरे।"

फासिस्टों के विरुद्ध सोवियत जनता के 'पार्टिज़न' (छापामार) युद्ध की विषय-वस्तु युद्ध कालीन नाटकों में प्रधान रहा है। इसकी अभिव्यक्ति लिओनोव के नाटकों 'आक्रमण' तथा 'ल्योनुश्का', कर्निचूक के 'यूक्रेन के स्तेपों में छापामार', 'अन्धकार मे मिलन,' 'आलीगेर के 'सत्य के बारे में कथा' आदि नाटकों में हुआ है। इसके साथ ही रमाशोव के 'प्रसिद्ध वंश', फ़ीन के 'प्योत्रक्रीमोव', स्तनीम्स्की के 'उरालवासी' नाटकों में सोवियत श्रमिकों और कलखोज़ियों के उन साहसपूर्ण कार्यों का प्रदर्शन हुआ है जिनके सहारे यह देश इतना बड़ा युद्ध इतने समय तक चला सका।

युद्धकालीन नाट्य साहित्य की सबसे बड़ी सफलता १९४२-४३ में हुई जब एक के बाद एक उच्च कोटि के नाटक जनता के सामने आये। इनमें सीमनोव के 'रूसी जनता', लिओनोव के 'आक्रमण', कर्निचूक के 'मोर्चे', अलेक्सेई तोलस्तोय के 'भयंकर इवान, 'सोवियत साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृति के रूप में माने जाते हैं।

जब सीमोनोव का नाटक 'रूसी जनता' प्रकाशित हुआ तो तार द्वारा यह पूरा नाटक अमेरिका भेजा गया। उस समय फ़ासिस्टों के विरुद्ध रूसी जनता के साहस की कथा कहनेवाली कृतियों का विदेश में इतनी बेताबी से इन्तज़ार हो रहा था।

इस नाटक के नायक सामान्य रूसी स्त्री-पुरुष हैं जिन्हें हर जगह देखा जा सकता है। भूतपूर्व मोटर चलानेवाला शोफ़र और अब सोवियत सेना का अफ़सर सिफ़ोनोव, उसकी प्रेयसी शोफ़र वाल्या, बुड्ढा रूसी अफ़सर वासिन, जो अपनी अवशिष्ट शक्ति से शत्रु से लड़ने के लिए सोवियत सेना में दाखिल हुआ है तथा ग्लोबा ये सामान्य सोवियत जनता से भिन्न नहीं हैं। इनमें वही मूलभूत गुण हैं जिनसे कि सामान्य जनता निर्मित है। कर्तव्य की भावना, दृढ़ता, देश के लिए सब कुछ सहने की तत्परता— इनके चरित्र की मुख्य विशेषताएँ हैं।

कमाण्डर सफ़ोनोव की टुकड़ी एक छोटे से शहर में जर्मनों द्वारा घिरी है। कमाण्डर से लेकर सामान्य सैनिक तक यह जानता है कि मृत्यु निश्चित

है फिर भी कोई आत्म-समर्पण नही करता और न अपनी जगह छोड़ता है। सफोनोव बिना संकोच अपनी प्रेयसी वाल्या को सकटपूर्ण कार्य; खोज-खबर लाने के लिए भेजता है और वाल्या बिना हिचकिचाहट के इस काम पर जाती है और अपनी बलि देने को तय्यार है।

सफोनोव और उसकी टुकड़ी का साहस उस समय विशेष रूप से प्रकट होता है जब उसकी रक्षा के लिए आती हुई सोवियत सेना से मृत्यु का सकट दूर हो जाता है किन्तु फिर से प्राप्त जीने के अवसर और अपनी सुरक्षा को ठुकराकर वह युद्ध की योजना सैनिकों के सामने रखता है जिसमें यदि सब नहीं तो बहुत से तो जरूर ही नष्ट हो जाएंगे। निश्चित मृत्यु, फिर जीवन प्राप्ति का आनन्द और फिर तत्क्षण मृत्यु की ओर बिना सकोच के संचरण, ऐसी परिस्थिति का चित्रण इस नाटक मे किया गया है। अधिक शक्तिशाली शत्रु से उन्हे पुल छीनना है और अपने अधिकार मे रखना है जो सेना के यातायात के लिए अत्यावश्यक है।

सफोनोव बिना किसी प्रकार के सकोच के अपनी टुकड़ी को युद्ध में ले जाता है और अपने जीने की चिन्ता नहीं करता। वह जानता है कि देश के प्रति कर्त्तव्य मनुष्य के व्यक्तिगत स्वार्थ से कहीं ऊँचा है।

सीमनोव का यह नाटक 'प्राव्दा' मे छपा था और लाखों लोगो ने इसे पढ़ा। यह नाटक युद्धकालीन महत्वपूर्ण कृतियों मे से एक है। इसने रूसी जनता के देशप्रेम का बड़ी स्पष्टता से उद्घाटन किया जो कि इसमें उच्च भावनाओं को जगाता है, चारित्रिक दृढ़ता लाता है और कठिनाइयों को सहने की अपूर्व शक्ति देता है। सबसे बड़ी बात यह कि ये विशिष्टताएँ विशेष प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियो मे नहीं, वरन् सामान्य साधारण लोगों के जीवन के उदाहरण द्वारा प्रस्तुत की गयी हैं। इसमें सोवियत सेना की दृढ़ता तथा साहस का प्रदर्शन युद्ध के प्रतिदिन के जीवन की कठिनाइयों के बीच हुआ है।

इस नाटक का नायक सोवियत युग की रूसी जनता है। इसी मे (रूसी जनता) सब कुछ कह दिया गया है, इसी मे सब कुछ छिपा है।

फ्रंट या मोर्चा

रूसी जनता के समान कर्निचूक का नाटक 'मोर्चा' भी प्राव्द
छपा था। कर्निचूक एक यूक्रेनीय लेखक है किन्तु उसके नाटक ने
प्रश्न को उठाया जिसका कि सारे देश से सम्बन्ध था। इसलिए वह बे
यूक्रेनियों की ही चीज़ नहीं वरन् सोवियत साहित्य की कृति बन गयी

यह नाटक १९४२ की ग्रीष्म के संकटापन्न दिनों में प्रकाशित
जब कि जर्मन कुबांस्की स्तेपी को पार कर गये थे। ककाश खतरे
था और जर्मन स्तालिनग्राद तक पहुँच गये थे।

देश के ऐसे संकटापन्न दिनों में कर्निचूक ने बड़े साहस के साथ
सेनाधिपतियों का चित्र खींचा जो आत्म-सन्तुष्ट थे और जो अपने प्राच
अनुभवों पर निश्चित बैठे युद्ध की नवीन वैज्ञानिक प्रक्रियाओं से बेख
थे। आज का युद्ध-विज्ञान कमांडरों के सामने नयी माँगें प्रस्तुत कर र
है। इनको न समझने का अर्थ है पराजय तथा नाश। जेनरल गोरल
ऐसा ही सेनाधिपति है जो गृह-युद्ध के समय ऊपर उठा और जिसका ब
प्रभाव है। किन्तु वह नये युद्ध-विज्ञान की आवश्यकताओं को न सम
पाता है और न उनके लिए तय्यार है। खुशामदियों से घिरा हुआ यह स
स्वतन्त्र सम्मतियों को दबा देता है। इसका परिणाम होता है युद्ध
असफलता और देश की मूल्यवान निधि सोवियत जनता का नाश
गोरलोव का चरित्र यह प्रकट करता है कि युद्ध में विफलता शत्रु की बढ़ी
बड़ी शक्ति के कारण नहीं होती वरन् इसलिए होती है कि जिन लोगों
देश की रक्षा का भार सौंपा गया है वे युद्ध के नवीन विज्ञान से परिचित नह
हैं। गोरलोव के विपरीत कर्निचूक जेनरल अग्नीव का चित्रण करत
है जो युद्ध के अनुभवों से पुष्ट है और शत्रु से भी सीखने को तैयार है औ
फिर उसे सबके सिखाने को तय्यार है।

इस नाटक ने इस प्रकार कमांडरों को आत्मालोचना के लिए विवश
किया और उनको हर क्षण युद्ध की नयी बातें सीखने और सतर्क रहने को
प्रेरित किया जिससे कि उनमें जेनरल गोरलोव के संस्कार न आ जायें।
इसके साथ ही इस नाटक ने देश के विजय में उस आत्म-विश्वास को भी

प्रकट किया जिससे कि वह सामयिक असफलताओ के बावजूद युद्ध का संचालन कर रहा था। इस नाटक में त्रुटि स्वीकार और आत्म-शक्ति दोनों का प्रदर्शन किया गया है। कर्निचूक के इस नाटक का महत्त्व इस बात में है कि इसमे साहित्य के नकारात्मक नायक के चित्रण का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। साहित्य का एक लक्ष्य जीवन मे अद्यापि अविजित त्रुटियों का प्रदर्शन तथा लोगो की बुराइयो की आलोचना भी है। 'मोर्चा' नाटक इसी लक्ष्य, जीवन के विकास मे बाधा डालने वाली सभी त्रुटियों की पूर्ति युद्ध करता है।

आक्रमण

सीमनोव ने सामान्य सैनिको का देश प्रेम प्रदर्शित किया। कर्निचूक ने उनके सेनापतियो का और लिओनोव ने देश प्रेम की शक्ति का और यह दिखाया कि देश-प्रेम किस प्रकार व्यक्ति को अपनी तुच्छ भावनाओं, स्वार्थपरता तथा अन्य व्यक्तियो से अपनी भिन्नता की भावना पर विजय प्राप्त करने मे सहायता देता है। लिओनोव के नाटक का नायक फ्योदोर ऐसे समय अपने शहर मे वापस लौटता है जब कि जर्मन उसमे प्रवेश करने वाले हैं। वह न उनके साथ सहमत है, जो कि शहर छोड कर जाना चाहते हैं और न उनके साथ, जो छापेमार रूप मे जर्मनो से लडना चाहते हैं। वह अभी-अभी कई वर्ष जेल मे बिता कर लौटा है। वह स्वय लोगों से अलग रहा है। इसलिए लोग उसका ऐसे महत्वपूर्ण क्षण मे विश्वास नहीं कर पाते। एकाकी, अन्दर ही अन्दर उसमे बडा मानसिक सघर्ष होता है।

लिओनोव यह प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार फ्योदोर मे देश भक्ति का भाव पुष्ट होता है और बाधाओं के होते हुए भी अपमान, शोक और अपने अहं पर विजय प्राप्त करता है। फ्योदोर मे अच्छी भावनाओ का पुनर्जन्म होता है। वह इस युद्ध मे भाग लेता है और गेस्तापो या खूफ़िया के आदमी को मार डालता है। जर्मन खुफ़िया को धोखे मे डाल कर वह अपने को पार्टिजन या छापामारों का कमांडर बताता है। इस प्रकार वह असली कमाडर को बचा लेता है और वीर की तरह मरता है।

स्तेपानोव के उपन्यास 'पोर्ट आर्थर' का मुख्य विषय है जनता का साहस, युद्ध कला की समस्या और युद्ध का मनोविज्ञान। यह उपन्यास बड़ा लोकप्रिय हुआ। इसने (१९०४–१९०५) के रूसी-जापानी युद्ध में इस किले की रक्षा तथा उसके पतन का इतिहास चित्रित है। फिर भी इसमें १९०५ की क्रान्ति के निकट देश की जो सामान्य स्थिति थी और देश का जैसा वातावरण था, उनसे युद्ध की घटनाओं का जो राजनीतिक तथा सामाजिक संबंध था उसका पूरा-पूरा उद्घाटन नहीं हो सका।

सोवियत आलोचकों की दृष्टि से युद्धकालीन कई ऐतिहासिक कथा-वस्तु वाली साहित्यिक कृतियों में, देश के इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाओं के चित्रण में कुछ सैद्धान्तिक राजनीतिक गल्तियाँ रह गयी थीं। कतिपय कृतियों जैसे सेर्गेयेव के 'विसार्ती' यरवुन्तोवा के 'जहाज समुद्र में जा रहे हैं' में अतीत का आदर्शीकरण हुआ है। प्रभु वर्ग के कई लोगों को बड़ा आकर्षक चित्रित किया गया है और रूसीराष्ट्र के वर्ग प्रधान रूप को भुला दिया गया है। इसी प्रकार प्रथम महायुद्ध से संबंधित कुछ कृतियों में रूसी सैनिक का साहस तो चित्रित किया गया है किन्तु यह नहीं बताया गया है कि कम्यूनिस्ट पार्टी इस युद्ध में ज़ार की पराजय चाहती थी और ज़ारशाही को नष्ट करने के लिए इस युद्ध को गृह-युद्ध में परिवर्तित करना चाहती थी। उनके मतानुसार ऐतिहासिक घटनाओं के बुर्जुआ लिबरल विकृतीकरण ने इन कृतियों के कलात्मक स्तर को नीचा कर दिया।

१०. अलेक्सान्द्र अलेक्सेन्द्रेविच फ़देयेव

[१९०१-]

अलेक्सान्द्रेविच फदेयेव उन सोवियत लेखकों में है जो अपने कार्यकलाप के आरम्भ से ही सोवियत देश के निर्माण में योग देते रहे हैं और जिनकी सर्जना को इस निर्माण के जीवन्त अनुभव से सामग्री मिलती रही है। फदेयेव का जन्म २४ दिसम्बर १९०१ में हुआ था। सन् १९१८ में वह बोल्शेविक पार्टी में दाखिल हो गया। गृहयुद्ध के वर्षों में उसने सोवियत शत्रुओं के विरुद्ध खुफिया युद्ध मे भाग लिया। १९१९-१९२१ में वह 'पार्टिज़न बना और बाद में लाल सेना में वह कुलचाक तथा जापानियों के विरुद्ध लड़ा। वह एक विद्रोह के दबाने में बुरी तरह ज़ख्मी भी हुआ। गृहयुद्ध के बाद वह पार्टी के काम में लग गया।

उसकी सर्जना के मूल मे गृहयुद्ध के सस्कार हैं। १९२१ से उसने लिखना शुरू किया। १९२३ में उसने अपनी कथा 'बाढ' समाप्त की। 'धार के विरुद्ध-कथा की कथा-वस्तु गृहयुद्ध से सबंधित है। १९२७ के उपन्यास के प्रकाशन से उसकी ख्याति बहुत बढ़ी। उसने 'राप' (रूसी प्रोलेतारियत लेखक असोशिएशन) में बहुत काम किया और बाद में सोवियत लेखक सघ का सेक्रेटरी हो गया। 'उदेगे से आखिरी' तथा 'युवक रक्षक', उपन्यासों से उसका नाम और भी बढ़ा। वह लेनिन के आर्डर द्वारा पुरस्कृत हुआ और उच्च सोवियत का डिप्टी चुना गया। वह लेखक सघ का सचालक है और कम्यूनिस्ट पार्टी की सेंट्रल कमेटी के सदस्य के रूप में पार्टी का काम भी करता है।

नाश

फ़देयेव का उपन्यास 'नाश' सोवियत साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृति मानी जाती है जो गृह-युद्ध से सबधित है। इस उपन्यास के लिखने में उसने बड़ी मेहनत की। उसके कथनानुसार इसमे ऐसे अध्याय भी हैं

जो बीस बार लिखे गये और चार पाँच बार से कम लिखा गया
कोई अध्याय नहीं है। युद्ध के बीच मानवीय चरित्र का विकास
परिवर्तन तथा क्रान्तिकारी युद्ध का चित्रण इस उपन्यास की वि
है। गृहयुद्ध के बीच मनुष्य की परीक्षा होती है, उसका चुनाव होता

उपन्यास के केन्द्र मे वोल्शेविक लेविंसोन है जिसमे क्रान्
बीच पार्टी का रूप उद्घटित होता है। क्रान्ति के बीच वह संगठन
अपूर्व क्षमता प्रदर्शित करता है। लेविंसोन का चित्र सोवियत साहि
अत्यन्त सफल वोल्शेविकों के चित्रों में से एक है। मेचिक के रूप मे
बुद्धिजीवियों का भाग्य प्रदर्शित किया गया है जो वर्जुआ व्यक्तिवा
शिकार हैं और जनता से असंबद्ध होने के कारण खोखले हैं। वह के
अपने लिए है इसलिए वह अपने लिए सच्चे जीवन मे महत्वपूर्ण स्
नहीं प्राप्त कर पाता। वह अकेला रह जाता है और परीक्षा के
मे इस टुकड़ी का पता शत्रु को दे देता है।

लेखक एक छोटे से पार्टिजन (छापामार) समुदाय के माध्यम से
मूलभूत शक्तियों को प्रदर्शित करता है जिन्होंने गृहयुद्ध में भाग लिय
बोल्शेविकों का संगठनकारी कार्य, क्रान्तिकारी आंदोलन में मजदूरो
श्रमिकों का महत्त्व, बुद्धिजीवियों और किसानों के भिन्न भिन्न स्त
सामाजिक जीवन के विश्लेषण की गहराई—यह फ़देयेव की मु
विशेषता है जो उसकी कृतियों को महत्व प्रदान करती है।

गोर्की के उपन्यास 'माँ' से 'नाश' उपन्यास का मुख्य भाव बहुत कु
मिलता जुलता है जैसे 'माँ' उपन्यास में बाह्य रूप से नायक की पराज
है फिर भी उपन्यास जनता की भविष्य की विजय के विश्वास से पूर्ण
उसी प्रकार 'नाश' उपन्यास में यद्यपि लेविंसोन की टुकड़ी नष्ट हो. गय
और उसमे केवल १९ आदमी बचे हैं फिर भी यह स्पष्ट है कि क्रान्
नष्ट नहीं हुई; उसके पीछे जनता है। लेविंसोन के साथियों का वीरत
पूर्ण अन्त यह बता रहा है कि जनता अपने मे फिर से कोई नयी शक्
... करेगी और फिर से युद्ध छेड़ेगी ?

... की रचना, पात्रों के चित्रण का सिद्धान्त, जीवन मे

कुछ है केवल वही नहीं वरन् वह जो कि उसमें प्रौढ़ हो रहा है उसके चित्रण की क्षमता, यथार्थता का क्रान्तिकारी विकास के बीच चित्रण, यह सब बताते हैं कि इस उपन्यास में समाजवादी यथार्थवाद का पूरा-पूरा समावेश हुआ है। फ़देयेव उपन्यास के पात्रों के विभिन्न पक्षों को प्रदर्शित करता है, उनकी अनुभूतियों की गहराइयों में पाठकों को ले जाता है, उनके चारों ओर के वातावरण को बड़े विस्तार से चित्रित करता है जिसमें कि उनके व्यक्तित्व का बड़ा ठोस और स्पष्ट चित्र उभरता है।

उपन्यास के केन्द्र में लेविसोन है, उसके माध्यम से बोल्शेविक का, नेता का तथा संगठनकर्ता का चित्र प्रस्तुत किया गया है। फ़देयेव बड़े कौशल से यह प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार अपनी मानवीय दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त कर, अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को व्यापक सामाजिक लक्ष्य के अधीन कर, वह अपनी सारी शक्ति क्रान्ति की सेवा में लगा देता है और उन लोगों का संगठन करता है जो उसका विश्वास कर मौत के मुँह में भी जाने को तैयार हैं। मानवता के आनन्द का जो स्वप्न वह देखता है वह उसे कठिन क्षणों में नवीन शक्ति देता है और जीवन में उसका विश्वास बना रहता है। वह संगठनकर्ता भी बहुत बड़ा है और अपनी टुकड़ी में अनुशासन रखता है। अनुशासन भंग करनेवालों को वह रिवाल्वर से धमकाता है और खरबूजा चुरानेवाले मरोज़का को न्याय के हवाले कर देता है। सब जानते हैं कि वह केवल धमकी ही नहीं देता वरन् उसकी धमकी कार्यान्वित भी होती है। इसी से सब उसके अनुशासन में रहते हैं। बोल्शेविक विचारों की आन्तरिक शक्ति से ही वह टुकड़ी को अपने अनुशासन में रखता है।

मरोज़का चोरी भी करता है और शराब भी पीता है, फिर भी वह देशसेवा के लिए तत्पर है और वह इस काम में देश के लिए बिना हिचकिचाहट के अपनी बलि दे देता है।

इस उपन्यास के मूल में समाजवाद का विचार है। लेखक गृहयुद्ध की घटनाओं को समाजवाद की दृष्टि से देखता है। वह समाजवाद के इस युद्ध को देशभक्ति के जन-आन्दोलन के रूप में चित्रित करता है।

इसका संचालन बोल्शेविक पार्टी कर रही है जिसका प्रतिनिधि लेविंसोन है और जो स्वयं पार्टी नेतृत्व से निर्देशन प्राप्त करता है। इस प्रकार समाजवाद का विचार सारे उपन्यास का संगठन करता है। वह उस उच्च आदर्श के रूप में प्रकट होता है जो लोगों को उदात्त बनाता है, उनको नैतिक उच्चता प्रदान करता है और उनको मानव की स्वतन्त्रता तथा देश सेवा के भाव की शक्ति से भर देता है। जितना ही मनुष्य इस आदर्श के निकट और इससे सिक्त है उतना ही ऊँचा और महत्वपूर्ण उसका नैतिक रूप होता है और इससे उल्टा जितना ही मनुष्य इससे दूर जाता है वह अपने नैतिक गुणों को खो देता है। लेविंसोन इस आदर्श का मूर्तिमान रूप है और मेचिक इसके विपरीत।

उपन्यास इस प्रकार समाजवादी यथार्थवाद का उदाहरण प्रस्तुत करता है। जनात्मकता इसकी विशेषता है। समाजवादी आदर्श, विशिष्ट सपन्न नायक का चित्रण क्रान्तिकारी विकास के बीच जीवन का चित्रण, जनात्मकता—इन सबका इस उपन्यास में बड़ा गहरा और व्यापक चत्रण हुआ है।

'उदेगे से आँखिरी'

यह उपन्यास बहुत बड़ा है। इसका तीसरा भाग बहुत महत्त्वपूर्ण है और 'नाश' से मिलता-जुलता है। इसमें भी साइबेरिया के पार्टिजन (छापामारों) का युद्ध है और बोल्शेविकों का चित्र है। इसकी नयी घटनाओं में से एक यह है कि श्वेत गार्डों के हाथ में श्रमिक इस्पात गार्डो (जिनको प्रारचा कहते हैं) पड़ जाता है। उसे बहुत सताया जाता है जिससे कि वह अपने खुफिया साथियों का पता दे दे। वह सब प्रकार की यातना सहता है और मर जाता है लेकिन भेद नहीं देता।

इस उपन्यास का सर्वप्रथम उद्देश्य समकालीन समाज का, पूँजीवादी व्यवस्था से निकलकर क्रांतिकारियन् क्रान्ति के माध्यम से समाजवाद में विकास प्रदर्शित करना है। गृहयुद्ध के युग का वर्णन करते हुए लेखक प्रायः पूँजीवादी समाज का चित्रण करता है और यह संकेत करता है कि यद्यपि यह पूँजीवादी व्यवस्था अब अतीत की वस्तु हो गयी, फिर भी इसके

समर्थक अभी जीवित हैं और क्रान्ति के विरुद्ध लड रहे हैं। इनका यह युद्ध केवल उनका पागलपन है। सामाजिक ऐतिहासिक, घटनाओं के चेतन संचालन के विचार की इस उपन्यास में बड़ी स्पष्ट अभिव्यक्ति हुई है।

द्वितीय युद्ध के पहले के फदेयेव के उपन्यासों ने सोवियत साहित्य के विकास मे बड़ा योग दिया। गृहयुद्ध की विषय-वस्तु के चित्रण मे उसके उपन्यासों ने नवीनता का समावेश किया।

जवान गार्ड या युवक प्रहरी

द्वितीय महायुद्ध की घटनाओं के आधार पर फदेयेव ने 'जवान गार्ड या युवक प्रहरी' उपन्यास की रचना की। इस उपन्यास मे सोवियत जनता का गंभीर चित्रण हुआ और युद्ध के दिनो मे प्रकट होने वाली उसकी महत्त्वपूर्ण विशेषताओं को बड़ी स्पष्टता से प्रस्तुत किया गया।

उपन्यास का घटनात्मक आधार

यह उपन्यास युद्ध की यथार्थ घटनाओं पर आश्रित है। २० जुलाई १९४२ मे जर्मनों ने दनबास से एक शहर 'क्रास्नोदान' पर अधिकार कर लिया। जनता पर उनका अत्याचार शुरू हुआ। शहर से जो नवयुवक बाहर न जा सके थे उनके लिए यह अत्याचार सहन-सीमा से बाहर हो गया। सोलह वर्ष के अलेक कशेवोय ने सितम्बर मे 'युवक प्रहरी' के रूप मे उनका खुफिया संगठन किया। अक्तूबर तक उसमे १०३ युवक आ गये और कशेवोय इस खुफिया संगठन का कमिसार बना। युवक प्रहरी संगठन ने चार महीने काम किया। जर्मन सैनिको तथा पुलिस को नष्ट किया और लाल सेना के आने के सम्मुख विद्रोह करने के लिए शस्त्र इकट्ठे किये। किन्तु लाल सेना द्वारा नगर उद्धार के पहले ही जनवरी मे जर्मनो को इस संगठन का पता लग गया और इस संगठन के १०३ व्यक्तियों मे से कुल आठ बचे। १९ मार्च १९४३ मे अलेक के शव का पता लगा जिस पर क्रूर अत्याचार के चिह्न थे।

लेखक ने इस युवक प्रहरी संगठन के सारे कार्यकलापों को, बिना एक को भी छोड़े, अंकित करने का तथा युवक प्रहरियों के चरित्रों को

सत्यता के साथ उद्घाटित करने का लक्ष्य अपने सामने रखा। इस उद्देश्य से लेखक ने घटनास्थल पर जाकर युवक गठन के जीवन की बहुमूल्य सामग्री एकत्रित की। संबंधित कागजों से परिचित हुआ और अनेक के संबंधियों तथा निकटस्थों से पूछताछ की। 'युवक प्रहरी' उपन्यास इसी का परिणाम है। यथातथ्य अंकन के प्रयत्न के साथ-साथ इसमें कल्पना का भी योग है। स्तेपान सफानोव तथा अन.-तोली अरलोवक के चित्र कल्पना प्रसूत हैं। फिर भी उपन्यास मूल रूप में यथातथ्य घटनाओं पर आश्रित हैं।

उपन्यास का महत्त्व

इस उपन्यास का महत्त्व केवल इस बात मे नही है कि इसमें युद्ध की एक महत्त्वपूर्ण घटना की स्मृति आगे की पीढ़ी के लिए बड़े यत्न से सुरक्षित है वरन् इस ऐतिहासिक घटना के माध्यम से नायकों, सोवियत युग के नवयुवकों की सामान्य विशिष्टताएँ प्रदर्शित की गयी हैं जो सोवियत समाज में और नवयुवको में पुष्ट हुईं जिनका पोषण सोवियत साहित्य कर रहा है। फदेयेव का योगदान इस बात मे है कि युवक वर्ग इन पात्रों के रूपों मे स्वदेश सेवा का आदर्श देखता है और इसके उदाहरणों पर अपने को ढालना चाहता है और इस बात में कि उसने उपन्यास की मूलभूत घटनाओ को युग के राजनीतिक, सामाजिक तथा दार्शनिक प्रश्नों से समन्वित कर दिया। उपन्यास की यह घटना द्वितीय युद्ध की केवल विशिष्ट घटना के रूप मे नहीं चित्रित है वरन् उसका संबंध व्यापक 'जातीय या राष्ट्रीय विचार से जोड़ दिया गया है और क्रास्नोदान के नवयुवकों की विशिष्टताएँ नयी सोवियत पीढ़ी की विशिष्टताओं के रूप में प्रदर्शित की गई हैं।

उपन्यास में सोवियत जनता की पिता-पुत्र की दो पीढ़िया चित्रित हैं—वे लोग जिन्होंने गृहयुद्ध में लड़कर देश के लिए स्वतन्त्रता प्राप्त की और वे जिनको आज विदेशी आक्रमण के दिनों में अपनी परीक्षा देनी है और यह प्रमाणित करना है कि वे देशभक्त पिता की देशभक्त संतान हैं।

पुरानी पीढ़ी

पुरानी पीढ़ी कम्यूनिस्टों के रूप में चित्रित की गयी है। फिलिप त्रोविच ल्यूतिकोव, इवान थयोदरोविच प्रत्सेंको, निकोलाइ पेत्रो- विचबराकोव, पलीना गिओरगेव्ना सक्लोवा तथा अन्य, यह लोग बड़े अनुभवी हैं और शत्रु के विरुद्ध पडयंत्र रचते है। ल्यूतिकोव तथा बराकोव उनका भेद लेने के लिए जर्मनों के साथ काम करते हैं और अपने मित्रों के संदेह तथा घृणा के पात्र बनते हैं। ल्यूतिकोव के संचालन में क्रास्नोदान के नवयुवक शत्रु के विरुद्ध खुफिया काम करते है।

फ़देयेव ने ल्यूतिकोव का चित्रण बड़े विस्तार से किया है और उसकी ढ़ता तथा उसके संकोचशील स्वभाव को प्रदर्शित किया है। उसके रूप में र्टी के संचालक का चित्र प्रस्तुत किया गया है जो खुफिया रूप में शत्रु पीछे काम करने के लिए वहाँ तक जाता है और जनता को शत्रु के रुद्ध युद्ध करने के लिए संगठित कर लेता है।

यह उपन्यास बतलाता है कि सब कुछ बहादुरी या बलिदान में ही हीं है बल्कि उन आदर्शों के चेतन ज्ञान में है जिनके लिए वह शत्रु से लड़ हा है और जो उसे इतना ऊँचा उठा लेते हैं और उसमें इतना साहस र देते हैं। साथ ही यह साहस केवल व्यक्ति विशिष्ट का नहीं है रन् सामूहिक साहस है, जनता का साहस है। सोवियत व्यक्ति की त्मिक उच्चता इस चेतना पर आधारित है कि उसका जनता के साथ विच्छिन्न संबंध है। वह इस बात का अनुभव करता है कि जनता उसके थ है और यही चेतना उसे अपरिमित शक्ति देती है। इसी शक्ति से पुष्ट र्शेविकों का चित्रण इस उपन्यास में हुआ है और वे जनता के साथ नी ऐक्य की शिक्षा नयी पीढ़ी को दे रहे हैं।

यी पीढ़ी

सोवियत लोक दृष्टि की यह आधारभूत विशेषता, जो सोवियत शासन जनमों और पार्टी ने जिसकी शिक्षा दी, नयी पीढ़ी में पूरी-पूरी विद्यमान । इस नयी पीढ़ी के लिए अपने व्यक्तिगत भाग्य को जनता तथा देश

के भाग्य से अलग करना असम्भव है। वह अपने को देश का अविभाज्य अंग समझती है। इसी से यह पीढ़ी शत्रु के विरुद्ध अपने काम आप शुरू कर देती है, 'युवक प्रहरी' का एक नायक वनानोल्को पदेव कहता है कि 'पितृ-भूमि संकट में है—ऐसे संकट में है जिसे न देखना, जिसके बारे में न सोचना असम्भव है—फौरन काम करना चाहिए।' दूसरी नायिका *ऊल्या ग्रोमोवा कहती है 'मैं समझ गयी मेरे लिए दूसरा रास्ता नहीं। या मैं इस प्रकार जी सकती हूँ या मैं बिल्कुल नहीं जी सकती हूँ। मैं माँ के सामने प्रतिज्ञा करती हूँ कि आखिरी साँस तक मैं इस रास्ते से न हटूँगी।'* और वह जर्मनों से युद्ध करती है।

उपन्यास में क्रास्नोदान के नवयुवकों के प्रतिनिधियों का जो चित्रण हुआ है उसमें उनकी अपनी विशेषता है और उनका अपना व्यक्तित्व है, फिर भी उद्देश्य और अनुभूति की एकता उनको एक बना देती है। नयी तथा पुरानी, दोनों पीढ़ियाँ अपने को जनता का प्रतिनिधि समझती हैं और अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करती हैं। उनके विचार और कार्य इसी से निर्धारित होते हैं। उपन्यास में इन दोनों पीढ़ियों का बड़ा रोचक चित्रण हुआ है।

उपन्यास में मित्रता, वफादारी और निर्मल प्रेम का भी चित्रण हुआ है। अपने मित्र ब्लोद्या की सहायता करने के लिए वान्या जेमनुखोव अपनी प्रियतमा के साथ शहर छोड़कर चले जाने का प्रस्ताव *नहीं* स्वीकार करता और तोल्या अरनोव ब्लोद्या के साथ रहता है जिससे कि जर्मनों के आने के समय बीमार ब्लोद्या अकेला न रह जाय। वफादारी की असली मित्रता बलवान हृदय में ही निवास करती है और यह 'युवक प्रहरी' जर्मन यत्रणा के बीच अपनी इसी आत्मिक शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। जब उन्हें फांसी के लिए ले जाया जाता है तो वे गीत गाते हैं।

मित्रता के साथ-साथ युवक-युवतियों के बीच विद्यमान निर्मल प्रेम का भी चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। अलेक और नीना, सिरोजा और वाल्या, वान्या और ब्लोद्या तथा अन्य सब प्रेम की उच्च भावना से संचलित

हैं जो कि उनको सामाजिक कर्तव्य से विमुख नहीं करती वरन् उसके पालन करने के लिए और भी दृढ़ता तथा बलिदान की शक्ति देती है। जब वान्या क्लावा से कहता है कि इस खुफिया सगठन मे काम करने मे मौत का खतरा है तो वह उत्तर देती है कि मैं तुम्हारे साथ मरने को तैयार हूँ। और सचमुच मे अंतिम क्षण मे क्लावा खान मैं वान्या का साथ देती है।

परिवार का जो चित्र इस उपन्यास मे प्रस्तुत किया गया है उसमे बड़े और बच्चों के बीच भावना की एकता है। इसी से सकट के समय सारा परिवार एक मन से काम कर पाता है। कई महीने जो 'युवक प्रहरियो' का संगठन बिना कोई नुकसान उठाए काम कर सका और शत्रुओं को हानि पहुँचा सका, उसका मुख्य कारण यह है कि युवको ने बडो के अनुशासन में काम किया और संकट के क्षण मे माता-पिता ने चुपचाप अपनी सतान देश को सौंप दी।

बच्चों के जीवन मे स्कूल का जो योगदान है उसे भी इस उपन्यास मे प्रदर्शित किया गया है। 'युवक प्रहरी' उपन्यास स्तालिन-पुरस्कार से पुरस्कृत हुआ। सोवियत साहित्य के युद्ध से सबधित उपन्यासों मे, इसका बड़ा ऊँचा स्थान है।

११. युद्धोत्तर निर्माण के समय का साहित्य

[१९४५–]

२ सितम्बर १९४५ को जापान के आत्म-समर्पण पर स्तालिन ने कहा था कि हमारी सोवियत जनता ने विजय के लिए कोई भी मेहनत उठा नहीं रखी। हमने बड़े कठिन दिन देखे। अब हममें से प्रत्येक कह सकता है कि हम विजयी हुए।

और सचमुच में सोवियत जनता ने विजय के लिए सब कुछ होम कर दिया। जिन बलिदानों के बाद उसे यह विजय मिली इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि युद्ध में सत्तर लाख व्यक्ति नष्ट हो गये। उद्योग-धंधे, कल्खोज, स्कूल, पुस्तकालय आदि जो नष्ट हुए उनकी चर्चा ही क्या! जर्मन अधिकार में जो क्षेत्र थे उनकी असीम हानि हुई। उसे ६७९ करोड़ रूबल में आंका जाता है जो कि उस क्षेत्र की आमदनी की दो तिहाई कीमत थी।

ऐसी हानि संसार के और किसी भी देश को नहीं उठानी पड़ी। फिर भी यह सोवियत जनता के निर्माणकारी परिश्रम की शक्ति का उदाहरण है कि १९४८ में देश का अपना उत्पादन युद्ध के पहले के स्तर पर पहुँच गया। सन् १९५२ में औद्योगिक उत्पादन युद्ध के पूर्व के वर्षों की तुलना में दुगुना हो गया। कम्युनिज्म के निर्माण का मार्ग देश को नयी सफलताएँ और उपलब्धियाँ दिला रहा है। पाँच वर्षों (१९४६–५०) में ६५०० से अधिक व्यक्तियों को विज्ञान तथा कला के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए स्तालिन-पुरस्कार मिला।

कम्युनिज्म की ओर अधिक सफल तथा देश के निर्माण के कार्यों ने सोवियत साहित्य के सामने नये लक्ष्य प्रस्तुत किये। देश के जीवन के इस संपूर्ण काल में—जब कि जीवन की नयी समस्याएँ साहित्य के सामने नव प्रस्तुत कर रही थीं—शांति सदा के समान फिर सामने आई और

उसने बताया कि सोवियत लेखकों को किन नये रास्तों पर चलना चाहिए।

जनता की चेतना के विकास में साहित्य के योगदान के महत्त्व को पार्टी बहुत अच्छी तरह समझती है। इसी से वह साहित्य की गतिविधि का आकलन तथा निर्देशन बड़े ध्यान से करती है। इस सबंध मे १९४६ में पार्टी के तीन ऐतिहासिक महत्त्व के मसविदे और निश्चय प्रकाशित हुए। पार्टी के यह निश्चय साहित्य के सबंध में, नाटक के सबंध मे और सिनेमा के सबंध मे हैं। १९४८ मे आपेरा के सबंध मे भी पार्टी का निश्चय प्रकाशित हुआ। भाषा विज्ञान के प्रश्नों के सबंध मे स्तालिन का जो काम है, (मार्क्सवाद और भाषा विज्ञान के प्रश्न) उसने कला तथा विज्ञान के विकास के नये रास्ते खोले। इसके मूलभूत विचारों ने सोवियत लेखकों को कलात्मक कौशल तथा भाषागत स्पष्टता तथा समृद्धि के लिए उत्साहित किया और 'रूपवाद तथा प्रकृतिवाद के विरुद्ध लड़ने' मे मदद दी। साहित्य तथा कला के सबंध मे पार्टी का जो निश्चय था उसने इस बात पर जोर दिया कि लेखकों का निर्देशन[1] उस मूलवस्तु से होना चाहिए जो सोवियत समाज का मूल आधार है—सोवियत समाज यह नहीं सह सकता कि उसके नवयुवकों की शिक्षा सोवियत राजनीति से उदासीन रह कर हो और वे इसके मतवाद या सिद्धान्तों की चिन्ता न करें। इसी से मतवाद हीनता, या राजनीतिहीनता या 'कला कला के लिए' की शिक्षा सोवियत साहित्य के लिए अग्राह्य है और सोवियत जनता तथा शासन के हितों के लिए हानिकारक है। दूसरे शब्दों मे कम्यूनिस्ट पार्टी की नीति युद्धोत्तरकाल मे कलात्मक क्षेत्र मे पार्टीवादिता तथा कम्यूनिस्ट विचारात्मकता के लिए युद्ध करना और फार्मलिज्म तथा कास्मोपालिटनिज्म का विरोध करना था। नाटकों और रगमच के बारे में पार्टी का जो निश्चय हुआ उसमे इसकी और भी व्याख्या हुई। उसमें कहा गया कि[2] 'हमारे नाटककारों और रगमंच के कार्यकर्ताओं का यह काम है कि वे सोवियत समाज और सोवियत व्यक्ति के विषय मे स्पष्ट मूल्यवान तथा कलात्मक

[1] रूस्काया सवेत्स्काया लितेरातूरा, तिमोफ़ेयेव, पृष्ठ ३६०
[2] रूस्काया सवेत्स्काया लितेरातूरा, तिमोफ़ेयेव, पृष्ठ ३६१।

कृतियों की रचना करें। नाटककार और रंगमंच को अवश्यमेव नाटकों तथा उनके प्रदर्शनों में सोवियत समाज के निरन्तर प्रगतिशील जीवन का प्रतिबिम्बन करना चाहिए, सोवियत व्यक्ति के चरित्र के सत्पक्ष के विकास में हर प्रकार से सहायता करनी चाहिए जो कि युद्धकाल में विशेष रूप से प्रकट हुआ। उन्हें चाहिए कि वे सोवियत जनता के शिक्षण में योग दें, उनके उच्च सांस्कृतिक प्रश्नों का उत्तर दें और सोवियत युवकों में देश के लिए साहस, आनन्द तथा प्रेम भर दें कि उन्हें अपने कार्य के लिए विजय में विश्वास हो। वे बाधाओं से न डरें और हर प्रकार की कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने की उनमें शक्ति हो। इसके साथ ही सोवियत रंगमंच को यह प्रदर्शित करना चाहिए कि यह गुण कतिपय चुने हुए व्यक्तियों या नायकों के गुण नहीं हैं वरन् लाखों-करोड़ों सोवियत व्यक्ति या जनता के गुण हैं।

नाटक आदि के संबंध में पार्टी के इन निश्चयों का एक कारण भी था। युद्धोत्तर काल के आरम्भिक वर्षों में कतिपय लेखकों की सर्जना में, रंगमंच के नाटकीय प्रदर्शनों में और सोवियत नाटककारों सिनेमा-सिनेरियो लेखकों और संगीतकारों के कार्यों में अस्वस्थ प्रवृत्तियाँ लक्षित की गयी जो नये लक्ष्यों की पूर्ति में विघ्न डालती थीं, जिनको (लक्ष्यों को) कि ऐतिहासिक विकास के लिये नये चरण ने कला के समक्ष प्रस्तुत किया था।[1]

पार्टी के इन निश्चयों से स्पष्ट है कि देश के सांस्कृतिक जीवन में सोवियत साहित्य का कैसा महत्त्वपूर्ण स्थान है। पार्टी के निश्चय इस प्रकार युद्धोत्तरकाल में साहित्य के विकास की नयी मंजिल में, उसके रूप-रंग को निर्धारित और निश्चित कर रहे हैं। इन निश्चयों ने नयी कृतियों की विचारात्मकता को ऊपर उठाया। लेखकों को अपने उच्च आदर्श के समझने में मदद दी। उनकी सर्जना को नयी दिशा दी और साहित्य के

---

१. ओचेर्क रूस्कोय सवेत्स्कोय लितरातूरी, दूसरा भाग, पृष्ठ २१४।

स्तर को ऊपर उठाया।[1] सोवियत कला कम्युनिस्ट पार्टी के निश्चयों द्वारा इन प्रवृत्तियोंके विरुद्ध युद्ध करने के लिए समृद्ध और सुसज्जित की गयी। ज्दानोव ने कहा कि 'हमारी जनता की रुचि और मांग का स्तर बड़ा ऊँचा उठ गया है—सोवियत जनता सोवियत लेखकों से असली विचारात्मक शक्ति की मानसिक भोजन की आशा कर रही है जो महान् निर्माण की योजनाओं को पूर्ण करने मे मदद दे।'

सोवियत साहित्य वस्तुत: यही कर भी रहा है। स्वाभाविक रूप से उसका प्रधान लक्ष्य कम्यूनिज्म के निर्माण मे हर प्रकार से योग देना है। युद्धोत्तर पांच वर्षों ने देश के समाजवाद से कम्युनिज्म की ओर क्रमिक संचरण के लक्ष्य को और भी बढ़ावा दिया। शहर और गाँव के बीच के भेद का निराकरण, शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम के बीच के भेद का निराकरण, तथा व्यक्तिगत और सामाजिक या सामूहिक के बीच के भेद का निराकरण, जो कि अब देश के जीवन मे लक्षित हो -रहा है, अब साहित्य मे भी प्रतिबिम्बित हो रहा है। युद्धोत्तर काल का साहित्य कम्यूनिज्म के निर्माण का साहित्य है। यही उसकी प्रधान और मूलभूत विषय-वस्तु है।

इस निर्माणकारी कार्य के परिश्रम और उत्साह की अभिव्यक्ति अजाएव के 'मास्को से दूर', निकोलाएवा के 'फसल' बवाएन्स्की के 'सुनहले तारे का नाइट', पावलेंको के 'खुशी', केतलीस्कया के 'हमारे जीवन के दिन' प्रानिन के 'खोजी' जैसे उपन्यासों मे और त्वरदोव्स्की के 'सड़क पर मकान, निदागोनोव के 'गाँव सोवियत पर झंडा' जैसी कविताओं में और गालिन अवेचकिन आदि के लेखों मे हुई है। समकालीन समस्याएँ लिओनोव के 'रूसी जंगल' जैसी कृतियों मे प्रस्तुत हुई। यद्यपि इस उपन्यास की घटनाओं में युद्धोत्तरकाल का समावेश हुआ है।

कम्यूनिज्म के निर्माण की विषय-वस्तु के साथ-साथ द्वितीय महायुद्ध की विषय-वस्तु भी मुख्य है। 'जनता द्वारा प्राप्त युद्ध के विशाल अनुभव

१. रूस्कया सवेत्स्कोय लितरातूरी, तिमोफ़ेयेव, पृ० ३६२

सोवियत साहित्यकारों की कई कृतियां ऐतिहासिक वस्तु-विषय से संबंधित हैं। इन कृतियों की विषय-वस्तु रूसी मजदूर आन्दोलन के इतिहास से संबंधित हैं। इनमें प्रोलितारित क्रान्ति की तय्यारी और प्रौढ़ता, प्रथम रूसी क्रान्ति, प्रतिक्रिया के युग और नवीन क्रांतिकारी वेग, अक्तूबर की महान समाजवादी क्रान्ति और गृहयुद्ध का चित्रण हुआ है। फेदिन के उपन्यासों 'आरम्भिक आनन्द' और 'साधारण ग्रीष्म' मे क्रान्ति के पूर्व का समय और गृहयुद्ध के वर्ष अंकित हुए हैं, ग्लदकोव की आत्मकथात्मक कृतियों 'बचपन की कथा' 'अस्पताल' 'कुसमय' मे यह दिखाया गया है कि रूसी किसान लड़का किस प्रकार विकसित हुआ और किस प्रकार उसका चरित्र दृढ़ हुआ तथा रूसी गाँवों के अतीत और मेहनतकश रूसी जनता के (उन्नीसवी शतो के अंत मे उसके भाग्य के) बारे में कहा गया है। सक्लोंवकी रचना 'चिनगारियाँ', विदनेव्स्की का 'अविस्मरणीय', १९१९' आदि कृतियाँ इतिहास के विभिन्न युगों से संबंधित कृतियाँ हैं। देश के क्रान्तिकारी इतिहास का उद्घाटन सोवियत लेखकों के लिए बड़ा रुचिकर विषय रहा है।

युद्धोत्तरकाल में सोवियत साहित्य के विकास की वस्तु-विषय-गत यही मुख्य दिशाएँ हैं और यही मुख्य समस्याएं हैं जिन्हें कि पार्टी ने साहित्य के सामने प्रस्तुत किया।

इन विषयवस्तुओं के उद्घाटन ने सोवियत साहित्य के मुख्य लक्ष्य-युग के गुणसपन्न नायक के रूप में सोवियत व्यक्ति का चित्रण—को दृष्टि से ओझल न किया वरन् उसे और भी व्यापकता के साथ पूर्ण किया। सोवियत व्यक्ति के अंकन का ऐसा लक्ष्य भी पार्टी के निश्चय द्वारा ही प्रस्तुत किया गया था।

गद्य के क्षेत्र मे उपन्यासों और कहानियों के साथ-साथ निबंधों का भी बड़ा विकास हुआ। अन्तोनोव की प्रगीतात्मक कहानियाँ, अवेचकिन के ग्राम्य जीवन की समस्याओं से सबंधित लेख, वोल्गा-डान के निर्माण संबंधी पलिवोय के लेख तथा तेन्द्रयाकोव, क्लीनिन आदि के लेख बड़े लोकप्रिय हुए।

युद्धोत्तरकालीन काव्य के क्षेत्र में त्वारदोव्स्की, निकोलेव, शिपाचेव सुरकोव इसाकोव्स्की, अलीगेर आदि के प्रगीत प्रस्तुत किये गये।

नाटकों के क्षेत्र में ऐतिहासिक नाटकों (विश्नेव्स्की का 'रिमस्की शिरनेस्की' या 'अविस्मरणीय १९१९' से लेकर व्यंग्य प्रधान कृतियों और समकालीन कमेडियों तथा प्रगीतात्मक कृतियाँ लिखी गईं।

निर्माण की विषय-वस्तु

युद्ध के बाद स्वाभाविक ही था कि निर्माण की विषय-वस्तु युद्धोत्तर कालीन साहित्य में प्रमुख स्थान ग्रहण करे। सोवियत लेखकों ने निर्माण-कारी कार्य में परिश्रम को प्रत्येक व्यक्ति के देशभक्ति के कर्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया। रूसी जनता के साहसपूर्ण तथा अथक परिश्रम करने की शक्ति की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया जिसके द्वारा वह अपने देश के युद्ध में नष्ट राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था तथा सांस्कृतिक जीवन का पुनर्निर्माण करती थी। इस प्रकार जनता के जीवन तथा कम्युनिज्म के निर्माण में व्यक्ति का सामाजिक योगदान साहित्यिक कृतियों की मुख्य वस्तु बन गया। इस विषय-वस्तु के उद्घाटन में मुख्य चित्र सोवियत सैनिक का है जो अब मोर्चे से घर लौटा है और अपने को शान्तिमय निर्माण कार्य में लगा रहा है तथा युद्ध के उस अनुभव का प्रयोग कर रहा है जिसके बीच उसका चरित्र दृढ़ हुआ। कलाकारों के युद्धोत्तर कालीन निर्माण का तथा जीवन चित्रण तथा लोगों के जीवन में जो समाजवादी रूप प्रकट हो रहा तथा कलाकारों की प्रगति को रोकता है उन सबको अभिव्यक्ति करने वाली कृतियों में बाबायेव्स्की के उपन्यास 'सुनहले तारे का नायक' तथा 'पृथ्वी पर प्रकाश' पाव्लेंको का 'सुख' माल्त्सेव का 'पूरे हृदय से' निकोलायेवा का 'फसल' मुख्य है। कम्युनिस्टी निर्माण की कठिनाइयाँ और उन पर विजय का प्रदर्शन [illegible] की कृति 'साहस' में हुआ है। १९४६ में हुई [illegible] के बाद कम्युनिस्टी अवस्था के पुनः संगठन का चित्र, [illegible] के विरुद्ध [illegible] तथा [illegible] विचारों के युद्ध के बीच प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार [illegible]

की कृति 'कम्बाइन (मशीन) चालक' और निकोलाएवा के 'एम० टी० सी० डाइरेक्टर की कहानी' में मशीन ट्रावटर स्टेशन के मजदूरों का चित्रण हुआ है और प्राचीनता के विरुद्ध इन प्रगतिशील लोगों का महत्व प्रदर्शित किया गया है जो कि काम के नये साधनों के प्रयोग के पक्ष में हैं।

बबायेवस्की के उपन्यास का केन्द्र कलखोज में काम करनेवाला नवयुवक है जो अभी युद्ध से लौटा है जो सोवियत संघ का वीर है और जो उसी साहस के साथ अब कलखोज में काम करता है जिससे कि वह युद्ध में लड़ता था। युद्ध का सैनिक शांतिमय निर्माणकारी कार्यकर्ता बन गया। पावलेंको के उपन्यास 'खुशी' में यह दिखाया गया है कि लड़ाई के कठिन वर्षों के बीच ही, जब कि अभी पश्चिम में युद्ध चल रहा था, पार्टी और जनता कम्यूनिज्म के निर्माणकारी कार्य में प्रवृत्त हो गई।

पावलेंको के उपन्यास के नायक कर्नल वरपायेव का मार्ग जटिल है। युद्ध में अपनी टाँग खोकर और तपेदिक का मरीज बनकर वह फौज छोड़कर क्रीम में अपने लिए ठिकाना ढूँढ़ने आता है। थकान और कमजोरी महसूस करता हुआ वह अब अपने को सामाजिक कार्य के अयोग्य समझता है और अब चुपचाप विश्राम करना चाहता है किन्तु उसके चारों ओर जीवन के निर्माण का जो नया कार्य चल रहा है उसका उसके ऊपर अलक्षित रूप से प्रभाव पड़ता है और वह धीरे-धीरे स्वयम् इस धार में पड़ जाता है। अब उसकी समझ में आता है कि वह बिल्कुल निरर्थक नहीं है और उसके युद्धकालीन अनुभव का शांतिमय परिस्थिति में भी उपयोग हो सकता है और वह लोगों का संचालन करता है। इस प्रकार देश तथा जनता के हित के लिए आवश्यक कल्याणकारी कठिन परिश्रम करने में उसे खुशी मिलती है। वह जनहित के कार्यों में अपने को समर्पित कर देता है। इसी में उसके चरित्र का विकास होता है। उपन्यास का मुख्य भाव यह है कि व्यक्ति का सच्चा आनन्द जनसेवा में है और यही उसकी 'खुशी' का स्रोत है।

गल्याजोव के उपन्यास 'दनवास' में नये व्यक्ति के निर्माण की समस्या प्रस्तुत की गयी है और यह दिखाया गया है कि सोवियत जनता के सर्जनात्मक निर्माणकारी कार्य के बीच नये व्यक्ति का चरित्र किस प्रकार ढल रहा है और निखर रहा है।

सोवियत श्रमिक वर्ग (विशेषतया औद्योगिक क्षेत्र के मजदूरों) के जीवन से सम्बन्धित कृतियों में कोचेतोव की कृति 'जुर्बीन' और वेरा पनोवा की कृति 'हमारे जीवन के दिन' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। कोचेतोव के उपन्यास में रूसी श्रमिक वर्ग की वह क्रान्तिकारी परम्पराएं प्रदर्शित की गई हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में बराबर व्याप्त होती जाती हैं। उपन्यास का मुख्य भाव है श्रमिक वर्ग का महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदान। 'हमारे जीवन के दिन' का मुख्य विषय-वस्तु व्यक्ति या समूह के परिश्रम तथा योजना को पूरा करने के गम्भीर प्रयत्न से सम्बन्धित है जिसके बीच लोगों का चरित्र निखरता और प्रौढ़ होता है। लेखिका ने यह प्रदर्शित किया है कि सोवियत व्यक्ति परिश्रम के बीच ही अपना आनंद प्राप्त करता है।

अज़ायेव का उपन्यास 'मास्को से दूर' परिश्रम के विषय-वस्तु का उद्घाटन अन्य उपन्यासों की अपेक्षा बड़ी पूर्णता से करता है। इसमें युद्ध के बीच सोवियत महत्त्वपूर्ण निर्माण का कार्य प्रदर्शित किया गया है। मास्को से दूर पूरब में तेल की पाइप लाइन बिछाने के पहले तीन साल की योजना थी। युद्ध शुरू हो जाने पर अब बराबर सरकार ने इसी काम को दो वर्ष में पूरा करने को कहा। बहुतों को यह काम असम्भव प्रतीत हुआ और बहुतों को युद्ध के बीच ऐसा निर्माण निरर्थक और महत्त्वहीन लगा। उनकी दृष्टि में इस समय पर मास्को की रक्षा के लिए जाना अधिक महत्त्वपूर्ण था किन्तु निर्माण का संचालन करनेवाले वास्तविक युद्ध मार्ग के पीछे होने वाले सोवियत कार्य [illegible] का महत्त्व समझते हैं। वे इन कार्यों को पूरा करने का बीड़ा उठाते हैं। [illegible] अपने क्षेत्र में नहीं रहा पाते और वे अपने काम में व्यस्त हुए हैं। अज़ायेव का यह उपन्यास समाजवादी परिश्रम के वेग से पूर्ण है।

युद्ध का वस्तु-विषय

शांति के समय में भी युद्ध के अनुभवों का वर्णन सोवियत लेखक इसलिए करते हैं कि युद्ध की घटनाओं का कलात्मक वर्णन देकर और सोवियत जनता के साहसपूर्ण कार्यों का चित्रण कर वे नई पीढ़ी के चरित्र को दृढ़ कर सकें और उनमें साहस, देश प्रेम, आदि का भाव भर सकें।

लेखकों ने युद्ध की घटनाओं द्वारा उन राजनीतिक, नैतिक गुणों की ओर ध्यान केन्द्रित किया है जिन्होंने सोवियत जनता को फासिस्टों पर विजय दिलाई। बहुत सी कृतियों में सोवियत सेना को फासिज्म के अभिशाप से योरोप को मुक्त करनेवाले उद्धारक के रूप में और रूस को शांति के समर्थक और शांति के योद्धा के रूप में चित्रित किया गया है। इनकी कृतियों का मुख्य विषय है विजय दिलाने वाले सोवियत सैनिक और देश की रक्षा में सन्नद्ध सोवियत जनता के अनेक रूपात्मक जीवन का चित्रण। बहुत सी कृतियाँ इन लोगों की लिखी हुई हैं जिन्होंने स्वयम् इस युद्ध में हिस्सा लिया। पार्टिजन और खुफिया युद्ध में भाग लेनेवालों के इन युद्धों के कई संस्मरण प्रकाशित हुए कज्जोव का कीफ में छिपे तौर से 'अन्डरग्राउंड' का 'जन युद्ध', फ्योदोरोव का 'खुफिया', जिनमें क्षेत्रीय कम्यूनिस्ट पार्टी काम कर रही है।

इन वर्षों की कृतियों में युद्ध की मंजिलें चित्रित की गयी हैं। अवदेयेव के उपन्यास 'सड़कों पर ज़ोर' में युद्ध का आरम्भ चित्रित है। उसमें यह बताया गया है कि शत्रुओं या डोरों को उन स्थलों से किस प्रकार हटाया गया है जहाँ कि शत्रुओं या आक्रमण का खतरा था। सोवियत जनता की संगठनशक्ति और महान शक्ति का इसमें प्रदर्शन हुआ है।

कजकेविच के उपन्यास 'तारा' में सोवियत जासूसों के साहसपूर्ण कार्यों का वर्णन हुआ है जो शत्रु के मोर्चे के पीछे अपना उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करते हुए नष्ट हो जाते हैं। फिर भी यह कार्य बंद नहीं होता है क्योंकि उन मृत व्यक्तियों की जगह दूसरे सोवियत व्यक्ति आ जाते हैं और यह कार्य चलता रहता है। इसमें इस प्रकार यह दिखाया गया है कि सोवियत जनता की शक्ति अक्षय है और प्रत्येक व्यक्ति का जीवन देश के लिए है।

चुकोव्स्की का उपन्यास 'बाल्टिक आकाश' में समुद्री वायुयान-चालकों की कथा है जो बाल्टिक आकाश की रक्षा कर रहे हैं। इस कार्य में एक के बाद दूसरा चालक मर जाता है। सिर्फ एक वायु-चालक बचता है और उस पर वायुचालकों की दूसरी पीढ़ी तैयार करने का भार पड़ता है। इसमें सोवियत व्यक्ति का विकास, उसका युद्ध कौशल तथा उसकी देश-भक्ति की भावना का उदघाटन हुआ है।

'सफेद बिरोजा का पेड़' इसी दृढ़ता का प्रतीक है जिस प्रकार बिरोजा का पेड़ मृत्यु तक खड़ा रहता है उसी प्रकार सोवियत सिपाही मृत्युपर्यन्त देश की रक्षा के लिए दृढ़ खड़ा है।

'सफेद बिरोजा का पेड़' में युद्ध के आरम्भिक युग का वर्णन और रूसी जातीय चरित्र का उद्घाटन है। इसके केन्द्र में सैनिक अन्द्रेय का चित्र है जो धीरे-धीरे अनुभव करता है और अनुभवी सैनिक बन कर युद्ध के कर्त्तव्यों को पूरा करता है। स्तालिनग्राद के युद्ध के कठिन समय का वर्णन नेक्रासोव की कहानी 'स्तालिनग्राद की खाइयों में' हुआ है। घिरे हुए लेनिनग्राद के साहसपूर्ण कृत्यों का वर्णन 'केतलीन्स्कया के उपन्यास घेरे में' हुआ है। बहुत सी कृतियाँ पार्टिजनों 'छापामार' के युद्ध से सबंधित हैं। इनमें उन युद्धों का वर्णन है जिनका संचालन शत्रु द्वारा अधिकृत क्षेत्रों में इन पार्टिजनों द्वारा हुआ। कताएव का उपन्यास 'सोवियत के शासन के पक्ष' में इसी प्रकार का उपन्यास है, इसमें जर्मनों के विरुद्ध ओडेसा के देशभक्तों के साहसपूर्ण प्रतिरोध का वर्णन है। पार्टी ने इसकी आलोचना की, और फिर लेखक ने १९५१ में इसका दूसरा रूपान्तर प्रस्तुत किया।

बेरयोज्को की कहानी 'जनरल की रात' में युद्ध का अन्तिम चरण प्रदर्शित किया गया है जब कि सोवियत सेना विजयिनी के रूप में आगे बढ़ती है और शत्रु को नष्ट करती है। युद्ध के अन्तिम युग का विराट चित्र, फ़ासिज्म का नाश, सोवियत सेना की अपराजेय शक्ति और उसका उद्धारकारी रूप कज़ेविच के उपन्यास 'ओडेर में बसन्त' में मिलता है। इसमें यह दिखाया गया है कि सोवियत सेना जनता की फ़ासिज्म से किस प्रकार रक्षा करती है और उसे समाजवादी विचारधारा प्रदान करती है।

बुर्जुआ संस्कृति की आलोचना

अपनी संस्कृति की बड़ाई करने के साथ-साथ सोवियत लेखक बुर्जुआ संस्कृति की आलोचना में भी लगे हुए हैं। इसे वे अपना परम कर्तव्य समझते हैं। स्वयम् ज्दानोव इसे अत्यन्त आवश्यक समझता है। उसके मतानुसार 'हमारे साहित्य का लक्ष्य केवल यही नहीं है कि हम समाजवाद पर अपनी सोवियत संस्कृति के प्रति किये गये कुप्रचारों, प्रहारों और आक्षेपों का उत्तर प्रहारों से दें, वरन् हमें साहस के साथ जर्जर ह्रासोन्मुख, भ्रष्ट बुर्जुआ संस्कृति पर कशाघात और आक्रमण करना चाहिए।'

ईल्या एलनबुर्ग के उपन्यास 'तूफान' में यह विशेष रूप से द्रष्टव्य है जहाँ फ़ासिस्ट जर्मनी और उसके साथियों के विरुद्ध सोवियत जनता के युद्ध का व्यापक चित्रण हुआ है।

हिटलर पर सोवियत विजय का जो ऐतिहासिक महत्व है उसका उद्घाटन ऐलेनबुर्ग के उपन्यास 'तूफान' में हुआ है। इसमें बहुत से पात्र हैं, इसमें पूरे द्वितीय महायुद्ध का वर्णन है और यह दिखाया गया है कि युद्ध की घटनाओं से समकालीनों की चेतना किस प्रकार प्रतिबिम्बित हो रही है।

सीमनोव के नाटक 'रूसी प्रश्न' और कविताओं 'मित्र और शत्रु' का मूलभूत वस्तु-विषय भी यही आलोचना है। नाटक में अमेरिकन प्रेस के सिद्धान्तविहीन कार्यकर्ताओं को चित्रित किया गया है जो सोवियत संघ को हर तरह से बदनाम करना चाहते हैं और उसके विरुद्ध झूठी बातें छापना चाहते हैं। इनसे स्मिथ की टक्कर होती है जो सच्चा संवाददाता है और जो उनकी इच्छानुसार अमेरिकन प्रेस के प्रचार के लिए सोवियत संघ के संबंध में झूठी बातें लिखने से इन्कार कर देता है।

विदेशों की बुर्जुआ संस्कृति की आलोचना करने के साथ-साथ सोवियत लेखक इन देशों में के प्रगतिशील आन्दोलनों की शक्ति का भी चित्रण करते हैं।

युद्धादि वर्णन के साथ-साथ लेखकों ने शान्तिमय निर्माणकारी कार्य की

अभिव्यक्ति साहित्य में बड़े उत्साह के साथ की। रूसी लेखकों ने उन सभी का हार्दिक स्वागत किया जो निर्माण, विज्ञान, संस्कृति आदि के क्षेत्र में उन्नति तथा प्रगतिशीलता के सवाहक थे और उन सब की आलोचना की है जो प्रतिगामी, पिछड़े हुए और समय के अनुकूल न थे। प्राचीन और नवीन के संघर्ष का इस समय के साहित्य में बड़ा ही सजीव वर्णन हुआ है। कवेदिन के उपन्यास 'खुली किताब' में सोवियत सर्जना और विज्ञान की प्रगति रोकने वाले व्यक्तियों का चित्रण किया गया है।

लिओनोव के उपन्यास 'रूसी जंगल' में समकालीन महत्वपूर्ण समस्याओं का चित्रण हुआ है। यह सोवियत साहित्य की अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति मानी जाती है। लेखक को इस पर लेनिन पुरस्कार मिल चुका है। उपन्यास के सारे कथासूत्र रूसी जंगल के चारों ओर एकत्रित होते हैं। रूसी जंगल की पृष्ठभूमि में रूसी विद्वान इवान वील्ग्रोव का अनेकरूपात्मक चित्र प्रस्तुत करता है जो रूसी जंगलों की रक्षा के लिए बराबर लड़ता है। यह कृति केवल एक व्यक्ति का चित्र नहीं है वरन् इसमें उन्नीसवीं शती के अन्त और बीसवीं शती के आरम्भ के रूसी समाज का व्यापक चित्र प्रस्तुत किया गया है। अनेक प्रकार की समस्याओं के समावेश से यह कृति अत्यन्त महत्वपूर्ण बन गयी है।

ग्रानिन के उपन्यास 'खोजी' में भी इसी प्रकार सैद्धान्तिक महत्व के प्रश्न प्रस्तुत किये गये हैं। इसकी सारी घटनाएं एक प्रयोगशाला में घटती हैं। मानवीय विचार की अनतता और उसकी सतत प्रगति इस उपन्यास का मुख्य भाव है। इसमें यह बताया गया है कि कोई उपलब्धि किसी अनुसंधान का अन्त नहीं है वरन् वह दूसरे अनुसंधान का आरम्भ है। इस तरह खोज और उपलब्धि, प्रयत्न और प्राप्ति का क्रम चलता रहता है। साथ ही इस बात पर भी जोर दिया गया है कि कोई उपलब्धि केवल किसी एक व्यक्ति की सूझ-बूझ का परिणाम नहीं है वरन् अनेक लोगों के समिलित प्रयत्न का फल है। 'खोजी' उपन्यास में अनेक चरित्रों, गुण संपन्न तथा नकारात्मक का संघर्ष बड़ा सजीव एवं

सोवियत व्यक्ति का चित्र

युद्धोत्तर वर्षों में सोवियत व्यक्ति का जो चित्रण हुआ है उसमें विवरण की भिन्नता होते हुए भी मूलभूत समानता है। इस मूलभूत समानता का कारण सोवियत लेखकों का भावैक्य है जो कि इनमें पार्टी तथा पार्टीवादिता द्वारा पुष्ट हुआ है और जो उनकी कम्यूनिस्ट समाज की रचना की प्रेरणा तथा प्रयत्न में प्रकट होता है। सोवियत व्यक्ति इसी का निर्माता है। इसी से सोवियत लेखकों ने सोवियत व्यक्ति को देशभक्त, मानवता के उद्धारक, कम्यूनिस्ट समाज के निर्माता, जनसेवी, समाजसेवी तथा आत्मबलिदानी के रूप में चित्रित किया है। उसे उच्च मानवता का प्रतिनिधि प्रदर्शित किया गया है जो कि मानवता के प्रति अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करता है। गोनचार के उपन्यास 'सुनहला प्राग' में सोवियत सैनिक स्काउटों का चित्रण हुआ है जो जर्मनों द्वारा नष्ट विभिन्न देशों के व्यक्तियों का उद्धार करता है। पावलेंको के उपन्यास 'खुशी' में वस्पाव का चित्र भी इसी प्रकार बड़ा महत्वपूर्ण है। पानोवा ने अपनी कहानी 'स्पूतनिको' में यह प्रदर्शित किया है कि दिन-प्रति-दिन के कार्य को सोवियत व्यक्ति कितनी जिम्मेदारी के साथ पूरा करता है और इस कार्य में व्यक्तिगत और सामाजिक ऐक्य का अनुभव करता है। बूढ़े डाक्टर बलोव और कम्यूनिस्ट दानीलोव का ऐसा ही, बड़ा सुखकारी, रूप प्रस्तुत किया गया है। युद्ध के बीच सामान्य सोवियत व्यक्ति का विकास, उसके साहस और उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति का चित्र पूर्ण रूप से विशेषतया पलिवोय की कृति 'असली आदमी की कहानी' में प्रकट हुआ है। पुस्तक युद्ध के बीच सोवियत व्यक्ति के दिन प्रतिदिन के साहस का प्रदर्शन करती है। सोवियत लेखकों की अधिकांश कृतियों के समान इसका कथानक भी यथार्थ घटनाओं पर आधारित है। इसमें वायुयान चालक मेरेसियेव की कथा है जिसके जख्मी हो जाने पर दोनों पैर काट डाले जाते हैं किन्तु वह इस पर फिर से वायुयान चालक बन जाता है। लेखक ने कम्यूनिस्ट मेरेसियेव के चरित्र में उस अपूर्व दृढ़ता तथा सहनशीलता का बड़ा गहरा तथा स्पष्ट चित्रण किया है जो कि व्यक्ति में उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के प्रयत्न में ही प्रकट होती

है। इस कहानी में एक अन्य कम्यूनिस्ट कमिसार बरव्योव का चित्र भी है जो प्रचारक है, जो अन्तिम क्षण तक अपना कार्य करता है और अपनी मृत्यु द्वारा भी लोगों में प्रेरणा और उत्साह भरता है।

फेदिन के उपन्यासों की मुख्य विषय-वस्तु है इतिहास, मनुष्य और क्रान्ति के बीच उसका स्थान। उनमें अक्तूबर क्रान्ति के पूर्व के तथा गृह युद्ध के वर्षों के कम्यूनिस्ट का चित्र अंकित किया गया है। फेदिन द्वारा प्रस्तुत कम्यूनिस्ट इज़केवेकोव का चित्र सोवियत साहित्य मे अंकित कम्यूनिस्टों के उज्ज्वल चित्रों में से एक है। यद्यपि फेदिन ने अतीत की सामग्री का उपयोग किया है फिर भी पात्रों के चरित्र की मूलभूत विशेषताएं आज के साधकों से संबंधित हैं। फेदिन के उपन्यासों में इतिहास की प्रगति रूसी जनता तथा पार्टी की क्रान्ति के पूर्व और अक्तूबर क्रान्ति के वर्षों की घटनाओं के बीच विशाल पट पर अंकित की गयी है।

काव्य

युद्धोत्तर सोवियत काव्य की अच्छी कृतियों का मुख्य भाव है सम-कालीनता की भावना निर्माणकारी सहयोग, परिश्रम का वेग, शांति के लिए आंदोलन और देश का आगे की ओर, कम्यूनिज़्म की ओर बढ़ने का प्रयत्न। युद्ध के बाद जब देश शांति के निर्माणकारी कार्य में लगा और जनता देश की नष्ट-भ्रष्ट राष्ट्रीय व्यवस्था के पुनर्निर्माण में प्रवृत्त हुई तो सोवियत काव्य ने जनता के परिश्रम, कठिनाइयों और विजय प्राप्त करने के उसके दृढ़ विश्वास और उसके जन-कल्याणकारी आत्मबलिदान की प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति की।

युद्धोत्तरकाल की प्रथम महत्त्वपूर्ण कृति त्वरदोव्स्की का काव्य 'सड़क पर का मकान' है। इसमें उस मकान का चित्रण है जो कि फौजी रास्ते पर पड़ता है और उसके रहनेवालों का चित्रण है जिनको अनेक कठिनाइयां झेलनी पड़ती हैं। इसके दो संस्करणों में बहुत अन्तर है। दूसरे संस्करण के अनुसार इस मकान में रहनेवाली अन्ना सिवात्सोवा शत्रु के साथ पड़ जाती है और जर्मनी भेज दी जाती है। इसके पति अन्द्रेय के माध्यम से कवि सोवियत जनता की अपूर्व शक्ति और सहनशीलता का वर्णन किया है।

त्वरदोव्स्की की प्रगीतात्मक प्रतिभा का उदाहरण है उसका काव्य 'घाटी से दूर'। इसमे सोवियत देश के अनन्त विस्तार का वर्णन है। इसमें कवि ने अपने देश की यात्रा की। देश के दूर क्षितिज पर हर बार कवि को नवीन दृश्य दिखाई देते हैं। कवि इस अनन्त विस्तार को देश के लम्बे इतिहास के बीच देखता है और उसके अतीत पर दृष्टि डालता हुआ अनेक प्रकार के विचार प्रस्तुत करता है।

देश के पुनर्निर्माण के वस्तु-विषय की अभिव्यक्ति निदगोनोव के काव्य 'गाँव सोवियत पर झंडा' मे हुई है। काव्य जनता के साहस, देशप्रेम और आशावादिता से परिपूर्ण है। कवि यह प्रदर्शित करता है कि लोग कलखोज के मित्रतापूर्ण परिश्रम के वातावरण के बीच किस प्रकार एक दूसरे के निकट आते हैं। युद्धोत्तर काल के कलखोजों के गाँवों मे जो परिवर्तन आया उसका इस काव्य मे सच्चा अभिव्यजन हुआ है।

इसी प्रकार के निर्माण कार्य के अनेक चित्र लुकोनिन मेजीरोव, गूदर्जेको दिमनोंव आदि की कविताओं मे मिलते हैं। उनकी तथा अन्य कवियों की रचनाएं शांति के निर्माणकारी कार्य के वेग से परिपूर्ण हैं। इन रचनाओं में प्रगतिशील, देशप्रेमी कम्यूनिस्ट का चित्र सामने आता है जो जनता की शक्ति का देशहित के लिए नेतृत्व तथा सचालन कर रहा है।

प्रगतिशील सोवियत व्यक्ति का चित्र सीमनोव की युद्धोत्तरकालीन रचनाओं ('मित्र और शत्रु' '१९५४ की कविताएँ') मे प्रस्फुटित हुआ है। प्रगीतात्मक नायक के माध्यम से जिसके लिए परिश्रम तथा कम्यूनिज्म का निर्माण अपना निजी काम है, युद्धोत्तरकालीन यथार्थता के अनेक पक्षों का उद्घाटन हुआ है। कवि कम्यूनिस्ट नैतिकता की समस्याओं—मानवीय संबंध—मित्रता, वफादारी, तोताचश्मी तथा जिम्मेदारी से भागने का विरोध भी प्रस्तुत कर रहा है।

'पबेद (विजय) मे वसन्त' काव्य मे प्रिवाचोव ने प्रगतिशील सोवियत व्यक्ति के युद्ध मे निर्मित उसके चरित्र, दृढ़ इच्छाशक्ति, उच्च समाजवादी चेतना, कम्यूनिज्म के लिए आत्म-बलिदान की तत्परता का चित्र अंकित किया है। वसन्त में खेतों मे कलखोजी कार्यकर्ताओं और

ट्रैक्टरों का दृश्य मानो विजय के लिए सेना का अभियान है।

लुकोनिन के काव्य 'काम का दिन' में मजदूरों की नयी पीढ़ी तथा युद्धोत्तरकालीन नयी यथार्थता का चित्रण स्तालिनग्राद की फैक्टरी के जीवन के बीच हुआ है।

अन्तोकोल्स्की की कविता 'अरबात के पीछे की गली में' समकालीन सोवियत व्यक्ति का चित्र है। इसमें कवि पाठकों को अपने नायक इवान येगोरोव के जीवन की गतिविधि और चरित्र विकास से परिचित कराता है। कथा के आरम्भ में नायक छोटी उम्र में अक्तूबर क्रान्ति के आरम्भिक दिनों में गाँव से मास्को आता है। कथा का अन्त होते-होते वह द्वितीय युद्ध के अन्त में राजधानी में निर्माण के कार्य में लगे हुए शिल्पी इंजीनियर के रूप में दिखाया जाता है। इस लम्बी अवधि के बीच उसका चरित्र विकसित होता है। इस काव्य में समकालीनता, समाजवादी निर्माण *और व्यक्ति का बड़ा ही सजीव चित्रण हुआ है।*

ईसाकोव्स्की की कविता

सोवियत व्यक्ति के चित्रण में प्रगीत मुक्तकों का भी विशेष स्थान है। इन प्रगीत मुक्तकों में सोवियत व्यक्ति के आन्तरिक संसार और अनुभूतियों का चित्रण हुआ है जिनमें उसके व्यक्तित्व तथा भावनाओं की अनेकरूपता तथा समृद्धि की अभिव्यक्ति हुई है। समाजवादी देश में व्यक्तित्व का पूर्ण विकास तभी होता है जब विशिष्ट समष्टि में लय हो जाता है और व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग बन जाता है, व्यक्ति और समाज के उद्देश्यों में कोई विरोध नहीं रह जाता और व्यक्ति समाजोन्मुख हो उठ जाता है। उच्च, उदात्त तथा सर्वसामान्य लक्ष्य की प्राप्ति के प्रयत्न या युद्ध में उसका व्यक्तित्व पुष्ट और प्रकट होता है। सोवियत व्यक्ति के व्यक्तित्व की यह समृद्धि उसकी समाजपरक भावना, समाजवादी प्रगीत मुक्तकों में प्रकट हुई है।

इन प्रगीत मुक्तककारों का सबसे बड़ा प्रतिनिधि मिखाइल वासिल्येविच ईसाकोव्स्की है। 'ईसाकोव्स्की' मूल रूप से गीतकार है। उसके गीत जनता में बहुत अधिक लोकप्रिय हैं। व्यक्ति के चित्र में

गीत, 'कौन उसको जानता है', 'हाय मे हारमोनियम दो', 'तू मत अपनी चिन्ता कर','उस फूल से बढ़कर कुछ नही', 'सफरी चिड़ियाँ' तथा अन्य हैं।

ईसाकोव्स्की का जन्म १९०० मे हुआ। वह अक्सर इसकी याद किया करता है कि अक्सर हमे काली रोटी का टुकडा भी नसीब न था। उसके शिक्षक ने उसकी प्रतिभा को पहचाना और उसकी सहायता से ही वह दरिद्रता के बीच भी गाँव के स्कूल तथा जिमनेजियम मे १९१७ तक पढ़ सका। १९१७ मे उसने क्रान्ति का स्वागत किया। इस समय से उसका सामाजिक जीवन शुरू हुआ। १९१८ मे वह पार्टी का मेम्बर बन गया। अखबारों में विभिन्न काम करने के साथ-साथ वह कविताएँ भी लिखता जाता था किन्तु ये कविताएँ उसे पसन्द नहीं आई और उसने पुरानी पांडुलिपियों को जला डाला। स्वयम् ईसाकोव्स्की के अनुसार उसका संतोषप्रद कविकार्य १९२३ मे शुरू हुआ और १९२७ मे मास्को मे उसकी कविताओं का सग्रह निकला। उसकी मूल-वस्तु गाँवो का समाजवादी पुर्ननिमाण है। गोर्की ने उसकी प्रतिभा को पहचाना और इस कृति की प्रशसा की। उसकी कविताएँ सादी, अच्छी और अपनी ईमानदारी से उद्वेलित करनेवाली है। यह गोर्की का कथन था।

इस समय से सोवियत साहित्य के बीच गीतकार के रूप मे ईसाकोव्स्की का अपना विशिष्ट स्थान बन गया। उसने अपना ध्यान गीतों की ओर केन्द्रित किया और गीतो ने उसे यशस्वी बनाया।

अपनी कविताओं मे ईसाकोव्स्की ने सोवियत जनता की भावनाओं का, उसके गहरे देशप्रेम का तथा स्तालिन के प्रति जनता के प्रेम का अभिव्यजन किया। उसकी कविताओ मे सोवियत देश के जीवन का, विशेषतया नये सोवियत गांवो के जीवन का तथा सोवियत जनता के चरित्र की विशिष्टताओं का अनेक रूपात्मक चित्रण हुआ है। देश मे रहनेवाली अनेक जातियों के पारस्परिक मित्रतापूर्ण सबध तथा देशप्रेम की, परिश्रम द्वारा उपलब्ध सफलताओ तथा सप्राप्तियों पर उल्लास तथा गर्व की और युद्ध क्षेत्र मे प्रदर्शित वीरता की गीतो तथा कविताओं मे बड़ी काव्यात्मक अभिव्यक्ति हुई है। देश प्रेम तथा सभी देशों की तुलना में

अपने देश के उत्कर्ष तथा महत्ता की भावना, ईसाकोव्स्की के जनात्मक काव्य को बड़ी शक्ति तथा प्रभाव प्रदान करते हैं। 'सफ़री चिड़ियाँ बीते हुए ग्रीष्म की खोज में उड़ी जा रही हैं। वे गर्म देशों की ओर उड़ रही हैं किन्तु मैं उड़कर कहीं नहीं जाना चाहता हूँ।'

'हे मातृभूमि, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मुझे पराया सूर्य और परायी धरती नहीं चाहिए।'

ईसाकोव्स्की की कविताओं में हृदयस्पर्शी काव्यात्मकता और उच्च संस्कृति के दर्शन होते हैं। इसके साथ ही उसकी काव्याभिव्यक्ति में ऐसी सादगी है जो केवल बड़े कवियों में ही देखने को मिलती है। संक्षिप्तता, हार्दिकता, स्वाभाविकता कोमल व्यंग्य, रूसी प्रकृति से गृहीत तुलनाएँ और उपमाएँ अनेक रूपात्मक शब्द चयन—यह सब कवि ने क्लासिकल रूसी साहित्य और रूसी लोकसर्जना से सीखा है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रकट होनेवाले सोवियत जनता के अनेक रूपात्मक विचार और भाव ईसाकोव्स्की के प्रगीति-मुक्तकों की मुख्य विषय-वस्तु हैं। १९५० में ईसाकोव्स्की लेनिन के आर्डर से पुरस्कृत हुआ।

ईसाकोव्स्की के प्रगीत-मुक्तकों के नायक के रूप में सोवियत व्यक्ति के चरित्र का बड़ी पूर्णता के साथ उद्घाटन हुआ है।[1] स्पष्ट प्रगीतात्मक लय की प्रेरणात्मकता गीतों तथा चतुष्पदियों का जीवन, हार्दिक, सूक्ष्म हास्य, उसके गीतों का वस्तु-भाव तथा उनकी सूक्ष्म मनोवैज्ञानिकता, उनकी लोकगीतात्मक लय, यथातथ्य अभिव्यंजक भाषा—इन सब विशेषताओं ने रूप और वस्तु दोनों दृष्टियों से ईसाकोव्स्की की कविता को पूरा-पूरा जनात्मक बना दिया।[2] 'ईसाकोव्स्की के सादे और सचाई से भरे गीतों में खिलती हुई जवानी और हार्दिक उल्लास तथा आन्तरिक दुख की कथा है जिसमें सोवियत देशभक्ति का सम्मिश्रण है।

---

१ ऑचेर्क इस्तोरिई रूस्कोय सोवेत्स्कोय लितरातूरी, भाग २, पृ० १५१।

२ ऑचेर्क इस्तोरिई रूस्कोय सोवेत्स्कोय लितरातूरी, भाग २, पृ० ३८९।

युद्धोतरकाल मे हास्य और व्यंग्य प्रधान काव्य का समुचित विकास न हुआ। यों तो हास्य और व्यंग्य प्रधान काव्य के क्षेत्र मे सीमनोव, मिखाइलोव, मर्शाक, वसीलियेव आदि का तथा 'घड़ियाल' पत्र का नाम लिया जा सकता है फिर भी काव्य का यह क्षेत्र पिछड़ा हुआ माना जाता है।

नाटक

नाटको के संबंध मे इस बात की चर्चा की जा चुकी है कि आलोचना के इस क्षेत्र मे अस्वस्थ प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ी और कम्यूनिस्ट पार्टी ने नाटको के विकास के संबंध मे अपना निश्चय और कतिपय सिद्धान्त प्रस्तुत किये। युद्धोत्तर नाट्य साहित्य की श्रेष्ठ कृतियो मे पार्टी के इन्ही सिद्धान्तो को—जिनमें जीवन से संबंध, साम्यवादी विचारधारा का समर्थन और बुर्जुआ विचारधारा का विरोध मुख्य है—कलात्मक रूप दिया गया है।

युद्ध का चित्रण, सोवियत व्यक्ति का साहस, उसकी नैतिकता, जिसने कि उसे फ़ासिज़्म पर विजय दिलाई—इन सबका अभिव्यंजन लत्रेनेव के नाटक 'इनके लिए जो समुद्र मे हैं' और विस्र्कोव के नाटक 'विजयी' मे हुआ है।

लत्रेनेव के नाटक मे सोवियत नौसेना के अफसरो और सैनिको का जीवन तथा युद्ध दिखाया गया है। साथ ही व्यक्तिगत उन्नति और संमान तथा सामूहिक हित की भावना के बीच संघर्ष भी दिखाया गया है। बरोव्स्की के लिए व्यक्तिगत समान ही सब कुछ है और वह इसके लिए सब कुछ करने को तैयार है। मक्सीमोव सामूहिक कार्य की सफलता को ही सब कुछ मानता है।

इन व्यक्तियो के संघर्ष मे दो भावनाओं की टक्कर है। खुदगर्ज़ी के कारण बरोव्स्की मक्सीमोव के साथ ठीक-ठीक युद्ध संचालन नही करता और शत्रु की पनडुब्बी को निकल जाने देता है और मक्सीमोव को इसमे दोषी ठहराता है। बाद मे सच्ची बात [illegible] लग जाता है। बरोव्स्की की भर्त्सना होती है और [illegible] स्वीकार करता है।

'विजयी' नाटक में स्तालिनग्राद के युद्ध के आधार पर चिर्स्कोव ने यह प्रदर्शित किया है कि सोवियत विजय का कारण जर्मन संगठन की अपेक्षा सोवियत संगठन की उच्चता है। सोवियत विजय का मूल कारण है जन-शक्ति, जनता की इच्छा। एक ओर तो सारी जनता है जो युद्ध का संचालन कर रही है और देश की रक्षा के लिए सब कुछ न्योछावर कर रही है और दूसरी ओर जर्मन सैनिक हैं, जो एक व्यक्ति हिटलर की इच्छा के गुलाम मात्र हैं। नाटक का मुख्य विषय इसी नवीन सोवियत जनता के चरित्र और साहस का उद्घाटन है। वस्तुतः विजय इसी जनता की होती है। वही 'विजयी' है।

युद्धोत्तर काल में बहुत से ऐतिहासिक नाटक लिखे गये। इनमें विश्नेव्स्की का 'अविस्मरणीय १९१९' महत्त्वपूर्ण है। इसका वस्तु-विषय पार्टी द्वारा पेत्रोग्राद की श्वेत गार्डों और विदेशियों से रक्षा है।

इसी प्रकार और बहुत से ऐतिहासिक, व्यक्तिप्रधान नाटक लिखे गये जो देश के महान् व्यक्तियों--जैसे लमनोसोव, पुश्किन, लरमेन्तोव, गोगल, बेलिंस्की आदि--से संबंधित थे। ई० पपोव का नाटक 'परिवार' लेनिन की जवानी के वर्षों से संबंधित है, अलेक्सान्द्र श्तेइन का नाटक 'अडमिरल का झंडा' जहाजी बेड़े के स्कूल के संस्थापक ऊशाकोव के जीवन से संबंधित है।

इसी प्रकार कई नाटक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक जीवन और शांति के लिए युद्ध की अभिव्यंजना कर रहे हैं। सीमनोव का 'रूसी प्रश्न' तथा लव्रेनेव का 'अमेरिका की आवाज' इसी प्रकार के नाटक हैं।

युद्धोत्तर वर्षों में बहुत से नाटक लिखे गये जिनमें देश के जीवन का अभिव्यंजन हुआ। गद्य और काव्य के समान नाटक भी समकालीन वस्तु-विषयों तथा अपने देश के पुनर्निर्माण में लगी हुई सोवियत जनता के कार्यकलाप की ओर उन्मुख हुए। सीमनोव के साथ-साथ नये नाटककार (अ० सफ्रोनोव, अ० सुरोव तथा अन्य) भी सामने आ रहे हैं। सफ्रोनोव के नाटक 'मास्कोवीय चरित्र' में सोवियत व्यक्ति के चरित्र का विकास और उत्कर्ष दिखाया गया है जो अपने अन्तर के स्वार्थ और व्यक्तिवादिता

पर विजय प्राप्त करता है। नाटक के केन्द्र मे फैक्टरी का डाइरेक्टर पतापोव है। वह बहुत अच्छी तरह काम करता है। उसकी फैक्टरी योजना से अधिक काम करती है। सब उसे सच्चा रूसी समझते है किन्तु बाद मे पता चलता है कि सच्चे रूसियों के लिए अनजान व्यक्तिवादिता का बीज उसमें वर्तमान है। जब पड़ोस की फैक्टरी उससे मदद माँगती है तो वह इन्कार कर देता है क्योकि वह समझता है कि ऐसा करने से उसकी अपनी फैक्टरी का काम पीछे पड़ जायगा। पतापोव का अपने चारो ओर के लोगों से, विशेषतया पत्नी से संघर्ष होता है और लोग उसे समझाते हैं कि केवल अपनी फैक्टरी का हित देखने मे वह राष्ट्र के हितों को नुकसान पहुँचा रहा है। पार्टीनेतृत्व पतापोव को अपनी गलती समझने और सही रास्ता पाने में मदद देता है। कलेक्टिव' या समूह के प्रभाव से इस प्रकार व्यक्ति का सुधार होता है और वह सम्यक् दृष्टि प्राप्त कर क्षुद्र स्वार्थों से ऊपर उठ जाता है।

सीमनोव के नाटक 'पराई छाँह' मे दूसरा ही वस्तु-विषय प्रस्तुत किया गया है। उसमे एक सोवियत विद्वान् का चित्रण हुआ है जिसमे (क्रान्ति के पूर्व की) पश्चिम के प्रति मानसिक गुलामी के संस्कार अभी वर्तमान हैं। पश्चिम मे सम्मान पाने के लिए वह अपना महत्वपूर्ण आविष्कार अमेरिका भेजता है और वह यह नही समझता कि इस प्रकार वह अपने राष्ट्र का अहित कर रहा है। इस्टिच्यूट के कार्यकर्त्ताओं और उस विद्वान् के बीच गंभीर संघर्ष होता है। आविष्कार देश के बाहर नहीं जाने पाता। अन्त मे उस विद्वान् की समझ मे आता है कि वह आनुष्ठान के संचालक पद से मुक्त किए जाने की प्रार्थना करता है किन्तु शासन उसे काम करने का आदेश देता है। इस प्रकार अपने प्रति देश का विश्वास प्राप्त कर वह विद्वान् सर्वथा परिवर्तित होकर प्रयोगशाला में जाता है और अपने काम मे लग जाता है।

इन नाटकों में गंभीर और तीक्ष्ण संघर्ष का अन्त उन सब के दमन या उन सब पर विजय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है जो कि सोवियत व्यक्ति के विकास और उत्कर्ष को रोकते हैं। साथ ही यह भी दिखाया जाता है

कि सोवियत समाज प्रत्येक व्यक्ति को, समाजवादी सर्जनात्मक परिश्रम के बीच पूर्ण विकास प्राप्त करने में और व्यक्तित्व के सद्गुणों की अभिव्यक्ति में सहायता देता है। बहुत से नाटक संघर्ष या द्वन्द्वविहीनता के सिद्धान्त को लेकर लिखे गये। रूसी आलोचकों के मतानुसार यह अनुसरण ठीक न था और यह बुर्जुआ भावना की गुलामी थी।[1] उनकी दृष्टि में नाट्य-साहित्य के लिए सबसे बुरी चीज थी द्वन्द्वविहीनता की प्रवृत्ति। इस गलत रास्ते पर पड़े हुए नाटककारों की कलम से ऐसे नाटक लिखे गये जो यथार्थता पर मुलम्मा चढ़ाते थे और बुर्जुआ सिद्धान्तों के प्रभाव तथा परोपजीविता के विरुद्ध सक्रिय युद्ध से लोगों को विमुख करते थे। उन्होंने ऐसे नाटकों की बड़ी कटु आलोचना की। यद्यपि युद्धोत्तर काल में कई अच्छे नाटक प्रस्तुत किये गये फिर भी सामान्य रूप से इस युग के नाट्य-साहित्य का कलात्मक स्तर बहुत ऊपर उठा हुआ नहीं माना जाता।

युद्धोत्तर साहित्य में शांति की विषय-वस्तु भी बड़े जोरों की के साथ प्रस्तुत की गयी है। कविता, उपन्यास, नाटक प्रचारात्मक लेख आदि के गुण सोवियत लेखक संसार में शांति और जाति-जाति के बीच मैत्री के भाव को दृढ़ कर रहे हैं। इन कृतियों में साम्राज्यवादी विचारों की तीव्र आलोचना भी की गयी है और उन देशों और जातियों के प्रति सहानुभूति प्रकट की गयी है जो स्वाधीन होने की कोशिश कर रही हैं।

संसार में शांति आंदोलन को दृढ़ करने के लिए कई अन्तर्राष्ट्रीय (पैरिस, प्राग, वारसा) कान्फ्रेंसें बुलायी गयीं और सोवियत लेखकों ने उनमें भाग लिया, इनमें आणविक शस्त्रों के निर्माण का विरोध और अमेरिकन साम्राज्यवादिता की निंदा की गई। इस प्रकार सोवियत लेखक साहित्यिक सर्जना के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक-राजनीतिक कार्यकलाप में भी रत हैं। कई प्रसिद्ध सोवियत लेखक विश्व-शांति समिति के सदस्य हैं और इस रूप में वे योरोप, अमेरिका और एशिया के कई देशों में जाकर वहाँ की जनता और विचारधारा से परिचित हो चुके हैं और वहाँ के लोगों को अपनी बातें बता चुके हैं। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय

---

१ ओचेर्क इस्तोरईव रूस्कोय सवेत्सकोय लितरातूरी, भाग २, पृष्ठ ३०४।

सहयोगों के द्वारा शांति का आन्दोलन सारे विश्व में व्याप्त हो रहा है। सोवियत लेखकों की कृतियों में इसी शांति-आन्दोलन की विशद अभिव्यक्ति हुई है।

ऐरेनबुर्ग के उपन्यास 'अंतिम लहर' (या संकट) में विश्वव्यापी शांति आंदोलन का चित्र प्रस्तुत किया गया है। इसके केन्द्र में शांति के समर्थकों का वह संघर्ष या युद्ध है जो कि प्रतिक्रियावादियों और युद्ध छेड़नेवालों के विरुद्ध चलाया जा रहा है।

सीमनोव की कविताओं 'शत्रु और मित्र' में सामान्य जनता के प्रति प्रेम, उसकी प्रगतिशील जातीय परंपराओं के प्रति सम्मान और सारे संसार के श्रमिक वर्ग के साथ ऐक्य का भाव प्रदर्शित किया गया है।

अखिल भारतीय शांति कांग्रेस में सोवियत सदस्य के रूप में आने पर तीखनोव को हिंदुस्तान, पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान को निकट से देखने का अवसर मिला। उसके काव्यसंग्रह दो धाराएँ (और पाकिस्तानी कहानियाँ) में इन देशों की गरीबी और शोषण का चित्र प्रस्तुत किया गया है किन्तु इसके साथ विरोध और संघर्ष की जो नयी शक्ति जन्म ले रही है उसका अंकन भी इसमें हुआ है।

सीमनोव के नाटक 'रूसी प्रश्न' में नये युद्ध छेड़नेवालों के प्रयत्नों की आलोचना की गयी है। इसका मुख्य भाव यह है कि राजनीति में तटस्थ नहीं रहा जा सकता है और प्रत्येक देश के सच्चे देशभक्त को शांति का समर्थक अवश्यमेव होना चाहिए।

इस प्रकार शांति आन्दोलन युद्धोत्तर सोवियत साहित्य की प्रमुख प्रवृत्ति बन रहा है।